राजस्थान में संवादी भजन शैली का उद्भव एवं विकास तथा उसमें निहित शास्त्रीय और लोक तत्त्वों की विवेचना

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की

पीएच.डी. (संगीत)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

कला संकाय

शोधार्थी

राजेश कुमार

पंजीयन क्रमांक : RS/1370/20

शोध पर्यवेक्षक

आचार्य (डॉ.) विजयेन्द्र गौतम

संगीत विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बूंदी (राज.)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) 324005 भारत

2025

शोध निदेशालय
कोटा विश्वविद्यालय
एम.बी.एस. मार्ग, कोटा (राजस्थान)–३२४००५
फोननम्बर ०७४४–२४७१०३७

Directorate of Research
University of Kota
MBS Marg, KOTA (Rajasthan)-324005
Phone No.: 0744-2471037

CERTIFICATE

I feel great pleasure in certifying that the Ph.D. thesis entitled "राजस्थान में संवादी भजन शैली का उद्भव एवं विकास तथा उसमें निहित शास्त्रीय और लोक तत्वों की विवेचना" submitted by **Rajesh Kumar** to the University of Kota in the partial fulfillment of the requirements for the award of the degree of Doctor of Philosophy is based on the research work carried out under my guidance.

He has completed the following requirements as per UGC Regulations and research ordinance of the University :

(a) Satisfactory Completion of the Ph.D. Course Work.

(b) Submission of Annual Progress Reports.

(c) Fulfillment of residential requirement of the Research Centre (Minimum 200 Days).

(d) Presentation of research work before the Departmental Committee.

(e) Publication of at least one research paper in the referred research journal of national and international repute.

(f) Two paper presentations in the Conferences / Seminars.

I recommend the submission of the Ph.D. thesis and certify that it is fit to be evaluated by the examiners.

Date :
Place : Kota

Prof. Dr. Vijayendra Goutam
Research Supervisor

शोध निदेशालय
कोटा विश्वविद्यालय
एम.बी.एस. मार्ग, कोटा (राजस्थान)–३२४००५
फोननम्बर ०७४४–२४७१०३७

Directorate of Research
University of Kota
MBS Marg, KOTA (Rajasthan)-324005
Phone No.: 0744-2471037

CANDIDATE'S DECLARATION

I, **Rajesh Kumar** hereby certify that the research work presented in my Ph.D. thesis entitled **"राजस्थान में संवादी भजन शैली का उद्भव एवं विकास तथा उसमें निहित शास्त्रीय और लोक तत्त्वों की विवेचना"** which is carried out by me under the supervision of **Prof. Dr. Vijayendra Goutam** and submitted in the partial fulfillment of the requirement for the award of the degree of Doctor of Philosophy of the University of Kota, represents my ideas in my own words and where others ideas or words have been included in this thesis, I have adequately cited and referenced the original sources.

The work presented in this thesis has not been submitted elsewhere for the award of any degree or diploma from any other institution or university in India or abroad. I declare that I have adhered to all the principles of academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea / data / fact / source in my submission.

I understand that any violation of the above will cause for disciplinary action by the University and can also evoke penal action from the sources which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed.

Date :
Place : Kota

Rajesh Kumar
(Research Scholar)

This is to certify that the above statement made by **Rajesh Kumar** (Registration Number: **RS/1370/20**) is correct to the best of my knowledge.

Date :
Place : Kota

Prof. Dr. Vijayendra Goutam
(Research Supervisor)

शोध निदेशालय
कोटा विश्वविद्यालय
एम.बी.एस. मार्ग, कोटा (राजस्थान)–३२४००५
फोननम्बर : ०७४४–२४७१०३७

Directorate of Research
University of Kota
MBS Marg, KOTA (Rajasthan)-324005
Phone No.: 0744-2471037

ANTI-PLAGIARISM CERTIFICATE

It is certified that the Ph.D. thesis entitled **" राजस्थान में संवादी भजन शैली का उद्भव एवं विकास तथा उसमें निहित शास्त्रीय और लोक तत्त्वों की विवेचना"** submitted by **Rajesh Kumar** has been examined with the anti-plagiarism tool.

We undertake that:

a. The thesis has significant new work/knowledge as compared already published or under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.

b. The work presented is original and own work of the author i.e. there is no plagiarism. No ideas, processes, results or words of others have been presented as the author's own work.

c. There is no fabrication of data or results which have been compiled and analyzed.

d. There is no falsification by manipulating research materials, equipment or processes, or changing or omitting data or results such that the research is not accurately represented in the research record.

e. The thesis has been checked by using Plagiarism checker DrillBit Software and found within the limits as per UGC plagiarism Policy and instructions issued from time to time.

Report is also enclosed along with this Ph.D. thesis.

Date :
Place : Kota

Rajesh Kumar
Research Scholar

Date :
Place : Kota

Prof. Dr. Vijayendra Goutam
Research Supervisor

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language	Hindi

Submission Information

Author Name	Rajesh Kumar
Title	[illegible]
Paper/Submission ID	[illegible]
Submitted by	[illegible]
Submission Date	2024-12-10 15:59:54
Document type	Thesis

Result Information

Similarity	**1%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share PDF File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

1	12	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
2	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
3	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
4	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
5	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
6	mib.gov.in	<1	Publication
7	Paper Submitted to Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha	<1	Student Paper
8	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
9	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
10	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
11	Paper Submitted to Awadesh Pratap Singh University, Rewa	<1	Student Paper
12	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication

आभार

सर्वप्रथम माँ सरस्वती को शत्-शत् नमन करता हूँ जिनकी असीम अनुकंपा से मुझे संगीत जैसे विषय के अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ है। मेरे परिवार में शास्त्रीय संगीत का वातावरण नहीं है किन्तु मेरे पिता श्री कालूलाल लोक संगीत (विशेष रूप से हाड़ौती के प्रसिद्ध तेजाजी) के गायक रहे है और ग्रामीण क्षेत्र में प्रसिद्ध रात्री जागरण के भजनों में भी उनकी रुचि रही है। शायद इन संस्कारों का परिणाम है कि मैं आज यह शोध कार्य करने योग्य हुआ।

प्रारम्भ में मेरे संगीत गुरु आचार्य (डॉ.) विजयेन्द्र गौतम ने संवादी भजनों पर इस शोध हेतु प्रेरित किया। राजकीय महाविद्यालय, बूंदी के विभागाध्यक्ष एवं वर्तमान में प्रोफेसर (गायन) राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर ने इस शोधकार्य को नई दिशा प्रदान करते हुए इस विषय "राजस्थान में संवादी भजन शैली का उद्भव एवं विकास तथा उसमें निहित शास्त्रीय और लोक तत्वों की विवेचना" पर शोध कार्य हेतु मुझे अनुमति प्रदान कर कोटा विश्वविद्यालय के शोध विभाग के अन्तर्गत शोध कार्य करने की अनुमति प्रदान कर अनुग्रहित किया।

मैं कोटा विश्वविद्यालय एवं राजकीय महाविद्यालय, बूंदी के शोध विभाग का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी अनुमति से यह शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कर सका हूँ। बूंदी कॉलेज के डॉ. राजेंद्र मीना (नोडल अधिकारी) और वर्तमान विभागाध्यक्ष संगीत गिरिराज मीना का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

मेरे गुरु प्रोफेसर (डॉ.) विजयेन्द्र गौतम के शिष्य और वर्तमान में सहायक आचार्य संगीत (कंठ) डॉ. मोहन नायक, संगीत-विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर और ओम प्रकाश सचदेवा, सहायक आचार्य संगीत (कंठ) हरिदेव जोशी राजकीय कन्या महाविद्यालय बांसवाडा का भी दिल से आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन किया है।

इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए मुझे जिन पुस्तकों से ज्ञान और जानकारी मिली एवं उनका मैंने प्रत्यक्ष या परोक्ष उपयोग किया है उनके लेखकों के प्रति उपकृत हूँ तथा जिन विद्वानों से मैंने साक्षात्कार द्वारा इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए मार्गदर्शन महत्वपूर्ण जानकारी एवं ज्ञान प्राप्त किया इन सभी विद्वानों का मैं अंतःकरण से आभारी हूँ।

मेरे सभी मित्रगणों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे यह कार्य पूर्णकरने में समय-समय पर सहयोग दिया तथा सोशल मीडिया का, जैसे यूट्यूब चैनल्स, फेसबुक एवं अन्य जो भी माध्यमों से मुझे मेरे शोध कार्य को पूर्ण करने में जो भी जानकारी प्राप्त हुई है उनसभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

इस शोध प्रबन्ध से सम्बन्धित अध्ययन की प्रक्रिया के दौरान विभिन्न साहित्यों, ग्रन्थों, साक्षात्कार, पत्र-पत्रिकाएँ एवं ग्रन्थालयों के द्वारा मेरे शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरा अवर्णनीय सहयोग प्रदान किया उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ।

पं. सीताराम जी आचार्य पारंपरिक भजन गायक एवं हिन्दी साहित्य के विद्वान जिन्होंने निस्वार्थ भाव से वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को शुद्ध करने का दायित्व वहन किया है, उनका हृदय से आभारी हूँ।

कोटा विश्वविद्यालय के शोध विभाग के श्री चमन तिवारी जी का भी आभारी हूँ जिन्होंने शोध ग्रंथ के तकनीकी पक्षों से मुझे समय-समय पर अवगत कराया।

पुनः एक बार और मेरे मार्गदर्शक पथ प्रदर्शक प्रो. (डॉ.) विजयेन्द्र गौतम, संगीत विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बून्दी (राज.) के चरणों में वंदन कर ऋण भार व्यक्त करना नहीं भूलना चाहता हूँ।

इस शोध प्रबन्ध के कलात्मक एवं त्रुटि रहित मुद्रण कार्य के लिए मैं सरस्वती कंप्यूटर, तीन बत्ती सर्किल, कोटा के ऑपरेटर राजकुमार सैन का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

आभार प्रदर्शन के इस क्रम के अन्त में उन सभी गुरुजन, मेरे मित्रों, सहयोगियों एवं शुभचिंतकों आदि का जिन्होंने भी परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से मेरे इस शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरा सहयोग किया है, मैं उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

शोधार्थी
राजेश कुमार
संगीत-विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बूंदी (राज.)

प्राक्कथन

संगीत मनुष्य को प्रकृति की अनुपम देन है। मानव की उत्पत्ति के साथ ही संगीत की भी उत्पत्ति हुई, जैसे-जैसे मानव ने प्रकृति में रहना सीखा उसे भाव संप्रेषण की आवश्यकता हुई। भावों के आदान प्रदान में संगीत बहुत प्रभावशाली माध्यम है, जो कि प्राचीनकाल से मनुष्य के विकास के साथ विकास शील रहा है। संगीत की उत्पत्ति की कई धार्मिक व मनोवैज्ञानिक धारणाएं प्रचलित है।

"जेम्स लॉन्ग के मतानुयायियों का भी यही कहना है कि पहले मनुष्य ने बोलना सीखा, चलना-फिरना सीखा और फिर शनै-शनै क्रियाशील हो जाने पर उसके अन्दर संगीत स्वतः ही उत्पन्न हुआ।"[1]

"पाश्चात्य विद्वान फ्रायड के मतानुसार संगीत की उत्पत्ति एक शिशु के समान मनोविज्ञान के आधार पर हुई। जिस प्रकार बालक रोना, चिल्लाना, हँसना आदि क्रियाएं आवश्यकतानुसार स्वयं सीख जाता है। उसी प्रकार मानव में संगीत का प्रादुर्भाव मनोविज्ञान के आधार पर स्वयं हुआ।"[2]

"डॉ. कर्ट सच ने भावाभिव्यक्ति की सहायता से संगीत का जन्म कहा है"।[3]

सभी आवश्यक क्रियाओं के साथ-साथ मनुष्य को मनोरंजन की भी आवश्यकता हुई। प्रकृति से ही मनुष्य ने संगीत को ग्रहण किया तथा उसे अपने मनोरंजन, ईश्वर भक्ति आदि के लिए जीवन में शामिल किया।

वर्तमान काल में संगीत कि विभिन्न धाराएँ प्रचलित है, उनमें शास्त्रीय, सुगम तथा लोक प्रमुख है। कुछ विद्वानों के अनुसार सभी प्रकार के संगीत की उत्पत्ति लोक संगीत से मानी गई है। प्रसिद्ध गायिका शन्नो खुराना के अनुसार, "शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत एक ही वृक्ष की दो शाखाएं हैं। संगीत में इन दोनों प्रकारों की विकास दिशायें स्वतन्त्र हैं तथा दोनों ही प्रौढ़ संगीत शैलियों के दो विकसित रूप हैं।"[4]

---

[1] बसंत (2020), "संगीत विशारद", संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश, पृ.सं.13

[2] वही, पृ.सं.13

[3] सिंह, स्व.ठाकुर जयदेव (1994), "भारतीय संगीत का इतिहास" संगीत रिसर्च ऐकेडमी, कलकत्ता, पृ.सं.19

[4] खुराना, शन्नो (1995), "राजस्थान का लोक संगीत", सिद्धार्थ पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ.सं.5

वर्तमान में तीन प्रकार का संगीत- **शास्त्रीय संगीत,** जिसमें स्वर और रागों की प्रधानता रहती है तथा **सुगम संगीत,** जिसमें स्वर के साथ-साथ शब्द और भाव, जबकि **लोक संगीत** में राग, स्वर, ताल और भाव का प्राधान्य किया जाता है। लोक संगीत, जिसमें लोक का अर्थ है, जन साधारण तथा संगीत का अर्थ है गायन, वादन तथा नृत्य। अतः लोक संगीत का सामान्य अर्थ जन साधारण द्वारा जन साधारण की भाषा में गाया गया संगीत है। शन्नो खुराना कि परिभाषा मे "प्रौढ़" शब्द का प्रयोग इन कलाओं के विस्तारवादी तत्व को स्पष्ट करता है। विस्तार अर्थात फैलाव ही शास्त्रीय और लोक संगीत की आत्मा है। प्रत्येक कलाकार अपनी क्षमता, ज्ञान और कल्पना के अनुसार विस्तार देता है। शास्त्रीय संगीत में विस्तार की असीम सम्भावनाऐं हैं, जबकि लोक संगीत में इसकी निश्चित सीमा होती है। दोनों विधाओं के सांगीतिक तत्व सामान होते हुए भी उनकी प्रकृति के अनुसार ही फैलाव किया जाता है। लोक संगीत को केवल भाषा ही परिभाषित नहीं करती है अपितु फैलाव अथवा विस्तार की सीमा भी इसका निर्धारण करती है।

भारतीय समाज में संगीत की अनेक धाराएँ प्रचलित हैं। उन्हीं में से एक है- भक्ति संगीत अथवा भजन गायन। भजन गायन की विभिन्न परम्पराएँ जैसे- निर्गुणी, गोरखनाथी, वल्लभपन्थी, अष्टछाप और मधुरा भक्ति अनेक युगों से चली आ रही है। दक्षिण भारत में भजन का पारम्परिक रूप, सम्प्रदाय भजनों के रूप में जाना जाता है। लोक भजन धार्मिक विषय-वस्तु पर आधारित होते हैं। इसी प्रकार विभिन्न भक्त कवियों की रचनाओं को विभिन्न शैलियों यथा ध्रुपद, धमार, ख्याल, भजन कीर्तन आदि में गाए जाने की परम्परा प्रचलित रही है। विभिन्न राज्यों में भजन की विशिष्ट शैलियाँ प्रचलित है, जैसे- महाराष्ट्र में अभंग, बंगाल में बाउल, गुजरात के भजन, पंजाब की भेंट और शबद आदि है।

इसी प्रकार राजस्थान के सभी संभागों में गाँव-गाँव में रात्रि जागरण (भक्ति संगीत) के कार्यक्रम सामान्यतः किसी धार्मिक अथवा सामाजिक अवसर पर व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्तर पर आयोजित किये जाते रहे हैं, जहाँ एक विशेष प्रकार की भजन शैली सुनने को मिलती है। क्योंकि मैं स्वयं ग्रामीण परिवेश से सम्बंधित रहा हूँ और ऐसे अनेक आयोजनों में आमंत्रित कलाकारों को बचपन से ही सुनता आया हूँ, जिससे प्रभावित होने की वजह से मैंने संगीत को अपने अध्ययन का विषय चुना।

जब मैंने संगीत की विभिन्न शैलियों के विषय में जाना तो पाया कि इस प्रकार की गायन शैली का कहीं भी शास्त्रों में वर्णन अथवा चर्चा नहीं है। मैंने अनेक कलाकारों और संगीत विद्वानों से इस शैली के विषय में जानना चाहा परन्तु किसी से कोई स्पष्ट मत प्राप्त नहीं हुआ। कुछ ने इसे लोक, तो कुछ शास्त्रीय अथवा उपशास्त्रीय श्रेणी बताया, यहाँ तक की इस भजन शैली के सिद्ध हस्त कलाकार भी इसे कोई नाम दे पाने में असमर्थ रहे। मैंने अपने गुरु डॉ. विजयेन्द्र गौतम जी से इस शैली पर शोध कार्य करने की इच्छा प्रकट की तो उन्होंने इसे एक नाम "संवादी भजन" कहा जो मुझे भी उपयुक्त लगा। राजस्थान के ग्रामीण अन्चलों में प्रचलित इस भजन गायन पर मांड शैली का पूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने बताया कि इसे लोक संगीत की श्रेणी में रखा जा सकता है, क्योंकि इसमें शास्त्रीय संगीत के तत्वों की प्रधानता होते हुए भी लोक संगीत की सीमा का ध्यान रखते हुए विस्तार दिया जाता है। विभिन्न प्रकार के रागों और तालों के अतिरिक्त उनकी गान शैली में खटके, कण, छोटी छोटी मुर्कियाँ और मधुर तानों का प्रयोग अत्यंत आकर्षक होता है। मेरे गुरु और शोध निर्देशक डॉ. विजयेन्द्र गौतम जी के अनुसार संवादी भजन शैली राजस्थानी मांड शैली (रजवाडी) से प्रभावित है।

इस शैली में काव्य रचना उच्च कोटि की तथा सामाजिक चेतना से पूर्ण होती है। प्रायः मीरा, कबीर, सूर, तुलसी, नानक, रैदास और पारम्परिक संत कवियों की रचनाओं का प्रयोग ये कलाकार करते पाए जाते हैं। इस शैली में गायकों द्वारा भजन के माध्यम से किसी धार्मिक, सामाजिक, पौराणिक एवं महाकाव्यों की धारणाओं का वाचन भी किया जाता है, जबकि सांगीतिक पक्ष की बात करें तो उसमें विभिन्न राग और शास्त्रीय तालों के समावेश के साथ-साथ उच्च और सधी हुई गायकी का प्रदर्शन भी सुनने को मिलता है, जो सामान्तया बिना प्रशिक्षण और साधना के संभव नहीं है। इस शैली में संगीत के सभी तत्वों का समावेश होते हुए भी राजस्थान के लोक संगीत की एक विशेष मिठास या स्वर लगाव पाया जाता है, जिसे "संवादी भजन शैली" के नाम से जाना जा सकता है। संवादी से तात्पर्य स्वयं से, ईश्वर से या श्रोताओं से संवाद कहा जा सकता है।

राजस्थान के विभिन्न भजन गायकों द्वारा अपनी मधुर और चिरंजीवी हजारों रचनाओं से सिंचित इस संवादी भजन परम्परा का गहन अध्ययन और विश्लेषण, इसका संरक्षण और संवर्धन के साथ वर्तमान पीढ़ी से इसका परिचय करवाने के लिए

यह शोध कार्य किया जाना अतिआवश्यक हो जाता है, वरना आज डीजे (अत्यधिक जोर की ध्वनि) के शोर में यह परम्परा अपने अवसान की ओर अग्रसर है। संवादी भजन शैली से पूर्व राजस्थान के लोक संगीत का परिचय, विभिन्न भजन परम्पराओं का संक्षिप्त विवेचन करना उचित रहेगा।

1. लोक संगीत का परिचय

लोक शब्द का प्रयोग नया नहीं है। फिर भी इस शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में विदेशी तथा भारतीय विद्वानों में मतभेद है। इस शब्द के प्रयोग ऋग्वेद से ही मिलने लग जाते हैं। "ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में इसका प्रयोग दो अर्थों – 'देहि लोकम्' तथा 'पार्थिव' में मिलता है।"[5]

"भरत मुनि के नाट्य-शास्त्र में भी लोक-धर्म-प्रवृत्ति की चर्चा है। मतंग मुनि कृत बृहद्देशी में भी "लोकानां नरेन्द्राणां" का उल्लेख हुआ है।"[6]

"गीता का "अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः" भी लोक और वेद दोनों को स्वीकार करता है।"[7]

सम्भव है इस समय तक लोक को वेद से पृथक् करने की परम्परा चल पड़ी हो ।

लोक-कला, लोक-संगीत, लोक-साहित्य और लोक-संस्कृति जैसे शब्दों में लोक का प्रयोग आधुनिक अर्थ में ही किया जाता है अर्थात कला का लोकमय स्वरूप (इसी को देसी भी कह सकते है)। इसके इतर जो मार्गी संगीत है उसे शास्त्रों में देव लोक के योग्य ही माना है। संगीत की उत्पत्ति के सम्बन्ध में ऐतिहासिक तथ्यों का अभाव-सा है। इसका जहाँ–कहीं उल्लेख मिलता है, वह अधिकतर भावमूलक ही है, तथ्यपरक कम। इसलिए संगीत प्रेमियों को बहुधा अनुमान से ही काम लेना पड़ता है। इस संबंध की कई अनुश्रुतियाँ प्रचलित हैं परन्तु देशी संगीत की उत्पत्ति के संबंध में इतना ही पर्याप्त नहीं है। इस पद्धति का एक मात्र उपलब्ध ग्रंथ मतंग मुनि प्रणीत बृहद्देशी है । एक स्थल पर उसमें कहा गया है-

---

[5] कुमार, अशोक 'यमन' (2003) ; संगीत रत्नावली, अभिषेक पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 549

[6] चक्रवर्ती, सुमिता (2018); लोक संगीत में प्रयुक्त वाद्य यन्त्र, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ स.1

[7] वही, पृष्ठ स.1

अबलाबालगोपालैः क्षितिपालैर्निजेच्छया।

गीयते सानुरागेन स्वदेश देशिरुच्यते।।[8]

अर्थात् अबला, बाल, गोपाल तथा राजा अपनी-अपनी इच्छा से और अपनी-अपनी बोली में जो अनुराग सहित गाते हैं, वहीं देशी संगीत है। इसी प्रकार अन्यत्र यह उल्लेख मिलता है -

देशे-देशे प्रवृत्तोऽसौ ध्वनिर्देशीति संहितः।[9]

अर्थात् देशदेश में ध्वनि की यह प्रवृत्ति है, जिस कारण इसे देशी की संज्ञा प्राप्त है। शुद्ध एवं परिष्कृत भाषा के पार्श्व में जिस प्रकार देशज बोलियों का विकास होता रहा उसी प्रकार शास्त्रीय संगीत से पृथक लोक-संगीत भी फलता-फूलता रहा है। "लोक प्रभाव की दृष्टि से जैन अथवा बौद्ध युग विशेष उल्लेखनीय है। पूर्ववर्ती युग में सवर्ण हिंदुओं का ही एकाधिपत्य था। अन्य जन-समुदाय इस अधिकार से वंचित थे। वेद-गान तक का अधिकार उन्हें न था। स्तुति गान तक में बाधा थी। इस प्रकार वर्ण-भेद के आधार पर समाज बँटा हुआ था।

जैन अथवा बौद्ध धर्म के अभ्युदय के साथ-साथ उनमें भी जागृति आई और उन्हें भी अपनी प्रतिभा तथा परम्परा को नए ढंग से विकसित करने का सुयोग मिला। मेरे विचार मे यहाँ पर वर्ण- भेद शब्द का प्रयोग उचित प्रतीत नहीं होता है। जो वैदिक गायन परम्परा स्थापित थी उसके लिए कठिन साधना (जिसे आज के युग में "स्किल" अथवा "कौशल" कहते है) का अभाव था। कौशल के लिए नियमित साधना आवश्यक होती है। सामान्य लोगों की जीवन शैली अनियमित होने के कारण साधना नहीं कर पाते हैं, जबकि ब्राह्मण वर्ग मंदिरों के कारण नियमित दिनचर्या का पालन करते थे। किन्तु अब ऐसा नहीं है अब अन्य जातियों के साधनारत योग्य कलाकार शास्त्रीय संगीत के उच्च स्तर पर विराजमान है।

धर्म से युक्त संगीत भी इस प्रभाव से अछूता न रह सका। यह वर्ग विशेष की थाती न होकर सामाजिक उपयोग की कला बन गया। सिद्धों एव नाथों की वाणियों में भी संगीतात्मकता है परंतु वैष्णवी परम्परा की भगवत-भक्ति से संगीत विद्या को विशेष प्रश्रय मिला। भक्ति की इस लोकोन्मुखी धारा ने सबके लिए अपना मार्ग उन्मुक्त

---

[8] वही, पृष्ठ स.1

[9] चक्रवर्ती, सुमिता (2018); लोक संगीत में प्रयुक्त वाद्य यन्त्र, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ स. 4

रखा। भजन-कीर्तन के लिए सवर्ण-असवर्ण का प्रश्न उतना जटिल नहीं रह गया था। सभी अपने-अपने ढंग पर भजन भाव करने के लिए स्वतंत्र थे। फलस्वरूप कितनी ही भजन मंडलियाँ स्थापित हो गई। इसका एक सुफल यह हुआ कि भक्तिपरक संगीत शास्त्रीय एवं लौकिक पद्धति का संगम बना, जिसमें लोक संगीत के तत्व प्रबल वेग से उक्त प्रवाह में प्रविष्ट हुए। रास-लीला और राम-लीला जैसी नाट्य-परम्पराओं ने भी लोक-संगीत के प्रवेश पाने का मार्ग प्रशस्त किया, परंतु शास्त्रीय परम्परा का मोह तथा आकर्षण बना रहा और अवकाश पाकर वह लोक संगीत-परम्परा को उद्घृष्ट करने का अनवरत संघर्ष करती रही। इस द्वन्द्व के बीच परस्पर आदान-प्रदान होते रहने पर भी दोनों का स्वतंत्र रूप बना ही रहा। वैष्णव सम्प्रदायों के कितने ही शिष्य तथा आचार्य संगीत-विद्या के निपुण कलाकार के रूप में प्रसिद्ध हुए, जिनमें स्वामी हरिदास का स्थान उच्चतम है। इस्लाम धर्मी शासकों, सूफियों एवं कलाकारों के संपर्क से संगीत विद्या में फिर एक नया मोड़ आया, नए-नए राग-रागिनियों का प्रादुर्भाव हुआ। नए-नए वाद्य यन्त्रों का निर्माण हुआ और नई-नई नृत्य शैलियों तथा संगीत-पद्धति का जन्म हुआ। मर्सिया एवं कव्वाली आदि इन्हीं की देन है ।

मतंग मुनि के अनुसार, "अपनी-अपनी इच्छा से और अपनी-अपनी बोली में अनुराग-सहित गाने तथा अपने-अपने ढंग पर बजाने नाचने की परम्परा अनियंत्रित रूप में चलते रहने की ही सभावना है। उसे जब कभी नियंत्रित करने का प्रयास किया जाएगा, तब वह शास्त्रीय रूप तो धारण कर सकती है किंतु लोक संगीत की स्वच्छन्द परम्परा को स्थापित करने में असमर्थ ही रहेगी। नई-नई धुन और शैलियों के अवशेष स्रोत निरन्तर फूटते ही रहेंगे। क्षेत्रीय विशेषताएँ किसी-न-किसी रूप में बनी रहेगी और उनका निदर्शन भी होता रहेगा।"[10]

आत्माभिव्यक्ति मानव का स्वभाव है। मानव मन द्वारा अनुभूति के विशेष लक्षणों में जो भाव लहरी शब्द रूप ग्रहण करती है वही गीत जब स्वरों के माध्यम से प्रस्फुटित होते है यही 'लोक संगीत' कहलाता है। जन साधारण द्वारा जो परम्परागत गीत गाए जाते हैं वह 'लोक गीत' है। किसी प्रकार का शास्त्रीय बंधन न होने के कारण ये केवल अनुकरण मात्र से ही सीखे जाते है तथा मौखिक परम्परा में पूर्ववर्तियों से पश्चातवर्तियों को प्राप्त होते हैं।

---

[10] चक्रवर्ती, सुमिता (2018); लोक संगीत में प्रयुक्त वाद्य यन्त्र, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ.सं.4

इस ग्रन्थ मे जिन लोक भजनों (संवादी भजन) को शोध का विषय बनाया गया है, वह लोक संगीत होते हुए भी शास्त्रीय शैली के निकट प्रतीत होते हैं। क्योंकि इन का आधार राग है तथा राग में विस्तार अथवा फैलाव की असीमित सम्भावनायें होती है किन्तु प्रत्येक शैली अपनी सीमाऐं स्वयं निर्धारित करती है और तब ही वह एक शैली के रूप में स्थापित हो पाती है।

2. राजस्थान के लोक संगीत कि विभिन्न धाराएँ

राजस्थान तो लोक गीतों का अक्षय भण्डार है। पारम्परिक लोक गीत जिनके रचयिता का पता नहीं होता, जो पिता से पुत्र, माता से पुत्री, सास से बहु, पति से पत्नी तक गंगा की तरह प्रवाहित होते रहे हैं व मानव मन को निर्मल करते रहे हैं।

यहाँ के लोक संगीत को मोटे तौर पर दो भागों में विभक्त किया जा सकता है-

1. धार्मिक
2. सामाजिक

धार्मिक लोक संगीत में यहाँ के लोक देवताओं की स्तुति, जन कल्याण के लिए उनके द्वारा किये गए कार्यों का गान, जिसमें उनकी वीरता, बहादुरी, दया, करुणा, आदि प्रमुख है। राजस्थान के लोक देवताओं की सूची बहुत लम्बी है। महाकाव्य गाथागीत, देवनारायण भगवान, गोगाजी, रामदेवजी, पाबुजी और तेजाजी जैसे नायकों के बारे में बताते हैं। अलग-अलग जाति और संप्रदाय, क्षेत्र में विभिन्न लोक देवताओं की आराधना ही लोक भजन की श्रेणी में आते हैं। इसी प्रकार सामाजिक लोक संगीत में विभिन्न उत्सव, त्यौहार, रीति-रियाज, ऋतुएं, आदि के गीत आते हैं। राजस्थान के लोक संगीत का प्रभाव सीमावर्ती राज्यों जैसे पंजाब, गुजरात, हरियाणा, मध्यप्रदेश तक पाया जाता है और यहाँ के लोक संगीत पर इन राज्यों के लोकसंगीत का प्रभाव भी पाया जाता है।

राजस्थान में संगीतकार जातियों का एक विविध संग्रह है, जिसमें लंगा, सपेरा, भोपा, जोगी, मांगणियार, भील, नाथ, ढाढ़ी, ढोली, भांड जातियां अपने विशेष संगीत के लिए प्रसिद्ध है। इन जातियों के लोक संगीत मे विस्तारवादी तत्वों की अधिकता है जबकि सामाजिक लोकसंगीत और आदिवासी लोक संगीत में विस्तार का अभाव होता है। जैसलमेर, बाड़मेर के लंगा मांगणियारों के लोक संगीत में रागों का प्रयोग उनकी विशिष्टता है।

पारम्परिक संगीत में महिलाओं के पनिहारी गीत भी शामिल हैं, जो कि विभिन्न प्रकार के घरेलु कार्यों का वर्णन करती है, खासकर पानी और कुओं पर केंद्रित होती है, जिनमें से दोनों राजस्थान की रेगिस्तान संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। अन्य गीत विभिन्न जातियों द्वारा निभाए जाते हैं। आमतौर पर गायन आलाप के साथ शुरू होता है, जो धुन को सेट करता है और एक दोहा (दोबा) का गायन किया जाता है। बदलते मौसमों का उत्सव राजस्थान के लोक संगीत का केंद्र भी है। मानसून या फसल के मौसम के आने का उत्सव अधिकांश पारंपरिक लोक गीतों के केंद्र में है। स्थानीय लोगों की दैनिक गतिविधियों के आसपास गाने भी घूमते हैं, उदाहरण के लिए जीरा (जीर) बुवाई गीत, पोदीना आदि।

कठोर रेगिस्तान, तपता सूर्य और चट्टानी इलाके में कड़ी मेहनत के बाद जब भी वे समय निकालते हैं, नृत्य, गायन, नाटक, भक्ति संगीत और कठपुतली और अन्य सामुदायिक उत्सवों से अपनी थकान मिटाकर फिर से दिनभर कड़ी मेहनत में लग जाते है।

"पाबूजी की फड़- 14वीं सदी के लोक नायक, पाबूजी, भोपा समुदाय द्वारा सम्मानित है। फड़ या स्क्रॉल जो लगभग 10 मीटर लंबा है, पाबूजी के जीवन और वीर कर्म को उजागर करता है।[11]

(यह भी उल्लेखनीय है की पौराणिक घटनाओं का चित्रांकन उस कपड़े पर बनाकर साथ में पति और पत्नी मिलकर सुंदर संगीत मय गाथा का गायन करते हैं।)

लोक संगीत की मांड राजस्थान की सबसे परिष्कृत शैली है और राजपूत शासकों की प्रशंसा में केवल शाही अदालतों में ही गाए जाने वाली इस शैली ने एक लंबा सफर तय किया है, इसे विद्वानों ने रजवाडी लोक संगीत कि श्रेणी में रखा है। पेशेवर गायक अभी भी मूमल, महेंद्र, ढोला-मारू और अन्य महान प्रेमियों और नायकों की प्रेम गाथा गाते हैं ।

कुचामनी ख्याल, माच, तमाशा, रम्मत, नौटंकी और रासलीला जैसे प्रदर्शन भी यहाँ अत्यंत लोकप्रिय हैं। एक और पेचीदा चीज यह है कि मांगणियार और लंगा केवल दिन के विशिष्ट समय, विशिष्ट मौसमों में विशिष्ट रागों में गीत गाते हैं और

[11] चक्रवर्ती, सुमिता (2018); लोक संगीत में प्रयुक्त वाद्य यन्त्र, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ स. 77

शादियों, जन्मों आदि जैसे सभी अवसरों के लिए अलग-अलग राग और गीत आरक्षित होते हैं। राजस्थानी लोक कलाकार भक्ति लोक संगीत की कला के साथ, कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास और मीराबाई की रचनाओं के अतिरिक्त बुल्ले शाह, अमीर खुसरो के सूफी प्रेरणा से भरे गीतों का भी अपने अंदाज़ में गायन करते हैं। राजस्थान के लोक संगीत की विविधता के कारण इसे वर्गीकृत करना अत्यंत कठिन कार्य है।

राजस्थान के लोक संगीत को प्रदर्शन की दृष्टि से भी तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. **लोक शैली**: विभिन्न रागों और अलग-अलग मात्राओं की तालों और उनके ठेके पर गाये बजाए जाते हैं। यह संगीत लोक जातियों जैसे- लंगा, मांगणियार, राव भाट आदि द्वारा पारम्परिक रूप से गाये जाते है। इनके संगीत में विविधता और विस्तार होने के कारण आज विश्व पटल पर पहचान रखता है।

2. **रजवाड़ी शैली**: इसमें अनेक धार्मिक और राजाओं की प्रशस्ति की रचनायें प्रस्तुत की जाती है, जिनमे रागदारी में विभिन्न तानों और मुरकियों का प्रयोग कर गायन को विस्तार दिया जाता है, जिसका वर्णन हम लोक संगीत के परिचय में कर चुके हैं। राजस्थान की माँड गायन शैली भी विश्व प्रसिद्ध है।

3. **सामाजिक शैली**: इसमें विभिन्न पर्वों और त्योहारों के अवसर पर गाये जाने वाले गीत होते हैं।

लोक गीतों का वर्गीकरण: विभिन्न विद्वानों ने लोक गीतों को वर्गीकृत करने का प्रयास किया है। लोक गीतों का वर्ण्य विषय इतना विस्तृत एवं विशाल है कि उनको निश्चित वर्गों एवं सीमा की परिधि में बांधना असम्भव कार्य है, फिर भी विद्वानों ने इन गीतों को भिन्न वर्गों में बाँटने का प्रयास किया है।

लोक गीतों के विद्वान पं. रामनरेश त्रिपाठी ने लोक गीतों का विभाजन निम्न ग्यारह श्रेणियों में किया है :-

1. संस्कार सम्बन्धी गीत
2. चक्की और चरखे के गीत
3. धर्म गीत
4. ऋतु सम्बन्धी गीत

5. खेल गीत

6. भिखमंगों के गीत

7. मेले के गीत

8. जाति के गीत

9. वीर गाथा

10. गीत गाथा

11. अनुभव के वचन[12]

राजस्थानी लोक गीतों के पारखी सूर्यकरण पारीक ने राजस्थानी लोक गीतों का क्षेत्र विस्तार दिखाते समय उन्हें निम्नांकित 29 भागों में विभक्त किया है :-

1. देवी देवताओं और पितरों के गीत

2. ऋतुओं के गीत

3. उपवास व्रत एवं त्यौहार के गीत

4. तीर्थों के गीत

5. संस्कारों के गीत

6. विवाह के गीत

7. भाई-बहन के प्रेम के गीत

8. साली सरहज के गीत.

9. पति-पत्नी के प्रेम गीत

10. पणिहारियों के गीत

11. प्रेम के गीत

12. चक्की पीसते समय के गीत

13. बालिकाओं के गीत

14. चरखे के गीत

---

[12] शर्मा, मधुबाला (2014), हरियाणा प्रदेश के सांस्कारिक लोक गीतों का अध्ययन (शोध प्रबन्ध), पृ.11

15. प्रभाती गीत

16. हरजस राधाकृष्ण के प्रेम के गीत

17. धमाले होली के अवसर पर पुरुषों द्वारा गाये गए गीत

18. देश प्रेम के गीत

19. राजकीय गीत

20. राज दरबार, मजलिस, शिकार, दारू के गीत

21. जम्मे के गीत, वीरों, सिद्ध पुरुषों, महात्माओं की स्मृति में रखे गये जागरण को "जम्मा" कहते हैं ।

22. सिद्ध पुरुषों के गीत

23. (क) वीरों के गीत (ख) ऐतिहासिक गीत

24. (क) कव्वालों के गीत (ख) हास्य रस के गीत

25. पशु-पक्षी सम्बन्धी गीत

26. शान्त रस के गीत

27. गांवों के गीत (ग्राम गीत)

28. नाट्य गीत

29. विविध[13]

श्री मनोहर प्रभाकर ने इन गीतों का विषयानुरूप वर्गीकरण इस प्रकार किया है

1. प्रकृति सम्बन्धी लोक गीत

2. परिवार सम्बन्धी लोक गीत

3. त्योहारों व पर्वों से सम्बन्धित

4. धार्मिक पर्वों से सम्बन्धित

5. विविध विषयक[14]

---

[13] शर्मा, मधुबाला (2014), हरियाणा प्रदेश के सांस्कारिक लोक गीतों का अध्ययन (शोध प्रबन्ध), पृ.13,14

[14] शर्मा, भगवती लाल (2017); भारतीय संगीत को राजस्थान की देन (शोध प्रबन्ध) पृ. 292-293

डॉ. नरेन्द्र भानावत ने विषयों एवं उपयोगिता की दृष्टि से निम्न प्रकार वर्गीकरण किया है :-

1. बाल-बालिकाओं के गीत
2. स्त्रियों के गीत (जन्म संस्कार सम्बन्धी, विवाह सम्बन्धी, व्रत-भजन सम्बन्धी)
3. पुरुषों के गीत[15]

इन गीतों का वर्गीकरण रसों की दृष्टि से भी किया जा सकता है :-

1. श्रृंगार रस सम्बन्धी
2. वीर रस सम्बन्धी
3. शान्त रस सम्बन्धी
4. वात्सल्य रस सम्बन्धी[16]

श्री मनोहर प्रभाकर द्वारा उल्लेखित प्रकृति सम्बन्धी लोक गीतों वर्षा व फागुण ऋतु सम्बंधित गीत हैं जिनमें हिंडोला, तीज, होली, रसिया, गुड़ला आदि का वर्णन है।

परिवार सम्बन्धी लोक गीतों में विभिन्न संस्कारों के समय परिवार की स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले गीत आते हैं। ये गीत सर्वाधिक संख्या में मिलते हैं।

त्योहारों व पर्वों से सम्बन्धित लोक गीतों में मुख्य-मुख्य त्योहारों के गीत सम्मिलित हैं। इनमें तीज, गणगौर, होली, संज्जा का विशेष महत्व है। धार्मिक लोक गीतों में शान्त रस के गीत आते हैं। जिनमें ढूंढाड़ के विभिन्न देवी-देवताओं की भक्ति आराधना की गई है। इनमें भैरूजी, गणेशजी, भोम्याजी, शेडल माताजी तथा पितरों के गीत हैं। साथ ही उन महापुरुषों के गीत हैं जिन्हे लोगों ने देव तुल्य माना है। इनमें डूंग जी, जवाहरजी, तेजाजी, रामदेव आदि के गीत सम्पूर्ण राजस्थान में प्रचलित हैं। इनमें से रामदेवजी विशेष पूजित है।

विविध विषयक गीतों में बालक-बालिकाओं के क्रीड़ा गीत, हास्य रस के गीत, ख़्याल, शकुन व अंधविश्वास सम्बन्धी गीत है।

---

[15] वही, पृ. 292-293

[16] वही

3. भजनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भजन की परम्परा सभी समाजों में प्रचलित है, व्यक्तिगत रूप से भी भजन गाए जाते हैं और सामूहिक रूप से भी। व्यक्तिगत भजनों में व्यक्ति के सांसारिक विषाद और संताप की छाया प्रमुख रहती है। वह अपनी सांसारिक पराजय को भगवान के सम्मुख अभिव्यक्त करके अपना मन हल्का करता है और परमात्मा से इस संसार से छुटकारा पाने की कामना करता है। सामूहिक गीतों में विषाद की अभिव्यक्ति इतनी तीव्र नही होती, उनमें ईश्वर की महिमा और अपार शक्तियों का वर्णन विशेष होता है। विषाद की भावना तनिक व्यापक रूप लेकर सामाजिक अभावों तथा जातीय वेदना से ओतप्रोत रहती है। जिस प्रकार प्रत्येक प्रदेश में लोक संगीत कि विभिन्न धाराएँ प्रचलित है उसी प्रकार सभी प्रदेशों में वहां लोक भजनों की विशिष्ट शैलियाँ भी प्रचलित हैं।

लोक भजन एक सामाजिक प्रक्रिया है, इसलिए व्यक्ति के आह्लाद-विषाद से उसका कोई सरोकार नहीं रहता। वही आह्लाद और विषाद जब सामाजिक स्वरूप ग्रहण करता है, तभी लोक भजन की सृष्टि होती है। व्यक्तिगत दैनिक अभावों और भौतिक आह्लादों के कारण उत्पन्न गीत अपनी प्राथमिक भावात्मक स्थिति के कारण उपजकर समाप्त भी हो जाते हैं, वे अधिक समय तक जीवित नहीं रहते। परंतु वही आह्लाद और विषाद जब समाज के गहन अंतराल में पैठकर गंभीर सामाजिक आह्लाद-विषाद का स्वरूप ग्रहण करते हैं, तब लोक भजनों की सृष्टि होती है। ये गीत जब देवी-देवताओं, संस्कारों तथा अंध-विश्वासों और अंध-परम्पराओं के साथ जुड़ जाते हैं तो स्थायी तो अवश्य हो जाते हैं, परन्तु उनमें गीतों के गुण नहीं होते, केवल लकीर ही पीटी जाती है अर्थात् रचनात्मकता का अभाव रहता है। ऐसे लोक भजन बहुधा अशिक्षित और पिछड़े हुए समाज ही में अधिक प्रचलित होते हैं। अनुभवशील, परिमार्जित तथा भावनाशील समाज के पास ये नहीं जाते, इसलिए उनमें अनुरंजकता और व्यापकता गुण प्रायः नहीं होते हैं।

यह विवेचन उन भजनों का हुआ, जो लोक भजन की परिभाषा में आते हैं, जिनका व्यक्तित्व समाज में निहित रहता है और जिनके रचयिता के व्यक्तित्व की छाप उन पर नहीं होती परंतु ये रचनाओं, जो साधु-संतों और सुलझे हुए महात्माओं द्वारा रचे हुए तथा गाए हुए होते हैं इन लोक भजनों से बिलकुल भिन्न होते हैं। वे यद्यपि लोक भजनों में शुमार नहीं होते, परंतु उनके प्रचार और प्रसार को देखते हुए वे

किसी भी तरह लोक भजनों से कम नहीं। उनके द्वारा रचित गीतों में भावों की उच्चता, विचारों की गहनता तथा जीवन की गहन अनुभूति और उसका विश्लेषण विद्यमान रहता है। शब्दों तथा धुनों में हेर-फेर अवश्य हो जाता है, परंतु उनका मूल विश्लेषणात्मक आध्यात्मिक तत्त्व ज्यों का त्यों रहता है; क्योंकि उनमें परिमार्जन, परिवर्तन तथा संशोधन साधारण लोक बुद्धि के बूते से बाहर है। ये भजन अपनी गूढ़ आध्यात्मिकता और तात्विक सामग्री के कारण अमर होकर साहित्य और अध्यात्म की अमर धरोहर बन जाते हैं। ये राष्ट्रीय धरोहर के समान हैं और लोक-भजनों से भी इनका दर्जा ऊँचा है।

महापुरुषों की वाणी होने के कारण वे प्रत्येक व्यक्ति के कंठ पर आदर और श्रद्धा के कारण विराज जाते हैं। उन्हें गाते समय वे स्वरों को आत्मसात् करके गूढ़ार्थ को छोड़ देते हैं परिणाम यह होता है कि ऐसे गीतों के स्वरों व अनेक रचयिताओं की मूल धुनों से भी कहीं अधिक प्यारी और मार्मिक धुनों का आविर्भाव होता है, और इस कारण वे भजन भी लोक भजनों का स्वरूप धारण कर लेते हैं। उनके मूल रचयिताओं के मौलिक विचारों की वास्तविकता ज्यों की त्यों रहती है, रचयिता का नाम भी अक्षुण्ण रहता है, धुनें समाज की धरोहर बन जाती हैं। कबीर, तुलसी, सूर तथा मीरा के सैकड़ों गीत सामाजिक कसौटी पर चढ़कर अपनी अत्यंत मधुर धुनों के कारण लोक भजन बन गए हैं। इन भजनों की मूल धुनें अत्यंत ही प्राथमिक और एकांगी होती हैं, परंतु जनता के कंठों पर चढ़कर उनमें अपूर्व रंगों का निखार आता है। ये वास्तव में पूर्ण ज्ञान, अलौकिक बुद्धि एवं जीवन की साधना के फलस्वरूप निर्मित होते हैं और अन्ततोगत्वा पूर्णानंद, पूर्ण प्रकाश और अलौकिक ज्ञान की ही सृष्टि करते हैं। यह अनुभूति निराशा और अभावों की उपज नहीं, यह पूर्णानंद और पूर्ण ज्ञान की देन है, इसलिए ये भजन भी लोकगीतों की आनंद-प्रदायिनी श्रेणी में ही आते हैं और जीवन तथा जगत् के बीच बहुत ही सुंदर सामंजस्य पैदा करते हैं। समाज का बुद्धिजीवी पक्ष इनके शब्द, कवित्त तथा अर्थ से प्रेरणा ग्रहण करता है और भावात्मक लोक-पक्ष इनकी धुनों से प्रेरणा प्राप्त करता रहता है। सही मायने में इन भजनों का स्वर-पक्ष ही इन्हें लोकधर्मी गीतों का दर्जा देता है। लोक–मानस स्वरों को पहले पकड़ता है और उन्हें सतत् रूप देता रहता है। ऐसे गीत आज हजारों की तादाद में जनता के कंठों पर विराजमान हैं, जो रात को इकतारे पर गाँव के चौराहे तथा चौपाल में सार्वजनिक रूप से गाए जाते हैं। गीत किसी व्यक्ति, जाति, धर्म तथा समाज विशेष की धरोहर नहीं

होते, इनका दायरा बहुत ही विस्तृत तथा कभी-कभी तो समस्त राष्ट्र को छू लेता है और राष्ट्रीय गीतों का दर्जा प्राप्त कर लेता है। उदाहरण के रूप में गाँधी का वैष्णव जन, रघुपति राघव राजाराम आदि।

सगुण भक्ति के गीतों में मन्दिर, मठ तथा विशिष्ट सम्प्रदाय की भावना होती है, इसलिए उनका दायरा कुछ छोटा रहता है। निर्गुण तथा ज्ञानपक्षीय गीतों का दायरा बड़ा होता है, उनकी पहुँच किसी व्यक्ति, समाज, धर्म तथा सम्प्रदाय तक ही नहीं होती बल्कि वे सबकी धरोहर होते हैं। उनसे प्रयोक्ताओं को सर्वदा ही जीवन सम्बन्धी प्रेरणा मिलती रहती है ।

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के आधार पर इसे भारत का एक सापेक्ष विविक्त क्षेत्र (एरिया ऑफ रिलेटिव आइसोलेशन) अथवा उण्डक क्षेत्र (कुल-डी सँक) माना जा सकता है। पर्वत श्रृंखला तथा विस्तीर्ण रेतीले मैदानों से इस भू-भाग की जीवनचर्या देश के अन्य भागों से यतचकिन्चित भिन्न है। गंगा घाटी की तुलना में इसकी एकान्तिक प्रकृति इसे वैचारिक तथा क्रियात्मक दृष्टि से अत्यन्त उर्वर बनाने में सहायक सिद्ध हुई है।[17]

दार्शनिक दृष्टिकोण से राजस्थान में निर्गुणवादी भक्ति परम्परा की लोकप्रियता परिलक्षित होती है यद्यपि सगुणोपासना परम्परा समसामयिकता के आधार पर एक शाश्वत परम्परा के रूप में गतिशील थी। प्राचीन काल से इस क्षेत्र में विविध धार्मिक परम्पराओं तथा मतों सम्प्रदायों की आराधना पद्धति प्रचलित थी। पूर्व मध्यकाल एवं मध्यकाल में जैन धर्म तथा उसके अनेक सम्प्रदाय गुच्छ प्रचार-प्रसार में संलग्न थे। सिद्ध नाथ पंथियों की गतिविधियाँ प्रबल हो रही थी। सूफी मत राजस्थान के एक व्यापक क्षेत्र में फैल रहा था। अजमेर तथा नागौर इसके प्रमुख केन्द्र थे। सारांशतः राजस्थान धर्म-सम्प्रदायों एवं संतों-महात्माओं की उल्लेखनीय क्रियास्थली बन गया था।[18]

राजस्थान के भक्ति आन्दोलन ने इस क्षेत्र की संस्कृति को समृद्धता प्रदान करने में अपना योगदान किया। इन्ही के परिणामस्वरूप कला, भाषा, साहित्य तथा लोक जीवन में अधिकाधिक उन्नति संभव हो सकी और इसने एक व्यापक सृजन प्रक्रिया को जन्म दिया।

[17] शुक्ला, दिनेश चन्द्र (1992); राजस्थान की भक्ति परम्परा एवं संस्कृति, राजस्थानी ग्रन्थागार, पृ.21
[18] वही

भाषा और साहित्य के विकास में कला और कलाकारों का योगदान भी उल्लेखनीय रहा है। गेय साहित्यिक रचनाओं का गायन समाज के कम पढ़े लिखे लोगों तक भी अपना प्रभाव छोड़ता है। विभिन्न संत कवियों की रचनायें जन सामान्य को प्रभावित करते हुए लोक चेतना का कारण बनी।

राजस्थान के भजनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि जानने के लिए पूर्व मध्य काल पर दृष्टि डाले तो संभवतः राजस्थान के अंतर्गत भक्ति परम्परा प्रथमतः भागवत धर्म अथवा वासुदेव की भक्ति के रूप में लोक-संस्कृति का अंग स्वरूप प्रतीत होती है। उक्त तथ्य की पुष्टि 200 ई०पू० से 100 ई०पू० के लगभग के घोसुण्डी, वेसनगर तथा नानाघाट के अभिलेखों से होती है।[19]

परवर्ती अभिलेखों एवं अन्य प्राप्त विवरणों से राजस्थान में विविध देवी-देवताओं के प्रति भक्ति-भाव की व्यापक परम्परा निर्दिष्ट होती है। इसके अन्तर्गत "पौराणिक भक्ति परम्परा के पांचों प्रधान सम्प्रदायों- वैष्णव, शैव, शाक्त, सौर तथा गाणपत्य के लोक- उपासना के मुख्य अंग के रूप में प्रचलित होने के संकेत मिलते हैं"।[20]

तत्पश्चात् विविध सम्प्रदायों के अंतर्गत भक्ति परम्परा का विकास हुआ। इनमें प्रमुख है- वैष्णव सम्प्रदाय, शैव सम्प्रदाय, शाक्त सम्प्रदाय, सौर सम्प्रदाय, गाणपत्य सम्प्रदाय। ये संप्रदाय पांच प्रधान पारंपरिक देवताओं की भक्ति पर आधारित थे।[21]

उल्लेखनीय है की भक्ति संगीत के कार्यक्रमों में आज भी यह परम्परा जीवित है। किसी भी भक्ति संध्या के प्रारंभ में गायक पांच देवों की स्तुति भजन, दोहे अथवा संस्कृत के श्लोक के गायन से करते हैं। शोध ग्रन्थ की विषय वस्तु संवादी भजन परम्परा आज भी इसका उदहारण है। उपर्युक्त पाँच प्रधान पारम्परिक देवताओं की भक्ति के अतिरिक्त इतर देवताओं की उपासना के विषय में भी संकेत मिलते हैं।

पूर्व मध्यकाल से ही राजस्थान प्रत्येक संक्रमणयुगीन परिस्थिति में उत्तर भारत की शरणस्थली बनने की भूमिका का निर्वाह करता रहा था। समय-समय पर विविध कारणों से यहाँ आगत जनों एवं जाति-समूहों ने पुनः अपना उत्थान करते हुए सर्व

---

[19] सिंह, ओंकार नारायण एवं शुक्ला, दिनेश चन्द्र (1992); राजस्थान की भक्ति परम्परा एवं स्वरुप, राजस्थानी ग्रन्थागार, पृष्ठ स.25

[20] वही, पृष्ठ स. 25

[21] वही पृष्ठ स. 30

प्रकारेण पौरुष प्रदर्शित किया। इन सबने न केवल विभिन्न आक्रान्ता समुदायों हेतु अप्रतिम प्रतिरोध उपस्थित किए अपितु परवर्ती काल में एक अभिनव तथा बहु आयामी मिश्रित संस्कृति की परम्परा को संवर्द्धित करने की दिशा में भी सहयोग दिया। प्रदेश में आगत इन अन्यान्य जाति समुदायों की पृथक-पृथक रीति-नीतियों, रस्म-रिवाजों और आचार-विचारों के दीर्घकालिक सहवास से उत्पन्न समन्वय के परिणाम स्वरूप जो नूतन संस्कृति प्रादुर्भूत हुई वह स्वभावतः पूर्वाग्रह मुक्त थी। राजस्थान की इस नवीन संस्कृति ने सनातन भारतीय संस्कृति की मूल भावना के अनुरूप समस्त विचारों के समायोजन द्वारा नए मौलिक आदर्शों की उद्भावना की प्रवृत्ति को क्रियाशील किया। फलस्वरूप प्रदेश के लोक-मानस की सामान्य प्रकृति ही उदारता, सहिष्णुता एवं सामंजस्य पराकाष्ठा से औत-प्रोत हो गई।

''इस प्रकार मध्यकालीन राजस्थान की प्रमुखतम सांस्कृतिक विशेषता पूर्वाग्रह रहित होकर सद्गुणों की ग्रहणशील प्रवृत्ति और आचरण तथा प्रत्येक पंथ – सम्प्रदाय के प्रति श्रद्धापूर्ण दृष्टिकोण की विद्यमानता रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में बिश्नोई, जसनाथी, निरंजनी, दादूपंथी, लालदासी, चरणदासी एवं रामस्नेही आदि विभिन्न संत-सम्प्रदायों के अतिरिक्त पूर्ववर्ती सिद्धनाथ तथा लोक देवता परम्परा के प्रति भी जनमानस का समान रूप से समर्थन ,संरक्षण और श्रद्धाभाव अभिव्यक्त होता रहा है। साथ ही हरिदास, निरंजनी, दादूदयाल तथा रामचरण जैसे निर्गुण मार्गी सन्तों एवं मीरां और नागरीदास जैसे सगुण प्रेम-मार्गी भक्तों को बिना किसी भेदभाव के समाविष्ट करते हुए श्रद्धास्पद माना गया है।''[22]

मध्यकालीन राजस्थान के अन्तर्गत प्रधानतया भक्ति की चार परम्पराएं प्रचार-प्रसार प्राप्त कर रही थीं।

1. **सन्त-परम्परा**: जिसके अन्तर्गत रामानन्द परम्परा के धन्ना तथा पीपा आदि संतों के साथ जाम्भोजी, प्रणीत बिश्नोई-सम्प्रदाय, जसनाथजी प्रवर्तित जसनाथी-सम्प्रदाय, हरिदास निरंजनी के निरंजनी-सम्प्रदाय, दादूदयाल के परब्रह्म अथवा दादू-सम्प्रदाय, लालदास प्रवर्तित लालदासी पंथ तथा रामचरण प्रणीत रामस्नेही-सम्प्रदाय इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता है।[23]

---

[22] सिंह, ओंकार नारायण एवं शुक्ला, दिनेश चन्द्र (1992); राजस्थान की भक्ति परम्परा एवं स्वरूप, राजस्थानी ग्रन्थागार, पृष्ठ स. 35

[23] वही, पृष्ठ स. 31

2. **भक्त परम्परा**: इसके अन्तर्गत मीरां, चरणदास, नागरीदास आदि के अतिरिक्त निम्बार्क और वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायियों की गणना की जा सकती है। चरणदास का चरणदासी सम्प्रदाय के अन्तर्गत ही प्रख्यात भक्त कविचित्रियों-दयाबाई और सहजोबाई के विशिष्ट योगदान प्रकाशित होते हैं।[24]

3. **नाथ योगी परम्परा**: यद्यपि यह परम्परा पूर्वोक्त दोनों परम्पराओं से अधिक प्राचीन रही है। फिर भी समकालीन समग्र मत-मतान्तरों और पंथ सम्प्रदायों की साधना प्रक्रिया से सम्बन्धित रीति-नीतियों पर इसका अल्पाधिक प्रभाव अवश्य अंकित हुआ। इस प्रकार यह परम्परा अन्य परम्पराओं की धारा के साथ प्रवाहित होने के अतिरिक्त येन-केन-प्रकारेण अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाए रखने की दिशा में भी सफल रही।[25]

4. **लोक दैवता परम्परा** : प्रदेश की लोक देवता परम्परा की विषय वस्तु स्वयं में स्वतन्त्र विवेचन का बिंदु न होकर वस्तुतः पूर्वोक्त तीनों परम्पराओं के न्यूनाधिक समन्वय एवं समिश्रण परक स्वरूप की सहज उद्भावना ही प्रस्तुत करती है। जिसके अन्तर्गत न केवल सगुण भक्तों की अनुष्ठान प्रधान समर्पण एवं आस्था का अनुपम समावेश है।[26]

इनके अतिरिक्त जैन भक्ति परम्परा का भी राजस्थान में व्यापक प्रचार रहा। भक्ति संगीत के दृष्टिकोण से इसका अधिक महत्व न होकर स्थापत्य एवं चित्रकला में जैन भक्ति परम्परा का योगदान उल्लेखनीय है।[27]

इसी काल में राजस्थान में सूफी विचारधारा का प्रणयन प्रथमतः ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के इस्फ़हान (फारस) से अजमेर आगमन से माना जा सकता है।[28]

इनके अनुयायी वर्ग में मुसलमानों के अतिरिक्त हिंदू भी थे। राजस्थान में अजमेर और नागौर सूफियों के मुख्य केन्द्र थे। इसके अन्तर्गत प्रेम को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हुए ईश्वर रूपी प्रेमिका की माधुर्य भाव से उपासना पर बल दिया गया है और उस अमर सौन्दर्य की प्राप्ति प्रेम-संगीत से संभव निर्दिष्ट की गई है।

---

[24] सिंह, ओंकार नारायण एवं शुक्ला, दिनेश चन्द्र (1992); राजस्थान की भक्ति परम्परा एवं स्वरुप, राजस्थानी ग्रन्थागार, पृष्ठ स. 32

[25] वही, पृष्ठ स. 32

[26] वही, पृष्ठ स. 33

[27] वही, पृष्ठ स. 33

[28] वही, पृष्ठ स. 34

सांगीतिक दृष्टि से राजस्थान के भक्ति संगीत को पोषित करने में इस परम्परा का योगदान उल्लेखनीय रहा है। राजस्थान के लोक संगीत पर इस परम्परा का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

उक्त विवरण के सारांश रूप में यह निष्कर्ष सर्वथा समीचीन प्रतीत होता है कि राजस्थान की धार्मिक भक्ति परम्परा में अनेक विदेशी और भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का अन्योन्याश्रित अंग परिलक्षित होता है। परिणामस्वरूप इस विस्तृत क्षेत्र में धर्म और उपासना पद्धति के विविध विकास सोपानों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं को यथेष्ट लोकप्रियता प्राप्त हुई है। इस प्रदेश की भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन-शैली की सहिष्णुता एवं ग्रहणशील प्रवृत्ति ने धर्म, भाषा, कला जैसे सांस्कृतिक क्षेत्रों को भी सर्वग्राही तथा सर्वव्यापी स्वरूप में ढाल दिया।

सांगीतिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो यहाँ के संगीत में वैचित्र्य, विविधता, मनोरमता, सुरीलापन, इन्ही मिश्रित सांस्कृतिक परम्पराओं का परिणाम है। इसीलिए यहाँ का संगीत देश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में अपनी एक अलग और खास पहचान रखता है। इसी प्रकार यहाँ की भजन गायन शैली में भी अत्यधिक विविधता पाई जाती है। यहाँ प्रत्येक गाँव, जिला, संभाग स्तर पर विभिन्न प्रकार के भजनों की धारा प्रवाहित होती है, जो श्रोताओं का बरबस ही ध्यान आकर्षित करती है। इसी प्रकार की भजन शैली अथवा परम्परा जिसे हमने इस शोध ग्रन्थ में 'संवादी भजन शैली' से संबोधित किया है जो कि अपने आप में अनेक संस्कृतियों और गायन शैलियों का समन्वित स्वरूप है।

4. राजस्थान की लोक भजन परम्परा

राजस्थान की लोक भजन परम्परा का उद्गम मंदिरों को माना जा सकता है। प्रारंभ में कृष्ण भक्ति के विभिन्न सम्प्रदायों ने इस भजन परम्परा को आन्दोलन के रूप में समाज में प्रतिष्ठित किया है। "गोस्वामी विट्ठल नाथ ने 'राग- सेवा' सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए पुष्टि संप्रदाय के भक्त और संगीत साहित्य के आठ विद्वानों को नियुक्त किया। ये आठों संत 'अष्ट छाप' के संगीतज्ञ हुए जो आशु कवि होने से नए पद गाकर प्रभु को अर्पित करते थे।[29]

[29] चौधरी, प्रताप सिंह (1995); राजस्थान संगीत और संगीतकार, जयपुर प्रिन्टर्स प्राईवेट लिमिटेड, पृष्ठ स. 28

"संवत 1726 में मुग़ल शासक औरंगज़ेब ने जब बृज क्षेत्र के मंदिरों को गिराने और देव प्रतिमाओं को तोड़ने का आदेश दिया तब गोकुल और गोवर्धन के वल्लभ कुल के गोस्वामी जन गुप्त रूप से अपने सेव्य प्रतिमाओं को बृज क्षेत्र से राजस्थान में लाये"।[30]

राजस्थान के इन मंदिरों का गायन–वादन भारतीय संगीत के क्षेत्र में प्राचीन तथा प्रतिष्ठित परम्परा के रूप में विगत 300 वर्षों से चला आया है।[31]

पीढ़ी दर पीढ़ी न जाने कितने कलाकारों ने भक्ति संगीत की पुण्य धारा को राजस्थान के अनेक मंदिरों में प्रवाहित किया है। उस ज़माने में इनके संरक्षण की कोई व्यवस्था न होने के कारण आज की पीढ़ी उस परम्परा के स्वरूप से परिचित नहीं हो सकी है। इन मंदिरों की पुरानी बहियों में उन वंशानुगत गायक कलाकारों के नाम उल्लेखित है।

इन मूर्तियों को अपने निवास के लिए मकान का निर्माण करा उस भवन के एक कक्ष में मूर्ति को विराजमान किया। इन भवनों को 'हवेली' कहा गया। पूजा पद्धति में नियमित रूप से कीर्तन संगीत होने लगा आगे चल कर यही परम्परा 'हवेली संगीत' के रूप में स्थापित हुई। इनके गायक 'कीर्तनिया' तथा सहयोगी कलाकार 'झालरिया' कहलाये।[32]

प्राचीन गायक, वादक, गुणी कीर्तनकारों का समाज में सम्मान था और यह पद वंशानुगत हो गया। धीरे-धीरे इनके वंशजों में शिक्षा और अभ्यास के प्रति प्रमाद और आलस्य बढ़ता गया परिणामस्वरूप संकीर्तन की इस गौरवमयी परम्परा का ह्रास होता चला गया।

मध्यकाल का संगीत स्पष्टतः दो धाराओं में विभाजित होने लगा- 1. देवालय संगीत तथा 2. दरबारी संगीत। मंदिरों में केवल परम्परागत रागों को ही गाया जाता है। इन मंदिरों मे भजन गायकों की नियुक्ति होती है एवं उनके परिवारों के लोग ही परम्परागत रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी भजन गायन करते है।

---

[30] वहीं, पृष्ठ स. 28

[31] वही, पृष्ठ स. 29

[32] वही, पृष्ठ स. 29

इन दोनों परम्पराओं के अतिरिक्त एक और भजन परम्परा ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित थी, जिन्हें भी दो श्रेणियों मे विभाजित किया जा सकता है। एक वह जिनकी विषय वस्तु लोक देवता हुआ करते थे जिनमे प्रसिद्ध है- गोगाजी, तेजाजी, पाबूजी, रामदेवजी, हड्बूजी। इन पांच लोक देवताओं को पीर भी कहा गया है।

इसी भाव का एक दोहा भी प्रसिद्ध है-

"पाबू, हर्भु, रामदे, मंगलिया मेहा,

पांचू पीर पधारज्यो, गोगादे जेहा।।"[33]

इसके अतरिक्त अनेक राजा महाराजाओं के इष्ट एवं क्षेत्र विशेष में अनेक देवियों की स्तुति के लोक भजन भी विभिन्न गायक जातियों द्वारा गए जाते थे। इन देवियों में प्रसिद्ध है- शीतला माता, शाकम्भरी माता, शिला देवी, राणी दादी सती माता, चामुंडा माता, जीणमाता, तन्नौट माता, कैलादेवी, आशापुरा माता, करणी माता आदि।

दूसरी भजन की वह श्रेणी अथवा परम्परा जिसमें संत कवियों की रचनाओं को विभिन्न रागों में विस्तार और भाव के साथ कृष्ण भक्ति के अलावा अन्य सार्वजनिक और सामाजिक मंदिरों में रात्री जागरण के कार्यक्रमों मे प्रस्तुति होने लगी और आम नागरिक इनमे रुचि लेने लगे। इस भजन गायकी ने पूर्व प्रचलित सभी शैलियों जैसे हवेली संगीत, सूफी-कव्वाली, शास्त्रीय-ख्याल, लोक संगीत की मांड और पारंपरिक लोक धुनों का अपने में समेटते हुये एक नवीन शैली की नींव रखी जिसे आज संवादी भजन शैली का नाम दिया जा सकता है। भजन की इस शैली मे किसी विशेष देवी देवता की आराधना का प्रतिबंध नहीं था अतः जन समुदाय इनके प्रति आकर्षित होने लगा और यह भजन शैली धीरे-धीरे व्यावसायिक स्वरूप लेने लगी। इस शैली से अनेक प्रतिभा सम्पन्न कलाकारों को एक मंच मिलने लगा।

संवादी भजनों के साथ-साथ ही राजस्थान में सूफी संगीत परम्परा का भी प्रचलन रहा है। इस्लाम में संगीत को अल्लाह की इबादत में बाधक माना है वहीं सूफी परम्परा में अल्लाह को प्रेमिका मानकर कर धर्म में व्याप्त विभिन्न आडम्बरों का विरोध करते हुए गा बजाकर इबादत को महत्त्व दिया गया है। सूफी परम्परा में कव्वाली और कौल का गायन किया जाता है। भारतवर्ष में चार सूफी सम्प्रदायो में से

---

[33] शर्मा, डॉ.वसुमती एवं सांखला, डॉ. कमल किशोर (2014); राजस्थान का संत साहित्य, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर पृष्ठ स. 208

चिश्ती संप्रदाय का स्थान महत्त्वपूर्ण है जो राजस्थान के अजमेर से सम्बंधित है।" भारतवर्ष में चिश्ती संप्रदाय के प्रवर्तक ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती हैं"।[34]

19वी सदी से भक्ति संगीत प्राचीन परम्पराओं से निकल कर नवीन स्वरूप में आया। पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि राजस्थान मे विभिन्न संस्कृतियों का मिश्रण रहा है जिससे यहाँ के लोक और शास्त्रीय संगीत की शैलियों भी प्रभावित रही है। चूँकि यहाँ शास्त्रीय शैलियों के लिए गुनिजन खाना, कव्वाली के लिए चिश्ती सम्प्रदाय, लोक भजनों के लिए विभिन्न देवी देवताओं की आराधना, विभिन्न कृष्ण मंदिरों का कीर्तन संगीत तथा रजवाडो का दरबारी संगीत प्रचार में था। इसी के साथ साथ मिरासी गायक संतो के भक्ति साहित्य को शास्त्रीय रागों और तालों में रचना कर गायन करने लगे जिस पर उक्त सभी शैलियों का प्रभाव पड़ा। राजस्थान के जोधपुर, नागौर, सीकर, जयपुर, चुरू आदि क्षेत्र में भजनों की एक विशिष्ट शैली का विकास होने लगा। छोटे-छोटे ग्रामीण क्षेत्र के मदिरों में भक्ति संगीत के रात्रि जागरण कार्यक्रमों का आयोजन होने लगा परिणाम स्वरूप भजन की एक नवीन शैली जिसे इस शोध ग्रन्थ में 'संवादी भजन शैली' के नाम से संबोधित किया गया है।

वर्तमान में ऐसे भजनों की सैंकडो रचनाऐं उपलब्ध है जिन पर यहाँ की रजवाडी शैली मांड, शास्त्रीय शैली, ख्याल, सूफी-कव्वाली और लोक संगीत का प्रभाव है। वे शुद्ध रागों और शास्त्रीय तालों जैसे- एकताल, झमूरा, दीपचंदी, अद्धा, त्रिताल, आड़ा चौताल, धमार जैसी तालों में गाये जाते हैं। दर्जनों कलाकार इसी भजन शैली में प्रसिद्ध है और ये रचनाऐं जन-जन तक प्रचलित है। इस शोध ग्रन्थ में ऐसी ही सुप्रसिद्ध भजनों की रचनाओं को स्वरलिपि सहित प्रकाशित कर संरक्षित करना, उन कलाकारों के योगदान को वर्तमान पीढ़ी को उपलब्ध करवाना, उन कलाकारो से व्यक्तिगत रूप से मिलकर अप्रकाशित रचनाओं का संकलन करना है। सभी प्रदेशों में भक्ति संगीत की एक विशिष्ट गायन शैली है, जबकि राजस्थान में अभी तक इस भजन शैली को कोई नाम नही दिया गया है।

---

[34] गोस्वामी, डॉ. सुनील (2010); सूफी संगीत राग परम्परा के सन्दर्भ में, अंकित पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ स.53

शोध सार

राजस्थान के सभी संभागों में गाँव-गाँव में रात्रि जागरण के कार्यक्रम सामान्यतः किसी धार्मिक अथवा सामाजिक अवसर पर व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्तर पर आयोजित किये जाने की परम्परा है। क्योंकि मैं स्वयं ग्रामीण परिवेश में पला बढ़ा हूँ और ऐसे अनेक आयोजनों में आमंत्रित कलकारों को बचपन से ही सुनता आया हूँ जिससे मैं अत्यंत प्रभावित रहा हूँ शायद इसी वजह से मैंने संगीत को अपने अध्ययन का विषय चुना। मैंने अनेक कलाकारों और संगीत विद्वानों से इस भजन शैली के विषय में जानना चाहा, कुछ ने इसे लोक तो, कुछ ने शास्त्रीय अथवा उपशास्त्रीय शैली बताया। किसी ने मांड तो, किसी ने सूफी शैली बताया। यहाँ तक कि इस भजन शैली के सिद्ध हस्त कलाकार भी इसे भजन ही कहते है। मैंने अपने गु प्रोफेसर (डॉ.) विजयेन्द्र गौतम से इस शैली पर शोध कार्य करने की इच्छा प्रकट की तो उन्होंने इसे एक नाम "संवादी भजन" कहा जो मुझे भी उपयुक्त लगा। कुछ कलाकार इसे समाजी भजन तथा कुछ समाधि भजन से भी संबोधित करते हैं। ग्रामीण कलाकार सम्मादी भजन भी कहते हैं, जो कि संवादी शब्द का ही अपभ्रंश है। राजस्थान के ग्रामीण अन्चलों में प्रचलित इस भजन गायन पर मांड शैली का पूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। सामान्यतः भारतीय संगीत की विभिन्न रागों में जैसे- कल्याण, मांड, हमीर, केदार, सोरठ, देस, खमाज, काफी, कलिंगडा, प्रभाती, कान्हड़ा, मालकौंस, तोड़ी, मारवा, पूरिया, चारुकेशी, भीमपलासी, भैरवी, भैरव, रागेश्री, बागेश्री शिवरंजनी, भूपाली जैसी प्रमुख और प्रचलित रागों का प्रयोग किया जाता है।

इस शैली में काव्य रचना उच्च कोटि की तथा सामाजिक चेतना से पूर्ण होती है। प्रायः मीरा, कबीर, सूर, तुलसी, नानक, रैदास, मलूकदास जैसे संत कवियों की रचनाओं का प्रयोग ये कलाकार करते पाए जाते हैं। इस शैली में गायकों द्वारा इस भजन के माध्यम से किसी धार्मिक सामाजिक, पौराणिक एवं महाकाव्यों की धारणाओं का वाचन भी किया जाता है, जिसमें अनेक धार्मिक प्रसंगों का आपसी संवाद पाया जाता है। शायद इसी कारण से इस भजन शैली का सम्बोधन "संवादी" रखना उचित प्रतीत होता है।

इस शैली में संगीत के सभी तत्वों का समावेश होते हुए भी राजस्थान के लोक संगीत की एक विशेष मिठास या स्वर लगाव पाया जाता है, जिसे इस शोध ग्रन्थ में

'संवादी भजन' के नाम से संबोधित किया गया है। राजस्थान के जोधपुर, सीकर, नागौर, चुरू, जयपुर, झुंझुनू, बीकानेर क्षेत्र में इस भजन शैली का प्रचार अधिक रहा है। विभिन्न कलाकारों ने अपनी रचनाओं और विशिष्ट गायन शैली से ग्रामीण और शहरी भक्ति संगीत के रसिकों का आस्वादन करवाया है। इस भजन शैली के विशिष्ट गायकों का योगदान, उनकी अमर रचनाओं का संरक्षण एवं वर्तमान कलाकारों द्वारा इस परंपरा के निर्वहन एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता है। आज भक्ति संगीत के नाम पर अकुशल कलाकारों द्वारा शोर शराबा प्रचार में है और इस शोर में उन संगीत साधकों की अनगिनत मधुर रचनाएं विलुप्ति की कगार पर है उनका संरक्षण एवं संवर्धन आज की महती आवश्यकता हैं।

इस परंपरा के सैंकड़ो भजन गायक आज इस दुनिया में नहीं रहे लेकिन उनकी रचनायें एवं गायन शैली आज भी श्रोताओं को मंत्र मुग्ध करने की क्षमता रखती है। संवादी भजन परंपरा, इनका स्वरूप, उत्पत्ति, और विकास, इस परम्परा के संवर्धन में विभिन्न कलाकारों के योगदान तथा इन भजनों में निहित सांगीतिक एवं साहित्यिक तत्वों की विवेचना के साथ ही इनके सामाजिक महत्व को नयी पीढ़ी तक पहुँचाना इस शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य है।

सर्वप्रथम प्राक्कथन के अंतर्गत लोक संगीत का परिचय, राजस्थान के लोक संगीत की विभिन्न धाराएँ, भजनों की एतिहासिक पृष्ठभूमि को विभिन्न संदर्भों सहित स्पष्ट करते हुये राजस्थान की लोक भजन परम्परा का क्रमिक विकास, सामाजिक महत्व एवं सांस्कृतिक परिदृश्य को स्पष्ट किया गया है।

अध्ययन की दृष्टि से इस शोध कार्य को पांच अध्यायों में विभक्त किया है।

प्रथम अध्याय – राजस्थान में प्रचलित संवादी भजन परम्परा

1. उद्भव और विकास

2. साहित्यिक विवेचना

द्वितीय अध्याय – संवादी भजनों की सांगीतिक विवेचना

1. संवादी भजनों में शास्त्रीय तत्व

2. संवादी भजनों में लोक तत्व

तृतीय अध्याय – प्रचलित एवं अप्रचलित संवादी भजन

चतुर्थ अध्याय – संवादी भजन गायकों का परिचय और योगदान

पंचम अध्याय – संवादी भजनों का वर्तमान स्वरूप एवं समाज

1. आयोजन एवं प्रस्तुतीकरण

2. जनमानस पर संवादी भजनों का प्रभाव

3. संवादी भजनों में लोक चेतना

प्रथम अध्याय के अंतर्गत राजस्थान की प्रचलित संवादी भजन परंपरा के उद्भव और विकास को विभिन्न संदर्भों, इस विधा से सम्बन्धित कलाकारों, संगीत चिन्तकों और विद्वानों के आधार पर स्पष्ट किया गया है।

संवादी भजनों के उद्गम की बात करें तो भक्त कवि और गायिका मीरा बाई अर्थात् भक्ति काल से ही इस शैली का प्रारम्भमाना जा सकता है। किन्तु इसके कोई साक्ष्य प्रस्तुत करना संभव नहीं है। भक्ति काल के संत कवियों की वाणी ही इस भजन शैली का आधार रही है। अतः यही कहना उचित रहेगा की इस भजन शैली का उद्गम संवत 1500 है और जोधपुर ही इस शैली का उद्गम स्थल है।

भक्ति संगीत की मंदिर परम्परा का आरम्भ राजस्थान में 1726 के बाद ही हुआ है। यहाँ के ब्राह्मण परिवारों द्वारा कृष्ण मंदिरों की स्थापना की गई, जिनका संरक्षण राजा-महाराजाओं द्वारा किया गया। यहाँ के बहुत से राजा श्री कृष्ण के अनन्य भक्त रहे हैं। इसी परम्परा में जयपुर, उदयपुर, नाथद्वारा, बीकानेर, अजमेर, कोटा आदि के राजाओं ने मंदिरों में भक्ति संगीत जिसमें गायन, वादन और नृत्य तीनों विधाओं को परिपोषित किया।

राजा-महाराजाओं के युग की समाप्ति के बाद भक्ति संगीत कृष्णमंदिरों तक सिमट कर रह गया। धीरे-धीरे यही परम्परा हवेली संगीत के रूप में पनपने लगी। हवेली संगीत ध्रुपद गायकी का ही भक्तिमय स्वरूप है।

राजस्थान के भक्ति संगीत ने अनके रंगों से गुजरते हुए एक नये रंग में प्रवेश किया। 19वीं शताब्दी में भक्ति संगीत मंदिरों से निकल कर ग्रामीण परिवेश में पहुँच गया, जहाँ किसी प्राचीन परम्परा से भिन्न एक नवीन परम्परा के भजन गाये जाने लगे। इन भजनों में जहाँ शास्त्रीयता के साथ-साथ लोक और सूफी दोनों शैलियों का समावेश हुआ। शास्त्रीय गायकी में रागों की दीर्घ विवेचना का संक्षिप्तीकरण और लोक

गायकी के सूक्ष्म तत्वों तथा सूफी गायकी का वैचित्र्य का अद्भुत संगम इस भजन शैली के श्रृंगार बने।

साहित्यिक दृष्टि से भजनों का स्तर कहीं कम नही हुआ। संत कवियों की प्रसिद्ध रचनाओं का प्रस्तुतिकरण में ठहराव के साथ विभिन्न रागों एवं तालों में सैकड़ो बंदिशे जनमानस के हृदय पटल पर अंकित होती गई और आज भजन गायन की एक नवीन शैली स्थापित और प्रचलित होती चली गयी। प्रारम्भ में राजस्थान के जोधपुर, नागौर, सीकर, जयपुर, चुरू आदि क्षेत्र के भजनों की एक विशिष्ट शैली का विकास होने लगा जो अब राज्य के समस्त शहरों, कस्बों और गाँवों तक प्रचलित है। भरतपुर, अलवर, सवाई माधोपुर, कोटा तक इस भजन शैली का विस्तार है।

छोटे-छोटे गाँवों के मंदिरों में भक्ति संगीत के रात्रि जागरण कार्यक्रमों का आयोजन होने लगा। परिणामस्वरूप भजन की एक नवीन शैली का विकास होने लगा जिसे इस शोध ग्रंथ में 'संवादी भजन शैली' के नाम से सम्बोधित किया गया है। वर्तमान में ऐसे भजनों की सैकड़ों रचनायें उपलब्ध है, जिन पर यहाँ की रजवाड़ी शैली मांड, शास्त्रीय शैली ख़्याल, उपशास्त्रीय शैली ठुमरी, दादरा, सूफी कव्वाली और लोक संगीत का प्रभाव है। इन भजनों के गायक ख़्याल के साथ-साथ ठुमरी, दादरा और लोक भजनों को भी बखूबी प्रस्तुत करते हैं। ये भजन शुद्ध रागों और शास्त्रीय तालों जैसे- एकताल, झमूरा, दीपचंदी, अद्धा, त्रिताल, आड़ा चौताल, धमार जैसी तालों में गाये जाते हैं। कुछ कलाकार तो सामान्य प्रचलित तालों के साथ ही 9 मात्रा, 11 मात्रा, 13 मात्रा में भी भजन प्रस्तुत करने में दक्ष रहे हैं।

द्वितीय अध्याय- संवादी भजनों में शास्त्रीय तत्व और लोक तत्वों का विश्लेषण किया गया है। संवादी भजनों की सांगीतिक विवेचना के अंतर्गत इन भजनों में व्याप्त शास्त्रीय तत्व जैसे राग, ताल, गायन शैली, प्रस्तुतीकरण आदि का विवेचन और विश्लेषण कर संवादी भजनों को अन्य भजनों से भिन्न एवं नवीन शैली के रूप में स्थापित किया गया है। इन भजनों में लोक तत्वों की विवेचना के अंतर्गत भजनों की धुनों पर लोक संगीत के प्रभाव का अध्ययन किया गया जिसमें पता चला है कि अधिकतर भजन राजस्थान कि रजवाड़ी गायन शैली माँड का प्रभावित है। गायन में शास्त्रीय संगीत की तानों कि जगह इनमें छोटी-छोटी तानों और मुरकियों का प्रयोग किया जाता है। लंबे आलाप करने की जगह रचना के बोल आधारित छोटे आलाप भावपूर्ण तरीके से करते हुये पाये जाते हैं। भजन की स्वर रचनाओं में राजस्थान के

लोक संगीत से उत्पन्न रागों का प्रयोग जैसे- मांड, सारंग, सोरठ, कालिंगड़ा, देश, पीलू, पहाड़ी आदि का प्रयोग किया जाता है।

जैसा कि शोध ग्रंथ के प्रारम्भ में स्पष्ट किया गया था कि संगीत का विस्तार तत्त्व ही शास्त्रीय और लोक संगीत को पृथक्क करता है। इस दृष्टिकोण से भी संवादी भजन संगीत के सभी तत्त्वों को समाहित करते हुये भी अपना प्रथक अस्तित्व बनाये रखने में सफल है।

तृतीय अध्याय में जिन भजनों की रचनाओं को हमने इस शोध का आधार बनाया है उनका संकलन प्रस्तुत किया है। विभिन्न माध्यमों जैसे साक्षात्कार, यु-ट्यूब, आकाशवाणी, विभिन्न आयोजकों से प्राप्त ध्वनि मुद्रित एवं पूर्व शोध-ग्रन्थों में उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर प्रचलित और अप्रचलित संवादी भजनों का विश्लेषण और विवेचन किया गया है।

शोध के दौरान चार प्रकार के भजन प्राप्त होते हैं। शोध-ग्रंथ में कुल 35 रचनाएँ जो रागों एवं तालों पर आधारित है, 17 ख़याली भजन जो शास्त्रीय शैली ख़्याल पर आधारित, 20 भजन लोक धुनों पर आधारित और 13 भजन वे हैं जो राजस्थान के ब्रज क्षेत्र में प्रचलित है, का विश्लेषण कर संरक्षण और संवर्धन की दृष्टि से साहित्य और स्वरलिपि सहित संकलन किया गया है।

जिन गायक कलाकारों ने इस भजन शैली को आज तक जीवित रखते हुये अपनी प्रतिभा से पोषित और पल्लवित किया है उनके परिचय और योगदान को शोध ग्रंथ के **चतुर्थ अध्याय** में सम्मिलित किया गया है। अनेक कलाकार अब इस दुनिया में नहीं रहे लेकिन उनकी रचनाएँ आज भी जनमानस में प्रचलित है और वर्तमान पीढ़ी के कलाकार जो इस परंपरा के संवाहक के रूप में जग प्रसिद्ध हैं ऐसे 21 कलाकारों के परिचय, योगदान और साक्षात्कार द्वारा इस शोध ग्रंथ में सम्मिलित किया गया है।

शोध में ज्ञात हुआ है कि इस शैली के प्रचार-प्रसार में राजस्थान के तीन प्रमुख गायकों स्वर्गीय बाबा बिहारी जी 'कत्थक', स्वर्गीय श्री मोइनूद्दीन खान और स्वर्गीय श्री चिरंजीलाल तंवर का योगदान उल्लेखनीय रहा है जिनकी अनेकों उत्कृष्ट रचनाएँ संवादी भजनों की श्रेणी में रखने योग्य है। इन कलाकारों से पूर्व भी ऐसे गायक हुये होंगे किन्तु उस समय का कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। इनके पश्चात् भी

अनेक भजन गायकों ने अपनी प्रतिभा द्वारा इसके संवर्धन मे योगदान किया है किन्तु सभी गायकों ने उक्त तीन कलाकारों का ही अनुसरण किया है।

पंचम और अंतिम अध्याय में संवादी भजनों का वर्तमान परिदृश्य और समाज के अंतर्गत इनके आयोजन, प्रस्तुतिकरण, जनमानस पर इनके प्रभाव, लोकप्रियता के साथ साथ इन भजनों में व्याप्त जन चेतना का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। उल्लेखनीय है कि इस भजन शैली का उद्भव भजन की रात्री जागरण परंपरा के परिणामस्वरूप ही हुआ है अतः ग्रंथ में राजस्थान के विभिन्न मुख्य आयोजक और समारोहों का भी विवेचन किया गया है।

उपसंहार में प्राप्त निष्कर्षों को निम्न बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया गया है

1. संवादी भजन शैली का संबंध मूलरूप से रात्रि जागरण परम्परा से है।
2. ग्रामीण क्षेत्र में इन्हे समाजी, समाधि और पक्के भजनों के नाम से संबोधित किया जाता है।
3. यह शैली राजस्थान की रजवाड़ी गायन परम्परा मांड से प्रभावित है और ख़्याल, ठुमरी, सूफी एवं राजस्थानी लोक संगीत का मिश्रण पाया जाता है।
4. इस शैली के गायक प्रायः शिक्षित और संगीत में दीक्षित नहीं होते है।
5. भजनों के साहित्य में संत और भक्त कवियों की रचनाओं का प्रयोग ही मान्य है।
6. संवादी भजनों को चार भागों में वर्गीकृत किया है-

   अ. शास्त्रीय रागों और तालों पर आधारित

   ब. ख़्याल शैली पर आधारित

   स. लोक धुनों पर आधारित

   द. ब्रज क्षेत्र में प्रचलित
7. शोध में प्रथम प्रकार के शास्त्रीय रागों और तालों पर आधारित भजनों को ही संवादी शैली के भजन शैली माना गया है।

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु			पृष्ठ संख्या
प्रमाण-पत्र			I
घोषणा-पत्र			II
एन्टी-प्लेग्रिज्म प्रमाण-पत्र			III-V
आभार			VI-VII
प्राक्कथन			VIII-XXIX
शोध-सार			XXX-XXXV
अनुक्रमणिका			XXXVI
शब्द-संक्षिप्ताक्षर			XXXVII
चित्र-सूची			XXXVIII
प्रथम अध्याय	राजस्थान में प्रचलित संवादी भजन परम्परा		1-18
	1.1	उद्भव और विकास	1-12
	1.2	साहित्यिक विवेचना	12-18
द्वितीय अध्याय	संवादी भजनों की सांगीतिक विवेचना		19-33
	2.1	संवादी भजनों में शास्त्रीय तत्त्व	25-30
	2.2	संवादी भजनों में लोक तत्त्व	30-33
तृतीय अध्याय	प्रचलित एवं अप्रचलित संवादी भजन		34-195
चतुर्थ अध्याय	संवादी भजन गायकों का परिचय और योगदान		196-228
पंचम अध्याय	संवादी भजनों का वर्तमान स्वरूप एवं समाज		229-236
	5.1	आयोजन एवं प्रस्तुतीकरण	229-232
	5.2	जनमानस पर संवादी भजनों का प्रभाव	232-233
	5.3	संवादी भजनों में लोक-चेतना	233-236
	उपसहांर/निष्कर्ष		237-239
	सारांश		240-253
	संदर्भ-सूची		254-256
	प्रकाशित शोध-पत्र		
	सेमिनार में सहभागी प्रमाण-पत्र		

शब्द-संक्षिप्ताक्षर

संक्षिप्ताक्षर	वर्णन
प्रो.	प्रोफेसर
डॉ.	डॉक्टर
पं.	पण्डित
उ.	उस्ताद
पृ.	पृष्ठ
सं.	संख्या
ई.	ईस्वी
वि.सं.	विक्रम संवत
नं.	नम्बर
त.	तहसील
जि.	जिला

चित्र-सूची

चित्र संख्या	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.1	राजस्थान में संवादी भजन शैली के प्रभाव वाले क्षेत्र (जिले)	6
4.1	बिहारी 'कथक' प्रस्तुति देते हुए	199
4.2	स्वर्गीय मोइनुद्दीन खां साहब (सीकर वाले)	203
4.3	पं. चिरंजीलाल तंवर प्रस्तुति देते हुए	205
4.4	बनारसी लाल जी झोरी भजन संध्या में प्रस्तुति देते हुए	207
4.5	अली मोहम्मद जी के साथ शोधार्थी	208
4.6	डॉ. हनुमान सहाय जी का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी	210
4.7	जयराज गंधर्व	212
4.8	बाबूलाल भाट जी का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी	214
4.9	सांवरमल कथक प्रस्तुति देते हुए एवं साथ में शोधार्थी	215
4.10	बुन्दू खान जी कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हुए	216
4.11	मास्टर केसरीलाल गन्धर्व	217
4.12	तेजकरण राव जी	219
4.13	स्वर्गीय मुंशी खां के भाई गफ्फार खान का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी	220
4.14	श्यामलाल सर्राफ का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी	221
4.15	पंडित लखन लाल शर्मा कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुति देते हुए	222
4.16	बनवारी लाल जी सेन रियाज़ करते हुए	223
4.17	मम्मल खां साहब हारमोनियम पर रियाज़ करते हुए	224
4.18	लालू राम जी मकराना वाले कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हुए	226
4.19	राम देवी का घर पर साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी	227
4.20	लक्ष्मण द्वारका जी का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी	228
	रात्री जागरण के संवादी भजन गायकों एवं वादकों के शोधकर्ता द्वारा लिए गए साक्षात्कार के छाया-चित्र	251-253

प्रथम अध्याय

राजस्थान में प्रचलित संवादी भजन परम्परा

1.1 उद्भव और विकास

1.2 साहित्यिक विवेचना

प्रथम अध्याय

राजस्थान में प्रचलित संवादी भजन परम्परा

1.1 उद्भव और विकास -

पूर्व में राजस्थान के लोक संगीत का परिचय, लोक संगीत की विभिन्न धाराएँ, भजनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं यहाँ की लोक भजन परम्परा का अवलोकन प्रस्तुत किया। इस शोध ग्रंथ का मूल विषय यहाँ की विशिष्ट भजन शैली है, जो गाँव-गाँव, घर-घर और जन-जन में प्रचलित है। इस शैली को यहाँ हमने "संवादी भजन शैली" के नाम से सम्बोधित किया है।

संवादी भजनों के उद्गम की बात करें तो भक्त कवि और गायिका मीरा बाई अर्थात् भक्तिकाल से ही इस शैली का प्रारंभ माना जा सकता है, किन्तु इसके कोई साक्ष्य प्रस्तुत करना संभव नही है। भक्तिकाल के संत कवियों की वाणी ही इस भजन शैली का आधार रही है। अतः यही कहना उचित रहेगा की इस भजन शैली का उद्गम संवत 1500 है और जोधपुर ही इस शैली का उद्गम स्थल है। निम्न संदर्भों से इस कथन की पुष्टि की जा सकती है-

"मीरा बाई का जन्म संवत 1553 में राजस्थान की जोधपुर रियासत में मेड़ता के राठौर वंश में हुआ।"[1]

"संगीत और काव्य के समन्वय की दृष्टि से सोलहवीं शताब्दी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसी शताब्दी में जहाँ तुलसी, सूर, कबीर आदि संतों ने अपने सुमधुर भक्ति काव्य से संगीत को गौरवान्वित किया, वहीं भक्त शिरोमणि मीरा बाई ने अपने गीत एवं भक्तिमय वाणी से भारत में प्रभु भक्ति का प्रकाश फैलाया। मीरा भजनों को आज भी संगीतज्ञ भाव विभोर होकर गाते है"।[2]

"संवत 1726 में मुगल शासक औरंगजेब ने जब बृज क्षेत्र के मंदिरों को गिराने और देव प्रतिमाओं को तोड़ने का आदेश दिया तब गोकुल और गोवर्धन के वल्लभ

---

[1] चौधरी, प्रताप सिंह (1995), राजस्थान संगीत और संगीतकार, जयपुर प्रिन्टर्स प्राईवेट लिमिटेड, पृ. सं. 4

[2] वही, पृ. सं. 4

कुल के गोस्वामी जन गुप्त रूप से अपने सेव्य प्रतिमाओं को बृज क्षेत्र से राजस्थान में लाये।"[3]

उक्त कथन से यह सिद्ध होता है कि भक्ति संगीत की मंदिर परम्परा का आरम्भ राजस्थान में सन् 1726 के बाद ही हुआ है। यहाँ के ब्राह्मण परिवारों द्वारा कृष्ण मंदिरों की स्थापना की गई, जिनका संरक्षण राजा-महाराजाओं द्वारा किया गया। यहाँ के बहुत से राजा श्री कृष्ण के अनन्य भक्त रहे हैं। इसी परम्परा में जयपुर, उदयपुर, नाथद्वारा, बीकानेर, अजमेर, कोटा आदि के राजाओं ने मंदिरों में भक्ति संगीत जिसमें गायन, वादन और नृत्य तीनों विधाओं को परिपोषित किया।

इस तरह मंदिर संस्कृति की यह परम्परा एक तरफ राजदरबारों में फली-फूली तो दूसरी तरफ धर्मस्थलों तथा मंदिरों में कीर्तनियाँ, भजन गायक, पखावजी, सारंगियाँ, वीणा वादक, करताली आदि नियुक्त रहते थे। इनमें कलावंत, ध्रुपद-धमार गायक, ब्राह्मण, मुसलमान तथा अन्य जातियों के लोग भी होते थे। कई मंदिरों में मुसलमान गायक ही भक्ति संगीत के कार्य को अंजाम देते थे, जिनमें उणियारा, अन्ता के राजमंदिर प्रमुख है। कुछ राज्यों के मंदिरों में तबला 20वीं सदी में आया। इससे पूर्व पखावज, मृदंग वादन की ही परम्परा रही। दरबारी कलाकारों की भाँति मंदिरों में नियुक्त कलाकारों की भी अपनी आनुवांशिक परम्पराऐं पीढ़ी दर पीढ़ी चलती थी। यद्यपि यह भगवान की सेवा थी, किन्तु इन्हें भी मानदेय तथा अन्य सुविधायें दी जाती थी।

धर्म केन्द्र तथा धार्मिक उपदेश केन्द्र भी थे। वहाँ असंख्य जनता एकत्रित होती थी। विद्वान लोग मंदिरों में धर्म कथायें करते थे। वाद्ययंत्रों के साथ गायन होता था। राजस्थान के कुछ मंदिरों में देव-दासियाँ भी नियुक्त थी, जो देवी-देवताओं के समक्ष नृत्य-गायन करती थी। कथा तथा गीत के विषयवस्तु के भावों तथा रसों का प्रदर्शन होता था। इस प्रकार मंदिरों का वातावरण भक्तिमय बना रहता था।

राजा-महाराजाओं के युग की समाप्ति के बाद भक्ति संगीत कृष्ण मंदिरों तक सिमट कर रह गया। धीरे-धीरे यही परम्परा हवेली संगीत के रूप में पनपने लगी। हवेली संगीत ध्रुपद गायकी का ही भक्तिमय स्वरूप है। श्री कृष्ण की अष्ट प्रहर की

---

[3] चौधरी, प्रताप सिंह (1995), राजस्थान संगीत और संगीतकार, जयपुर प्रिन्टर्स प्राईवेट लिमिटेड, पृ. सं. 28

पूजा में समयानुरूप रागों में ध्रुपद शैली में पद गाये जाने लगे। कृष्ण भक्ति पर साहित्य रचना करने वाले कवियों में आठ कवियों का स्थान प्रमुख रहा है, जो कि साहित्य जगत में अष्टछाप कवि के नाम से प्रसिद्ध रहे है। इन्हीं के पद विशेष रूप से गाए जाते है। ये निम्न है- "1. कुम्भनदास, 2. परमानन्द दास, 3. कृष्ण दास, 4. सूरदास, 5. गोविन्द दास, 6. छीत स्वामी, 7. चतुर्भुज दास, 8. नंद दास।"[4]

अष्टछाप के कवि-संगीतज्ञों ने अपने समस्त पदों की रचना कीर्तन रूप में राग-रागनियों के आधार पर की है। कृष्ण भक्ति काव्य का मुख्य विषय श्री कृष्ण की विविध लीलाओं का गान करना ही है। कालिया दमन की घटना, दधि लीला या माखन चोरी, पनघट लीला, चीरहरण, रास नृत्य, राधा-कृष्ण का संयोग-वियोग आदि विषय आज भी भारत के शास्त्रीय नृत्यों विशेषत: कत्थक नृत्य की प्रस्तुति में किसी न किसी रूप में प्रत्येक नृत्यकार/नृत्यागंना द्वारा किया जाता है। कृष्ण भक्त कवि संगीतज्ञ थे अत: इनकी रचनाओं में गेयत्व विद्यमान है। इनके पद विविध राग-रागनियों में अनिबद्ध है। सूरदास, नंद दास, परमानंद दास, कृष्ण दास ने तो ध्रुपद और धमार गायन शैली का ही प्रयोग किया है।

राजस्थान का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवेश -

भारत वर्ष के पश्चिम भाग में अवस्थित राजस्थान प्राचीन काल से विख्यात रहा है। अलवर राज्य का उत्तरी भाग कुरूदेश का हिस्सा था तो जयपुर राज्य का उत्तरी भाग मध्यदेश कहलाता था। दक्षिणी भाग सपालदक्ष का हिस्सा था, तो भरतपुर, धौलपुर, करौली राज्य शूरसेन देश में सम्मिलित थे। इसी प्रकार जैसलमेर राज्य के अधिकांश भाग वल्लदेश में सम्मिलित थे, तो जोधपुर मरूदेश के नाम से जाना जाता था। बीकानेर राज्य तथा जोधपुर का उत्तरी भाग जांगल देश कहलाता था, तो दक्षिणी भाग गुर्जरत्रा (गुजरात) के नाम से पुकारा जाता था। इसी प्रकार प्रतापगढ़, झालावाड़ तथा टोंक का अधिकांश भाग मालवादेश के अधीन था। मेवाड़ जहाँ शिवि जनपद का हिस्सा था, तो डूंगरपुर-बांसवाड़ा वागॅट (वागड़) के नाम से जाने जाते थे।

---

[4] चौधरी, प्रताप सिंह (1995); राजस्थान संगीत और संगीतकार, जयपुर प्रिन्टर्स प्राईवेट लिमिटेड, पृ. सं. 28-29

"कालांतर में राजपूत जाति के वीरों ने इस राज्य के विविध भागों पर अपना आधिपत्य जमा लिया। वर्ष 1800 ई. में राजस्थान के भू-भागों पर राजपूत राजाओं की सत्ता के कारण सर्वप्रथम 'राजपूताना' शब्द का प्रयोग जार्ज थॉमस द्वारा किया गया था। अंग्रेजों ने राजस्थान के विभिन्न इकाइयों का एकीकरण कर इसका 'राजपूताना' नाम दिया। प्रसिद्ध इतिहास लेखक कर्नल टॉड ने इस राज्य का नाम "रायस्थान" रखा क्योंकि स्थानीय साहित्य एवं बोलचाल में राजाओं के निवास के प्रांत को 'रायथान' कहते थे। राजस्थान की भूमि में ऐसा कोई फूल नहीं उगा जो राष्ट्रीय वीरता और त्याग की सुगंध से भरकर न झूमा हो। वायु का एक भी झोंका ऐसा नही उठा जिसकी झंझा के साथ युद्ध देवी के चरणों में साहसी युवकों का प्रधान न हुआ हो।"[5]

राजस्थान भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य है। राजस्थान का भौगोलिक क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग कि.मी. है, जो देश के क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत भाग है। यह देश के पश्चिमोत्तर भाग में स्थित है तथा पूर्वोत्तर में पंजाब, हरियाणा व उत्तरप्रदेश, दक्षिण-पूर्व में मध्यप्रदेश एवं दक्षिण-पश्चिम में गुजरात राज्यों से घिरा हुआ है। यह पश्चिम में पाकिस्तान के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा साझा करता है। अरावली पर्वत श्रृंखला राज्य के मध्य भाग से होते हुए दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर जाती है।

भौगोलिक संरचना को देखे तो राजस्थान के दो प्रमुख भौगोलिक क्षेत्र है - प्रथम राज्य का पश्चिमी तथा उत्तर-पश्चिमी भाग मरूस्थलीय या अर्द्ध-मरूस्थलीय है और इसे ग्रेट इंडियन डेजर्ट 'थार' के नाम से जाना जाता है और दूसरा दक्षिण-पूर्वी भाग जो मैदानी व पठारी है। राज्य में विविध जलवायु परिस्थितियाँ पायी जाती है, जो कि अर्द्ध-शुष्क से लेकर शुष्क तक है।[6]

राजस्थान देश के सम्पूर्ण सांस्कृतिक परिदृश्य से भिन्न नहीं है, लेकिन खास प्रकार की भौगोलिक और राजनीतिक परिस्थितियों के कारण इसकी अपनी कुछ विशेषताएँ जरूर हैं। एकीकरण से पहले तक यह प्रदेश कई छोटी-छोटी रियासतों में बँटा हुआ था, इसलिए मेले और पर्व-त्योहार भी यहाँ कई है। इसी तरह रीति-रिवाजों

---

[5] जेम्स टॉड, https://hindi.rajras.in/rajasthan/

[6] https://hindi.rajras.in/rajasthan/bhugol/bhogolik-pradesh/

और परम्पराओं का विकास भी अलग-अलग ढंग से हुआ है। यह अवश्य है कि अब संचार के साधनों के बढ जाने से इनमें एकरूपता बढ रही है। रंग, राग, उल्लास और उत्सव राजस्थान के पर्याय हैं।

एक तरफ जीवन की बडी चुनौतियों से सतत् टकराहट और दूसरी तरफ उत्सवों, मेलों, पर्वों और त्योहारों में उस तमाम थकान और अवसाद को बहा डालने की प्रेरणादायक कोशिशें ही राजस्थान की खासियतें है।

यहाँ की रंग-बिरंगी वेशभूषा, संगीत की मधुर स्वर लहरियाँ और जीवन के आनन्द से सराबोर पर्व, उत्सव और त्योहार इन सब से मिलकर राजस्थान का मनोरम सांस्कृतिक परिदृश्य बनता है।

मूर्धन्य कवि कन्हैयालाल सेठिया ने लिखा था, "आ तो सुरगां ने सरमावै, इण पर देव रमण ने आवै, धरती धोरां री...... अर्थात् राजस्थान की रेतीली धरती तो स्वर्ग को भी लज्जित करती है और देवता भी यहाँ विचरण करने के लिए आते हैं।"[7]

राजस्थान के भक्ति संगीत ने अनके रंगों से गुजरते हुए एक नये रंग में प्रवेश किया। 19वीं शताब्दी में भक्ति संगीत मंदिरों से निकल कर ग्रामीण परिवेश में पहुँच गया, जहाँ किसी प्राचीन परम्परा से भिन्न एक नवीन परम्परा के भजन गाये जाने लगे। इन भजनों में जहाँ शास्त्रीयता के साथ-साथ लोक और सूफि दोनों शैलियों का समावेश हुआ। शास्त्रीय गायकी में रागों की दीर्घ विवेचना का संक्षिप्तीकरण और लोक गायकी के सूक्ष्म तत्वों तथा सूफी गायकी का वैचित्र्य का अद्भुत संगम इस भजन शैली के श्रृंगार बने। साहित्यिक दृष्टि से भजनों का स्तर कहीं कम नहीं हुआ। संत कवियों की प्रसिद्ध रचनाओं का प्रस्तुतिकरण में ठहराव के साथ विभिन्न रागों एवं तालों में सैंकडों बंदिशें जनमानस के हृदय पटल पर अंकित होती गई और आज भजन गायन की एक नवीन शैली स्थापित हो गई।

प्रारम्भ में राजस्थान के जोधपुर, नागौर, सीकर, जयपुर, चुरू आदि क्षेत्र के भजनों की एक विशिष्ट शैली का विकास होने लगा जो अब राज्य के समस्त शहरों, कस्बों और गाँवों तक प्रचलित है। भरतपुर, अलवर, सवाई माधोपुर, कोटा तक इस भजन शैली का विस्तार है। छोटे-छोटे गाँवों के मंदिरों में भक्ति संगीत के लिए रात्रि

[7] राजस्थान की संस्कृति व विरासत, https://hindi.rajras.in/rajasthan/sanskriti/

जागरण कार्यक्रमों का आयोजन होने लगा। परिणामस्वरूप भजन की एक नवीन शैली जिसे इस शोध ग्रंथ में 'संवादी भजन शैली' के नाम से सम्बोधित किया गया है।

चित्र 1.1 : राजस्थान में संवादी भजन शैली के प्रभाव वाले क्षेत्र (जिले)

(पीले रंग से प्रदर्शित)

वर्तमान में ऐसे भजनों की सैकड़ों रचनायें उपलब्ध है, जिन पर यहाँ की रजवाड़ी शैली, मांड, शास्त्रीय शैली-ख्याल, उपशास्त्रीय शैली-ठुमरी, दादरा, सूफी-कव्वाली और लोक संगीत का प्रभाव है। इन भजनों के गायक ख्याल के साथ-साथ ठुमरी, दादरा और लोक भजनों को भी बखूबी प्रस्तुत करते हैं। ये भजन शुद्ध रागों और शास्त्रीय तालों जैसे एकताल, झूमरा दीपचंदी, अद्धा, त्रिताल, आड़ा चौताल, धमार जैसी तालों में गाये जाते हैं। कुछ कलाकार तो सामान्य प्रचलित तालों के साथ ही 9 मात्रा, 11 मात्रा, 13 मात्रा में भी भजन प्रस्तुत करने में दक्ष रहे हैं। कभी-कभी भजन समारोहों में दर्जनों कलाकार अपनी प्रस्तुति देने पहुँच जाते हैं। दर्जनों कलाकार इसी भजन शैली में प्रसिद्ध है और उनकी रचनायें जन-जन तक प्रचलित है। इस शोध ग्रंथ में ऐसी ही सुप्रसिद्ध भजन की रचनाओं को स्वरलिपि सहित प्रकाशित करना, उन कलाकारों के योगदान को वर्तमान पीढ़ी को उपलब्ध करवाना, उन कलाकारों से

व्यक्तिगत रूप से मिलकर अप्रकाशित रचनाओं का संकलन करना आज की महत्ती आवश्यकता है। सभी प्रदेशों में भक्ति संगीत की एक विशिष्ट गायन शैली है, जबकि राजस्थान में अभी तक इस भजन शैली को कोई नाम ही नहीं दिया गया है।

जन रूचि और सामाजिक ताना-बाना सदैव परिवर्तनशील रहा है। सभी कलाएँ अपने प्रारम्भ से निरंतर परिवर्तित होती रहती है। शास्त्रीय संगीत में भी प्रबंध से लेकर ख्याल और ठुमरी से लेकर लोक शैलियाँ अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और भौगोलिक कारणों से प्रभावित होते हुए वर्तमान तक प्रवाहित होती आई है। इसी प्रकार भजन गायन में भी निरंतर बदलाव हुए हैं। कोई भी शैली अपने उद्गम के वास्तविक स्वरूप में नहीं रह पाती है। चूँकि उस जमाने में संगीत का लेखन और ध्वनि मुद्रण की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं थी, अत: यह कहना कठिन है कि मीरा का गायन किस प्रकार का था? वे गायन में किन रागों और तालों का उपयोग करती थी? साहित्यिक दृष्टि से मीरा का स्थान उत्कृष्ट रहा है, जिसका विवेचन आगे किया जाएगा।

अत: संवादी भजनों के विकास के विश्लेषण में हम उपलब्ध कलाकारों की रिकॉर्डिंग और वर्तमान में प्रसिद्ध गायकों के गायन शैली को आधार बनायेंगे। वर्तमान में प्राप्त स्वर रचनायें ही इस शैली का विकसित स्वरूप है।

सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि इस भजन शैली को संवादी भजन शैली क्यों कहा? इसका प्रारम्भ कब से और इसका किन-किन क्षेत्रों में विस्तार है? किस प्रकार के भजनों को संवादी शैली कहेंगे? तथा इसका वर्तमान और भविष्य कैसा है?

संवादी भजन एक ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित शैली होते हुए भी इस का प्रमाण है कि ग्रामीण नागरिकों की सांगीतिक समझ और ज्ञान कम है परन्तु वे रागों पर आधारित रचनाओं को सुनना चाहते हैं। मैंने बाल्यकाल से इस प्रकार के अनेक कार्यक्रम देखे और सुने हैं। इन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कलाकार प्राय: संगीत में प्रशिक्षित ना होकर भी सुन-सुन कर अपनी प्रतिभा की बदौलत गायक बन जाते हैं।

संवादी भजन का सम्बन्ध मूलरूप से भजन की जागरण परम्परा है। इसी परम्परा में इस भजन शैली और कलाकारों का पोषण हुआ। "जयुपर के भजन गायक पंडित हनुमान सहाय के अनुसार जागरण घरों, मठों में सब जगह किये जाते हैं। रात्रि को जाग कर केवल ईश्वर भजना करना जागरण कहलाता है। वर्तमान में जागरण

कलाकारों की रोजी-रोटी का महत्वपूर्ण संसाधन है। उन्होंने बताया कि पहले लोग जागरण में समयानुकूल राग-रागिनियों में भजन गाया करते थे, धीरे-धीरे यह परम्परा अब समाप्त होती जा रही है। शुद्ध राग-रागिनियों में केवल संत-कवियों की पदावली का गायन किया करते थे। आपने इस शैली को 'समाजी भजन' कहा है।"[8]

आकाशवाणी के 'अ' श्रेणी के भजन गायक और इस शोध के पर्यवेक्षक डॉ. विजयेन्द्र गौतम ने बताया कि रात्रि जागरण के कार्यक्रमों की बदौलत ही उनका रूझान संगीत विधा की ओर हुआ। उनके पिताजी की संगीत में विशेष रूचि होने के कारण प्रति वर्ष एक रात्रि जागरण का कार्यक्रम आयोजित करते थे, जिनमें अनेक स्थानीय कलाकार अपनी प्रस्तुति देने हेतु उपस्थित होते थे। सवाई माधोपुर के सपोटरा तहसील के स्व. पंडित राधेश्याम शर्मा इन भजनों के निपुण कलाकार थे। वे रामलीला एवं नौटंकी में हारमोनियम भी बजाते थे। डॉ. गौतम ने बताया कि पंडित राधेश्याम शर्मा इन जागरण कार्यक्रमों में जो भजन गाए जाते थे, उन्हें 'समाधि भजन' कहते थे, जो शायद संवादी का ही अपभ्रंश रहा होगा। ग्रामीण श्रोता इन्हें 'पक्के भजन' भी कहते हैं।

शोधकर्ता ने राजस्थान के अलग-अलग क्षेत्रों में भ्रमण कर अनेक जागरण कार्यक्रमों में उपस्थित होकर तथा विभिन्न वर्तमान गायकों से चर्चा की जिससे ज्ञात हुआ की अलग-अलग क्षेत्रों में भजन गायन की शैली अलग-अलग होती है। भरतपुर, अलवर, सवाई माधोपुर, कोटा क्षेत्र अथवा हाड़ौती और भरतपुर संभाग में एक जैसी शैली का प्रयोग मिलता है। यहाँ इन्हें पक्के और समाधि भजनों के नाम से सम्बोधित करते है। प्रायः 10-12 रागों का प्रयोग किया जाता है। मुख्यतः कल्याण, बिहाग, सोरठ, कालिंगडा, प्रभाती, काफी, खमाज और मालकौंस रागों में भजन गाया करते थे। यहाँ के भजनों पर ब्रज के लोक संगीत का प्रभाव दिखाई देता है। यह भी उल्लेखनीय है कि यहाँ भजन साहित्य तो कृष्ण भक्त बिन्दु जैसे भक्त कवियों की रचनाएँ है, किन्तु उनकी गायकी उत्तरप्रदेश की ग़ज़ल और कव्वाल शैली से प्रभावित है। उदाहरण स्वरूप एक अत्यंत प्रसिद्ध "रचना नाना री भाँति नचायो....।" यह रचना कव्वाली के अंदाज में प्रस्तुत की जाती है, गायक प्रारंभ में दो से चार दोहे ईश्वर स्तुति में गाता है, उसके पश्चात् टेर अर्थात् स्थायी का गायन प्रारम्भ करता है सभी साथी गायक उसी टेर का दोहरान करते हैं।

---

[8] पं. हनुमान सहायक जी के साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

संवादी भजनों में परम्परा के अनुसार सर्वप्रथम पाँच देव गणेश, शंकर, दुर्गा, ब्रह्मा, विष्णु की स्तुति एक ही राग (धुन) में किया करते थे। इसी प्रकार लोक भजनों में भी प्रारम्भ में पाँच लोक देवताओं की स्तुति करने की परम्परा है।

संवादी भजन परम्परा के अन्तर्गत रात्रि के प्रथम प्रहर में कल्याण बिहाग और द्वितीय प्रहर में मालकौंस, देस, सोरठ तथा अंतिम प्रहर में कालिंगडा, प्रभाती, भैरवी आदि रागों का प्रयोग करते है। एक ही राग में पाँच-पाँच पदों की प्रस्तुति एक के बाद एक गाते हैं। मुख्य गायक के साथ अन्य गायक टेर लगाने का काम करते है। गायन का स्वर प्रायः मध्यम लेते हैं तथा टेर में उसी के तार सप्तक के मध्यम और पंचम का प्रयोग किया जाता है। कोई गायक प्रशिक्षित नहीं होता है, शायद इसलिए ऊँचे स्वरों में गायन को प्राथमिकता रखते थे। स्वर वाद्यों में केवल हारमोनियम का प्रयोग किया जाता है।

ताल वाद्यों में तबला अथवा ढोलक, मंजीरा और झांझ खंजरी प्रमुख होते हैं। मंजीरे की 4-5 जोड़ियाँ होती है जिसे मंडली के कोई भी कलाकार या श्रोता बजाने लगते है। तालों में प्रायः कहरवा और दीपचंदी का प्रयोग अधिक होता है। मध्यलय में भजन का प्रारंभ करते हैं और प्रत्येक अंतरे के बाद दुगुन और लग्गी जिसमें अन्य कलाकार टेर लगाते रहते हैं, अंत में एक विशेष तिहाई से अंतरे का समापन करते हैं। सभी कलाकारों की रचनायें प्रत्येक कार्यक्रम में एक जैसी ही होती है।

हाड़ौती के कोटा के गायक कलाकार ज्यादा उत्कृष्ट माने जाते हैं। यहाँ अनेक प्रसिद्ध भजन कलाकार हुए हैं और शुद्ध रागों में भजन गायन करते हैं, परन्तु हाड़ौती में जागरण वहाँ की लोक शैली में भजनों का प्रचलन अधिक है। हाड़ौती के भजन गायक मूलतः कोटा दरबार से सम्बन्धित होने के कारण मांड अंग से भजन गाते हैं। हाड़ौती के भजन गायक प्रायः ढोली, राव जाति के कलाकार होते हैं, जो सुरीले और प्रतिभाशाली होते हैं।

जयपुर के हनुमान सहाय ने इन्हें 'समाजी भजन' से सम्बोधित किया है। शायद उनका तात्पर्य मंच के अतिरिक्त सामाजिक कार्यक्रमों में गाये जाने वाले भजनों से रहा है। सवाई माधोपुर के ही बनस्थली शिवाड क्षेत्र के प्रसिद्ध जागरण भजन गायक स्व. बजरंग कुमार केवल तुलसीदास जी की विनय पत्रिका के पदों को समयानुकूल राग-रागिनियों में प्रस्तुत करते हैं।

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में संवादी भजनों के स्वरूप में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। इसी प्रकार जयपुर में भी भजन की जागरण परम्परा अत्यंत प्रचलित है। यहाँ के राजा-महाराजा भजनों के रचयिता और गायक भी रहे है। यहाँ के भजनों में भी मांड शैली का प्रभाव दिखाई देता है। सुप्रसिद्ध तबला वादक दशरथ जी ने एक भजन भगवान शंकर का बताया है जो यहाँ के राजा मानसिंह जी की रचना है और वे स्वयं इसका गायन भी करते थे। यह प्रसिद्ध रचना 'रंगीला शम्भू गौरा न ले पधारो प्यारा पावना....,' राग पीलू में मांड अंग से गायी जाती है। इसकी स्वर रचना शोध ग्रंथ के पृ.सं. ९४ पर है।

जयपुर में बहुत से मुस्लिम कलाकार इस प्रकार के भजन गायन में अत्यधिक निपुण रहे है। जयपुर के अहमद खाँ साहब की भजन गायन में मांड और ठुमरी शैली का मिश्रण होता था तथा रागदारी अनेक भजन जैसे- मदन गोपाल शरण तेरी आयो...., बृज के बिरही लोग विचारे...., कौन पढ़े मोरी पाती....., काफी लोकप्रिय थे।

इस प्रकार जयपुर की तरफ इन भजनों में मांड और ठुमरी अंग की प्रधानता रहती है। यहाँ के स्व. पंडित चिरंजी लाल जी भजन गायक होने के साथ-साथ ठुमरी के भी सिद्धहस्त गायक रहे हैं। राग की शुद्धता और गायन शैली में मांड और ठुमरी का मिश्रण इन्हे लोकप्रिय गायकों की श्रेणी में खड़ा कर देता है, क्योंकि इस शैली के श्रोता बहुत अधिक शास्त्रीय के स्थान पर उपशास्त्रीय को पसंद करने वाले होते हैं। चिरंजी लाल जी की अनेक रचनायें जैसे- रागेश्वरी राग में "झनक श्याम की पेंजनियाँ.....", राग शिवरंजनी में "प्रभु मोरे अवगुण चित ना धरो.....", आज भी अत्यधिक प्रचलित है। इसी प्रकार भजन गायक स्व. मोईनुद्दीन खाँ भी जागरण परम्परा में अत्यधिक प्रसिद्ध कलाकार रहे है, जिनके भजनों में सूफी गायन शैली का प्रभाव उन्हे एक अलग कलाकार के रूप में पहचान दिलाते है। इनके अनेक भजन जैसे- "मैं अपने राम को रिझाऊ.....", राग भीमपलासी- "मन लगो मेरो यार.....," राग जन्सम्मोहिनी- "अब मोरी राखो लाज हरि......," राग पुरिया धनाश्री में अत्यंत लोकप्रिय है। इसी प्रकार और बहुत सी भजन रचनायें जनप्रिय है।

जयपुर, सीकर के बाद सुजानगढ़, चुरू, झुझुनू, बीकानेर, नागौर क्षेत्र में भजन के अनके कलाकार प्रसिद्ध हुए है, जिन्होंने राजस्थान ही नहीं अपितु फिल्म जगत में भी अपने संगीत से पहचान बनायी है। बिदासर के बिहारी कत्थक, बीकानेर के अली-गनी मोहम्मद आदि ने भी भजन के क्षेत्र में बहुत नाम कमाया। बिहारी जी की

गायकी में ठुमरी ख्याल और मांड का मिश्रण उन्हें अन्य गायकों से भिन्न बनाता है। उनकी सुप्रसिद्ध रचनाओं में "छड़ी मारो न श्याम मोहे लग जाएगी.....", "कृष्ण भजू या राम.....", "सांवरियों जादू कर गयो....." जैसी रचनाऐं अत्यधिक प्रसिद्ध है। ऐसे हजारों गायक कलाकार हुए है जिन्होंने इस भजन शैली में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। राजस्थान के अनके कलाकार फिल्म जगत में भी अपना स्थान बनाये हुए है। जैसे- खेमचंद प्रकाश, के. पन्नालाल, दिलीप सेन-समीर सेन आदि प्रमुख है।

संवादी भजन शैली के उद्भव के विषय में विचार वर्तमान में उपलब्ध कलाकार एवं उनकी रचनाओं के आधार पर किया जाये तो लगता है यह शैली बहुत पुरानी नहीं है। 18वीं सदी में ग्रामीण क्षेत्र के मंदिरों में जागरण परम्परा के प्रारम्भ से माना जा सकता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि संवादी-भजन शैली अब से लगभग 200 वर्ष पुरानी है, ऐसा मेरा मानना है।

उपरोक्त विवेचन में यह स्पष्ट हुआ है कि राजस्थान में भजन परम्परा का आश्रय जागरण कार्यक्रमों से ही संभव हुआ है तथा यहाँ की भजन गायन को साहित्यिक दृष्टिकोण से निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है -

1. पौराणिक विषय-वस्तु (घटनाओं) पर आधारित भजन।
2. धार्मिक लोक-कथाओं पर आधारित लोक भजन।
3. संत-कवियों की वाणी को गाए जाने वाले भजन।

कुल मिलाकर राजस्थान की भक्ति संगीत परम्परा में भजनों की जागरण परम्परा भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न है। ये सभी संवादी भजनों की श्रेणी में रखे जा सकने वाली अत्यंत समृद्ध परम्परा है, जिसका संरक्षण एवं संवर्धन अति-आवश्यक हो गया है। वर्तमान में इस जागरण परम्परा का स्वरूप अत्यंत विकृत हो गया है, जिसमें डीजे यानी इलेक्ट्रॉनिक वाद्ययंत्र और उनका कानफाड़ू संगीत अपना स्थान बनाता जा रहा है, जिससे की राजस्थान की यह समृद्ध भजन परम्परा विनाश के कगार पर है। सभी संगीत संस्थाओं और आयोजकों को इस और ध्यान देना चाहिए तथा इसके संरक्षण एवं संवर्धन के प्रयास आवश्यक है।

शोधकर्ता ने इस विषय में वर्तमान में उपलब्ध विभिन्न प्रसिद्ध भजन और शास्त्रीय कलाकारों, व्यावसायिक गायकों और शिक्षाविदों से साक्षात्कार किया है। साक्षात्कार में प्राप्त तथ्यों के आधार पर उक्त प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयास

किया है। साथ ही इस दौरान इस विषय पर प्राप्त विभिन्न पुस्तकों और शोध ग्रंथों का गंभीरता से अवलोकन किया गया है।

जैसा कि प्राक्कथन में बताया गया है कि पूर्व मध्यकाल से ही राजस्थान प्रत्येक संक्रमणयुगीन परिस्थिति में उत्तर भारत की शरण-स्थली बनने की भूमिका का निर्वाह करता रहा था। समय-समय पर विविध कारणों से यहाँ आगत जनों एवं जाति समूहों ने पुनः अपना उत्थान करते हुए सर्व प्रकारेण पौरूष प्रदर्शित किया। इन सबने न केवल विभिन्न आक्रांता समुदायों हेतु अप्रतिम प्रतिरोध उपस्थित किए अपितु परवर्ती काल में एक अभिनव तथा बहुआयामी मिश्रित संस्कृति की परम्परा को संवर्द्धित करने की दिशा में भी योगदान दिया। प्रदेश में आगत इन अनन्य जाति सुमदायों की पृथक्-पृथक् रीति-नीतियों, रस्म-रिवाजों और आचार-विचारों के दीर्घकालिक सहवास से उत्पन्न समन्वय के परिणामस्वरूप जो नूतन संस्कृति प्रादुर्भूत हुई वह स्वभावतः पूर्वाग्रह मुक्त थी। राजस्थान की इस नवीन संस्कृति ने सनातन भारतीय संस्कृति की मूल भावना के अनुरूप समस्त विचारों के समायोजन द्वारा नए मौलिक आदर्शों की उद्भावना की प्रवृति को क्रियाशील किया। फलस्वरूप प्रदेश के लोक-मानस की सामान्य प्रकृति भी उदारता, सहिष्णुता एवं सामंजस्य परकता से ओत-प्रोत हो गई।

1.2 साहित्यिक विवेचना -

संवादी भजनों में प्रयुक्त साहित्य केवल श्रुति परम्परा से ही प्रचार में आया है। वर्तमान में उपलब्ध संत-साहित्य मूल रचना से परिवर्तित हो गया है। संवादी भजनों के साहित्य में प्रमुख संत कवि निम्नानुसार है -

मीरा, सूरदास, तुलसीदास, रैदास, कबीर, नागरीदास, ब्रह्मानंद, नरसी, नाथ गुलाब, चन्द्रसखी, ललिता दासी, नारायणदास, कुम्भनदास, परमानंद दास, चतुर्भुज दास, गोविन्द स्वामी, नंद दास, कृष्ण दास, रसखान, रहीम, कवि गंग, बीरबल, होलराय, नरहरी बंदीजन, नरोत्तम दास स्वामी आदि कवियों की रचनायें गायी जाती है।

साहित्य में भी संत-साहित्य की महिमा कुछ और ही है। राजस्थान के संतों में मीरा का विशेष स्थान रहा है। मीरा के भजन जितने लोक शैलियों में प्रसिद्ध है उतने ही शास्त्रीय और संवादी भजन गायकों में भी। मीरा की रचनायें हिन्दुस्तानी संगीत

की समस्त शैलियों ध्रुपद से लेकर भजन तक में अत्यंत लोकप्रिय है। संवादी भजनों में तो सर्वाधिक रचनायें इनकी ही प्राप्त होती है।

"मीरा का साहित्य प्रेम का शास्त्र है। शायद शास्त्र कहना भी ठीक नहीं। नारद ने भक्ति सूत्र कहे, वह शास्त्र है। वहाँ तर्क है, व्यवस्था है, सूत्रबद्धता है। वहाँ भक्ति का दर्शन है। मीरा स्वयं भक्ति है। इसलिए आप वहाँ रेखाबद्ध तर्क न पा सकेंगे। वहाँ एक हृदय में कौंधती हुई बिजली है। जो अपने आशियाने को जलाने को तैयार हो, उन्हीं की वहाँ संगति बैठ सकती है। मीरा का काव्य, काव्य कम है, अपितु संगीत ज्यादा है। संगीत ही केवल भक्ति का शास्त्र हो सकता है। तर्क ज्ञान का शास्त्र बनता है।"[9]

"संगीत भक्ति का शास्त्र बनता है। सत्य की खोज ज्ञानी करता है। भक्त सत्य की खोज नहीं करता सौन्दर्य की खोज करता है। भक्त के लिए सौन्दर्य ही सत्य है। ज्ञान कहता है, सत्य सुन्दर है। भक्त कहता है, सौन्दर्य सत्य है।"[10]

"मीरा में भक्ति की सहज उद्भावना है। भक्त और भी हुए हैं पर सब मीरा से पीछे छूट गये। एक बात और बुद्ध पर बोलना आसान है, महावीर पर बोलना आसान है, कृष्ण पर बोलना आसान है पर मीरा पर बोलना कठिन है। मीरा गुनगुनायी जा सकती है, मीरा गायी जा सकती है, मीरा नाची जा सकती है पर मीरा पर बोलना कठिन है।"[11]

मीरा कृष्ण के प्रेम में दीवानी हो गई। इसलिए मीरा दीवानी पर यह चर्चा सुहानी। पहले मीरा घर में नाचती, फिर मंदिर में, फिर गाँव-गाँव, फिर साधु-संतों में और वह भी लोक लाज खोकर।

पाँच सौ साल पहले की बात, जहाँ राजस्थान में कोई स्त्री घूंघट के बिना बाहर नहीं आ सकती थी, वहाँ मीरा का रास्तों पर नाचना राजपरिवार के लिए कितनी कठिन एवं अपमानजनक बात रही होगी। वह नाच परमात्मा के लिए था। हालाँकि घर के लोगों के लिए वह नाच, नाच नहीं था।[12]

---

[9] शर्मा, डॉ. वसुमती एवं सांखला, डॉ. कमल किशोर (सम्पा.) (2014), राजस्थान का संत-साहित्य, राजस्थान प्राच्य विद्यापीठ, जोधपुर, पृ.सं. 13

[10] वही, पृ.सं. 13

[11] वही, पृ.सं. 14

[12] वही, पृ. सं. 15

मीरा का काव्य एक शाश्वत का अमृत रस है या यों कहे -

"ऐसा बरसे रंग यहाँ पर, जन्म-जन्म तक मन भीगे।

फागुन बिना चदरिया भीगे, सावन बिना भवन भीगे।।"[13]

इसी प्रकार कबीर का साहित्य भी भजन गायन की सभी शैलियों में प्रमुखता से पाया जाता है। चाहे वह शास्त्रीय, सूफी, लोक या अन्य कोई भी शैली क्यों न हो। कबीर के भजनों में राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी महत्वपूर्ण है, जो की यहाँ के भक्ति संगीत में लोकप्रिय होने का प्रमाण है। उदाहरण के लिए- मनरे मते मत चाल....., जल केरी बूंद पवन कर ताम्बा रामा नाम लिया निस्तारो रे....., जोबन धन पावणा दिन चारा....., भजन बिन कठे बतावेला मुंडो..... आदि।[14]

राजस्थान के क्षेत्र में पनपी अनेक संत परम्पराओं को उपर्युक्त धारा से अलग नहीं किया जा सकता। संत तो सदा से ही घुमक्कड़ रहे है, अतः प्रदेशों की सीमा में बाँधना उनके साथ अन्याय है। निश्चय ही भक्ति आंदोलन से प्रभावित होकर अनेक सम्प्रदाय यहाँ पनपे, जिनकी सामाजिक बदलाव की महत्ती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। दादू पंथ, विश्नोई सम्प्रदाय, लालदास सम्प्रदाय, चरणदासी सम्प्रदाय, जसनाथी सम्प्रदाय, रामस्नेही, निरंजनी, दरियापंथ ने राजस्थान के समाज में शांतरस, वैराग्य, निर्वेद आदि की भावभूमि अपना कर पूजा, सेवा, भक्ति आदि के स्थान पर ज्ञान, आचरण एवं मानवसेवा संबंधी समता, सहजता, सदाचार, अहिंसा, दरिद्रनारायण का सहयोग आदि मूल्यों की एक सुदृढ़ भित्ति तैयार की। राजस्थान में जन-साधारण का जन-जीवन आज भी उपर्युक्त संत परम्पराओं से लाभ उठाकर अपने को धन्य समझता है।

दादू पंथ का राजस्थान में पूर्ण प्रभाव रहा है तथा कबीर की भाँति दादू पंथ अधिक उग्र तो नहीं रहा पर अधिकतर उन्हीं मानव मूल्यों को अपना कर इस पंथ के संतो ने समाज को स्थायित्व प्रदान किया। दादू के अतिरिक्त जहाँ सुन्दर दास जैसे संत भी इसमें हुए तो रज्जब जैसे मुस्लिम संतों ने भी इसे अपना कर हिन्दू-मुस्लिम एकता को दृढ़तर किया।

अलवर के लालदास जी मेव जाति से थे। उन्होंने साम्प्रदायिकता के खिलाफ जेहाद छेड़ा और हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए जबरदस्त प्रभाव छोड़ा। मेव एवं हिन्दू

[13] वही, पृ. सं. 18

[14] वही, पृ. सं. 19-25

आज भी समान रूप से उनकी आराधना करते है तथा उनके बताये मार्ग का अनुसरण करते हैं।

आधुनिक समय में वन्य जीवन एवं पर्यावरण संरक्षण की जोरदार बहसें चल रही है, मध्यकाल से लेकर आज तक विश्नोई सम्प्रदाय वन्य जीव एवं पेड़ों के प्रति गहरा लगाव रखता है। 'चिपको आंदोलन' का प्रारंभ विश्नोई समाज से ही मानना चाहिए क्योंकि इस सम्प्रदाय के सैंकड़ों नर-नारियों ने पेड़ों की रक्षा के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। वन्य जीव हिरण, खरगोश, नीलगाय आदि विश्नोइयों के गाँवों में निर्भय विचरण करते हैं।

राजस्थान में उपर्युक्त संत परम्परा ही नहीं वरन् सूफी संतों की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं रही है। हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रयासों की सफलता यहाँ के संतों, पीरों में सहज ही टटोली जा सकती है। ख्वाजा साहब की दरगाह पर हिन्दू-मुस्लिम समान रूप से मत्था टेकने जाते हैं तथा मनौतियाँ माँगते हैं। यही स्थिति गुरूद्वारों एवं परनामी मंदिरों की है।

क्या ऐसे समय में इस अंधे संदर्भ में संतों की वाणी प्रासंगिक नहीं है ? मैं समझता हूँ मध्यकालीन संत परम्परा हमें सही दिशा दे सकती है। इसका सही अध्ययन और इसकी सही समझ आज के संदर्भ में और अधिक जरूरी हो गई है क्योंकि कबीर कह गये है -

"कंकर पत्थर जोड़ कर, मस्जिद लई बनाय।
तामें मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।
दुनियाँ कैसी बावरी, पत्थर पूजन जाय।
घर की चकिया कोई न पूजे, जिसका पीसा खाय।।"[15]

राजस्थान भारत का सर्वाधिक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक प्रदेश रहा है। इसके गौरव का श्रेय यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों के साथ ही यहाँ के राजा-महाराजाओं को भी जाता है। अपने राजसी ठाठ के साथ इन्हें अपने धार्मिक अनुष्ठानों, मान्यताओं के संपादन का भी पूरा अहसास था। धार्मिक प्रवृतियों को ये सार्वभौमिक और सार्वजनिक मानते थे। इसलिए अपनी राज्य सीमा में आये भक्तों एवं संतों का

[15] शर्मा, डॉ. वसुमती एवं सांखला, डॉ. कमल किशोर (सम्पा.) (2014), राजस्थान का संत-साहित्य, राजस्थान प्राच्य विद्यापीठ, जोधपुर, पृ. सं. 51

उन्होंने भरपूर सम्मान किया। उनके जीवनयापन के लिए जागीरें एवं नकद राशि दी तो उनके आवास-निवास हेतु मठ, मंदिर, स्थलों आदि का निर्माण भी करवाया। उनके धार्मिक आदर्शों को संरक्षित किया। राजस्थान में दादू सम्प्रदाय के भजन सत्संग इनकी साहित्यिक विशेषताओं के कारण इनके अनुयायियों में बहुत लोकप्रिय है। आज भी अनेक गायक बहुत सुंदर रचनाओं का गायन करते हैं जिन्हें हम संवादी शैली के अंतर्गत रख सकते हैं।

"राजस्थान के संत सम्प्रदायों में दादू सम्प्रदाय सबसे बड़ा सम्प्रदाय कहा जा सकता है। इस सम्प्रदाय को राजस्थान की प्रायः सभी रियासतों में संरक्षण मिला। उदयपुर के महाराणा भीमसिंह जी ने गाँव सोभागपुरा में दस बीघा और ग्राम मदार में दस बीघा का अनुदान दादू पंथी साधुओं को दिया। जनानी ड्योढ़ी की ओर से भी अनुदान दिया गया। बीकानेर राज्य की ओर से वि.सं. 1887 में महाराणा रतनसिंह ने दादू पंथी रामदास को सहाणी गाँव भेंट में दिया। जोधपुर राज्य की ओर से भी इन्हें समय-समय पर भूमिदान एवं आर्थिक सहायता दी गई। जयपुर राज्य तो इस सम्प्रदाय को आज तक सहायता कर रहा है।"[16]

राजस्थान में यहाँ के राजाओं द्वारा सभी को धार्मिक स्वतंत्रता, सभी धर्मों को सम्मान और संरक्षण की नीति से यहाँ सूफी सम्प्रदाय काफी फला-फूला और उसका प्रभाव भी रहा। इस निरपेक्ष भावना ने मुसलमानों को सूफियों के अतिरिक्त उक्त वर्णित सम्प्रदायों की विचारधाराओं ने भी अपनी ओर आकृष्ट किया। परिणामस्वरूप अनेक मुसलमान कवियों ने सम्प्रदायों से सम्बन्धित भक्ति साहित्य का सृजन किया। संवादी भजनों की मुख्य विशेषता यही है कि इनके गायक और रचयिता किसी धर्म और जाति के बंधन से मुक्त थे। इन संत कवियों की रचनाओं में ईश्वर के बजाय गुरू को अपनी वाणी विशेष में स्थान दिया है। उदाहरण के लिए -

"सतगुरू चुम्बक रूप है, शिष्य सुई संसार।
अछल चलै उनके मिलें, या में फेर न फार।।" (रज्जब)

"गुरू भगता जन दास सीस सुठि सुमिरन सारौ।
विरह लपेटे सबद लगत तन करत सुभारौ।।
हरिरस पद पिय मत्त रैनि रहै खुमारी।

[16] शर्मा, डॉ. वसुमती एवं सांखला, डॉ. कमल किशोर (सम्पा.) (2014), राजस्थान का संत-साहित्य, राजस्थान प्राच्य विद्यापीठ, जोधपुर, पृ. सं. 100

परचे वाणी विरूद सुनत प्रभु बहुत पियारी।।
दूध मिल्यौ ज्यूँ नीर में, जल मिसरी इकरूप।
सैवग स्वामी नाम द्वै, बखना एक स्वरूप।।" (बखना)

"लोही माँस शरीर में, रती न छाड्यौ राढ़।
अब तो विरहा स्वान है, चावन सूखै हाड़।।
कह्नि वरब भुझावई, मही तपत है दह।
वरषा चूक न चाहिये, इक बालक अरू मेह।।" (वाजिंद जी)

"दरिया गुरू कृपा करि, शब्द लगाया एक।
लागत ही चेतन भया, नेत्तर खुला अनेक।।
दरिया काया कारवी, मौसर है दिन चारि।
जब लग सांस शरीर में, तब लग राम समंरारि।।
दरिया दस दरवाज में, ता विच पढ़त निमाज।
र रो म मो इक रटत है, और सकल बेकाज।।
र रा तो रब्ब आप है, म मा मोहम्मद जान।
दोय तरफ के मायने, सब ही वेद कुरान।।" (दरियाव जी)

"हिन्दू कहै सो हम बड़े, मुसलमान कहें हम्म।
एक मूंग दो फार हैं, कुण ज्यादा कुण कम।।
नारी जननी जगत री, पाल पोस दे पोष।
मूरख राम बिसार कर, ताहि लगावै दोष।।"[17]

यह है मुसलमान सूफी कवियों की अन्तर्भावना, जिसने इस्लाम की कट्टरता को कहीं कोई महत्व ही नहीं दिया। राम और मोहम्मद का समन्वय कर दिया है। मन की इस सात्विकता एवं पवित्रता के कारण ही राजस्थानियों की भक्ति साधना में इन संतों का अपना विशिष्ट स्थान बन सका। इन की फुटकर रचनाओं एवं दोहों का प्रयोग संवादी भजन में विभिन्न कलाकारों द्वारा किया जाता है।

इस विवरण से स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन राजस्थान के जन-जीवन में इन मुसलमानों ने सूफी संतों की भाँति अपनी रचनाओं द्वारा मात्र इस्लाम का प्रचार नहीं किया। इस्लाम को मानते हुए भी पूर्णतः हिन्दू भक्ति पद्धति के अनुरूप अपनी

---

[17] शर्मा, डॉ. वसुमती एवं सांखला, डॉ. कमल किशोर (सम्पा.) (2014), राजस्थान का संत साहित्य, राजस्थान प्राच्य विद्यापीठ, जोधपुर, पृ. सं. 104-109

वाणियों में ईश्वर, जीव, संसार की अभिव्यक्ति की। इनका काव्य मानवीयता के सच्चे स्वरूप को स्थापित करता है। इन संतों की रचनाएँ इस दृष्टि से निःसन्देह आज भी प्रासंगिक है।

वे वर्तमान परिस्थितियों में जन-समाज को दिशा बोध देने में सक्षम है। सम्प्रदाय मुक्त और सम्प्रदाय युक्त दोनों ही प्रकार के इन गैर सूफी मुसलमान संत-कवियों में मानवीयता की यह चरम सीमा देखी जा सकती है। इन मुसलमान संतों ने तो हिन्दू-मुसलमानों को जोड़ने की कोशिश की है। दीन दरवेश कहते हैं कि, "दोनों भिन्न धर्म नहीं है। वस्तुतः यह तो एक मूंग की दो फाड़ें (दालें) है।"

उक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि संवादी भजन शैली के साहित्य में केवल किसी देवता विशेष या धर्म विशेष का साहित्य न होकर सामाजिक चेतना जिसमें विभिन्न धार्मिक कुरीतियों, सामाजिक कुप्रथाओं, रूढ़िवादी मान्यताओं पर जन-सामान्य को जागरूक करने का प्रयास रचनाकारों एवं गायकों द्वारा किया गया है। यह एक समृद्ध समाज की रचना के लिए आवश्यक परम्परा है।

द्वितीय अध्याय

संवादी भजनों की सांगीतिक विवेचना

2.1 संवादी भजनों में शास्त्रीय तत्त्व

2.2 संवादी भजनों में लोक तत्त्व

द्वितीय अध्याय

संवादी भजनों की सांगीतिक विवेचना

साहित्य और संगीत अलग-अलग होते हुए भी एक दूसरे के पूरक है। जहाँ साहित्य का छंद कविता को गति प्रदान कर ताल देता है, वही संगीत स्वरों के माध्यम से कविता को भाव प्रदान करता है। बहुत सी साहित्यिक रचनाएँ अत्यधिक लोकप्रिय हो गयी जब किसी गायक ने उन्हें अपने स्वरों में ढालकर जन रचना बना दिया। सामान्य व्यक्ति किसी साहित्यिक रचना से प्रेम करने लगता है, जब वह सांगीतिक आकार लेकर उस तक पहुँच जाती है। भक्त कवियों की ऐसी सेंकड़ों रचनाएँ हैं, जो गायकों के कंठ से प्रवाहित होने के बाद जन-जन की जुबान पर चढ जाती हैं। साहित्य में शब्दों और चिंतन की प्रधानता रहती हैं, जबकि संगीत में स्वर और नाद प्रधान होते हैं। राजस्थान में प्रचलित भजनों को सांगीतिक दृष्टि से तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है-

1. लोक शैली के भजन
2. सुगम शैली के भजन
3. संवादी शैली के भजन

लोक शैली के भजन-

लोक शैली के भजन सामान्यतया लोक देवताओं की स्तुति में गाए जाते हैं, जिनकी भाषा क्षेत्रीय होती है। लोक शैली के भजनों की भी अनेक परम्पराएँ प्रचलित हैं। लोक भजनों की गति मध्य और द्रुत ही पाई जाती हैं। लोक भजनों में लोक वाद्य जैसे- ढोलक, मंजीरा, ढोल, झांझ, खंजरी, हारमोनियम, जोगिया सारंगी, एक तारा, चौतारा, नगाड़ा आदि का प्रयोग किया जाता है। भजन गायन में मस्ती के भाव की प्रधानता रहती है। लोगों में ऐसे सैंकड़ों लोक गीत आज भी प्रचलित है, जो वर्तमान में अनेक कलाकारों द्वारा विभिन्न केसेट कंपनियों और अब यूटूब जैसे सोशल मीडिया के माध्यम से जन-जन तक प्रचलित हैं। ऐसी रचनाओं में से कुछ अति प्रसिद्ध लोक भजनों की सूची निम्नानुसार है-

1. म्हारो हेलो सुणो जी रामा पीर....
2. खम्मा खम्मा हो मारा रूणिजेरा धणिया....
3. तेजाजी गायन....

4. लाग्यो लाग्यो जेठ आषाड़ कुंवर तेजा रे....

5. गोगा जी रो ब्यावलो....

6. पाबूजी की फड़....

7. लाडक्ड़ी लाडेसर म्हारी जिण बाई सा....

8. बाजे छे नौबत बाजा म्हारा डिग्गीपुरी का राजा....

9. सिंगोलि रा श्याम म्हारा चारभुजा रा नाथ....

10. डिग्गी में दीनानाथ बिराजे जी....

11. जोगणियाँ थारो ऊँचो देश अखंड (जोगनिया माता की लावणी)....

ये सभी लोक भजनों की श्रेणी में आते हैं और आम जन विशेष अवसरों पर इनकी लयात्मकता में खो जाता है। इनकी भाषा उस लोक देवता के स्थान विशेष के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। राजस्थान के मारवाड़, दूंढाड़, हाड़ौती सहित सभी क्षेत्रों में इनकी लोकप्रियता आज भी उतनी ही है।

सुगम शैली के भजन-

राजस्थान में अनेक गायक और रचनाकार सुगम शैली के भजन में सिद्धहस्त हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर इसी शैली के भजनों को मान्यता है। इस शैली में पारंपरिक संत कवियों और मान्यता प्राप्त गीतकारों की भक्ति रचनाओं का गायन किया जाता है। ये रचनायें प्रायः व्यावसायिक भजनों की श्रेणी में आती हैं। इनकी रचनाओं में राग का प्रयोग तो होता है परन्तु शब्द के भावानुरूप स्वर रचना की प्रधानता होती है। इन भजनों को कहरवा, दादरा, अद्धा त्रिताल, रूपक आदि सुगम संगीत की तालों में गाया बजाया जाता है। इस प्रकार की भजन शैली संपूर्ण भारतवर्ष में प्रचलित है। इस शैली में शब्दों की प्रधानता के साथ ही स्वर रचना का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रायः गायक अपनी ही रचनाओं का गायन करते हैं। आकाशवाणी द्वारा किसी अन्य गायक की प्रकाशित अथवा रिकार्डेड रचना का गायन वर्जित होता है। राजस्थान में ऐसे अनेक प्रसिद्ध भजन गायक हुए है, जो आकाशवाणी के टॉप एवं अन्य श्रेणियों में मान्यता प्राप्त है।

भजन गायन के क्षेत्र ऐसे अनेक गायक और गीतकार हुये है, जो सम्पूर्ण भारत के हिन्दी भाषी राज्यों में आज भी प्रसिद्ध है। भजन गायक हरिओम शरण (26 सितंबर 1932-18 दिसंबर 2007) एक भारतीय हिंदू भक्ति गायक और गीतकार थे। उनका अधिकांश जीवन सीताराम और हनुमान की प्रशंसा में भक्ति गीत गाने के लिए

समर्पित था। 1970 के दशक में एक भजन गायक के रूप में, उन्होंने प्रेमांजली, पुष्पांजली और दाता एक राम जैसे एल्बम रिकॉर्ड किए। उनके निम्नलिखित भजन आज जन-जन में प्रचलित हैं -

1. तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार....
2. जय जय जय बजरंगबली....
3. मैली चादर ओढ़ के....
4. हे दु:ख भंजन मारुति नंदन....
5. जय नंद लाला, जय गोपाला....
6. दाता एक राम, भिखारी सारी....
7. प्रभु हम पर कृपा करना....
8. जनम तेरा बातों में ही....
9. भज गोविंदा जय गोपाला....
10. कृपा मिलेगी राम जी की....

इसी प्रकार भजन गायक अनूप जलोटा ने भी भजन गायन को अपनी विशिष्ट गायकी से नई पहचान देकर जनमानस में जगह बनाई है। अनूप जलोटा का जन्म 29 जुलाई, 1953 को नैनीताल, उत्तराखंड में हुआ था। वो गायक, संगीतकार और एक्टर है। उन्हें 'भजन सम्राट' कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने भारतीय संगीत में भजन के क्षेत्र में सबसे ज्यादा योगदान दिया है। साल 2012 में उन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री से सम्मानित किया था

1. ऐसी लागी लगन....
2. रंग दे चुनरिया....
3. वो काला इक बाँसुरी वाला....
4. जग में सुंदर हैं दो नाम....
5. मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो....
6. चदरियाँ झीनी रे झीनी....
7. हरि नाम का प्याला....

8. राधा ऐसी भई श्याम की....

9. राधा के बिन श्याम....

इनके अलावा अनेक प्रसिद्ध शास्त्रीय गायकों ने भी अपनी गायकी से भजन शैली को नवीनता देते हुए भजन के रसिकों को प्रभावित किया है। पंडित भीमसेन जोशी, किराना घराने के मशहूर शास्त्रीय गायक थे। वे हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सबसे विपुल प्रतिपादकों में से एक थे। उन्हें साल 1975 में कला के क्षेत्र में "पद्मभूषण" से सम्मानित किया गया था और साल 2008 में "भारत रत्न" से सम्मानित किया गया, उनके द्वारा संगीतबद्ध और गाए हुये भजन आज भी लोकप्रिय है।

1. राम भजन कर मन....

2. राम का गुण गान करिए....

3. बाजे रे मुरलिया बाजे....

एक और शास्त्रीय गायक पण्डित जसराज (जन्म : 28 जनवरी 1930 - 17 अगस्त 2020) भारत के प्रसिद्ध शास्त्रीय गायकों में से एक थे। जसराज का संबंध मेवाती घराने से था। मात्र चार वर्ष की उम्र में ही जसराज के पिता पण्डित मोतीराम का देहान्त हो गया था और उनका पालन पोषण बड़े भाई पण्डित मणिराम के संरक्षण में हुआ। पंडित जसराज ने भी भजन शैली को अपने कंठ धर्म और राग ज्ञान से सिंचित कर नवीनता प्रदान की है। पंडित जी हवेली संगीत के भी सिद्ध प्रस्तोता रहे है।

1. माई सांवरे रंग राची....

2. रानी तेरो चिरजीयो गोपाल....

3. सुमिरन करले मेरे मना....

सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका विदूषी किशोरी अमोनकर ने अनेक भजनों की रचना और गायन किया है। किशोरी अमोनकर का जन्म 10 अप्रैल 1932 को मुंबई में हुआ था। जब वह 7 साल की थीं, तब उनके पिता की मृत्यु हो गई, जिससे अमोनकर और उनके दो छोटे भाई-बहनों का पालन पोषण मुख्य रूप से उनकी माँ, शास्त्रीय गायिका मोगुबाई कुर्डीकर ने किया। आपके प्रचलित भजन निम्न है-

1. म्हारो प्रणाम....

2. हे मेरो मन मोहना....

3. कोई कहियो रे प्रभु....

4. प्रभु जी मैं अरज करूं....

5. मिलता जाज्यो गुरूज्ञानी....

6. मैं कैसे आऊंगी....

7. हे गोविंद हे गोपाल....

8. जोगी म्हाने दरस दिया....

9. जशोदा ने लाख बधाई....

सुगम शैली की भजन गायकी में अनेक प्रसिद्ध पार्श्व गायक और गायिकाओं का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा है। प्रसिद्ध गायिका लतामंगेश्कर का जन्म 28 सितंबर, 1929 को मध्य प्रदेश के इंदौर में हुआ था। उनके पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर रंगमंच के कलाकार और गायक थे। लता जी को बचपन से ही गाने का शौक था और संगीत में उनकी दिलचस्पी भी शुरू से ही थी। लता ने 13 साल की उम्र में पहली बार सन् 1942 में बनी मराठी फिल्म 'पहली मंगलागौर' में गाना गाया। उनके अनेक हिन्दी भजन प्रसिद्ध हुये है-

1. श्री राम चंद्र कृपाल भजमन....

2. राम रतन धन पायो....

3. ठुमक चलत रामचंद्र....

4. राम भजन कर मन....

5. हे रोम रोम में बसने वाले....

6. श्री राम के शुभ नाम....

7. रघुपति राघव राजा राम....

मोहम्मद रफी, आशा भौंसले, सुरेश वाडेकर, ए. हरि हरन जैसे गायकों ने भी भजन के भावों को अपने मधुर स्वर और प्रतिभा से जनमानस तक पहुँचाया है। इनके द्वारा विभिन्न देवी देवताओं की स्तुति के भजन एल्बम भी प्रसिद्ध है।

इनके अतिरिक्त आकाशवाणी के अनेक ए अथवा टॉप ग्रेड के कलाकार भी सुगम भजन गायन के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। राजस्थान में अहमद-मोहम्मद हुसैन, पं. चिरंजीलाल तंवर, पद्मश्री अली मोहम्मद, बिहारी जी कथक, मोईनुद्दीन खाँ (सीकर वाले) आदि।

संवादी शैली के भजन -

उक्त सभी प्रसिद्ध कलाकारों की भजन शैली मूलरूप से फिल्म संगीत से प्रभावित है, किन्तु राजस्थान के संवादी भजनों की शैली इससे भिन्न होते हुये भी जन-जन तक प्रचलित हैं, ऐसे अनेक कलाकारों और उनकी रचनाओं का वर्णन इस शोध ग्रंथ में किया गया है। जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है, इस शैली का सम्बन्ध मूलरूप से जागरण परम्परा से है। इन भजनों की लोकप्रियता ग्रामीण परिवेश के श्रोताओं में अधिक है। इस प्रकार की भजन रचनाओं में शास्त्रीय रागों, तालों, राजस्थान की मांड, ठुमरी, तथा सूफी गायकी का मिश्रण पाया जाता है। इन भजनों का प्रचार अब तो सम्पूर्ण राजस्थान में है लेकिन इसका प्रमुख प्रचलन जोधपुर, सीकर, नागौर, चुरू अर्थात शेखावटी क्षेत्र में अधिक है। इन भजनों की रचनाएँ प्रायः शुद्ध रागों में की जाती है और प्रायः मध्य लय, मध्य विलंबित लय और द्रुत लय का प्रयोग किया जाता है। रचनाओं में उच्च कोटि के संत साहित्य का प्रयोग होता है तथा भाव प्रदर्शन के लिए विभिन्न प्रकार की तान, मुर्की, आलाप, तिहाई आदि शास्त्रीय गायन के तत्वों का प्रयोग बहुतायत से किया जाता है। सामान्यतया त्रिताल, अद्धा त्रिताल, रूपक, दीपचंदी, कहरवा, दादरा, एकताल के अतिरिक्त कुछ कलाकार 9, 11, 13, 15 मात्राओं की तालों का प्रयोग भी करते है।

संवादी भजनों पर प्रमुख रूप से रजवाड़ी गायन शैली मांड का प्रभाव अधिक पाया जाता है। मांड की पहचान केवल केसरिया बालम...., तक ही सीमित नहीं है। जब लोक धुनों को पेशेवर संगीतकार अपना लेते है तो धीरे-धीरे वे धुनें शास्त्रीय राग का स्वरूप धारण कर लेती है, ऐसा ही मांड राग के सम्बन्ध में भी हुआ। मांड गायकी के विभिन्न गीत राग मांड के अतिरिक्त अन्य रागों-खमाज, देस, सारंग, काफी, पीलू और पहाड़ी आदि में भी निबद्ध होते है। अतः मांड एक राग होने के साथ

ही एक परिष्कृत गायन शैली भी है।

राजस्थान में मांड के अनेक प्रकार प्रचलित है जैसे- सोरठ अंग, देसी अंग, खमाज और देस अंग की बंदिशे मध्य लय में सम्पूर्ण गायकी के साथ गाई जाती है। रजवाड़ी मांड गायकी में मुखड़ा ही तालबद्ध होता है, उसके पश्चात् अंतरे के स्थान पर विभिन्न प्रकार के भावानुरूप दोहों का गायन अनेक प्रकार के बहलावों के साथ किया जाता है। ऐसी ही कुछ अति प्रसिद्ध रचनाएँ उदाहरण स्वरूप निम्न है।

1. मैं अपने राम को रिझाऊ....
2. मन लाग्यो मेरो यार फकीरी में....
3. अब मोरी राखो लाज हरि....
4. हमको ओढ़ावे चदरिया....
5. प्रभु तेरो नाम....
6. जिनकी लग्न राम संग नाहि....
7. प्रभु मोरे अवगुण चित ना धरो....
8. सांवरा म्हारि प्रीत निभाज्योजी....
9. सैयां निकस गये मैं ना लड़ी....

2.1 संवादी भजनों में शास्त्रीय तत्त्वों

"मैं अपने राम को रिझाऊ....", मोइनूद्दीन खान सीकर वाले द्वारा रचित यह भजन राग भीमपलासी पर आधारित है, यद्यपि इन्होंने इसकी राग "पलासी" बताई है, परंतु पलासी राग में धैवत वर्जित है, जबकि गाते समय धैवत का प्रयोग किया गया है, जो कि भीमपलासी राग का अवरोहात्मक स्वर है। इस रचना में धैवत का प्रयोग भीमपलासी की अपेक्षा कम होता है शायद इसलिए पलासी राग कहा है। कहरवा ताल का भजन ठेका इस रचना के साथ ऐसे प्रतीत होता है, जैसे दूध में घी। इस भजन में मांड और सूफी शैली का मिश्रण प्रमुख रूप से किया गया है।

"मन लागो मेरो यार फकीरी में....." भक्त कबीर द्वारा रचित इस संवादी भजन को बहुत से गायकों ने भिन्न-भिन्न रागों में स्वरबद्ध कर गाया है परंतु गायक मोइनुद्दीन खां साहब (सीकर वाले) ने इसे राग कलावती पर आधारित बताया है। कलावती में ऋषभ के प्रयोग से एक अन्य राग जनसम्मोहनी का प्रभाव भी दिखाई

देता है। राजस्थान के भजन गायको और श्रोताओं में यह भजन अत्यंत लोकप्रिय है। भजन में शास्त्रीय, सूफी और लोक संगीत तीनों का मिश्रण इसे एक अलग ही शैली की ओर ले जाता है जिसे हमने "संवादी शैली" कहा है। गायन में कलाकार ने विभिन्न भावों के प्रदर्शन हेतु अन्य रागों के स्वर-समूह भी प्रयोग किये हैं।

"अब मोरी राखो लाज हरि.....", स्वर्गीय मोइनुद्दीन ने राग पूरिया धनाश्री (जो कि इस भजन के करूण भाव के साथ न्याय संगत प्रतीत होती है) में सूरदार जी के पदों को स्वरबद्ध कर अद्धा तीनताल के माध्यम से संवाद करते हुए मर्मस्पर्शी उद्गारों को इस गीत के माध्यम से उद्घाटित किया है। शुद्ध रागगत स्वर प्रयोग के साथ उनका तान कहने का अंदाज विलक्षण है। इस प्रकार की तान सूफी गायकी में सुनने को मिलती है। संवादी भजनों की यही विशेष बात है कि इनमें शास्त्रीय तत्वों के साथ सूफि गायन के तत्वों का भी समावेश है। अद्धा त्रिताल का ठहराव के साथ प्रयोग साहित्य कि गंभीरता को स्पष्ट करने में सक्षम होता है।

"हमको ओढ़ावे चदरिया....", खान साहब द्वारा उपर्युक्त निर्गुण संवादी भजन को राग अहीर भैरव में स्वरबद्ध कर कहरवा ताल का सुन्दर प्रयोग किया गया है। भजन की एक-एक पंक्ति, सुनने वालों के मन को झखझोर देती है। भक्ति के बैरागी भावों कि सुंदर अदायगी कहरवा ताल की सूफी चाल में जब अठखेलियाँ करती है तो श्रोताओं को स्वतः ही आत्मचिंतन को मजबूर कर देती है।

इन्ही में एक फकीर गायक सभी संप्रदायों के संतों व भक्तों की रचनाओं के भावों को अपने सुमधुर संगीत से मुखरित करने वाले बाबा बिहारी जी कत्थक द्वारा लिखित भजन "प्रभु तेरो नाम" को इन्होंने राग धानी तथा कहरवा ताल में स्वरबद्ध किया है। बाद में जयदेव वर्मा (संगीतकार) ने बाबा जी से उपरोक्त गीत को खरीद कर अपने नाम से फिल्म **"हम दोनों"** के लिए लता जी से गवाया। यह भजन बहुत ही प्रचलित हुआ। आज भी यह गीत बिहारी जी तथा लता मंगेशकर जी की आवाज में यू-ट्यूब पर उपलब्ध है। लता जी ने इसे पूर्णतया सुगम शैली में गाया है जबकि इसी भजन को बाबा के श्री मुख से सुनते है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सामान्य भजन और संवादी भजन गायन की दृष्टि से कितने भिन्न होते हैं। शब्द के भावों को गायकी से स्पष्ट करना और विभिन्न सांगीतिक तत्व जैसे- तान, मुर्की, गमक आदि का प्रयोग शास्त्रीय शैली के प्रभाव को स्पष्ट करता है।

जिनकी लगन राम संग नाहि...., 'बाबा' बिहारी जी के द्वारा राग कौशिकी कान्हड़ा पर आधारित धुन में संगीत बद्ध की गई है। पंक्तियों में भक्ति रस व वीर रस दृष्टिगोचर होता है अतः पंडित जी की संगीत रचना, इस चेतावनी भजन के साथ पूरा न्याय करती प्रतीत होती है।

जिस तरह बंदिश तार सप्तक के 'षड्ज' से शुरू होकर मध्य सप्तक के 'धैवत', 'पंचम' से उतरते हुए 'मध्यम', 'गंधार' का सहारा लेकर संवादी स्वर 'षड्ज' पर ठहराव करती है तब राग रस अपने आप आनंद बिखेरने लगते है। अतः साहित्य एवं स्वर के सामंजस्य को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि 'बाबा' ने अपनी सभी रचनाओं में साहित्य एवं स्वर का पूरा ध्यान रखा है। अद्धा त्रिताल में निबद्ध रचना में आरोहात्मक तान राग के स्वरूप को पूर्णतया स्पष्ट करती है।

भक्ति काल के महानतम निर्गुण कवि भक्त कबीर द्वारा रचित गीत 'जीव तू जाएगो हम जानी' उनके उम्दा भजनों में से एक है। इस भजन में उन्होंने इस नश्वर संसार से, राजा-रानी, धरती-अंबर, चाँद-सूरज इत्यादि के अस्थाई होने की बात कहते हुए परमात्मा की भक्ति को ही स्थाई बताया है। इस संवादी भजन को बाबा बिहारी जी ने शानदार तरीके से राग कालिगडा में तीनताल के साथ प्रस्तुत किया है। तार सप्तक के षडज पर सम राग के प्रभाव को स्पष्ट करता है।

संवादी भजनों कि एक और विशेषता यह है कि ये रात्री जागरण में गाए जाते हैं, जिसमें रागों के समय सिद्धान्त का भी यथा संभव पालन करते हैं। रात्री के प्रथम प्रहर से अंतिम प्रहर के रागों में ही रचनाएँ प्राप्त होती है।

"प्रभु मोरे अवगुण चित्त ना धरो....", सूरदास जी द्वारा रचित उपर्युक्त पद को कई विद्वान गायकों ने भैरवी, खमाज आदि रागों के साथ कहरवा, त्रिताल, भजन ठेका आदि तालों में प्रस्तुत किया है परंतु पंडिज चिरंजी लाल तंवर के द्वारा इसे शिवरंजनी राग में 9 मात्रा की बसंत ताल में गाया गया है। पंडित जी विभिन्न गीतों को अलग-अलग अप्रचलित तालो (9 मात्र, 11 मात्रा, 13 मात्रा इत्यादि) में सुगमता से गाते रहे हैं। ईश्वर कृपा से इनका गायन पक्ष जितना मजबूत है उतना ही लय पर भी अच्छी पकड़ है, अतः आप प्रत्येक गायन शैली को किसी भी ताल में गा सकते हैं। राग शिवरंजनी में दोनों गांधार, दोनों धैवत और शुद्ध गांधार के साथ कोमल निषाद का प्रयोग इस रचना कि विशिष्ट बनाता है।

पंडित चिरंजी लाल तंवर राजस्थान की मांड गायकी के उच्च दर्जे के गायक थे। आपके भजनों कि अनेक रचनाए शुद्ध मांड शैली पर आधारित है। "सांवरा म्हारी प्रीत निभाज्यो जी....", मीरा बाई का भजन इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। मध्य लय कहरवा ताल में निबद्ध रचना में मांड शैली कि मुर्कीयों और तानों का प्रयोग पंडित जी कि विशेषता रही है जिसे सम्पूर्ण राजस्थान ही नहीं अपितु पूरे भारतवर्ष में पसंद किया जाता था। ठहराव के साथ तैयार स्पष्ट और शुद्ध ताने संवादी भजन शैली को अन्य भजन शैलियों से अलग करती है।

"सैयां निकस गए में ना लड़ी....", पंडित चिरंजी लाल जी के द्वारा इस निर्गुण भजन को सुंदर तरीके से गाया गया है। यह पद राग मेघ व झपताल के समन्वय पर आधारित है। भजन की गायकी में मांड और ठुमरी शैली का प्रयोग किया है। पंडित जी ठुमरी गायन के भी सिद्धहस्त कलाकार थे। उनकी भजन रचनाओं में मांड और ठुमरी गायकी का मिश्रण पाया जाता है। मेघ राग जो कि गंभीर प्रकृति का माना जाता है उसी राग में ठुमरी अंग संवादी भजनों की विशेषता ही है। इन्ही की एक रचना राग-शुद्धकल्याण में "दीनबंधु दीनानाथ" महाराज आज गरूड़ चढ़ आये, एक ताल मध्यलय में निबद्ध रचना प्रसिद्ध है। एक ताल की अनेक शास्त्रीय बन्दिशों में 5 मात्र का मुखड़ा सुंदर प्रतीत होता है। संवादी भजनों में ख़्याल शैली का प्रभाव भी इनकी एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

"भजन गायक बाबा बिहारी जी की रचना, "एरी माई आज तो आनंद....", जो कि राग नन्द और ताल आडा चौताल में निबद्ध है, "दुर्गे माँ जगत जननी अभय वर दे...", राग दुर्गा और एक ताल में निबद्ध है। ये सभी रचनाएँ शास्त्रीय गायन शैली ख़्याल से प्रभावित है। पंडित चिरंजी लाल तंवर की "झनक श्याम की पैंजनिया....", रचना भी अत्यधिक प्रसिद्ध रचना जो रागेश्वरी में निबद्ध है। इसमें मध्य लय अद्धा त्रिताल में ठुमरी और ख़्याल का मिश्रण गायन में संवादी भजन शैली को इंगित करता है।"[1]

"चिरंजी लाल तंवर विभिन्न शैलियों के विद्वान गायक थे। उनकी अनेक रचनाएँ सुगम संगीत कि भजन गायकी श्रेणी में आती है। जैसे- "कृष्ण रंग में रंगी

[1] अग्रवाल, भूमिका (2013); बहुमुखी गायक "बाबा" स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध ग्रंथ, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, पृ.सं. 59

चुनरिया...", "लगा सको तो हरी सुमिरन में ध्यान लगाओ...", "ना जानूँ तेरा राम कैसा है...", "दाता तू मोरी पत राखो..." आदि।"[2]

"गौरी के नन्द गणेश मनाऊँ....", भजन बिहारी कत्थक द्वारा राग दुर्गा में गाया गया है। संवादी भजन गायक राग के समय सिद्धांत के अनुसार ही भजनों की रागों का चयन करते थे। राग दुर्गा रात्री के प्रथम प्रहर का राग है जो भक्ति साहित्य अथवा जागरण के प्रारम्भ में गणेश वंदना के रूप में गाया जाता है। बंदिश की रचना शास्त्रीय ताल तीनताल में है इसे ख्याली भजन की श्रेणी में रखा जा सकता है। जिसमें ख़्याल गायकी की तरह आलाप तानों का प्रयोग किया जाता है।

"जोबन धन पावणा दिन चारा..", जैसे अनेक भजन संवादी भजन शैली में भी मांड की धुनों पर गायन किये जाते हैं। कुछ भजन गायकों ने सूफी तो कुछ ने ठुमरी गायकी को अपने भजनों में स्थान दिया है। यह भी उल्लेखनीय हैं कि इस गायन शैली में चाहे ठुमरी, ख़्याल अथवा सूफी का मिश्रण होते हुये भी राजस्थान की मांड शैली का प्रभाव अवश्य दिखाई देता है।

"म्हैतो गुण गोबिन्द रा गास्यां हे माई
राणाजी मेवाड़ा म्हारो कांई करसी"

मीरांबाई के इस खूबसूरत पद को राग सोरठ में पंडित चिरंजी लाल जी ने रूहानियत से गाया है। इनकी आवाज में इतना जादू है कि इस पद को सुनते ही मन भाव विभोर हो जाता है। छोटी-छोटी मुर्कियां, खटके और गमक का काम इतनी सहजता से किया गया है जो किसी भी साधारण गायक के लिए असंभव है।

इस प्रकार की रचनाओं के कारण ही राजस्थान की भजन गायन की यह एक विशिष्ट शैली है, जो अन्य किसी भी प्रदेश से अलग है। मेरा मानना है कि इस शैली को संवादी भजन शैली से संबोधित करना न्यायोचित रहेगा। सभी शिक्षाविदों एवं गुणवन्तों ने इस पर अपनी सहमति भी व्यक्त की है। मैं तो यह भी कहना चाहूँगा कि इस भजन शैली को आकाशवाणी द्वारा भी इसी नाम से मान्यता मिलनी चाहिए। जिससे कि अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो सके और यह जन प्रिय भक्ति संगीत की धारा समाज में अनवरत प्रवाहित होती रहे। युवा पीढ़ी के संगीत विषयों के पाठ्यक्रम

[2]कुमावत, डॉ. गरिमा (2021), "पं. चिरंजी लाल तंवर स्वर-रा मोती", लोटस बुक्स, जयपुर, पृ.सं.65

में भी इन रचनाओं का समावेश होना चाहिये, जिससे यह शैली जीवित एवं विकसित होती रहे।

2.2 संवादी भजनों में लोक तत्त्व -

भजन की रात्री जागरण परम्परा की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि कार्यक्रम में आमंत्रित गायक किसी एक गायन शैली से संबन्धित नहीं होता है। इनमें अनेक बार शुद्ध शास्त्रीय शैली जैसे- ध्रुपद, धमार, ख़्याल और ठुमरी गायकों के साथ-साथ लोक गायकों को भी आमंत्रित किया जाता है। ग्रामीण भाषा में शास्त्रीय अथवा रागों पर आधारित गायकों को पक्के कलाकार कहा जाता है और रचनाओं को पक्की धुन कहा जाता है। उक्त जिन कलाकारों का वर्णन किया गया है वे सब लोक भजनों के भी नामी गायक रहे हैं।

इस शोध ग्रंथ में जिन्हें संवादी भजन कहा गया है उसका आधार केवल उसकी शास्त्रीयता ही नही है बल्कि भक्ति संगीत के उच्च कोटि का साहित्य है जो समाज को हमेशा आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर करता है। ऐसा साहित्य जब लोक धुनों का सहारा लेता है तो वह जनमानस में और अधिक प्रचलित हो जाता है। राजस्थान के भजन लोक संगीत के तत्वों की दृष्टि से परिपूर्ण है। ऐसी सैंकड़ों रचनाएँ उपलब्ध हैं, उनमें से कुछ अति प्रचलित रचनाओं में लोक तत्व कि विवेचना करना भी यहाँ आवश्यक हो जाता है।

बिहारी जी का "बोल सुवा राम राम..." (मीरा बाई), "संवरियों जादू कर गयो..." (मीरा बाई), "कोडी कोडी माया जोड़ी..." (कबीरदास), "संतो देखो नी नजर पसार...", "म्हारा जूना जोशी..." (मीरा बाई), "थारे घट में बसे भगवान..." (नाथ गुलाब), "म्हारा साँवरिया थारी बांता लगे म्हाने मीठी..." (मीरा बाई), "नाड़ी हूँ न जाणे बैद..." (मीरा बाई), "म्हेतों गुण गोबिन्द रा गास्या ये माई..." (मीरा बाई)।

"बाबा बिहारी लाल कत्थक जी" ने मीरां बाई द्वारा रचित "सावरियों जादू कर गयो" को स्वरबद्ध किया तथा संगीत रचना में लोक रूचि का विशेष ध्यान रखा है। बाबा बिहारी ने इस भजन की रचना राग भीमपलासी में की है। जब भी बाबा बिहारी राग भीमपलासी में निबद्ध इस भजन को गाते थे, तो सुनने वाले सभी श्रोता यह

कहते थे कि यह राग तो आपको ब्याही गई सी लगती है। अतः बाबा बिहारी की राग भीमपलासी में अच्छी पकड़ थी।"[3]

इन सभी भजनों में राजस्थान की पारंपरिक धुनों का प्रयोग किया हुआ है लेकिन रचनाऐं संत साहित्य से ली जाती है, जिसमें मीरा प्रमुख है। इनके अलावा सहजो बाई, कबीरदास, चन्द्रसखी जैसे संतो का लोक अंदाज में गायकी के साथ गायन किया जाता है। आज से 10-15 वर्ष पूर्व तक केवल हारमोनियम तबला ही प्रमुख वाद्य यन्त्र होते थे। लेकिन आजकल इलेक्ट्रोनिक वाद्य यंत्रों के प्रयोग ने इनका स्वरूप विकृत कर दिया है। यूट्यूब पर अनेक गायकों के विडियो इसका प्रमाण है।

संवादी भजनों का एक और प्रकार राजस्थान के ब्रज क्षेत्र में प्रचलित है। भरतपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, कोटा तक इस प्रकार के भजन गाए बजाए जाते हैं। इन भजनों में भी ब्रज के लोक संगीत के तत्वों की प्रधानता पायी जाती है। इन भजनों का गायन रात्री जागरण के अतिरिक्त रामलीला, रासलीला, और अनेक धार्मिक प्रसंगों पर आधारित नौटंकी में किया जाता है। इन भजनों में भगवान और भक्त के पौराणिक प्रसंगों का वर्णन पाया जाता है। इनकी धुने उत्तरप्रदेश के लोक धुनों से प्रभावित होती है, मुख्य रूप से राग पीलू, काफी, खमाज, जौनपुरी जैसी रागों का प्रयोग अधिक होता है।

रात्री जागरण के कार्यक्रमों में शौकिया ग्रामीण गायकों द्वारा गाये जाने वाले निम्न भजन आज भी प्रचलित है। इनमें से कुछ भजनों की स्वर रचनाऐं भी इस शोध ग्रंथ में देने का प्रयास किया है।

1. समय का पहिया चलता है....
2. अम्बे कृष्ण मिला दे....
3. माया संग न चले....
4. पकड़े गए कृष्ण भगवान....
5. ओ प्राणी याको मत समझे घर मेरा....
6. भरत रे भाई कपि से उऋण हम नाही....
7. अब उठ वीर हमारे (शंभू सिंह) ....

---

[3] अग्रवाल, भूमिका (2013), बहुमुखी गायक "बाबा" स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ.सं.97

8. ना ना री भांति नचायो भगतो ने मोहे...

9. जंगल में जिसका जगत पिता....

10. बुढापा बैरी कहाँ से तू आयो बेईमान....

11. भगवन साँची कहो ये बेचारी है क्या....

12. इसको कहते हैं पंच हथाई मान महा सतिमान....[4]

उक्त भजनों में से अनेक भजन एक ही धुन पर गाए जाते है। इनके अलावा विभिन्न पौराणिक और धार्मिक प्रसंगों का गायन भी किया जाता है। उदाहरण के लिए–

राम व केवट संवाद –

जब राम, लक्ष्मण और सीता को गंगा पार करनी थी तब केवट और श्री राम के बीच जो संवाद हुआ उसको इन भजन के माध्यम से कहा जाता है।

राम व लक्ष्मण संवाद –

जब लक्ष्मण को शक्ति लगती है, उस वृतांत को भजन में सम्मिलित किया गया है।

राम व मेघनाथ संवाद –

जब हनुमान जी रावण की वाटिका उजाड़ देते है और मेघनाथ हनुमानजी से जीत नही पाता तो वो सारा वृतांत रावण को सुनाता है। यह वृतान्त भजन के माध्यम से समझाया गया है।

रावण व हनुमान संवाद –

जब हनुमान जी को ब्रह्मास्त्र द्वारा बाँध कर लाया गया तो रावण और हनुमान जी के बीच जो वार्ता होती है, उसे इस भजनों में गाया जाता है।

रावण व मन्दोदरी संवाद –

जब रावण सीता जी का हरण कर लाता है तब मन्दोदरी रावण को समझाती है।

[4] पारंपरिक भजन गायक शिव सिंह तंवर द्वारा प्राप्त रचनाएँ

सीता स्वयंवर संवाद –

सीता जी के विवाह में परशुराम और राम, परशुराम व लक्ष्मण के बीच जो संवाद होता है।

भरत व माता कैकई संवाद –

जब राम जी को बनवास होता है उनके जाने के बाद भरत और माता कैकई के बीच जो संवाद हुआ है।

हनुमान व सीता संवाद –

जब हनुमान जी सीता जी का पता लगाने जाते है तब लंका में सीता जी और हनुमान जी के बीच जो वार्तालाप होता है।

शिव व पार्वती संवाद –

शंकर भगवान का विवाह सम्पूर्ण संवाद मय है।

नानी बाई का मायरा –

नरसी मेहता के पास रूपए नहीं थे, तो भगवान श्रीकृष्ण भाई बन कर नानी बाई का मायरा भरने गए।

कृष्ण सुदामा संवाद –

जब सुदामा श्री कृष्ण से मिलने जाते तो उस वार्तालाप को इसमें दरसाया गया है।

उद्धव और गोपी संवाद –

जब ऊद्धव कृष्ण भगवान का संदेश ले कर गोपियों के पास आते हैं तब उद्धव और गोपियों के बीच जो संवाद होता है।

तेजाजी गायन संवाद –

तेजाजी गायन सम्पूर्ण संवाद मय है, जिसमे लोक देवता तेजाजी के जीवन प्रसंगों का गायन किया जाता है। जैसे- तेजाजी का उनकी घोड़ी से संवाद, तेजाजी का उनकी भाभी से संवाद, तेजाजी का सर्प से संवाद आदि।

तृतीय अध्याय

प्रचलित एवं अप्रचलित संवादी भजन

तृतीय अध्याय

प्रचलित एवं अप्रचलित संवादी भजन

पूर्व के अध्याय में भजन के वर्तमान प्रचलित प्रकारों का वर्णन करते हुये उनमें व्याप्त सांगीतिक और लोक तत्वों की विवेचना की गई, जिनमें सुगम भजन, लोक भजन और संवादी भजनों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। यह स्थापित करने का प्रयास किया गया है कि संवादी भजन विभिन्न गायन शैलियों का मिश्रण है और इन का प्रचार राजस्थान के रात्रि जागरण के कार्यक्रमों में अधिक पाया गया है। प्रस्तुत अध्याय में इन रचनाओं के संरक्षण और संवर्धन हेतु विभिन्न माध्यमों से प्राप्त उनकी स्वर रचना और साहित्य का संकलन करने का यथासंभव प्रयास किया गया है। यह भी उल्लेखनीय है कि संवादी भजन शैली जो कि पूर्णतया रात्रि जागरण में प्रयोग होती है उसमें ख़्याल, ठुमरी, सूफी, मांड जैसी शैलियों में भजन गाए जाते हैं।

विभिन्न कलाकारों से साक्षात्कार, पूर्व में लिखित शोध ग्रंथों, इंटरनेट आदि से प्राप्त भजनों की रचनाओं का संकलन कर इस ग्रन्थ में संरक्षण और संवर्धन की से स्वरलिपि सहित प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। भजनों की सैंकड़ों रचनाओं में से अत्यधिक प्रसिद्ध और विशिष्ट प्रचलित और अप्रचलित भजनों का संकलन वर्गीकृत तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

प्रचलित संवादी भजनों को चार भागों में वर्गीकृत कर सूचीबद्ध किया गया है तथा कुछ उत्कृष्ट और वर्तमान में प्रचलित रचनाओं को स्वरलिपि एवं साहित्य सहित उद्धृत किया गया है।

अ- शास्त्रीय रागों, तालों पर आधारित संवादी भजन

संवादी भजनों के इस प्रकार का साहित्य संत कवियों द्वारा रचित होता है जो कि मनुष्य की सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति के विकास में सहायक होता है। सांगीतिक दृष्टि से ये भजन किसी न किसी राग पर आधारित होते हैं किन्तु इनमें राग की शुद्धता का इतना महत्त्व न होकर भजन के भाव और सम्प्रेषण को प्रधानता दी जाती है। भजनों में ताल कहरवा, दादरा, दीपचंदी, अद्धा त्रिताल, पंजाबी, रूपक आदि तालों का प्रयोग किया जाता है। इसी कारण से इन भजनो में विभिन्न गायन

शैलियों का प्रभाव रहता है। प्रत्येक कलाकार अपने विशिष्ट सांगीतिक ज्ञान और कंठ धर्म के अनुसार इनकी रचना और गायन करते हैं। किसी की रचनाओं में मांड, किसी में सूफी, किसी में लोक तथा किसी में ठुमरी के तत्वों का सम्मिश्रण पाया जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन भजनों को शास्त्रीय, लोक, कव्वाली और ठुमरी आदि किसी भी श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है, इसीलिए इन भजनों को अध्ययन और विश्लेषण कि दृष्टि से "संवादी भजन" कहना उचित होगा। ऐसा अनेक संगीत चिंतकों का मानना है और मैं स्वयं इस विचार से सहमत हूँ।

1.	मैं अपने राम को रिझाऊं....	स्वर्गीय मोइनुद्दीन खां सीकर वाले
2.	मन लागो मेरो यार फकीरी में...	स्वर्गीय मोइनुद्दीन खां सीकर वाले
3.	अब मोरी राखो लाज हरि...	स्वर्गीय मोइनुद्दीन खां सीकर वाले
4.	हमको ओढ़ावे चदरिया...	स्वर्गीय मोइनुद्दीन खां सीकर वाले
5.	जीव तू जाएगो....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
6.	मत भूल अरे इंसान....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
7.	प्रभु तेरो नाम....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
8.	निर्धन के धन राम....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
9.	चाहे कृष्ण कहो या राम....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
10.	जिनकी लगन राम संग नाहीं....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
11.	गठरी छोड़ चला बिणजारा....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
12.	राघव प्रेम रीति हीय भाई....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
13.	श्री रघुवीर भगतन के हितकारी....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
14.	राघव तुम बिन कौन सहाय....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
15.	सैंया निकस गये मैं ना लड़ी....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
16.	रघुपति मन संदेह न कीजे....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
17.	प्राणी का सुख निद्रा सोवे....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
18.	जा मत जा मत जा जोगी....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर

19.	अबकी टेक हमारी....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
20.	प्रभु मोरे अवगुण चित ना धरो....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
21.	कृष्ण रंग में रंगी चुनरिया....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
22.	हरि सुमिरन में ध्यान लगाओ....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
23.	तू कैसा दाता रे....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
24.	न जानूँ तेरा राम कैसा.....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
25.	झनक श्याम की पैजनीया.....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
26.	जोबन धन पावणा दिन चारा....	बनारसी लाल झोरी
27.	मदन गोपाल शरण तेरी आयो....	पुरूषोत्तम राणावत
28.	रंगीला संभू....	पुरूषोत्तम राणावत
29.	मन म्हारा इण मारग मत चाल	पारंपरिक भजन
30.	मोहन मुस्काने....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
31.	पग घुंगरू बांध मीरा नाची रे....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
32.	गजानंद नाचे....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
33.	चीर हर्यो गिरधारी....	पारंपरिक
34.	नाम तो बतादे पनिहारी....	पारंपरिक
35.	हरि तुम हरो जन की पीर....	मुंशी खान बावरा

प्रसिद्ध भजनों का साहित्य एवं स्वरलिपि

1. भजन राग भीमपलासी (ताल- कहरवा भजनी ठेका)

मैं अपने राम को रिझाऊं, भव भंजन गुण गाऊँ।

गंगा न जाऊं यमुना न जाऊं, ना कोई तीरथ नहाऊं।
अड़सठ तीरथ घट के भीतर, वा मैं मल-मल नहाऊं।।
राम को रिझाऊं.......

डारी न तोड़ूं पाति न तोड़ूं, ना कोई जीव सताऊं।
पात-पात में राम बिराजे, सबको शीश निवाऊँ।।
राम को रिझाऊं.......

बूटी न खाऊँ औषध न खाऊं, न कोई वैद्य बुलाऊँ।
पूरण वैद्य मेरे अविनासी, वा को नबज दिखाऊं।।
राम को रिझाऊं.......

जोगी होए न जटा बढ़ाऊँ, ना अंग भभूत रमाऊँ।
जो रंग रंग दिए आप विधाता, और क्या रंग चढ़ाऊँ।।
राम को रिझाऊं.......

चाँद सूरज दोऊ समकर मानू, सुख की सेज बिछाऊँ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, आवागमन मिटाऊं।।
राम को रिझाऊं.......

भजन – मैं अपने राम को रिझाउ......

राग – भीमपलासी

स्थायी

ताल – कहरवा (भजनी ठेका) लय – मध्यलय

												सा	म	ग॒	प
												मैं	ऽ	ऽ	ऽ
म	प	–	–	प	(सां)नि॒	ध	म	प	ग॒म	ग॒रे	नि॒	सा	–	सा	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ	प	ने	ऽ	ऽ	राम	कोऽ	–रि	झा	ऽ	ऊँ	ऽ
सा	सा	म	–	प	ध	म	प	धनि॒	सां	–	नि॒प	मग॒	प	–	–
भ	व	भं	ऽ	ज	न	गु	ण	गाऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऊंऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	ग॒म	ग॒रे	नि॒	सा	–	सा	–								
ऽ	राम	कोऽ	रि	झा	ऽ	ऊँ	ऽ								
0				X				0				X			

अन्तरा

											प	–	ग॒	–	म
											गं	ऽ	गा	ऽ	न
नि॒	–	–	–	नि॒	–	–	–	नि॒	–	–	नि॒	नि॒	सां	–	सां
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऊं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	मु	ना	ऽ	न
सां	–	–	–	(सां)नि॒	सां	सां	नि॒	ध	–	–	ध	–	ध	–	ध
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऊं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ना	ऽ	को	ऽ	ई
ध	–	–	सा	–	नि॒	–	प	ग॒	–	(ग)प	–	–	–	–	–
ऽ	ऽ	ऽ	ती	ऽ	र	ऽ	थ	ना	ऽ	ऊं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	–	–	प	प	नि॒	नि॒	सां	–	–	–	–	सां	ऽ	सां
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ड़	स	ठ	ती	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	–	थ

सां	—	—	नि	नि	सां	—	गरे	रें[ग]	सां	—	—	—	सां	—	सां
ऽ	ऽ	ऽ	घ	ट	के	ऽ	ऽ	भी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ	र
[रेसा]ध	—	—	ध	—	नि	—	प	प	—	—	स	—	नि	—	प
ऽ	ऽ	ऽ	वा	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ल	म	ऽ	ल
ग	—	म	—	ग	—	—	—	ग	—	—	म	ग	रे	—	नि
ना	ऽ	ऊ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रा	म	को	ऽ	रि
सा	—	—	—	सा	—	—	—								
झा	ऽ	ऽ	ऽ	ऊं	ऽ	ऽ	ऽ								
X				0				X				0			

(स्रोत : मोइनुदिन खान साहब का दोहिता इमरान खान से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

2. भजन- राग मिश्र कलावती (ताल- कहरवा)

मन लागो मेरो यार फकीरी में।

जो सुख पाये राम भजन मे,

सो सुख नाही अमीरी में।।

मन लागो.......

भला बुरा सब की सुन लीजे,

कर गुज़रान गरीबी में ॥

मन लागो.......

प्रेम नगर में रहन हमारी,

भली बन आई सबूरी में॥

मन लागो.......

हाथ में कुण्डी, बगल में सोटा,

चारों दिशा जागीरी में॥

मन लागो.......

आखिर यह तन ख़ाक मिलेगा,

कहाँ फिरत मग़रूरी में।।

मन लागो.......

कहत कबीर सुनो भाई साधो,

साहिब मिले सबूरी में।।

मन लागो.......

भजन – मन लागो मेरो यार ....

राग – मिश्र कलावती

ताल – कहरवा स्थायी लय – मध्यलय

						–नि	नि–
						ऽम	नऽ
–	–	सा	–	ग	रे	–	सा
ऽ	ऽ	ला	ऽ	गो	मे	ऽ	रो
सा	–	–	–	–	सा	–	प
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	फ
प	ध	नि	ध	प	प	म	ग
कि	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
(प)म	–	–	–	–	–	–	ध
में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	फ
ध	–	–	–	नि	सां	नि	प
की	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ	री	ऽ
ग	–	–	म	ग	ग		
में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ		
X				0			

अन्तरा

	–प	–ध	–प	सां	–	–	–
	ऽजो	ऽसु	ऽख	पा	ऽ	ऽयो	ऽ
–	–नि	–सां	––	––	––	निध	धप
ऽ	ऽरा	ऽम	ऽम	जऽ	नऽ	ऽमे	ऽऽ
प	–सां	––	––	नि–	––	ध	पम
ऽ	ऽयो	ऽसु	ऽख	नाऽ	ऽऽ	हीऽ	ऽअ
ध	–	–	–	नि	सां	नि	प
मी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ
ग	–	–	म	ग	ग	–नि	नि–
मे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽम	नऽ
X				0			

(स्रोत : मोइनुद्दिन खान साहब का दोहिता इमरान खान से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

3. **भजन- राग पूरियाधनाश्री (ताल- पंजाबी अद्धा)**

अब मोरी राखो लाज हरि।

अवगुन मोसे बिसरत नाहीं,
पल छीन घरी-घरी॥

राखो लाज.......

तुम जानत सब अन्तर्यामी,
करनी कछु ना करी॥

राखो लाज.......

दारा, सुत, धन, मोह लियो है,
सुध-बुध सब बिसरी॥

राखो लाज.......

सूर पतित को बेग उबारो,
अब मोरी नाव भरी॥

राखो लाज.......

भजन – राखो लाज हरि.....

राग – पूरियाधनाश्री

स्थायी

ताल – पंजाबी अद्धा | लय – मध्यलय

								प	–	प	–	म॑	ध॒	म॑	(ग)रे॒
								रा	ऽ	ऽ	खो	ला	ऽ	ज	ह
ग	–	–	–	म॑	ग	रे॒	सा								
री	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ब	मो	री								
X				2				0				3			

अन्तरा

								ऩि	रे॒	ग	रे॒	ग	ग	म॑	ग
								अ	व	गु	ण	मो	ऽ	से	ऽ
प	–	–	–	म॑	ध॒	म॑	ग	म॑	प	म॑	ग	म॑	ध॒	नि	ध॒
बी	स	र	त	ना	ही	ऽ	ऽ	प	ल	छि	न	घ	डी	ऽ	घ
नि	–	–	–	रें॒	नी	ध॒	प								
डी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								
X				2				0				3			

(स्रोत : मोइनुद्दिन खान साहब का दोहिता इमरान खान से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

4. भजन- राग अहीर भैरव व कालिंगड़ा (ताल- कहरवा)

हमका ओढ़ावे चादरिया,

चलती बिरिया।।

प्राण राम जब निकसन लागे,

उलट गयी दोऊ नैन पुतरिया॥

हमको ओढ़ावे.......

अंदर से जब बाहर लाये,

छूट गई सब महल अटरिया॥

हमको ओढ़ावे......

चार जने मिल खाट उठाई,

रोवत ले चले डगर डगरिया॥

हमको ओढ़ावे......

कहत कबीर सुनो भाई साधो,

संग चली बस सूखी लकड़ियाँ॥

हमको ओढ़ावे......

भजन – हमका ओढावे चादरिया.....

राग – अहिर भैरव / कालिंगड़ा

स्थायी

ताल : कहरवा | लय– मध्यलय

						नि	नि
						ऽह	मका
नि	निसा	सा	सारे	ग	मग	–रे	सारे
ओ	ढाऽ	वे	चाऽ	दरि	याऽ	ऽच	लती
सा	–	–	–	रेसा	निप		
बिरि	या	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ		
X				0			

अन्तरा

	म	–	–	–	–	–	–
	प्रा	ण	रा	ऽ	म	ज	ब
–	–म	––	–प	म	पग	ग	मग
ऽ	ऽनि	कस	ऽन	ला	ऽऽ	गे	ऽऽ
रेसा	ध	–	–	पध	पनि	धप	मम
ऽऽ	ऊ	लट	ऽग	ईऽ	ऽऽ	ऽदो	ऽहु
–	–ध	पम	ग	––	––	नि	नि
ऽऽ	ऽनै	ऽन	ऽपु	तरि	याऽ	ह	मका
X				0			

(स्रोत : मोइनुदिन खान साहब का दोहिता इमरान खान से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

5. **भजन- राग कालिंगड़ा (ताल- तीनताल मध्यलय)**

जीव तू जाएगो हम जानी।

राज करन्ता राजा जाएँगे,

रूप निरखती रानी।

धरती और अम्बर जाएगा,

चाँद सूरज अगवाणी॥

जीव तू जाएँगो.......

तपसी और संन्यासी जाएँगें,

और जाएँगे ज्ञानी।

ब्रह्मा जाएँगे, विष्णु जाएँगे,

जाएँगें स्वर ज्ञानी॥

जीव तू जाएँगो.......

गंगा जाएँगी, जमुना जाएँगी,

वाको निर्मल पानी।

कहत कबीर तेरी भक्ति न जाएँगी,

ज्योती में जोत समानी॥

जीव तू जाएँगो.......

टिप्पणी –

इस भजन में कबीर दास जी ने भक्ति की महिमा को सर्वोपरि बताया है। बिहारी जी कत्थक ने इस रचना में भारतीय संगीत की प्राचीन राग कालिंगड़ा का चयन किया है। संवादी भजनों की यही विशेषता है कि शास्त्रीय रागों में पद के भावों के अनुसार राग का चयन किया जाता है।

भजन – जीव तू जाएगो .....

राग – कालिंगड़ा

स्थायी

ताल – तीन ताल

लय – मध्यलय

					नि	निनि	–सां	ध़	–	प	ध़	म	–	प	म
					जी	वतू	SS	जा	ए	गो	S	S	S	ह	म
सां	–	–	–	–											
जा	S	नी	S	S											
X				2				0				3			

अन्तरा

									म	–	मप	–	–ध	–	–
									रा	जS	कर	S	S	न्ता	SS
सां	–	–	–	–	–	रेंनि	–	सां	–नि	–	–	सां	–	–	–
रा	S	जा	S	S	जा	Sएं	S	गे	Sरू	Sप	Sनि	र	ख	ति	S
–	–	–रें	मंगं	रें	–	सां	–	–	मम	म–	–	–प	ग	–प	–
S	Sरा	SS	नीS	जा	S	एं	S	S	धर	तीS	औ	Sअ	म्ब	रजा	ऐ
–	–	–	–ध	प	म	प	ध	सां	–	प	ध	प	म	प	ध
गा	S	चांS	दसू	र	ज	अ	ग	वाS	नीS	जा	ए	गो	S	ह	म
सा	–	–	–	–											
जा	S	नी	S	S											
X				2				0				3			

(स्रोत : यूट्यूब से प्राप्त रचना)

web link : https://youtu.be/4UkUuaPKuvU?si=or9HsMLxSB3sVwDG

शेष अन्तरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे।

6. भजन- राग मालकौंस (ताल- अद्धा तीनताल)

मत भूल अरे इन्सान,
तेरी नेकी बदी ना प्रभु से छुपी।
सब देख रहा भगवान।।

जिसने बनाया, मिटाएँ वही,
फूल-काँटो को संग-संग, खिलाएँ वही।
खेल जीवन-मरन का, रचाएँ वही,
डाले माटी के पुतले में जान॥
मत भूल अरे......

विधाता ने लिखा, सोही मानले,
प्राण देता वही, वही प्राण ले।
तेरे बस में है, क्या ये तू जान ले,
खाली माटी के पुतले में जान।।
मत भूल अरे......

जब वही है, बनाने वाला,
फिर तू कौन है, मिटाने वाला।
तेरी नेकी बदी ना, प्रभु से छुपी,
तू है निर्बल तो, वो है बलवान॥
मत भूल अरे......

भजन – मत भूल अरे इंसान.....

राग – मालकौंस

स्थायी

ताल – अद्धा तीन ताल | लय – मध्यलय

									ग	–	म	ध	–	नि	सां
									म	त	भू	लअ	रे	इं	ऽ
सां	–	–	–	–	नि	–	गं	सां	ध	–नि	–सां	सां	–	–	गं
सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ते	री	ने	ऽकी	ऽब	दी	ऽ	ऽऽ	ना
सां	–	ध	–नि	सां	सां	–	सां	–	–ध	–नि	–सां	ध	नी	ध	म
ही	ऽ	उ	ससे	छु	पी	ऽ	स	ब	ऽदे	ऽख	ऽर	हा	ऽ	भ	ग
म	–	–	ग	म	नि	ध	म	म							
वा	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ							
X				2				0				3			

अन्तरा

									गं	गंगं	–मं	गं	मंगं	–	–सां
									जि	सने	ऽब	ना	ऽया	ऽ	ऽमि
ध	–सां	–	सां	सां	–	–	–	ग	गग	म	ध	नि	सां	गंसां	सां
टा	ऽये	ऽ	वो	ही	ऽ	ऽ	ऽ	फू	लकां	टो	के	सं	गसं	ऽग	खि
ध	सा	–	सां	सां	–	–	–	गं	गंगं	गं	मंमं	गं	मंगं	–	सं
ला	ये	ऽ	वो	ही	ऽ	ऽ	ऽ	खे	लजी	ऽव	नम	र	णके	ऽ	र
ध	सं	–	सां	सां	–	–	नि	नि	नि	नि	नि	ध	निध	–	प
चा	ये	ऽ	वो	ही	ऽ	ऽ	डा	ले	मि	टी	के	पु	तले	ऽ	में
म	–	–	ग	म	नि	ध	म	म							
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ							
X				2				0				3			

(स्रोत : यूट्यूब से प्राप्त रचना)

web link : https://youtu.be/-Bnck6IASOM?si=RGAMKRMOAXHkcpKt

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

7. भजन- राग शुद्ध कल्याण (ताल- कहरवा मध्यलय)

प्रभू तेरो नाम, जो ध्याए फल पाए,

सुखदाई तेरो नाम।।

तेरी दया हो जाए तो दाता,

जीवन धन मिल जाए,

सुखदाई तेरो नाम ।।

प्रभू तेरो.......

तू दानी, तू अन्तर्यामी,

तेरी कृपा हो जाए तो स्वामी,

हर बिगड़ी बन जाए,

जीवन धन मिल जाए,

सुखदाई तेरो नाम।।

प्रभू तेरो.......

बस जाए मोरा सूना अँगना

खिल जाए मुरझाया कँगना

जीवन में रस लाये,

जीवन धन मिल जाए,

सुखदाई तेरो नाम।।

प्रभू तेरो.......

टिप्पणी –

संवादी भजन गायक बिहारी जी एक संगीतकार गायक ही नहीं वरन् एक उत्कृष्ट साहित्य रचनाकार भी थे। यह रचना इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

भजन – प्रभु तेरो नाम....

राग – शुद्ध कल्याण

स्थायी

ताल – कहरवा | लय – मध्यलय

					सा–	निप	–ध
					प्रऽ	भुते	ऽरो
सा	–	–	–	सा	रे	ग	ध
ना	ऽ	म	जो	ध्या	ये	फ	ल
प	मं	गम	ग	सा–	सा–	निप	–ध
पा	ए	ऽसु	ख	दाऽ	ईऽ	ऽते	ऽरो
सा	–	–					
ना	ऽ	म					
X		0		X		0	

अन्तरा

	–ग	–प	–ध	सा	–	सा	–
	ऽतो	ऽरी	ऽद	या	ऽ	हो	ऽ
–	–रे	–ग	–रे	नी	रे	सा	–
ऽ	ऽजा	ऽए	ऽतो	दा	ऽ	ता	ऽ
–	–ग	–प	–ध	नी–	धनी	सां–	नीध
ऽ	ऽजी	ऽव	ऽन	धऽ	नऽ	ऽऽ	मिल
प	मंग	–ग	–म	ग	रेसा	–	–रे
जा	एऽ	ऽमि	ऽल	जा	एऽ	ऽमि	ऽल
ग	गध	–प	–ग	सा	–	निप	–ध
जा	एऽ	ऽसु	ऽख	दा	ई	ऽते	ऽरो
सा	–	–	–				
ना	ऽ	म	ऽ				
X		0		X		0	

(स्रोत : यूट्यूब से प्राप्त रचना)

web link : https://www.youtube.com/watch?v=wsZ-v2N4sSE

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

8. **भजन- राग खमाज (ताल- अद्धा त्रिताल)**

सुने री मैंने,

निर्धन के धन राम।।

राम नाम गाढ़ो कर राखो,

ज्यों लोभी राखे दाम॥

निर्धन के......

खर्चे ना खूटे चोर ना लूटे,

भीर परे आवे काम॥

निर्धन के......

दिन में सूरज उगे सवायो,

घटत नहीं छै दाम॥

निर्धन के......

धनवन्ता वाहु को जानो,

जप ते सुबहो शाम॥

निर्धन के......

'सूरदास' की याही पूँजी,

हीरा कणी सू काई काम॥

निर्धन के......

भजन – निर्धन के धन राम...

राग–खमाज

स्थायी

ताल – अद्धा त्रिताल | लय – मध्यलय

			–ध	मधप	म	रे	सा	ग	ग	प	प	नि	ध	नि	नि
			ऽसु	नेऽऽ	री	मैं	ने	नि	र	ध	न	के	ऽ	ध	न
सां	–	सां	–ध	मधप	म	रे	सा	ग	ग	प	प	नि	ध	नि	नि
रा	ऽ	म	ऽसु	नेऽऽ	री	मैं	ने	नि	र	ध	न	के	ऽ	ध	न
सां	–	सां													
रा	ऽ	म													
X				2				0				3			

अंतरा

								ग	प	ध	नि	सां	सां	सां	–
								रा	ऽ	म	ना	ऽ	म	गा	ऽ
नि	–	नि	सां	निध	पध	म	ग	ग	–	प	–	(नि)ध	–	नि	–
ढो	ऽ	क	र	राऽ	ऽऽ	खो	ज्यों	लो	ऽ	भी	ऽ	रा	ऽ	खे	ऽ
सां	–	नि	–ध	मधप	म	रे	सा	ग	ग	प	प	नि	ध	नि	नि
दा	ऽ	म	ऽसु	नेऽऽ	री	मैं	ने	नि	र	ध	न	के	ऽ	ध	न
सां	–	–													
रा	ऽ	म													
X				2				0				3			

(स्रोत : अग्रवाल, भूमिका – ''बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'', (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 99)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

९. **भजन- राग मिश्र मारु बिहाग (ताल- त्रिताल)**

चाहे कृष्ण कहो या राम,
मेरे दोनों में अटके प्राण।।

एक का वंश तो सोम वंश है,
दूजे का वंश है भान,
मेरे दोनों में अटके प्राण।।

चाहे कृष्ण ....

एक के हाथ में धनुष बाण है,
दूजा तोड़े मुरलियों में तान,
मेरे दोनों में अटके प्राण।।

चाहे कृष्ण ....

'भाऊ' के ये दोनों एक है,
दोनों कृपा निधान,
मेरे दोनों में अटके प्राण।।

चाहे कृष्ण ....

भजन– चाहे कृष्ण कहो या राम....

राग – मिश्र मारूबिहाग

स्थायी

ताल – तीनताल   लय – मध्यलय

						सा	रे	मं	–	मं	प	ग	–	सा	–
						चा	हे	कृ	ऽ	ष्ण	क	हो	ऽ	या	ऽ
सा	–	–	रे	नि़	नि़	ग	मं	प	नि	नि	(ध)प	प	ध	ध	मं
रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	मे	रे	दो	ऽ	नो	में	अ	ट	के	ऽ
प	–	–	मं	(ग)रे	सा	सा	रे	मं	–	मं	प	ग	–	सा	–
प्रा	ऽ	ऽ	ण	रे	ऽ	चा	हे	कृ	ऽ	ष्ण	क	हो	ऽ	या	ऽ
सा	–	–	रे	नि़	नि़										
रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म										
X				2				0				3			

अंतरा

								ग	मं	प	नि	सां	–	सां	सां
								ए	ऽ	क	का	वं	ऽ	श	है
नि	–	नि	सां	(नि)ध	ध	प	–	नि	–	नि	(ध)प	ध	–	ध	मं
सो	ऽ	म	वं	ऽ	श	है	ऽ	दू	ऽ	जे	का	वं	ऽ	श	है
प	–	–	मं	(ग)रे	सा	सा	रे	मं	–	मं	प	ग	–	सा	–
भा	ऽ	ऽ	न	रे	ऽ	चा	हे	कृ	ऽ	ष्ण	क	हो	ऽ	या	ऽ
सा	–	–	रे	नि़	नि़										
रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म										
X				2				0				3			

(स्त्रोत : अग्रवाल, भूमिका – "बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व", (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 102)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

10. भजन- राग कौशिक कान्हड़ा (ताल- त्रिताल)

लगन राम संग नाही जिनके,
जो नर खर कूकर सूकर सम,
वृथा जियत जग माही।।

कड़वी बेल की कड़वी तुमड़िया,
सब तीरथ कर आई।
जगन्नाथ के दरसन करके,
गयी नहीं कड़वाई।।

लगन राम......

कहा भयो उत्तम कुल जन्मे,
शील नहीं घट माही।
अमृत छोड़ विषय रस चाख्यो,
धिख-धिख तिनके ताई।।

लगन राम......

जैसे पुष्प उजाड़ में फूले,
बिन स्वारथ झड़ जाई।
सूरदास प्रभु हरि के भजन ते,
भव सागर तिरजाई।।

लगन राम......

भजन– लगन राम संग नाही.....

राग–कौशिक कान्हड़ा

स्थायी

ताल – तीनताल

लय – मध्यलय

								सां	नि	सां	ध	—	ध	प	म
								ल	ग	न	रा	ऽ	म	सं	ग
प	—	म	ग	ग	म	ग	सा	ग	सा	ध	नि	सा	म	म	—
ना	ऽ	हीं	ऽ	जि	न	के	ऽ	जो	ऽ	न	र	ख	र	कू	ऽ
ग	ग	म	ध	प	—	म	म	सां	नि	गं	सां	ध	ध	प	म
क	र	सु	ऽ	क	र	स	म	वृ	था	ऽ	जि	य	त	ज	ग
प	—	म	ग	ग	म	ग	सा	सां	नि	सां	ध	—	ध	प	म
मा	ऽ	ही	ऽ	जि	न	के	ऽ	ल	ग	न	रा	ऽ	म	सं	ग
प	—	म	ग	ग	म	ग	सा								
ना	ऽ	हीं	ऽ	जि	न	के	ऽ								
X				2				0				3			

अंतरा

								ग	ग	म	म	ध	ध	नि	–
								क	ड़	वी	बे	ऽ	ल	की	ऽ
सां	सां	सां	–	नि	सां	सां	सां	नि	नि	नि	–	गं	सां	ध	नि
क	ड़	वी	ऽ	तु	म	ड़ि	या	स	ब	ती	ऽ	र	थ	क	र
सां	–	–	ध	सां	–	सां	–	ध	ध	प	ग	म	म	म	–
आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ज	ग	ऽ	न्ना	ऽ	थ	के	ऽ
ग	सा	ध	नि	सा	सा	सा	–	सा	सा	ग	ग	(ग)ध	–	नि	गं
द	र	श	न	क	र	के	ऽ	ग	ई	ऽ	न	हीं	ऽ	क	ड़
सां	–	ध	–	प	म	ग	सा	सां	नि	सां	ध	–	ध	प	म
वा	ऽ	ई	ऽ	जि	न	के	ऽ	ल	ग	न	रा	ऽ	म	सं	ग
प	–	म	ग	ग	म	ग	सा								
ना	ऽ	हीं	ऽ	जि	न	के	ऽ								
X				2				0				3			

(स्त्रोत : अग्रवाल, भूमिका – "बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व", (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 110, 111)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

11. भजन- राग भीमपलासी (ताल- त्रिताल मध्यलय)

गठरी छोड़ चला बिणजारा।

या घट भीतर चांद सितारा,
या ही में नौ लख तारा।।

गठरी छोड़......

या गठरी में सात समंदर,
कोई मीठा कोई खारा।।

गठरी छोड़......

या गठरी में पाँच रतन है,
कोई-कोई परखण हारा॥

गठरी छोड़......

गिर पड़े गठरी गिर पड़े मंदिर,
जामें चिकना गारा।।

गठरी छोड़......

कहे कबीर सुनो भाई साधो,
शब्द गुण भेद उभारा।।

गठरी छोड़......

भजन – गठरी छोड़ चला.....

भीमपलासी

स्थायी

ताल – अद्धताल　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　लय – मध्यलय

					पप	प	–	(म)ग	–	म	प	(म)ग	–	(रे)सा	सा
					गठ	री	ऽ	छो	ऽ	ड	च	ला	ऽ	बि	ण
सा	–	सा	–	–	पप	प	–	(म)ग	–	म	प	(म)ग	–	(रे)सा	सा
जा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	गठ	री	ऽ	छो	ऽ	ड़	च	ला	ऽ	बि	ण
सा	–	सा	–	–											
जा	–	रा	ऽ	ऽ											
X				2				0				3			

अंतरा

								म	प	ग	म	प	नि	सां	सां
								या	ऽ	घ	ट	भी	ऽ	त	र
नि	–	सां	रें	निसां	नि	ध	प	ध	–	ध	ध	ध	नि	प	प
चां	ऽ	द	सि	ताऽ	ऽ	रा	ऽ	या	ऽ	ही	में	नों	ऽ	ल	ख
ग	गम	ग	–	प	पप	प	–	(म)ग	–	म	प	(म)ग	–	(रे)सा	सा
ता	ऽ	रा	ऽ	ऽ	गठ	री	ऽ	छो	ऽ	ड	च	ला	ऽ	बि	ण
सा	–	सा	–	–											
जा	–	रा	ऽ	ऽ											
X				2				0				3			

(स्त्रोत : अग्रवाल, भूमिका – "बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व", (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 114)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

12. भजन- राग मालकौंस (ताल- त्रिताल)

श्री राघव प्रेम रीति हिय भाई,
कौशलेस दशरथ के बालक,
झूठ भक्त की खाई।।

कौन पुन्य कीनो गिद्ध पक्षी,
कौन धरम जड़ लाई।
जेई कारण प्रभु रक्त देह को,
लीनी गोद उठाई।।
राघव प्रेम.......
बैर ठान दस कन्धर ने,
शिव की संपति ठुकराई।
सो संपति बिन शीश अरपिये,
भक्त विभीषण पाई।।
राघव प्रेम.......
प्रेम ही कारण राघव जन के,
बसत सदा घट माही।
"चिरजीव" रखी प्रेम रावरो,
हिय मैं आस लगाई।।
राघव प्रेम.......

टिप्पणी –

स्व. चिरंजीलाल तंवर एक सुप्रसिद्ध गायक तो थे ही, साथ ही उन्होंने अनेक भजनों के उत्कृष्ट साहित्य की रचना की है। उसी का एक उदाहरण यह भजन है। आप 'चिरंजीव' उपनाम से रचनाऐं करते हैं।

भजन – राघव प्रेम रीति हीय भाई .....

राग–मालकौंस

स्थायी

ताल – तीनताल | लय – मध्यलय

			ग	ग	म	ग	सा	ग	म	ग	सा	नी	सा	ध	नी
			श्री	रा	ऽ	घ	व	प्रे	ऽ	म	री	ऽ	ति	ही	य
सा	–	म	–	सां–	सांसां	–सां	सांसां	सांसां	गंसां	ध–	सांसां	नी–	नीनी	सांनी	गंसां
भी	ऽ	ई	ऽ	कौऽ	शले	ऽश	दश	रथ	कैऽ	बाऽ	लक	झूऽ	ठभ	ऽक्ष	कीऽ
ध	नी	ध	म	ग	म	ग	सा	ग	म	ग	सा	नि	सा	ध	नि
ख	ऽ	ई	ऽ	रा	ऽ	घ	व	प्रे	ऽ	म	री	ऽ	ती	ही	य
सा	–	म	–												
भा	ऽ	ई	ऽ												
X				2				0				3			

अन्तरा

								ग	–	म	म	ध	ध	नी	नी
								कौ	ऽ	न	पु	ऽ	न्य	कि	ऽ
सां	–	सां	सां	गं	नी	सां	–	नी	–	नी	नी	सां	नी	गं	सां
नो	ऽ	गि	ध	प	ऽ	क्षी	ऽ	कौ	ऽ	न	ध	र	म	ज	ड़
ध	–	–	नी	सां	–	–	–	गं	–	गं	–	गं	गं	गं	गं
ला	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	ऽ	जे	ऽ	का	ऽ	र	ण	प्र	भु
मं	गं	सां	नी	सां	सां	सां	–	नी	–	नी	–	सां	नी	गं	सां
र	ऽ	क्त	दे	ऽ	ह	को	ऽ	ली	ऽ	नी	ऽ	गो	ऽ	द	उ
ध	नी	ध	म	ग	म	ग	सा								
ठा	ऽ	ई	ऽ	रा	ऽ	घ	व								
X				2				0				3			

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 193)

शेष अन्तरे इसी प्रकार गाये जायेंगे।

13. **भजन- राग मारू बिहाग (ताल- त्रिताल)**

श्री रघुवर भक्तन के हितकारी।
जब-जब भीर परी भक्तन पै,
तब-तब की रखवारी।।

असुर संहारन, भक्त उबारन,
लिये मनुज अवतारी।
नृप दशरथ घर प्रगट भये माँ,
कौशल्या हितकारी।।
श्री रघुवर......

खल शालक प्रतिपालक जनके,
दशरथ सुत असुरारी।
संतन के जीवन धन जानो,
देवन के हितकारी॥
श्री रघुवर......

शिवसनकादि अरू ब्रह्मादिक,
शेष सहस मुखधारी।
लीला तेरी जानन पाये,
इन सब की मति हारी।।
श्री रघुवर......

ऐसे समरथ स्वामी जिनके,
वो क्यों फिरे भिखारी।
जनम जनम राघव चरणन में,
"चिरंजीव" बलिहारी।।
श्री रघुवर......

भजन – श्री रघुवर भक्तन के हितकारी.....

राग – मारू बिहाग

स्थायी

ताल – तीनताल | लय–मध्यलय

			प़	नी़	सा	ग	मंप	मं	मं	मं	प	ग	–	रे	सा
			श्री	र	घु	व	रऽ	भ	क	त	न	के	ऽ	हि	त
सा	–	सा	प़	नी़	सा	ग	(मं)प	नी़	नी़	नी़	नी़	सा	–	सा	सा
का	ऽ	री	श्री	र	घु	व	र	ज	ब	ज	ब	भी	ऽ	र	प
म	ग	रे	सा	रे	रे	सा	–	मं	मं	मं	मं	मं	–	प	ध
री	ऽ	भ	ग	त	न	पे	ऽ	त	ब	त	ब	की	ऽ	र	ख
मंध	पमं	गरे	सा	ग	मं	प	ग	मं	मं	मं	प	ग	–	रे	सा
वाऽ	ऽऽ	रीऽ	श्री	र	घु	व	र	भ	क	त	न	के	ऽ	हि	त
सा	–	सा													
का	ऽ	री													
X				2				0				3			

अन्तरा

								प	प	प	म	प	–	प	प
								अ	सु	र	सं	हा	ऽ	र	न
मं	प	ग	सा	गमं	प	प	प	मं	मं	–	मं	मं	मं	प	ध
भ	ऽ	क्त	ऊ	बाऽ	ऽ	र	न	लि	ये	ऽ	म	नु	ज	अ	व
मंध	पमं	ग	–	–	–	–	–	नी	नी	नी	नी	सां	सां	सां	सां
ताऽ	ऽऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नृ	प	द	श	र	थ	घ	र
नी	नी	नी	सां	(नी)ध	–	प	–	मं	–	मं	–	मं	–	प	ध
प्र	ग	ट	भ	ये	ऽ	मौं	ऽ	कौ	ऽ	श	ऽ	ल्या	ऽ	हि	त
मंध	पमं	गरे	सा												
काऽ	ऽऽ	रीऽ	श्री												
X				2				0				3			

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 199)

शेष अन्तरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे।

14. भजन- राग यमन (ताल- त्रिताल मध्यलय)

राघव तुम बिन कौन सहाय।
कोटि जतन कर-कर मैं हार्यो,
बिगरी मोरी बनाय।।

मात, पिता, भ्राता, सुत,
नारी कोउ नहीं हमारो।
भव सागर में बह्यो जात हूँ
आकर पार उतारो।।

राघव.......

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह ने,
उर बिच कियो बसेरो।
कृपा करो प्रभु जान आपको,
इनते करो निबेरो।।

राघव.......

पतित उधारण बिरद तिहारो,
मैं पापी अति भारो।
लाज रखो अपने पन की प्रभु,
'चिरंजीव' को तारो।।

राघव.......

भजन – राघव तुम बिन कौन सहाय.....

राग – यमन

स्थायी

ताल – तीनताल   लय – मध्यलय

				नि	–सा	धनि	निध	नि	रे	ग	मं	(ग)रे	–	(नि)ध	नि
				रा	ऽऽ	घऽ	वऽ	तु	म	बि	न	कौ	ऽ	न	स
सा	–	–	सा	नि	गरे	स	सा	ग	–	(रे)सा	नि	रे	रे	रे	रे
हा	ऽ	ऽ	य	रा	ऽऽ	घ	व	को	ऽ	टि	ज	त	न	क	र
ग	रे	(सा)नि	ध	सा	–	सा	–	मं	मं	मं	–	मं	ध	नि	ध
क	र	मैं	ऽ	हा	ऽ	र्यो	ऽ	बि	ग	री	ऽ	मो	ऽ	री	ब
प	–	–	(ग)रे	ग	रे	सा	(नि)ध								
ना	ऽ	ऽ	य	रा	ऽ	ध	व								
X				2				0				3			

अन्तरा

								मं	–	रे	रे	मं	–	ध	मं
								मा	ऽ	त	पि	ता	ऽ	भ्रा	ऽ
धनि	सां	सां	सां	नि	रें	सां	–	नि	–	नि	–	नि	नि	–	ध
ताऽ	ऽ	सु	त	ना	ऽ	री	ऽ	कौ	ऽ	ऊ	ऽ	न	हीं	ऽ	ह
नि	(ध)प	–	–	प	–	–	–	प	नि	सां	गं	रें	रें	रें	–
मा	ऽ	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	भ	व	सा	ऽ	ग	र	में	ऽ
रे	(सां)नि	(ध)प	प	सां	सां	सां	–	नि	–	नि	ध	नि	(म)प	प	प
ब	ह्यो	ऽ	जा	ऽ	त	हूँ	ऽ	आ	ऽ	क	र	पा	ऽ	र	उ
मं	रे	ग	–	ग	रे	सा	(नि)ध								
ता	ऽ	रो	ऽ	रा	ऽ	ध	व								
X				2				0				3			

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, 'चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती', पृष्ठ संख्या 204)

शेष अन्तरे भी इसी प्रकार गाये जायेंगे।

15. भजन- राग मेघ (ताल- झपताल मध्यलय)

सैया निकस गये मैं ना लड़ी थी।

इस काया के दस दरवाजा,

ना जानूँ कौन खिड़की खुली थी।।

सैया निकस ....

पाँच जेठनियाँ दस देरनियाँ,

ना जानूँ इनमें से कौन लड़ी थी।।

सैया निकस ....

ना मैं बोली ना मैं चाली ओढ़,

दुपट्टा मैं तो सोई पड़ी थी।।

सैया निकस ....

कहे कमाली कबीर की बेटी,

इस ब्याही से कुवाँरी भली थी।।

सैया निकस ....

भजन – सैंया निकस गये मै ना लड़ी.....

राग मेघ

स्थायी

ताल – झपताल लय – मध्यलय

सा	–	सा	–	रे	नी़	नी़	रे	रे	–
सैं	ऽ	या	ऽ	नी	क	स	ग	ये	ऽ
ग	म	रे	–	सा	सा	–	नीप़	नी़	प़
मैं	ऽ	ना	ऽ	ल	ड़ी	ऽ	थी	ऽ	ऽ
X		2			0		3		

अन्तरा

म	म	म	–	–	प	म	पनी	(प)	प
इ	स	का	ऽ	ऽ	या	ऽ	केऽ	ऽ	ऽ
रे	रे	नी़	–	नी़	सा	–	प़	नी़	प़
द	स	द	ऽ	र	वा	ऽ	जे	ऽ	ऽ
सा	–	सा	–	रे	नी़	–नी़	रे	–	–
न	ऽ	जा	ऽ	नूं	कौ	ऽन	सी	ऽ	ऽ
ग	म	रे	–	सा	सा	–	नीप़	नी़	प़
खि	ड़	की	ऽ	खु	ली	ऽ	थी	ऽ	ऽ
X		2			0		3		

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 227)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

16. भजन- राग दरबारी (ताल- तीनताल मध्यलय)

रघुपति! मन संदेह न कीजै।
मो देखत लक्ष्मण क्यों मरिहैं,
मौको आज्ञा दीजै।।

कहौ तो सूरज उगन देऊँ नहिं,
दिसि-दिसि बाढै ताम।
कहौ तो गन समेत ग्रसि खाँऊ
जमपुर जाई न राम।।

रघुपति.......

कहौ तो कालहि खंड-खंड करि,
टूक-टूक करि काटौं।
कहौ तो मृत्युहि मारि डारि कै,
खोदि पतालहि पाटौं।।

रघुपति.......

कहौ तौ चंद्रहि लै अकास तै,
लक्षमण मुखहिं निचोरों।
कहौ तो पैठि सुधा के सागर,
जल समस्त मैं धौरों।।

रघुपति.......

श्री रघुवर मौसो जन जाके,
ताकि कहाँ सँकराई।
"सूरदास" मिथ्या नहीं भाषत,
मोहि रघुनाथ-दुहाई।।

रघुपति.......

भजन – रघुपति मन संदेह न कीजै....

राग–दरबारी

स्थायी

ताल – तीनताल लय – मध्यलय

				रे	नि	सा	रे	ग	म	रे	स	ध	–	नी	प
				र	घु	प	ति	म	न	सं	ऽ	दे	ऽ	ह	न
सा	–	सा	–	ग	म	रे	सा	म	–	म	–	प	प	म	प
की	ऽ	जे	ऽ	र	धु	प	ति	मो	ऽ	दे	ऽ	ख	त	ल	क्षि
ध	ध	ध	नी	प	प	प	–	म	–	म	–	प	म	पसां	नीप
म	न	क्यों	ऽ	म	रि	हैं	ऽ	मौ	ऽ	को	ऽ	आ	ऽ	ञाऽ	ऽऽ
ग	–	ग	म	रे	नि	सा	रे								
दी	ऽ	जै	ऽ	र	घु	प	ति								
X				2				0				3			

अन्तरा

								म	प	–	प	ध	–	नि	प
								क	हो	ऽ	तो	सू	ऽ	र	ज
सां	सां	सां	सां	रें	नी	सां	सां	नी	नी	नी	नी	सां	नी	सांरें	सां
उ	ग	न	दे	ऽ	ऊँ	नी	हीं	दि	सि	दि	सि	बा	ऽ	ढ़ैऽ	ऽ
ध	–	–	नी	प	–	–	–	रें	रें	–	रें	गं	मं	रें	सां
ता	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	क	हो	ऽ	तो	ग	न	स	मे
ध	–	नि	प	सां	–	सां	–	म	म	म	म	प	म	पनी	प
त	ऽ	ग्र	सि	खा	ऽ	ऊँ	ऽ	ज	म	पु	र	जा	ऽ	येऽ	ना
ग	–	–	म	रे	नि	सा	रे								
रा	ऽ	ऽ	म	र	घु	प	ति								
X				2				0				3			

(स्त्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 233)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

17. भजन- राग बहार (ताल- त्रिताल मध्यलय)

प्राणी तोहे का सुख निद्रा सोवे,
घट ते श्वास क्षीण हो काया,
नर देहि मुरझावे॥
प्राणी का.......

बाळपणा हँस खेल बिताया,
युवा विषय को चावे।
वृद्ध भयो शिथलाई आई,
नर देही मुरझा वे॥
प्राणी का.......

येना बाण काळ का लागे,
दशो द्वार रुक जावे।
हो अधीर तब रोवण लाग्यो,
अरे सिसक-सिसक दु:ख पावे॥
प्राणी का.......

बीते रात का भात होत है,
अमृत बेला जावे।
होते तन भजन कर अपना,
मन समय चूक पछतावे॥
प्राणी का.......

भजन – प्राणी का सुख निद्रो सोवे

राग–बहार

स्थायी

ताल – तीनताल | लय – मध्यलय

				नि	–	सां	–	नि	प	प	प	म	प	ग	म
				प्रा	ऽ	णी	ऽ	का	ऽ	सु	ख	नि	ऽ	द्रा	ऽ
नि	–	–	ध	नि	–	सां	–	नि	प	प	–	प	म	नी	प
सो	ऽ	ऽ	वे	प्रा	ऽ	णी	ऽ	घ	ट	ते	ऽ	श्वा	ऽ	स	क्षी
ग	ग	ग	म	रे	–	सा	–	म	म	म	–	म	प	ग	म
ऽ	ण	हो	ऽ	का	ऽ	या	ऽ	न	र	दे	ऽ	ही	ऽ	मु	र
नि	–	–	ध	नि	–	सां	–								
द्रा	ऽ	ऽ	वे	प्रा	ऽ	णी	ऽ								
X				2				0				3			

अन्तरा

								म	–	प	प	नि	ध	नि	नि
								बा	ऽ	ल	प	णा	ऽ	हँ	स
सां	–	सां	सां	रें	नी	सां	–	गं	गं	–	मं	रें	रें	सां	–
खे	ऽ	ल	ग	वा	ऽ	या	ऽ	यु	वा	ऽ	वि	ष	य	को	ऽ
नि	–	–	ध	नी	नी	सां	–	गं	–	गं	मं	रें	–	सां	सां
वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	वृ	ऽ	द्ध	भ	यो	ऽ	शि	थ
नि	–	ध	–	नी	–	सां	–	नि	प	प	–	म	प	ग	म
ला	ऽ	ई	ऽ	आ	ऽ	ई	ऽ	न	र	दे	ऽ	हि	ऽ	मु	र
नि	–	–	ध	नि	–	सां	–								
द्रा	ऽ	ऽ	वे	प्रा	ऽ	णी	ऽ								
X				2				0				3			

(स्त्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 236)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

18. ठुमरी शैली का भजन- राग भैरवी (ताल- पंजाबी अद्धा)

जा मत जा मत जा जोगी,

पाँव परूँ मैं तोरे।।

अगर चंदन की चिता रचाऊँ,

अपने हात जलाजा।

जल बल भई भस्म की ढेरी,

अपने अंग लगाजा।।

जा मत जा ......

प्रेम नगर को पैंडो ही न्यारो,

हमको गैल बताजा।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर,

ज्योति में ज्योति मिलाजा।।

जा मत जा ......

टिप्पणी –

संवादी भजनों में अनेक शैलियों का मिश्रण पाया जाता है। यह भजन ठुमरी गायन शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है।

भजन – जा मत जा मत जो जोगी....

राग – भैरवी

स्थायी

ताल – पंजाबी अद्धा लय – मध्यलय

								ग	–	म	म	ध	–	नी	रें
								जा	ऽ	म	त	जा	ऽ	म	त
सां	–	–	प	ग	म	रे	सा	प	–	प	प	प	ग	प	नी
जा	ऽ	ऽ	ऽ	जो	ऽ	गी	ऽ	पाँ	ऽ	व	प	रू	ऽ	में	ऽ
ध	–	–	–	पम	गम	पम	(म)ग	ग	–	म	म	ध	–	नी	रें
तो	ऽ	ऽ	ऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	जा	ऽ	म	त	जा	ऽ	म	त
X				2				0				3			

अन्तरा

								ग	ग	म	म	ध	ध	नी	नी
								अ	ग	र	चं	द	न	की	ऽ
सां	सां	–	सां	निसां	रें	सां	–	नी	नी	नी	–	सां	नी	गं	सां
ची	ता	ऽ	र	चाऽ	ऽ	ऊँ	ऽ	अ	प	ने	ऽ	हा	ऽ	थ	ज
ध	–	–	–	प	–	–	–	गं	गं	गं	रें	गं	सां	ध	ध
ला	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ज	ल	ब	ल	भ	ई	ऽ	भ
सां	सां	रें	मं	रें	–	सां	–	प	प	प	–	प	म	प	नी
ऽ	रम	की	ऽ	डे	ऽ	री	ऽ	अ	प	ने	ऽ	अं	ऽ	ग	ल
ध	–	–	–	पम	गम	पम	(म)ग	ग	–	म	म	ध	–	नी	रें
गा	ऽ	ऽ	ऽ	जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	जा	ऽ	म	त	जा	ऽ	म	त
X				2				0				3			

(स्त्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 243)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

19. भजन- राग अड़ाना (ताल- रूपक मध्यलय)

अब की टेक हमारी,
लाज रखो ओ बनवारी।।

जैसे लाज राखी द्रोपती की,
होन न दीनि उघारी,
खेंचत-खेंचत दोऊ भुज थाके,
दुश्शासन पचिहारी।
चीर बढ़यो मुरारी॥
अब की.......

जैसे लाज रखी पार्थ की,
भारत युद्ध मंझारी,
सारथी होकर रथ को हाक्यों,
चक्र सुदर्शन धारी।
भक्त की टेक ना टारी॥
अब की.......

'सूरदास' की लज्जा राखी,
अब कौन है रखवारी,
राधे-राधे श्रीवर प्यारी,
श्री वृषभानु दुलारी।
सरन थाकी आयो बिहारी॥
अब की.......

भजन – अबकी टेक हमारी.....

राग–अडाना
स्थायी

ताल – रूपक | लय–मध्यलय

प	प	प	नीनी	पम	प	सां	सां	–	–	ध	नि	प	–
अ	ब	की	टेऽ	ऽऽ	क	ह	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ
म	–	म	प	म	नि	प	ग	–	म	रे	–	सा	–
ला	ऽ	ज	रा	खो	ब	न	वा	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
0			2		3		0			2		3	

अन्तरा

म	–	प	ध	–	नि	नि	सां	–	सां	रें	नी	सां	–
जै	ऽ	से	ला	ऽ	ज	र	खी	ऽ	पा	र	थ	की	ऽ
नी	–	नीनी	सां	नी	सांरे	सां	ध	–	नी	प	–	–	–
भा	ऽ	रत	यु	ऽ	द्धऽ	मं	झा	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
रें	–	रेंरें	रें	सां	रें	पं	गं	गं	मं	रें	रें	सां	–
सा	ऽ	रथी	हो	ऽ	क	र	र	थ	को	हा	ऽ	क्यों	ऽ
नी	–	नीनी	सां	नी	गं	सां	ध	–	नी	प	–	म	मम
च	ऽ	क्रसु	द	र	श	न	धा	ऽ	ऽ	री	ऽ	भक	तकी
पंसा	सां	सांसां	ध़	नी	प	–							
टेऽ	ऽ	कना	टा	ऽ	री	ऽ							
0			2		3		0			2		3	

(स्त्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 252)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

20. **भजन- राग शिवरंजनी (ताल- बसंत ७ मात्रा)**

प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो।

समदरसी है नाम तिहारो,

चाहो तो पार करो।।

इक नदिया एक नाल कहावत,

मैलो हि नीर भरो।

जब मिलिकै दोऊ एक बरण भये,

सुरसरि नाम परो॥

प्रभु मोरे.......

इक लोहा पूजा में राखत,

एक घर बधिक परो।

पारस गुण अवगुण नहीं चितवे,

कंचन करत खरो।।

प्रभु मोरे.......

एक जीव इक कहावत,

'सूर' श्याम झगरो ।

अबकी बेर मोहि पार उतारो,

नहि पन जात तरो।।

प्रभु मोरे.......

भजन – प्रभु मोरे अवगुण चित ना धरो .....

राग – शिवरंजनी

ताल – बसंत (9 मात्रा) स्थायी लय – मध्यलय

		सारे	गप	धसां	धप	गरे	सा ध–	–सा
		प्रभु	मोरे	अव	गुण	चित	नाऽ	ऽध
ग–	– –	रे–	सा–	गरे	साध	सा–	– –	सा–
रोऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	सम	दर	शीऽ	ऽऽ	हैऽ
सारे	गप	प–	प–	प–	पप	सां–	– –	रेंध
नाऽ	मती	हाऽ	रोऽ	चाऽ	होतो	पाऽ	ऽऽ	रक
सां–	धप	सारे						
रोऽ	ऽऽ	प्रभु						
X	2	3	4	0	5	0	6	0

अन्तरा

				प–	धग	प–	–प	पप
				एऽ	कजी	ऽऽ	ऽव	इक
सां	रेंध	सां	सांसां	सांसां	सांसां	—	–सां	रेंध
ब्र	म्हक	हा	वत	सूऽ	रश्या	ऽऽ	ऽम	झग
सां	–	रेंसांधप	धसांगं	गंगं	रेंसां	गं	–गं	गंगं
रो	ऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ	अब	कीवे	ऽ	ऽर	मोहे
रें	सांध	सां	पप	पप	पप	पप	प	धग
पा	रऊ	ता	रो	नहीं	पन	जाऽ	ऽ	तट
पग	रेसा	सारे						
रोऽ	ऽऽ	प्रभु						
X	2	3	4	0	5	0	6	0

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, 'चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती', पृष्ठ संख्या 143)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

21. भजन- राग मांड (ताल- कहरवा भजनी ठेका)

श्याम नाम में रंगी चुनरियाँ,

अब रंग दूजा भाये ना।

इन नैनन में श्याम समाए

और दुसरो भावे ना।।

बंशी वारे मोहन प्यारे,

छोड़ गये क्यों यमुना किनारे,

भक्त तुम्हारे बेकल सारे,

नैन झलके असुवन झारे।

लगन लगी है तेरे दर्शन की,

लगन लगी अब जावेना।।

श्याम नाम में.......

बोझा भारी रैन अंधारी,

सुझत नाहीं राह कन्हाई,

नाव हमारी बहुत पुराणी,

अब तारो या डारो मझधारी।

हट पकडी है मेरे मन ने,

अब और के द्वारे जाउं ना।।

श्याम नाम में.......

भजन – श्याम नाम में रंगी चुनरिया.....

राग – मांड़

स्थायी

ताल – कहरवा (भजनी ठेका) लय – मध्यलय

	ग	–ग	ग	–	ग	म	ग
	श्या	ऽम	ना	ऽ	म	में	ऽ
–	म	प	ध	पम	ध	पम	ग
ऽ	रं	गी	चु	नऽ	री	ऽया	ऽ
–	प	धसां	सां	–	नि	सांनि	ध
ऽ	अ	बरं	ग	ऽ	दू	ऽजा	ऽ
–	प	म	धप	म	ग	–	–
ऽ	भा	वे	ऽऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
–	ग	गग	म	–	प	निनि	–
ऽ	इ	नने	ऽ	ऽ	न	नमें	ऽ
–	प	मप	म	ग	–	रे	–सा
ऽ	श्या	ऽम	स	मा	ऽ	ये	ऽऽ
नी	नी	नी	नी	सां	सां	^{नि}ध	^पम
औ	ऽ	र	दू	ऽ	स	रो	ऽ
पम	धप	—	मग	ग	–	रे	सा
माऽ	वेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ
X				0			

अन्तरा

	सां	सां	—	सां	—	निध	पध
	बं	शी	ऽ	व	ऽ	रेऽ	ऽऽ
नि	नि	नि	नि	नि	—	धप	मप
मो	ऽ	ह	न	प्या	ऽ	रेऽ	ऽऽ
ध	ध	ध	ध	ध	—	नि	ध
ऽ	छो	ड़	ग	ये	ऽ	क्यों	ऽ
रें	सां	निध	पध	प	—	प	—
ऽ	य	मुना	ऽकि	ना	ऽ	रे	ऽ
—	सां	सां	सां	सां	—	निध	पध
ऽ	भ	क्त	तु	म्हा	ऽ	रेऽ	ऽऽ
नि	नि	नि	नि	नि	—	धप	मप
बे	ऽ	क	ल	सा	ऽ	रेऽ	ऽऽ
ध	ध	ध	ध	ध	ध	नि	ध
ऽ	नै	न	न	झ	ल	के	ऽ
रें	सां	निध	पध	प	—	धप	मग
ऽऽ	अ	सुव	ऽन	धा	ऽ	ऽरे	ऽऽ
—	ग	गग	ग	ग	—	म	ग
ऽ	ल	गन	ल	गी	ऽ	हैं	ऽ
—	म	पप	ध	पम	ध	पम	ग
ऽ	ते	रेद	र	शऽ	न	ऽकि	ऽऽ
—	प	धसां	सां	—	नि	सांनि	ध
ऽ	ल	गन	ल	ऽ	गी	ऽअ	ब
—	प	म	धप	म	ग	—	—
ऽ	जा	वे	ऽऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
X				0			

(स्रोत : यूट्यूब से प्राप्त रचना)

web link : https://youtu.be/Oc1ff-R3WA4?si=uBBrGkdLF0Bzc12U

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

22. भजन- राग खमाज (ताल- कहरवा मध्यलय)

लगा सको तो हरि सुमिरन में ध्यान लगाओ,

ध्यान लगाओ प्रभु का ध्यान लगाओ।।

इस जीवन में क्या खोया क्या पाया है,

लगा सको तो कुछ इसका अनुमान लगाओ॥

ध्यान लगाओ.......

धर्म समझ कर अपना जग में करम करो सब,

छुडा सको तो धन बल का अभिमान छुडाऔ।।

ध्यान लगाओ.......

लक्ष्मण सोच समझलो अवसर बिता जाये,

घटा सकोतो धन बल का अभिमान घटाओ।।

ध्यान लगाओ.......

भजन – लगा सको तो हरि सुमिरन में ध्यान लगाओं....

(राग खमाज)

स्थायी

ताल – कहरवा   लय – मध्यलय

					नि	नि	सां
					ल	गा	स
सां	–	नि	धप	–	प	निध	प
को	ऽ	तो	ऽऽ	ऽ	ह	रिसु	मि
म	गरे	ग	–	–	म	गरे	सा
र	नऽ	में	ऽ	ऽ	ध्या	ऽन	ल
सा	–	सा	–	–	प	ध	सा
गा	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ध्या	न	ल
रेग	ग	मध	पम	–	म	गरे	सा
ऽगा	ओ	प्रभु	काऽ	ऽ	ध्या	ऽन	ल
सा	–	स	–				
गा	ऽ	ओ	ऽ				
X				0			

अन्तरा

						निप	मग
						इस	जीऽ
[नि]प	प	प	–	–	नि	प–	मग
व	न	में	ऽ	ऽ	क्या	ऽऽ	खोऽ
[नि]प	–	प	प	–	ध	–	नि
या	ऽ	औ	र	ऽ	क्या	ऽ	पा
निध	पम	पध	प–	–	नि	–	सां
याऽ	ऽऽ	ऽऽ	हैऽ	ऽ	ल	गा	स
–	–	नि–	धप	–	प	निध	–प
को	ऽ	ऽतो	ऽऽ	ऽ	कु	छइ	सका
रे	गरे	ग	–	–	म	गरे	सा
ऽ	ऽऽ	अ	नु	ऽऽ	मा	ऽन	ल
सा	–	सा	–	–	नि	नि	सां
गा	ऽ	औ	ऽ	ऽ	ल	गा	स
सां	–	नि	धप				
को	ऽ	तो	ऽऽ				
X				0			

(स्रोत : यूट्यूब से प्राप्त रचना)

web link : https://youtu.be/GEEgu0Q-M7M?si=ZH12yln0FF97qo5-

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

23. **भजन- राग- मेघ मल्हार (ताल- कहरवा मध्यलय)**

मैं चकित थकित हैरान सा हूँ तू कैसा दाता रे,
कैसे समझाऊँ तुझको तू समझ न आता रे।।

अपना किया आप हम पाये तो तेरा क्या उपकार,
वो भी नकद नहीं मिलता हो अगले जनम उधार,
तू चोखो जगदातार भला तेरा बही खाता रे।।
मैं चकित थकित.......

किसी-किसी को इतना दे दिया जो न सके सम्भार,
कोई-कोई भूखा पेट पीटता हो रहा हाल बेहाल,
तू चोखो जगदाधार भलो तू विश्व विधाता रे।।
मैं चकित थकित.......

तेरे पुजारी भिक्षुक भिक्षा मांगे कई हज़ार,
तू स्वयं सोचले महाकृपण है अथवा है दातार,
लाचार बिचारों से दर-दर चौखट पुजवाता रे।।
मैं चकित थकित.......

भले-बुरे की कब करता सच्चा दानी पहचान,
आँख मूंद कर दे देता है जो कोई मांगे दान,
मुख देख-देख कर तिलक करे जैसा हो माथा रे।।
मैं चकित थकित.......

वैज्ञानिक को जो मति दीनी वैसा गाया गीत,
सत्य कथन स्वभाव बना चाहे हार रहे या जीत,
है प्रीत पुरानी मात-पिता-सुत का है नाता रे।।
मैं चकित थकित.......

भजन– मैं चकित थकित .....

राग – मेघ मल्हार

स्थायी

ताल – कहरवा | लय – मध्यलय

														प़	नी़
														मैं	ऽ
रे	रे	रे	रे	रे	रे	रे	ग॒	सा	–	–सा	सा	सा	सा	सा	नि़
च	कि	त	थ	कि	त	है	ऽ	रा	ऽ	ऽन	सा	हूँ	ऽ	तू	ऽ
सा	रे	रे	रे	सा	रे	सा	नी़	रे	–	–	–	–	–	–	–
के	ऽ	सा	ऽ	दा	ऽ	ता	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	–	प	प	प	नी़	म	प	म	रे	रे	–	सा	नी़
कै	ऽ	से	ऽ	स	म	झा	ऽ	ऊँ	ऽ	तु	झ	को	ऽ	तू	ऽ
सा	ग॒	ग॒	म	रे	–	रे	सा	सा	–	–	–	प़	नी़	प़	ऽ
स	म	झ	ना	आ	ऽ	ता	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	ऽ
X				0				X				0			

अन्तरा

रे	रे	रे	–	रे	रे	–	ग	सा	सा	सा	सा	सा	–	सा	–
अ	प	ना	ऽ	कि	या	ऽ	आ	ऽ	प	ह	म	पा	ऽ	यें	ऽ
सा	–	रे	–	नि	–	नि	नि	रे	–	–	–	–	–	रे	–
ते	ऽ	रा	ऽ	क्या	ऽ	उ	प	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
प	–	प	–	प	प	प	नि	म	प	प	म	रे	सा	सा	नी
वो	ऽ	भी	ऽ	न	क	द	न	हीं	ऽ	मि	ल	ता	ऽ	हो	ऽ
ग	ग	ग	म	रे	रे	रे	सा	सा	–	–	–	–	सा	प	म
अ	ग	ले	ऽ	ज	न	म	उ	धा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	तू	ऽ
प	सां	सां	–	सां	सां	सां	रें	नि	सां	सां	नि	प	–	प	म
चो	ऽ	खो	ऽ	ज	ग	दा	ऽ	ता	ऽ	र	भ	लो	ऽ	तू	ऽ
प	नि	नि	प	म	रे	सा	नी	रे	–	–	–	–	–	–	–
वि	ऽ	श्व	वि	धा	ऽ	ता	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	–	प	प	प	नी	म	प	म	रे	रे	–	सा	नी
कै	ऽ	से	ऽ	स	म	झा	ऽ	ऊँ	ऽ	तु	झ	को	ऽ	तू	ऽ
सा	ग	ग	म	रे	–	रे	सा	सा	–	–	–	प	नी	प	ऽ
स	म	झ	ना	आ	ऽ	ता	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	ऽ
X				0				X				0			

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 224)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

24. भजन- राग मांड (ताल- कहरवा भजनी ठेका)

ना जानू तेरा साहब कैसा,

ऊँचा चढ़-चढ़ बाँग पुकारे,
क्या तेरा साहब बहरा है,
कीड़ी के पग नेवर बाजे,
वो भी साहब सुनता है।।
ना जानूं......

माला पहरी तिलक लगाया,
लंबियां जटां बढ़ाता है,
अंतर तेरे कुफर-कटारी,
यूं नहिं साहब मिलता है।।
ना जानूं......

कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी,
जोड़ जमीं पर धरता है,
चलने की जब त्यारी होई,
हाथ पसारे चलता है।।
ना जानूं......

हीरा होवे परख दिखाया,
कौडी परखन कैसा है,
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
हरि जैसे को तैसा है।।
ना जानूं......

भजन – न जानूं तेरा राम कैसा है.....

राग – शुद्ध मांड

स्थायी

ताल – कहरवा — लय – मध्यलय

	ग	(न)–ध	ध	पम	धप	ग	–	–	म	गसा	सा	सा	स	सा	–
	न	ऽजा	नूं	तैऽ	ऽऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	राऽ	म	कै	सा	है	ऽ
–	ग	–ध	ध												
ऽ	न	ऽजा	नूं												
X		0		X		0		X		0		X		0	

अन्तरा

	म	म	–	म	प	ग	म	प	–	प	प	नी	–	ध	प
	ॐ	चा	ऽ	च	ढ	च	ढ	बां	ऽ	ग	पु	का	ऽ	रे	ऽ
–	प	प	प	नि	ध	नि	सां	सां	सां	सां	–	सां	–	–	–
ऽ	क्या	ते	रा	सा	ऽ	हि	ब	ब	हि	रा	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
–	रें	गं	–	गं	–	गं	गं	रेंगं	मंगं	रें	सां	सां	नी	ध	प
ऽ	की	ड़ी	ऽ	के	ऽ	प	ग	नेऽ	ऽऽ	व	र	बा	ऽ	जे	ऽ
–	सां	सां	–	नि	सां	ध	ध	–	पध	म	–	मप	ग	(रे)ग	सा
ऽ	वो	भी	ऽ	सा	ऽ	हे	ब	ऽ	सुन	ता	ऽ	हैऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	ग	–(म)ध	ध	पम	धप	ग	–	–	म	गसा	सा	सा	सा	सा	–
ऽ	ना	ऽजा	नूं	तेऽ	ऽऽ	रा	ऽ	ऽ	सा	ऽहे	ब	कै	सा	है	ऽ
X		0		X		0		X		0		X		0	

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, 'चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती', पृष्ठ संख्या 230)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

25. भजन- राग रागेश्री (ताल- कहरवा मध्यलय)

झनक श्याम की पैजनियाँ।
यशोमती सुत को चलन सिखावत,
अंगूरी पकरत मोरी बइया॥

झनक श्याम........

श्याम बदन पर पीत झंगुरिया,
सीस कुलइया चोतनिय।
जाको ब्रह्मा पार ना पावत,
ताहि खिलावत है ग्वालनिया॥

झनक श्याम........

दूर न जाऊ निकट ही खेलु
मैं बलिहारी रंकनिहारी।
सूर श्याम यसुमती बलिहारी,
सुत ही खिलावत सब लोगनिया॥

झनक श्याम........

भजन – झनक श्याम की पैजनियाँ.....

राग–रागेश्री

स्थायी

ताल – कहरवा

लय–मध्यलय

								ग	म	रे	सा	–	रे	ध़	नी़
								झ	न	क	श्या	ऽ	म	की	ऽ
सा	–	ग	ग	म	–	रे	सा	ग	म	ध	ध	ध	नी	ध	–
पै	ऽ	ज	नि	याँ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	सु	म	ती	सु	त	को	ऽ
ग	ग	ग	म	रे	–	सा	सा	ग	म	रे	सा	सा	रे	ध़	नी़
च	ल	न	सि	खा	ऽ	व	त	अँ	गु	री	ग	हि	ऽ	ग	हि
सा	–	ग	ग	म	–	रे	सा								
दो	ऽ	बैं	ऽ	याँ	ऽ	ऽ	ऽ								
X				0				X				0			

अन्तरा

								म	–	ध	निध	सां	सां	सां	सां
								श्या	ऽ	म	वऽ	द	न	प	र
सां	–	सां	रें	सांनि	ध	सां	–	ध	–	ध	ध	ध	नि	ध	म
पी	ऽ	त	झं	गु	री	याँ	ऽ	शी	ऽ	श	कु	ले	ऽ	याँ	ऽ
म	–	प	नि	ध	–	–	–	ध	–	नि	सां	गं	गंमं	रें	सां
चौ	ऽ	त	नि	याँ	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	को	ऽ	ब्र	ऽऽ	ह्मा	ऽ
सां	–	सां	रें	नि	ध	सां	–	ध	–	ध	ध	ध	नि	ध	मग
पा	ऽ	र	ना	पा	ऽ	वे	ऽ	ता	ऽ	ही	न	चा	ऽ	व	त
ग	–	ग	म	रे	–	सा	–								
ग्वा	ऽ	ल	नि	याँ	ऽ	ऽ	ऽ								
X				0				X				0			

(स्त्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 249)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

26. **भजन- राग यमन कल्याण (ताल- कहरवा मध्यलय)**

जोबन धन पावणा दिन चारा,
या रो गरब करे सो गंवारा।

पशु चामड़ी बणत पनइया,
नौबत बणे रे नगारा,
नर थारी चामड़ी काम नहीं आवे,
बळ-झळ होवे रे अंगारा॥

जोबन धन.......

दस माथा और बीस भुजा हा,
पुत्र घणा ओ परिवारा,
एडा–एडा जोध गरब मे गलीया,
लंकारा सिरदारा॥

जोबन धन.......

हाड़ माँस का बण्या पूतला,
भीतर भरिया अंगारा,
ऊपर रंग सुरंग चढ़ायो,
कारीगर किरतारा॥

जोबन धन.......

ओ संसार ओस वालो पाणी,
जाता नहीं लागे वारा,
कहत कबीर सुणो भाई साधो,
हरी भज उतरो पारा॥

जोबन धन.......

भजन – जोबन धन पावणा दिन चारां.....

मांड शैली पर आधारित

स्थायी

ताल – कहरवा | लय – मध्यलय

														सा	ग
														जो	ऽ
ग	–	ग	–	ग	–	ग	–	–	रे	ग	प	म	–	म	–
ब	ऽ	न	ऽ	ध	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ	पा	ऽ	ऽ	ऽ	व	ऽ
ग	–	रे	ग	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–
णा	ऽ	ऽ	ऽ	दि	ऽ	न	ऽ	चा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	सा	प	प	–	–	–	–	–	म॑	प	प	–	प	रे
ऽ	ऽ	यां	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	र	ब	ऽ	क	ऽ
रे	ग	–	रे	ग	प	प	–	म	–	ग	–	रे	सा	सा	ग
रे	ऽ	ऽ	ऽ	सो	ऽ	गं	ऽ	वा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	जो	ऽ
X				0				X				0			

अंतरा

		प	–	नी	–	नी	–	–	–	सा	–	सा	–	–	–
		हा	ऽ	ड	ऽ	मां	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	प	–	नी	–	नी	–	सा	–	सा	–	रे	ग	ग	रे
ऽ	ऽ	ब	ऽ	नी	ऽ	रे	ऽ	पु	ऽ	त	ऽ	लि	ऽ	यां	ऽ
–	–	ग	प	म	–	म	–	ग	–	रे	ग	सा	–	सा	–
ऽ	ऽ	मां	ऽ	हैं	ऽ	भ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	अं	ऽ	ऽ	ऽ

सा	–	सा	–	–	–	–	–	ग	म	प	ध	नी	सां	नी	–
गा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	नी	–	नी	–	नी	–	–	–	नी	–	सां	नी	ध	नी
ऽ	ऽ	लो	ऽ	ई	ऽ	चा	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	ड़ो	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	नी	सां	सां	–	सां	–	नी	–	–	–	सां	–	–	–
ऽ	ऽ	रं	ऽ	ग	ऽ	जो	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ऽ
नी	प	प	नी	नी	–	नी	–	सां	नी	(सां)	–	नी	–	ध	–
ऽ	ऽ	का	ऽ	री	ऽ	ग	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	कि	ऽ	र	ऽ
प	–	म	–	ग	रे	सा	ग								
ता	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	जो	ऽ								
X				0				X				0			

(स्त्रोत : शर्मा, डॉ. वसुमती एवं सांखला, डॉ. कमल किशोर (सम्पा.) (2014), "राजस्थान का सन्त–साहित्य", राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, पृष्ठ संख्या 22, 23)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

27. भजन- राग पूरियाधनाश्री (ताल- अद्धा त्रिताल)

मदन गोपाल शरण तोरी आयो,

चरण कमल की सेवा दीजै,
चेरो करि राखो घर जायो॥

मदन.......

धन-धन मात पिता सुत बन्धु,
धन जननी जिन गोद खिलायो॥

मदन.......

धन-धन चरण चलत तीरथ को,
धन गुरु जिन हरिनाम सुनायो॥

मदन.......

जे नर बिमुख भये गोविन्द से,
जनम अनेक महा दु:ख पायो॥

मदन.......

श्री भट्ट के प्रभु दियो अभय पद,
यम डरप्यो जब दास कहायो॥

मदन.......

भजन – मदन गोपाल शरण तेरी आयो ....

राग – पूरीया धनाश्री

स्थायी

ताल – अद्धा त्रिताल | लय – मध्यलय

								प	प	प	म॑	ग	रे॒	सा	–
								म	द	न	गो	पा	ऽ	ल	श
प	प	प	प	म॑	ध॒	म॑	ग	ग	–	म॑	ध॒	सां	सां	सां	सां
र	ण	तो	री	आ	ऽ	यो	ऽ	च	र	ण	क	म	ल	की	ऽ
नि	–	सां	नि	ध॒	नि	(ध)म॑	ग	रे॒	–	रे	–	नि	रे॒	नि	ध॒
से	ऽ	वा	ऽ	दी	ऽ	जो	ऽ	चे	ऽ	रो	ऽ	क	रि	ऽ	ऽ
प	म॑	ग	ग	म॑	ग	रे॒	सा								
रा	ऽ	खो	घ	र	जा	ऽ	यो								
X				2				0				3			

अन्तरा

								ग	ग	ग	ग	म॑	–	ध॒	ध॒
								ध	न	ध	न	मा	ऽ	त	पि
सां	–	सां	सां	नि	रें॒	सां	–	नि	ध॒	नि	सा	नि	ध॒	नि	ध॒
ता	ऽ	ज	न	बं	ऽ	धु	ऽ	ध	न	ऽ	ऽ	ज	न	नी	ऽ
प	–म॑	–ग	–म॑	ग	रे॒	सा	–	प	प	प	म॑				
जि	नगो	ऽद	ऽखि	ला	ऽ	यो	ऽ	म	द	न	गो				
X				2				0				3			

(स्रोत : पुरूषोत्तम राणावत जी से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

28. **मांड शैली पर आधारित भजन- राग पीलू (ताल- दादरा)**

रंगीला शंभु गोरा ले,

पधारो प्यारा पावणा॥

नन्दी भृंगी वीर भद्रगण,

गणपति भैरव संग ल्यावणा॥

रंगीला शंभु......

अंग भभूती गले रुण्डमाला,

लागो छो परम सुहावणा॥

रंगीला शंभु......

राजराजेश्वर दानी शिरोमणि,

राजा राम सिंह मन भावणा॥

रंगीला शंभु ...

टिप्पणी –

यह भजन जयपुर के राजा रामसिंह जी द्वारा लिखित है। भगवान शंकर की महिमा पर आधारित यह भजन जयपुर क्षैत्र में आज भी अत्यन्त प्रचलित है। मध्यलय दादरा ताल और राग पीलू में निबद्ध यह रचना संवादी भजन का उत्कृष्ट उदाहरण है।

भजन – रंगीला शंभू गोरा ले पधारो.....

राग – पीलू

स्थायी

ताल – दादरा | लय– मध्यलय

					रे
					रं
नि	सा	–	ग	रे	–
गी	ला	ऽ	शं	भू	ऽ
नि	नि	सा	ध	प	ध
गो	रा	ऽ	ले	ऽ	प
म	प	नि	सा	म	प
धा	रो	ऽ	प्या	रा	ऽ
ग	–	–म	रे	सा	रे
पा	ऽ	ऽव	णा	ऽ	रं
X			0		

अंतरा

नि	सा	–	ग	रे	–
नं	दी	ऽ	भृं	गी	ऽ
प	म	निप	ग	–रे	रे
वी	ऽ	ऽर	भ	द्रग	ण
गग	ग	ग	–	गम	नीप
गण	प	ति	भे	रव	संग
ग	–	–म	रे	सा	रे
ल्या	ऽ	ऽव	णा	ऽ	रं
X			0		

(स्रोत : पुरूषोत्तम राणावत जी से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

29. भजन- राग सोरठ (ताल- कहरवा मध्यलय)

दोहा 1. सोरठ जब ही गाइये, जब सोबो पड जाय।
चातरूक हो जो सुण ऊठे, मूरख सुण सो जाय॥

2. सोरठ मीठी रागणी, रण मीठी तलवार।
सहजा मीठी कामणी, चोपड मीठी सार॥

भजन मन म्हारा इण मारग मत चाल,
कुसंग रो लाछण लाग्यो रे॥

आम्बा के संग आमली जी, केला संग बड़बोर,
वा हाल चीरती रे, संगत का फल होय॥ मन म्हारा....

एक उजाड़ी डांगरी जी, खावे परायो माल,
गले बंधायो डिंगरो, पाव तुड़ा घर आये॥ मन म्हारा....

बाजीगर रो बांदरो जी ,कूद सके नही डाळ,
गले बन्दाई सिन्दरी, घर-घर नरत कराई॥ मन म्हारा....

गली जो बाड पडोस की जी, अण खेर्या खरजाई,
अरे नुगरा के संग, पत सुगरा की जाए॥ मन म्हारा....

भला घरा की डावडी जी, परघर पिसण जाए,
पडोसण सु बाता लगी, अरे चून गंड़कड़ा खाए॥ मन म्हारा....

खरी कमाई आप की जी, कभी ना निर्फल जाए,
सो-सो जो कोसा बसे, वहा भि मिलेगी आये॥ मन म्हारा....

प्रीत करे तो यसी कीजे, जैसे लोठा डोर,
गले बंधावे आप को, लावे नीर झकोळ॥ मन म्हारा....

भजन – मन म्हारा इण मारग मत चाल......

राग– सोरठ

स्थायी

ताल – भजनी कहरवा | लय – मध्यलय

												गरे	गरे	सानी	साऽ
												मऽ	नऽ	म्हाऽ	राऽ
रे	रे	म	म	प	प	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नि	ध
इ	ण	मा	ऽ	र	ग	म	त	चा	ऽ	ल	कु	सं	ग	रो	ऽ
प	प	प	प	प	ध	म	ग	म	म	म	म				
ला	ऽ	छ	ण	ला	ऽ	ग्यो	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ				
X				0				X				0			

अन्तरा

ग	ग	ग	म	रे	ग	सा	सा	रे	रे	म	म	प	प	प	प
आ	ऽ	म्बा	ऽ	के	ऽ	सं	ग	आ	ऽ	म	ऽ	ली	ऽ	जी	ऽ
म	प	नि	नि	सां	रें	नि	नि	सां	–	सां	सां	प	नि	सां	रें
के	ऽ	ला	ऽ	सं	ग	ब	ड़	बो	ऽ	ऽ	र	वा	ऽ	ऽ	हा
मं	गं	रें	सां	नि	नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां	रें	नि	ध
ऽ	ल	को	ऽ	ची	ऽ	ऽ	र	ती	ऽ	रे	ऽ	सं	ऽ	ग	त
प	म	प	ध	म	म	म	म								
का	ऽ	फ	ळ	हो	ऽ	ऽ	य								
X				0				X				0			

(स्त्रोत : प्रो.विजयेन्द्र गौतम से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

टिप्पणी : संवादी भजन शैली की यह एक पारंपरिक धुन है जो राग सोरठ में निबद्ध है। राग सोरठ और देश दोनों समप्राकृतिक राग है, जिनमें अन्तर इस रचना से स्पष्ट होता है। इसमें मध्यम स्वर पर किया गया न्यास सोरठ को देश राग से अलग करता है। ग्रामीण कलाकार भजन के प्रारम्भ में उक्त दोहों का गायन भी करते हैं, जो कि राग के श्रोताओं पर पड़ने वाले प्रभाव को अभिव्यक्त करते हैं।

30. **भजन- राग देस (ताल- अद्धा त्रिताल)**

मोहन मुस्काने, मुस्काने श्याम,
येरी ये सखी कोई, लागी सोहि जाने॥

रात मोहन सपने में देखे,
तो शीतल भये मोरे प्राणे।
ब्राहु की लग गई पसलि में,
तो नैना नीर बरसाने,
सखि कोई दर्द न जाने॥

मोहन मुस्काने......

मेजो खड़ी थी आपनी अटा पे,
और वो झट निकस आने।
मंद हँसन मुख देख कृष्ण को,
ओर मन मत लगे बहाने,
सखी कोई लोग हँसा ने॥

मोहन मुस्काने......[1]

[1] https://youtube/6ceEbyWOydE

31. **भजन- राग मालकौंस (ताल- अद्धाताल)**

पग घुंगरू बान्ध मीरा नाची रे।

मैं तो अपने नारायण की,

आप ही होगई दासी रे॥

राम घुंगरू......

लोग कहे मीरा भई बावरी,

सास कहे कुल नासी रे॥

राम घुंगरू......

जहर का प्याला राणा ने भेज्या,

पिवत मीरा हासी रे॥

राम घुंगरू......

मीरा के प्रभु गिरधर नागर,

सहज मिले अविनाशी रे॥

राम घुंगरू......[2]

[2] https://youtu.be/b2mSTpSGE

32. भजन- राग यमन (ताल- त्रिताल मध्यलय)

रुनक झुनक पग नेवर बाजे, गजानंद नाचे।

पिता तुम्हारा है शिवशंकर, नंदीश्वर साजे,
माता तुम्हारी पार्वती है, सिंह चढी गाजे॥

गजानंद नाचे.......

मूसक वाहन सूंड़ सुंडाला, एकदंत साजे,
गल पुष्पन को हार विराजे, कोटि काम लाजे॥

गजानंद नाचे.......

विघ्न विनाशक मंगल कारण, राजनपति बाजे,
तुलसीदास गणपति न सुमरियाँ दुःख दरिद्र भाजे॥

गजानंद नाचे.......[3]

[3] श्री राम सवरुप भोपा से प्राप्त रचना

33. **भजन- राग भैरवी (ताल- कहरवा भजनी ठेका)**

चीर हरयो गिरधारी,

थाने म्हारो चीर हरयो गिरधारी॥

चंदा भी देखे स्वामी, सुरजा भी देखे,

ग्वाळ हँसत देदे तारी॥

थाने म्हारो.......

थाकोतो चीर सखि जब में देवा,

जल से होजाओ तुम न्यारी॥

थाने म्हारो.......

जल से तो न्यारी हम किसविध होवा,

आप पुरुष हम नारी॥

थाने म्हारो.......

चन्द्र सखि भज बाल कृष्ण छवि,

आप जीते हम हारी॥

थाने म्हारो.......[4]

[4] स्व. श्री जयराज गंधर्व (कोटा) से प्राप्त रचना

34. भजन- राग भैरवी (ताल- कहरवा)

नाम बता दे पनिहारी,

सखिरी तेरो नाम बता दे पनीहारी॥

कुण तो घरा की पुत्री कहाई,

कौन पुरुष घर नारी॥

प्यारी तेरो.......

राजा जनक री पुत्री कहाई,

रामचंद्र घर नारी॥

प्यारी तेरो.......

शिर पर कलश कलश पर झारी,

चाल चले मतवारी॥

प्यारी तेरो.......[5]

---

[5] ग्रामीण क्षेत्र मे प्रचलित पारम्परिक भजन

35. **भजन- राग मधमाद सारंग (ताल- रूपक)**

हरि तुम हरो जन की पीर।

डूबतो गजराज तारयो,

बाहर कीनो नीर॥

हरि तुम.......

भक्त कारण रूप धारयो,

आप धरियो शरीर॥

हरि तुम.......

द्रोपदी की लाज राखी,

तुरत बढ़ायो चीर॥

हरि तुम.......

दासी मीरा जनम जनम की,

चरण कमल मैं सिर॥

हरि तुम.......[6]

[6] https://youtu.be/4heDDpzN6WQ

ब - ख़्याल शैली पर आधारित ख्याली भजन

भजनों के साहित्य मे संत कवियों की रचनाओं का प्रयोग होता है और ख़्याल की तरह ही पूर्ण कविता के गायन के बजाय स्थायी और अंतरा ही गाया जाता है। इस प्रकार के भजनों मे राग की शुद्धता के साथ शास्त्रीय तालों का प्रयोग किया जाता है। प्रायः तीनताल, एकताल, पंजाबी त्रिताल, आड़ा चौताल के साथ-साथ 9, 11, 13 मात्राओं की तालों का प्रयोग भी किया जाता है। गायन में छोटे ख़्याल के अनुरूप बोल बाँट और बोल तानों का प्रयोग इन भजनों की विशेषता है। इन भजनों मे विस्तार की अपेक्षा भाव-पक्ष को महत्त्व दिया जाता है।

1.	ऐरी माई आज तो आनंद प्रगट भये....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
2.	दुर्गे माँ जगत जननी....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
3.	सखिन संग जात पूजन शिव गोरी....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
4.	सूरत बिन देखे परत नही चैन....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
5.	डारी गयो गर फांस एरी माई....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
6.	छाड़ो- छाड़ो जी गैल बनवारी....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
7.	मगवा मे ठाड़ो बनवारी....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
8.	वारी जाऊँ जी....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
9.	पिया झूठी तोरी बतियाँ न माँनूगी....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
10.	दीनबंधु दीनानाथ महाराज....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
11.	कान्हा निपट अनारी....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
12.	शरण परे की रखियो लाज....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
13.	मानो जी मोरी मानो नन्द के लाल....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
14.	सकल बृजधाम धरत यही ध्यान....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
15.	तन मन धन तोपे वारू....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
16.	आज मोहे कुँवर कान्हा बरजे....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
17.	गोरी के नन्द गणेश....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक

1. **ख्याली भजन- राग नन्द (ताल- आड़ाचौताल मध्यलय)**

एरी माई आज तो आनंद,

प्रकट भये नन्द घर श्याम।

यशोदा की गोद हरि करी,

सखियाँ सब मन में मोद भरी,

बिसर गई सब काम धाम।।

26. भजन – ऐरी माई आज तो आनन्द.....

राग–नन्द

स्थायी

ताल – आडा चौताल लय – मध्यलय

										ध़	प	"रे	सा
										ऐ	री	मा	ई
ग	–	ग	म	–	ध	प	रे	–	सा	ग	म	प	ध
आ	ऽ	ज	तो	ऽ	आ	ऽ	नं	ऽ	द	प्र	ग	ट	भ
नि	–	"प	ग	म	ध	प	रे	–	सा	ध	प	रे	सा
ये	ऽ	ऽ	नं	द	घ	र	श्या	ऽ	म	ऐ	री	मा	ऽ
ग	–												
आ	ऽ												
X		2		0		3		0		4		0	

अंतरा

										ग	म	प	नि
										य	शो	दा	की
सां	सां	सां	रें	नि	—	प	ध	म॑	प	ग	म	प	नि
गो	ऽ	द	ह	रि	ऽ	क	री	ऽ	ऽ	स	खि	यां	स
प	ध	म॑	प	गम	ध	प	रे	सा	—	ध	प	रे	सा
ब	म	न	में	मोऽ	ऽ	द	भ	री	ऽ	बि	स	र	ग
ग	—	म	प	नि	प	ध	गम	ध	प	ध	प	रे	सा
ई	ऽ	स	ब	का	ऽ	म	धाऽ	ऽ	म	ऐ	री	मा	ई
ग	—												
आ	ऽ												
X		2		0		3		0		4		0	

(स्त्रोत : अग्रवाल, भूमिका – "बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व", (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 52, 53)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

2. **ख्याली भजन- राग दुर्गा (ताल- एकताल)**

दुर्गे माँ जगत जननी,

अभय वर दे भक्त जानी।

ध्यान धरत सुर नर मुनि,

गान करत गंधर्व गुनि,

सिंह की सवारी सोहे भवानी दयानी।।

भजन– दुर्गे माँ जगत जननी.....

राग–दुर्गा

स्थायी

ताल – एकताल — लय – मध्यलय

									मप	ध	प
									दुऽ	र	गे
ध	–	–	म	प	प	रे	–	सा	रे	$^{सा}$ध़	सा
मा	ऽ	ऽ	ज	ग	त	ज	न	नी	अ	भ	य
रे	म	प	सां	ध	म	रे	–	सा	मप	ध	प
व	र	दे	भ	ऽ	क्त	जा	ऽ	नी	दुऽ	र	गे
ध	–										
मा	ऽ										
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

म	—	म	प	ध	ध	धसां	पध	सां	सां	रें	सां
ध्या	ऽ	न	ध	र	त	सुऽ	ऽऽ	न	र	मु	नि
ध	सां	रें	मं	रें	सां	ध	—	म	म	प	प
गा	ऽ	न	क	र	त	गं	ऽ	ध	र्व	गु	नी
म	—	प	पध	सां	ध	म	रे	ध	सा	—	सा
सिं	ऽ	ह	कीऽ	ऽ	स	वा	ऽ	री	सो	ऽ	हे
म	—	प	मप	ध	प	रे	—	सा	मप	ध	प
भ	वा	ऽ	नीऽ	ऽ	द	या	ऽ	नी	दुऽ	र	गे
ध	—										
मा	—										
X		0		2		0		3		4	

(स्त्रोत : अग्रवाल, भूमिका – "बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व", (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 60, 61)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

3. **ख्याली भजन- राग भैरवी (ताल- त्रिताल मध्यलय)**

सखि न संग जात पूजन शिव गौरी,
करो मन की चाही शरण में तोरी।।

ता ही समय राम वाटिका में आए,
निरख सिया रूप मन में बसाए,
विधना रच दीनी राम सिया जोरी।।

भजन – सखिन संग जात पूजन शिव गोरी.....

राग–भैरवी

स्थायी

ताल – त्रिताल   लय – मध्यलय

											रे	नि	सा	ग	म
											स	खि	न	सं	ग
ध	–	प	ग	सा	ग	मध	पम	रे	–	सा	रे	नि	सा	ध	नि
जा	ऽ	त	पू	ज	न	शिऽ	वऽ	गो	ऽ	री	क	रो	म	न	की
रे	–	सा	नि	सा	ग	मध	पम	रे	–	सा	रे	नि	सा	ग	म
चा	ऽ	ही	श	र	ण	मेऽ	ऽऽ	तो	ऽ	री	स	खि	न	सं	ग
ध	–	प	ग												
जा	ऽ	त	पू												
X				2				0				3			

अंतरा

											प	ग	म	ध	नि
											ते	ही	स	म	य
सां	–	सां	नि	–	सां	गं	सां	ध	–	प	प	ग	म	ध	नि
रा	ऽ	म	वा	ऽ	टि	का	मे	आ	ऽ	ए	नि	र	ख	सि	या
सां	–	सां	नि	नि	पनि	सांगं	सां	ध	–	प	प	नि	गं	रें	गं
रू	ऽ	प	म	न	मेऽ	ऽऽ	ब	सा	ऽ	ए	वि	ध	ना	र	च
सां	रें	सां	प	ग	म	मध	पम	रे	–	सा	रे	नि	सा	ग	म
दी	ऽ	नी	रा	ऽ	म	सिऽ	याऽ	जो	ऽ	री	स	खि	न	सं	ग
ध	–	प	ग												
जा	ऽ	त	पू												
X				2				0				3			

(स्रोत : अग्रवाल, भूमिका – ''बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'', (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 69, 70)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

4. **ख्याली भजन- राग खमाज (ताल- त्रिताल)**

सूरत बिन देखे परत नहीं चैन।

नयन कजरारे अत ही मतवारे,

मुख चन्द्र चकोर बैन अति प्यारे,

निरख छवि श्याम लाजत कौटिक मैन।।

भजन– सूरत बिन देखे परत नहीं चैन.....

राग–खमाज

स्थायी

ताल – त्रिताल | लय – मध्यलय

			सा ग म प ध सू र त बि न
पध निसां नि ध देऽ ऽऽ खे प	म प पनि धप र त नऽ हींऽ	मग रेसा सा चैऽ ऽऽ न	सा ग म प ध सू र त बि न
पध देऽ			
X	2	0	3

अंतरा

											ग	म	प	ध	नि
											न	य	न	क	ज
सां	–	सां	सां	नि	सां	रें	सा	नि	ध	प	ध	म	प	ध	नि
रा	ऽ	रे	अ	त	ही	म	त	वा	ऽ	रे	मु	ख	चं	द्र	च
सां	–	सां	सां	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प	प	ध	सां	रें	गं
को	ऽ	र	बै	ऽ	न	अ	ति	प्या	ऽ	रे	नि	र	ख	छ	वि
नि	ध	प	ध	म	प	पनि	धप	मग	रेसा	सा	सा	ग	म	प	ध
श्या	ऽ	म	ला	ज	त	कौऽ	टिक	मैऽ	ऽऽ	न	सू	र	त	बि	न
पध															
देऽ															
X				2				0			3				

(स्त्रोत : अग्रवाल, भूमिका – "बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व", (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 73, 74)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

5. **ख्याली भजन- राग बिहाग (ताल- त्रिताल)**

डारी गयो गर फांस एरी माई,

यशोदा नन्दन कुँवर कन्हाई।।

जब से छवि मोरे नैनन बस गई,

निकसत नां दिन रैन एरी आली चतुर सखि,

निज नैनन देखयो स्यामा श्याम विलास।।

भजन– डारी गयो गर फाँस ऐरी माई....

राग–बिहाग

स्थायी

ताल – त्रिताल   लय – मध्यलय

नि	सा	ग	म	प	–	ग	म	ग	–	–	सा	सा	रे	सा	नि
डा	ऽ	री	ग	यो	ऽ	ग	र	फाँ	ऽ	ऽ	स	ऐ	री	मा	ई
प	नि	सा	ग	प	म	प	प	ग	म॑	प	म॑	ग	–	सा	–
य	शो	दा	ऽ	न	न्	द	न	कुं	व	र	क	न्हा	ऽ	ई	ऽ
नि	सा	ग	म	प	–	ग	म	ग							
डा	ऽ	रि	ग	यो	ऽ	ग	र	फाँ							
0				3				X				2			

अंतरा

ग	म	प	नि	सां	–	सां	नि	नि	–	प	प	प	सां	नि	नि
ज	ब	से	छ	वि	ऽ	मो	रे	नै	ऽ	न	न	ब	स	ग	ई
प	प	प	प	ध	–	ग	म	ग	–	–	म	प	नि	सां	सां
नि	क	स	त	ना	ऽ	दि	न	रै	ऽ	ऽ	न	ऐ	री	आ	ली
गं	गं	गं	मं	गं	–	सां	सां	नि	–	प	प	गम	पसां	नि	–
च	तु	र	स	खी	ऽ	नि	ज	नै	ऽ	न	न	देऽ	ऽऽ	ख्यो	ऽ
ग	–	ग	म	प	–	नि	नि	पनि	सांगं	रेंसां	निध	पम	गम	गरे	सा–
स्या	ऽ	मा	ऽ	श्या	ऽ	म	वि	लाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	सऽ
0				3				X				2			

(स्त्रोत : अग्रवाल, भूमिका – 'बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व', (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 77)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

6. **ख्याली भजन- राग देस (ताल- त्रिताल)**

छाड़ों-छाड़ों जी गैल बनवारी,

काहे करत मग में बरजोरी मैं तो हारी।।

नट खट ग्वाल बाल संग ठाडो,

जाने ना देत मोहे फिरत है आडो,

मटकी पटकी मोरी चूनर फारी।।

भजन– छाड़ों–छाड़ों जी गैल बनवारी.....

राग–देस

स्थायी

ताल – त्रिताल लय – मध्यलय

						प	म	ग	रे	ग	^नि^सा	–	रे	म	प
						छा	ड़ो	छा	ड़ो	जी	गै	ऽ	ल	ब	न
नि	–	सां	–	नि̱	ध	प	ध	म	गं	रे	ग	सा	रे	म	प
वा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	छा	ड़ो	छा	ड़ो	जी	गै	ऽ	ल	ब	न
नि	–	सां	–	–	–	प	म	प	नि	सां	रें	नि̱	ध	प	म
वा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	का	हे	क	र	त	म	ग	में	ब	र
प	ध	प	म	ग	रे	प	म	ग	रे	ग	सा	–	रे	म	प
जो	री	मैं	तो	हा	री	छा	ड़ो	छा	ड़ो	जी	गै	ऽ	ल	ब	न
नि	–	सां	–												
वा	ऽ	री	ऽ												
X				2				0				3			

अंतरा

								म	म	म	म	प	–	नि	नि
								न	ट	ख	ट	ग्वा	ऽ	ल	बा
सां	सां	सां	सां	रें	नि	सां	–	रें	रेंगं	रें	सां	रें	नि	सां	सां
ऽ	ल	सं	ग	ठा	ऽ	डो	ऽ	जा	नेऽ	ना	दे	ऽ	त	मो	हे
सां	रें	नि	ध	प	ध	मग	रे	प	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प
फि	र	त	है	आ	ऽ	डोऽ	ऽ	म	ट	की	प	ट	की	मो	री
प	ध	प	म	ग	रे	प	म	ग	रे	ग	सा	–	रे	म	प
चू	ऽ	न	र	फा	री	छा	डों	छा	डों	जी	गै	ऽ	ल	ब	न
नि	–	सां	–												
वा	ऽ	री	ऽ												
X				2				0				3			

(स्त्रोत : अग्रवाल, भूमिका – "बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व", (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 81)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

7. **ख्याली भजन- राग भीमपलासी (ताल- त्रिताल)**

मगवा में ठाडो बनवारी आज,

मैं तो गई री अकेली मोरी हरत लाज।।

चीर हरत मोरी गगरी गिराई,

समझत नाहीं करत लराई,

जाए कहूंगी यशोदा से आज।।

भजन– मगवा में ठाडो बनवारी आज.....

राग–भीमपलासी

स्थायी

ताल – त्रिताल लय – मध्यलय

						ग	म	प	नि	ध	प	ग	रे	नि	सा
						म	ग	वा	ऽ	मे	ठा	ऽ	डो	ब	न
म	–	म	ग	प	प	ग	म	प	नि	सां	गं	रें	सां	नि	ध
वा	ऽ	री	आ	ऽ	ज	मैं	तो	ग	ई	री	अ	के	ली	मो	री
प	पनि	धप	मग	रेरे	सा	ग	म	प	नि	ध	प	ग	रे	नि	सा
ह	रऽ	तऽ	लाऽ	ऽऽ	ज	म	ग	वा	ऽ	में	ठा	ऽ	डो	ब	न
म	–	म													
वा	ऽ	री													
X				2				0				3			

अन्तरा

								प	–	प	प	म	प	ग	म
								ची	ऽ	र	ह	र	त	मो	री
प	–	नि	प	सां	–	सां	–	प	नि	सां	मं	गं	रें	सां	–
ग	ग	री	गि	रा	ऽ	ई	ऽ	स	म	झ	त	ना	ऽ	ही	ऽ
नि	सां	रें	सां	नि	ध	प	–	प	नि	ध	प	म	ग	रे	सा
क	र	त	ल	रा	ऽ	ई	ऽ	जा	ऽ	ए	क	हूँ	गी	य	शो
नि	सा	ग	म	प	प	ग	म	प	नि	ध	प	ग	रे	नि	सा
दा	ऽ	से	आ	ऽ	ज	म	ग	वा	ऽ	में	ठा	ऽ	डो	ब	न
म	–	म													
वा	ऽ	री													
X				2				0				3			

(स्त्रोत : अग्रवाल, भूमिका – ''बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'', (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 85, 86)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

8. **खयाली भजन- राग खमाज (ताल- 13 मात्रा)**

तोरी साँवरी सुरत मोहनी मूरत, पर वारि जाऊँ जी।

निरख-निरख श्यामल तन वार, देऊँ मैं तन मन धन,

ऐसो यशोदा नंदन जगत, वंदन को मैं गुण गाऊँ जी।।

भजन – वारी जाऊँ जी.....

राग – खमाज

स्थायी

ताल – 13 मात्रा लय – मध्यलय

										गप	पधनी	सांनी
										वारी	ऽजाऽ	ऽऊँ
सां	–	निध	पध	पनी	धप	गम	पम	गसा	सासा	गप	पधनी	सांनी
जी	ऽ	तोरी	साँव	रीसु	रत	मोह	नीमु	रत	पर	वारी	ऽजाऽ	ऽऊँ
सां	–											
जी	ऽ											
X			2				0		3		4	

अन्तरा

		गम	धनी	धनी	पध	नीनी	सांसां	सांगं	रेंसां	निध	गम	पध
		निर	खनि	रख	श्याऽ	मल	तन	वाऽ	रदे	ऽऊँ	मैऽ	तन
नीनी	सांसां	निध	पध	पनी	धप	गम	पम	गसा	सासा	गप	पधनी	सांनी
मन	धन	एसो	यशो	दान	दन	जग	तवं	दन	कोमैं	गुण	पाऽऽ	ऽऊँ
सां	–											
जी	ऽ											
X			2				0		3		4	

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 168)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

१. खयाली भजन- राग खमाज (ताल- आड़ा चौताल)

पिया झूठी तोरी बतियाँ,

ना मानुंगी, ना मानुंगी, ना मानुंगी।

कह गये श्याम साँझ घर आऊँ,

भोर भये तक दरस ना पाऊँ,

झूठे हो कन्हाई कहाँ रैन बिताई,

ऐसे निठुर कन्हाई सों में प्रीत लगाई।

अब तोसे ना बोलुंगी, ना बोलुंगी, ना बोलुंगी॥

भजन – पियाा झूठी तोरी बतियाँ न मॉनूगी .....

राग खमाज

स्थायी

ताल – आड़ा चौताल

लय – मध्यलय

	निध	मप	धम	गग	सा–	साग	–ग	म–	मनी	–ध	नीप	धानी	सांनी
	पिया	झूठी	तोरी	बती	यॉंऽ	नामा	ऽनुं	गीऽ	नामा	ऽनूं	गीऽ	नामऽ	ऽनुं
सां	निध	मप	धम	गग	सा–								
गी	पिया	झूठी	तोरी	बती	यॉंऽ								
X		2		0		3		0		4		0	

अन्तरा

	गम	पध	धनीसां	संसां	नीसा	नीसां	धनी	धप	गम	पध	नीसां	नीध	मप
	कह	गये	श्याऽऽ	मसीं	ऽझ	घर	आऽ	ऊँऽ	भोऽ	रम	येऽ	तक	दर
धम	गरे	सा–	साग	रेम	गग	गम	पधनी	पध	पप	पप	पध	सांरें	गंसां
सना	पाऽ	ऊँऽ	झूंठे	होक	म्हाई	कहीं	रैऽऽ	नबि	ताई	ऐसे	निठु	रक	म्हाई
नीध	पनी	धप	मग	गम	गसा	साग	–ग	म–	मनी	–ध	नीप	पधनी	सांनी
सांमै	प्रीऽ	तल	गाई	अब	तोसे	नाबो	ऽलु	गीऽ	नाबो	ऽलु	गीऽ	नाबोऽ	ऽलु
सां	निध	मप	धम	गग	सा–								
गी	पिया	झूंठी	तोरी	बती	योंऽ								
X		2		0		3		0		4		0	

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 170)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

10. **खयाली भजन- राग शुद्ध कल्याण (ताल- एकताल मध्यलय)**

दीनबंधु दीनानाथ महाराज, आज गरूड़ चढ़ आये।

खेंचे दुष्ट मेरो चीर, मौन बैठे शूरवीर,

भीष्म द्रोण कर्म वर्म, लोभ हेतु तजा धर्म।

इतनी सुनके पुकार, श्याम गरूड़ चढ़ आये।।

भजन – दीनबंधु दीनानाथ महाराज.....

राग – शुद्ध कल्याण

स्थायी

ताल – एकताल लय – मध्यलय

							ध़	सा	सारे	ग	रे
							दी	न	बंऽ	ऽ	धु
ग	–	प	मंग	ग	रे	सा	सा	रे	सा	ध़	प़
दी	ऽ	ना	ऽ	ना	ऽ	थ	म	हा	रा	ऽ	ज
ग	–	ग	रे	ग	प	ध	सां	सांरें	गंरें	सांनी	धप
आ	ऽ	ज	ग	रू	ड़	च	ढ़	आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
मंग	नीध	पमं	गध	पमं	गरे	सा	ध़	सा	सारे	ग	रे
ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ये	दी	न	बंऽ	ऽ	धु
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

ग	—	ग	प	—	ध	सां	—	ध	सां	—	सां
खें	ऽ	चे	दु	ऽ	ष्ट	मे	ऽ	रो	ची	ऽ	र
ध	—	सां	रें	—	रेंसां	सांरें	गंरें	सांनी	ध	—	ध
मौ	ऽ	न	बै	ऽ	ठेऽ	शूऽ	ऽऽ	रऽ	वी	ऽ	र
गं	—	रें	पंमं	गं	—गं	सां	—	रें	सांध	सां	सां
भी	ऽ	ष्म	द्रोंऽ	ऽ	ऽण	क	ऽ	र्ण	वऽ	ऽ	मं
सां	नी	ध	प	मं	ग	रे	प	—	मंग रे	—	सा
लो	ऽ	भ	हे	ऽ	तु	त	जा	ऽ	ध	ऽ	र्म
ध़	सा	ग	रे	प	प	रे	ग	रे	सा	—	सा
इ	त	नी	ऽ	सु	न	के	ऽ	पु	का	ऽ	र
सा	रे	ग	रे	ग	प	ध	सां	सांरें	गंरें	सांनी	धप
श्या	ऽ	म	ग	रू	ड़	च	ढ़	आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
मंग	नीध	पमं	गध	पमं	गरे	सा					
ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ये					
X		0		2		0		3		4	

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 172)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

11. **खयाली भजन- राग काफी (ताल- तीनताल मध्यलय)**

कान्हा निपट अनारी,रंग भर पिचकारी।

मोरे तन पर डारी, मैं तो भीग गई सारी।।

भर-भर झोरी रंग उड़ावत,ग्वाल बाल संग नाचत गावत।

नटखट बनवारी नयनन पिचकारी तक-तक मारी।।

भजन – कान्हा निपट अनारी ....

राग काफी

स्थायी

ताल – तीनताल | लय – मध्यलय

														सा	रे
														का	न्हा
प	ग	नि	प	ग	रे	रे	ग	सा	रे	नि	ध	नि	सा	नि	ध
नि	प	ट	अ	ना	री	रं	ग	भ	र	पि	च	का	री	मो	रे
म	प	ध	नि	सा	सा	प	प	रे	प	नि	प	ग	रे	सा	रे
त	न	प	र	डा	री	मैं	तो	भी	ग	ग	ई	सा	री	का	न्हा
X				2				0				3			

अन्तरा

म	प	ध	नि	सां	–	सां	–	रें	गं	रें	सां	रें	नि	सां	सां
भ	र	भ	र	झो	ऽ	री	ऽ	रं	ऽ	ग	उ	ड़ा	ऽ	व	त
प	नि	ध	प	"ग	ग	रे	रे	रे	ग	रे	सा	रे	नि	सा	सा
ग्वा	ऽ	ल	बा	ऽ	ल	सं	ग	ना	ऽ	च	त	गा	ऽ	व	त
नीध	ग	रे	ग	सा	रे	नि	सा	रे	नि	ध	नि	प	ध	म	प
न	ट	ख	ट	ब	न	वा	री	न	य	न	न	पि	च	का	री
रे	म	नि	प	ग	रे	सा	रे	प	म	नि	प	ग	रे	रे	ग
त	क	त	क	मा	री	का	न्हा	नि	प	ट	अ	ना	री	रं	ग
0				3				X				2			

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 175)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

12. **खयाली भजन- राग मधुवन्ती (ताल- तीनताल मध्यलय)**

शरण परे की रखियों लाज,

तुम मोरे दाता सारो काज।

जे जे शरण प्रभु की आये,

ते ते परम धाम पद पाये,

पतित उधारण हे महाराज।।

भजन – शरण परे की रखियों लाज .....

राग मधुवन्ती

स्थायी

ताल – तीलताल

लय – मध्यलय

											प	मं	ग	रे	सा
											श	र	ण	ऽ	प
रे	–	सा	–	नि	सा	ग	मं	गमं	पध	प	ग	मं	प	नी	नी
रे	ऽ	की	ऽ	र	खि	यो	ऽ	लाऽ	ऽऽ	ज	तु	म	मो	ऽ	रे
सां	–	ध	प	गमं	पमं	ग	सारे	रे	–	सा	प	मं	ग	रे	सा
दा	ऽ	ता	ऽ	साऽ	ऽऽ	रो	ऽऽ	का	ऽ	ज	श	र	ण	ऽ	प
X				2				0				3			

अन्तरा

												ग॒	म॑	नी	नी
												जे	ऽ	जे	ऽ
सां	सां	सां	सां	ग॒ं	–	रें	सां	रें	–	सां	–	नी	–	नी	सां
श	र	ण	प्र	भु	ऽ	की	ऽ	आ	ऽ	ये	ऽ	ते	ऽ	ते	ऽ
ध	ध	प	प	म॑	प	ग	म॑	प	–	प	प	म॑	ग॒	रे	सा
प	र	म	धा	ऽ	म	प	द	पा	ऽ	ये	प	ति	त	ऽ	उ
रे	–	सा	–	नि	सा	ग॒	म॑	गम॑	पध	प	प	म॑	ग॒	रे	सा
धा	ऽ	र	ण	हे	ऽ	म	हा	राऽ	ऽऽ	ज	श	र	ण	ऽ	प
X				2				0				3			

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 177)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

13. खयाली भजन- राग सोहनी (ताल- तीनताल मध्यलय)

मानो जी मोरी मानों नंद के लाल।

काहे करत हमसों नितही बरजोरी

मलो न मुख रोरी डारो न गुलाल।।

तू तो नयो होरी को खिलारी मारे पिचकारी,

अंगियाँ में भीजे कुच देखे हँसे नर-नारी,

अब घर कैसे जाऊँ सास नणद पूछे,

ये का रंग-ढंग ये का हाल।।

भजन – मानो जी मोरी मानो नन्द के लाल.....

राग – सोहनी

स्थायी

ताल – त्रिताल | लय – मध्यलय

											सां	नि	सां	ध	नि
											मा	नो	जी	मो	री
म॑	–	ध	–	–	ग	म॑	ध	म॑ध	निरें॒	सां	नि	ध	म॑	ग	रे॒
मा	ऽ	नो	ऽ	ऽ	नं	द	के	लाऽ	ऽऽ	ल	का	हे	क	र	त
ग	रे॒	सा	नि़	रे॒	ग	म॑	ध	म॑ध	निरें॒	सां	ध	नि	रें॒	गं	गं
ह	म	सो	नि	त	ही	ब	र	जोऽ	ऽऽ	री	म	लो	न	मु	ख
रें॒म॑	गंरें॒	सां	नि	ध	नि	–	म॑	ध	–	ध	सां	नि	सां	ध	नि
रोऽ	ऽऽ	री	डा	रो	ना	ऽ	गु	ला	ऽ	ल	मा	नो	जी	मो	री
X				2				0				3			

अन्तरा

ग	ग	मं	ध	सां	सां	सां	सां	नि	सां	नि	सां	ध	धनि	नि	ध
तू	तो	न	यो	हो	री	को	खि	ला	री	मा	रे	पि	चऽ	का	री
ध	नि	रें	गं	मं	ग	रें	सां	नि	सां	नि	सां	ध	ध	सां	सां
अं	गि	या	में	भी	जे	कु	च	दे	खे	हँ	से	न	र	ना	री
ध	निरें	ध	नि	मं	ध	ग	मं	रे	ग	मं	ग	रे	रे	सा	सा
अ	ब	घ	र	कैं	से	जा	ऊँ	सा	ऽ	स	न	न	द	पू	छे
नि	रे	ग	मं	ध	ग	मं	ध	मंध	निरें	सां	सां	नि	सां	ध	नि
य	का	रं	ग	ढं	ग	ये	का	हाऽ	ऽऽ	ल	मा	नो	जी	मो	री
X				2				0				3			

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 182)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

14. **खयाली भजन- राग पूरिया धनाश्री (ताल- त्रिताल मध्यलय)**

सकल ब्रजधाम धरत यही ध्यान,

श्याम ही श्याम रटत आठों याम।।

ऊधो तुम जाय योग समझाओ,

ब्रह्म सब जगत यामे मन लावों,

ब्रज में पग परत प्रेम रंग छायो,

बिसर गयो ब्रह्म भूले सब काम।।

भजन – सकल बृजधाम धरत यही ध्यान....

राग – पूरिया धनाश्री

स्थायी

ताल – त्रिताल लय – मध्यलय

											प	मं	ग	मं	<u>रे</u>
											स	क	ल	बृ	ज
ग	–	ग	ग	<u>रे</u>	ग	मं	ग	<u>रे</u>	–	सा	<u>सारे</u>	नी	<u>रे</u>	ग	<u>रे</u>
बा	ऽ	म	ध	र	त	य	ही	ध्या	ऽ	न	श्याऽ	ऽ	म	ही	ऽ
गमं	प	प	ग	मं	<u>ध</u>	नी	<u>ध</u>	<u>रें</u>नी	<u>ध</u>प	प					
श्याऽ	ऽ	म	र	ट	त	आ	ठों	याऽ	ऽऽ	म					
X				2				0				3			

अन्तरा

											प	–	मं	ध	मंध
											ऊ	ऽ	धो	तु	मऽ
निसां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	नि	रें	सां	नि	–	रें	गं	रें
जाऽ	ऽ	य	यो	ऽ	ग	स	म	झा	ऽ	ओ	ब्र	ऽ	ह्म	स	ब
मंगं	रेंसा	सां	सां	नी	ध	नी	रें	नि	ध	प	प	मं	ग	मं	रे
जऽ	गऽ	त	या	ऽ	में	म	न	ला	ऽ	ओ	बृ	ज	में	प	ग
ग	ग	ग	ग	रे	ग	मं	ग	रे	सा	सा	सारे	ऩि	रे	ग	रे
प	र	त	प्रे	ऽ	म	रं	ग	छा	ऽ	यो	बिऽ	स	र	ग	यो
गमं	प–	प	प	मं	ग	मं	रे	ग	रे	सा	ग	–	मं	ध	मंध
ब्रऽ	ऽऽ	ह्म	भू	ऽ	ले	स	ब	का	ऽ	म	ऊ	ऽ	धो	तु	मऽ
X				2				0				3			

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 186)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

15. ख्याली भजन- राग झिंझोटी (ताल- तीनताल मध्यलय)

तन, मन, धन तोपे वारू पिया चितचोर,
मैं हूँ रंगीली रसीली नारी चन्द्रमा की कौर।।

सुन्दर सलोने पिया मोरे मन भाये,
दूजो नैनन को नहीं भाये, छबिले, रंगिलें,
रसीले, हटिले, कटिले, नैनन वारे श्याम,
यमुना में करत किलोल।।

भजन – तन मन धन तोपे वारूँ....

राग – झिंझोटी

स्थायी

ताल – त्रिताल

लय – मध्यलय

		म	ग	रे	सा	म	रे	सा	नी	ध़	प़	ध़	सा	रे	म
		त	न	म	न	ध	न	तो	पे	वा	रूँ	पि	या	चि	त
ग	ग	म	ग	रे	ग	रे	प	प	मध	म	ग	ग	रे	प	म
चो	र	मैं	हूँ	रं	गी	ली	र	सी	लीऽ	ना	री	चं	द्र	मा	की
ग	सा														
कौ	र														
X				2				0				3			

अन्तरा

ध	म	प	ध	सां	सां	सां	रें	नि	ध	प	ध	सां	–	सां	–
सु	न्द	र	स	लो	ने	पि	या	मो	रे	म	न	भा	ऽ	ये	ऽ
ध	सां	रें	मं	गं	रें	गं	सां	नि	ध	प	ध	सां	–	सां	–
दू	ऽ	जो	ऽ	नै	ऽ	न	न	को	ऽ	न	हीं	भा	ऽ	ये	ऽ
सां	रें	सां	नी	सां	नी	ध	नी	ध	प	ध	प	म	प	म	ग
छ	बी	ले	रं	गी	ले	र	सी	ले	ह	टि	ले	क	टि	ले	नै
सा	रे	म	ग	रे	सा	नी	ध	स	रे	म	ग	सा	रे	प	म
न	न	वा	रे	श्या	ऽ	म	य	मु	ना	ऽ	में	क	र	त	कि
ग	–सा														
लो	ऽल														
X				2				0				3			

(स्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 189)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

16. खयाली भजन- राग देस (ताल- तीनताल मध्यलय)

आज मोहे कुँवर कान्ह बरजे।

जासो मोरा हियरा ही लरजे।।

अतही चपल छल बल वो करत,

संग लागो हि रहत तजत नहीं इक पल।

छल बल करत डरत न काहूँ से,

निडर कहो कैसे जल भरजे।।

भजन – आज मोहे कुंवर कान्ह बरजे .....

राग – देस

स्थायी

ताल – त्रिताल | लय – मध्यलय

			(ग)रे	ग	(रे)ग	सा	नि़	रे	ग	रे	ग	–	म	पध	पध
			आ	ऽ	ज	मो	हे	कुं	व	र	का	ऽ	न्ह	बऽ	रऽ
म	–	मरे	–	–	मरे	–म	म	प	नि	ध	प	मपनिसां	रें	सां	रें
जे	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	जासों	ऽमो	रा	हि	य	रा	ऽ	हीऽऽऽ	ऽ	ल	र
नि	ध	प़	(ग)रे												
जे	ऽ	ऽ	आ												
X				2				0				3			

अन्तरा

								रेग	सारे	–म	म	प	प	नि	नि
								अऽ	तऽ	ऽही	च	प	ल	छ	ल
सां	सां	सां	सांरें	नि	सां	सां	सां	प	ध	प	नि	सां	सां	सां	सां
ब	ल	यो	कुऽ	र	त	सं	ग	ला	गो	हि	र	ह	त	त	ज
सां	निसां	रें	रें	नि	नि	ध	प	नि	ध	नि	ध	पध	पध	म	ग
त	नाऽ	ऽ	हीं	इ	क	प	ल	छ	ल	ब	ल	कऽ	रऽ	त	ड
रेग	सारे	–म	गग	रे	नि	ध	प	म	प	नि	नि	नि	सां	नि	सां
रऽ	तऽ	ऽन	कहूँ	से	ऽ	नि	ड	र	क	हो	कै	से	ज	ल	भ
म	म	गरे	रे												
र	जे	ऽऽ	आ												
X				2				0				3			

(स्त्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 240)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

17. ख्याली भजन- राग दुर्गा (ताल- त्रिताल मध्यलय)

गोरी के नन्द गणेश मनाऊँ।

राधा मनावे रुकमण मनावे,

मनावे कृष्ण महेश।।[7]

भजन – गौरी के नंद गणेश.......

राग– दुर्गा

स्थायी

ताल – त्रिताल लय – मध्यलय

								ध	ध	म	म	रे	रे	सा	सा
								गौ	ऽ	री	के	नं	ऽ	द	ग
प	–	प	प	ध	ध	म	म								
णे	ऽ	श	म	ना	ऽ	ऊ	ऽ								
X				2				0				3			

अन्तरा

								म	म	प	ध	सां	सां	सां	सां
								रा	ऽ	धा	म	ना	ऽ	वे	ऽ
रेंरें	रें	ध	रें	सां	–	सां	सां	सां	सां	ध	ध	म	म	प	ध
रुक	म	ण	म	ना	ऽ	वे	ऽ	म	ना	वे	ऽ	कृ	ऽ	ष्ण	म
म	–	रे	सा												
हे	ऽ	ऽ	श												
X				2				0				3			

(स्त्रोत : प्रो. विजयेन्द्र गौतम से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

[7] https://youtu.be/f97OqPcE4Is

स - लोक धुनों पर आधारित संवादी भजन

अनेक संत भक्तों की लोकप्रिय रचनाओं को लोक धुनों के आधार पर गाया जाता है। भजनों मे द्रुत लय का प्रयोग अधिक किया जाता है। अनेक पारंपरिक लोक धुनों पर आधारित ये रचनाएँ जनसाधारण में अधिक लोकप्रिय होती है। प्रत्येक कलाकार अपने कंठ धर्म के अनुसार इन रचनाओं का गायन अत्यंत भावपूर्ण ढंग से गाते हुये पाये जाते हैं।

एक ही धुन पर अलग-अलग भजनों का गायन किया जाता है। इस शोध-ग्रंथ में राजस्थान के लोक संगीत की मिठास से भरपूर श्रेष्ठ एवं प्रचलित रचनाओं को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जाना उचित होगा। कुछ रचनाओं को स्वरलिपि सहित दिया गया है।

1.	बोल सुवा राम राम.....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
2.	साँवरियो जादू कर गयो...	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
3.	संतो देखो नी....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
4.	म्हारा जूना जोशी....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
5.	थारें घट में बसे छै भगवान्	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
6.	काई मरजी रघुनाथ कंवर.....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
7.	सांवरा म्हारी प्रीत निभाज्यो जी....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
8.	राणा जी मेवाड़ा म्हारो काई करसी....	स्वर्गीय चिरंजी लाल तंवर
9.	भजन बिन कठे बतावेला मूंडो....	पारम्परिक भजन
10.	म्हारा साँवरिया थारी बाता लागे मोहे मीठी....	पद्मश्री अली मोहम्मद
11.	भजना स्यूं लागै मीरां मीठी....	पद्मश्री अली मोहम्मद
12.	नाड़ी हूना जाने वैद....	बनारसी लाल झोरी
13.	मत बांधो गठरिया अपजस की....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
14.	जल केरी बूंद....	पारंपरिक भजन
15.	याको भेद बतावो ब्रह्मचारी....	पारंपरिक भजन
16.	कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी.....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
17.	ऐसा राम हमारा....	स्वर्गीय बिहारी लाल कथक
18.	फकीरा साहेब लगता प्यारा....	राम कुमारी (रमा बाई)
19.	सांवरा थे आता रहिज्यो....	रामस्वरूप दास

1. **भजन- लोक धुन पर आधारित (ताल- कहरवा)**

बोल सुवा राम राम, मीठी मीठी वाणी रे।

सोने री सलैया रो तनै, पिंजरो घडा दयू रे।
रेंशमा री डोर तनै, झूलणा झुला दयू रे।।

बोल सुवा.......

लाडू पेडा लापसी थन, चूरमो जिमा लाऊ रे।
दूध मे पतासा थन, घोळ घोळ पाल्याऊ रे।।

बोल सुवा.......

ज्ञान सिला पर तन, सबणिया करान्याऊ रे।
गंगा जमना गोमती तन, तीरथ करान्याऊ रे।।

बोल सुवा.......

भागवत गीता तन, संग म पढाल्याऊ रे।
बाई मीरा कहे तन, सेणा म समजाल्याऊ रे।।

बोल सुवा.......

भजन – बोल सुवा राम राम .....

लोक धुन पर आधारित

स्थायी

ताल – कहरवा | लय – मध्यलय

					म	गरे	सा
					बो	लसु	वा
सा	–सा	सा–	–सा	–	–रे	– –	–ग
रा	ऽम	राऽ	ऽम	ऽ	ऽमी	ठीमी	ऽठी
सा	–	ग	रे	–			
वा	णी	रे	ऽ	ऽ			
X				0			

अन्तरा

					सा	रेम	–म
					सो	नेरी	ऽस
प	–	–प	पप	–	–नि	धप	–म
लै	या	ऽरो	तनै	ऽ	ऽपि	जरो	ऽघ
ग	रेसासा	रेग	–	रेसा	–म	गरे	सा
डा	दयूं	रे	ऽ	ऽ	ऽरे	शमां	री
सा	–	–सा	सासा	–	–रे	रेरे	–ग
डो	ऽ	ऽर	तन	ऽ	ऽझू	लणा	ऽझु
सा	सासा	ग	रे	–			
ला	दयूं	रे	ऽ	ऽ			
X				0			

(स्रोत : यूट्यूब से प्राप्त रचना)

web link : https://youtu.be/-LgAiMUCOBA?si=8yu3Bp6Qw9-p06B4

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

2. भजन- लोक धुन पर आधारित भजन (ताल- कहरवा)

सांवरियों जादू कर गयो मैं क्या करूं।

ले गागर सागर सो निकसी,
सूरज अरग मोहे दीन्हीं।
वृन्दावन की कुंज गलिन में,
मेरो मन हर लीनों॥
मैं क्या करूं.......

इलड़ी दूलड़ी और पचलड़ी,
बाजूबंद लगीना।
अंगिया की कस खूटण लागी,
आवत अंग पसीना॥
मैं क्या करूं.......

मेड़तो छोड़ उदियापुर छोड़यों,
छोड़ दिया घर बार।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
मैं अपने रंग में रंग गयो॥
मैं क्या करूं.......

भजन– साँवरियो जादू कर गयो....

राग – भीमपलासी

स्थायी

ताल – कहरवा | लय–मध्यलय

			सा	साप	प	म	म
			साँ	वरि	यो	जा	दू
म–	ग	मप	प	ग	मग	गरे	–सा
कऽ	र	गऽ	यो	ऽ	मैंऽ	ऽक्या	ऽक
सा	–	–	साँ	साप			
रूं	ऽ	ऽ	सां	वरि			
X		0		X		0	

अंतरा

	[प]नि	–नि	–	सा	सा	सनि	–
	ले	ऽगा	ऽ	ग	र	साऽ	ऽ
–	[सा]गरे	–नि	——	सा	सा	सा	–
ऽ	गर	ऽसो	ऽऽ	नि	क	सी	ऽ
–	मम	–म	–म	म	प	[म]ग	ग
ऽ	सूर	ऽज	ऽअ	र	ग	मो	हे
[म]प	–	प	–	–	प	–नि	–
दी	ऽ	न्ही	ऽ	ऽ	वृन्	ऽदा	ऽ
सां	सां	सां	–	नि	नि	–	सांरें
व	न	की	ऽ	ऽ	कुं	ऽ	जग
नि	सांनि	ध	प	–	ध	ध	[प]म
लि	नऽ	में	ऽ	ऽ	में	रो	ऽ
–	मम	–म	प–	ग	–	प	प
ऽ	मन	ऽह	रऽ	ली	ऽ	नो	ऽ
–	मग	गरे	–सा	सा	–	–	सा
ऽ	मैंऽ	क्या	ऽक	रू	ऽ	ऽ	साँ
X		0		X		0	

(स्त्रोत : अग्रवाल, भूमिका – "बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व", (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 95, 96)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

3. भजन- लोक धुन पर आधारित (ताल- कहरवा मध्यलय)

संतो देखो नी नज़र पसार,
तन काया में रेल चले॥

गाड़ी चलती है इंजन से उसमें,
सात जगह पानी के बल से।
तीनों की एकोकल से धुआं निकले,
बेशुमार अग्नि आठों पहर जले॥
संतो देखो......

पांच टिकट काटणिया पच्चीस,
टिकट बांटणिया व्हे तीनों रेल।
डाकणियां चेतन सुरता है,
असवार रेल जब पैण्ड चले॥
संतो देखो......

नौ सौ कील मोड़ण की नवासी,
कील जोड़न की पिच्चासी कील।
तोड़की, उसमें कैसा है हथियार,
मांगे नहीं - मोल मिले॥
संतो देखो......

भजन– संतो देखो नी नजर पसार....

लोक धुन पर आधारित

स्थायी

ताल–कहरवा लय–मध्यलय

		प़	प़ध़	ध़सा	सा	–	सा
		सं	तोऽ	देऽ	खो	ऽ	नी
ग	रे	ग	ध	प	–	–म	ग
न	ज	र	प	सा	ऽ	ऽऽ	र
गग	ग	रे	सा	रे	ग	सा	सा
तन	का	या	में	रे	ऽ	ल	च
सा	सानि़	प़	प़ध़	ध़सा	सा	–	–
ले	ऽऽ	सं	तोऽ	देऽ	खो	ऽ	नी
X		0		X		0	

अंतरा

प–	पप	मेप	ग	मपप	प	–	ग
पाँऽ	चटि	कट	का	टणि	या	ऽ	प
रे–	रेरे	रेरे	ग	रेसासा	सा	–	ध
च्चीऽ	सटि	कट	बा	टणि	या	ऽ	वे
पध	पग	रेग	सारे	गग	ग	–	ग
तीऽ	नोरे	ऽल	डाऽ	कणि	या	ऽ	चे
पप	धसां	सां	–	निध	म	प	ध
तन	सुर	ता	ऽ	हैऽ	ऽ	अ	स
पम	गरे	सा	सा	रेग	ग	रेसा	सा
वाऽ	ऽऽ	र	रे	ऽ	ल	ज	द
रे	ग	सा	सारे	नि़सा	–नि़	प़	ध़
पैं	ऽ	ड	चऽ	लेऽ	ऽऽ	सं	तो
X		0		X		0	

(स्त्रोत : अग्रवाल, भूमिका – 'बहुमुखी गायक 'बाबा' स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व', (शोध ग्रन्थ) पृष्ठ संख्या 105, 106)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

4. **भजन - राग मांड (ताल- कहरवा, भजनी ठेका)**

म्हारा जूना जोसी प्रभुजी मिलण कब होसी।

आओ मारा जुना जोशी बेठो थे आंगणीय,

बाच सुणाओ थारी पोथी रे॥

म्हारा जूना……

खीर खांड का जोशी भोजन जिमावा,

नूत जिमावा थारा गोती॥

म्हारा जूना……

आठ भरी को जोशी बागो सिलवासा,

हीरा जड़स्या थारी पोथी॥

म्हारा जूना……

बाई मीरा के प्रभु गिरधर नागर,

प्रभु जी मिल्या ही सुख होसी रे॥

म्हारा जूना……

भजन – म्हारा जूना जोशी .....

राग – मांड

स्थायी

ताल – कहरवा (भजनी ठेका) लय – मध्यलय

		ग	म	–	[नि]प	नी	सांध
		म्हा	रा	ऽ	जू	ना	जोशी
प	मप	धप	म	ग	[प]मग	सा	सा
ऽ	ऽप्र	भूजी	मि	ल	नऽ	क	द
सा	सा						
हो	सी						
X				0			

अन्तरा

	ग	गग	म	–	प	(सा)	[प]पप
	आ	ओम्हा	रा	ऽ	जू	नाऽ	जोशी
–	सां	सां सां	–	–	नि	सांनि	धप
ऽ	बै	ठोथे	आं	ऽ	ग	णिये	ऽऽ
प	पसां	–	–	नि	सां	निध	–प
ऽ	ऽवां	च	सु	णा	ओ	ऽथा	ऽरी
प	ध	प	म	ग	–सा	ग	म
पो	थी	रे	ऽ	ऽ	ऽम्हा	नेक	हो
–	–सां	धम	प	ग	मग	–[रे]सा	सा
ऽ	ऽसां	वरो	मि	ल	नऽ	ऽक	द
सा	सा						
हो	सी						
X				0			

(स्रोत : यूट्यूब से प्राप्त रचना)

web link : https://youtu.be/kw2uzPFLcmw?si=EscdSNKN2dFStxZU

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

5. **लोक धुन पर आधारित भजन - (ताल- कहरवा मध्यलय)**

थारै घट में बसे छै भगवान्,
मंदिर में कांई ढूंढती फिरै।

गगन मंडल स्यू गंगा उतरी,
पंचू कपड़ा धोले।
बिन साबण थारो मैल कटेलो,
निर्भय होके गंगा नाहल॥

मंदर में कांई......

मूरत कोर मन्दिर में मेली,
वा की स्यू मुंड बोले।
दरवाजे दरबान खड़ा है,
बिना हुकुम नहीं खोले॥

मंदर में कांई......

नाथ गुलाब मिल्या गुरु पूरा,
घट का पर्दा खोले।
भानी नाथ शरण सत गुरु की,
राई कै पर्वत ओलै॥

मंदर में कांई......

भजन – थारै घट में....

लोक धुन

स्थायी

ताल – कहरवा | लय – मध्यलय

						–प़ था	प़ रै
– ऽ	ध़ घ	सासा टमें	सा ब	सारे सैंऽ	रे छै	प भ	म ग
^{ग}रे वा	– ऽ	रे न	–प ऽमं	ध़सा दिर	सा में	रेग कांऽ	मग ईंऽ
रे ऽ	म ढूँ	गरे ढती	सा फि	सा रै	– ऽ		
X				0			

अन्तरा

रेरे गग	रेग नम	गग डल	ग– स्यूं	ग– गंऽ	ग– गाऽ	गग उत	ग– रीऽ
मप पांऽ	पम चूऽ	गग कप	रेसा डाऽ	रेग धोऽ	ग– ले	– ऽ	– ऽ
ग बि	गग नसा	मप बण	पप थारो	प– मैऽ	पप लक	मप टेऽ	पप लोनि
धध रम	पम यहो	पप ऽके	मग ऽगं	मम ऽग	गरे ऽना	गम हले	गरे ऽऽ
साग ऽऽ	रे– ऽऽ	– ऽ	–प ऽमं	ध़सा दिर	– में	रेग का	मग ईंऽ
रे ऽ	म ढूँ	गरे ढती	सा फि	स रै	– ऽ		
X				0			

(स्रोत : यूट्यूब से प्राप्त रचना)

web link : https://youtu.be/CQohQQXYFuw?si=UhHKSBJaVPwD54hg

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

6. **भजन- राग पहाड़ी (ताल- कहरवा, भजनी ठेका)**

काई थाँकी मरजी रघुनाथ कुँवर दशरथ जी रा बनड़ा सा।

अरजी तो भक्ताँ रा गरजी, मोह माया क्यों सरजी सा,
मरजी तो मम शीश दया कर, कोप ना करजी सा।।

काई थाँकी मरजी.......

मैं मति मंद अधम अति मूरख कलिमल करदम भरजी सा,
विषया रस में डूब रहयो हूँ थां सू ही तिरजी सा।।

काई थाँकी मरजी.......

अधम उधारे कई संत सुधारे तेरो ही नाम प्रचरजी सा,
मुझ पापी की बेर महाप्रभु मत ना बिसरजी सा।।

काई थाँकी मरजी.......

कह करजोर "गौर कवि किंकर" हैलो आरत हरजी सा,
माफ करो तकसीर नाथ रथी राज कुँवर जी सा।।

काई थाँकी मरजी.......

भजन – कांई मरजी रघुनाथ कुँवर

राग – पहाड़ी

स्थायी

ताल – कहरवा (भजनी ठेका) लय – मध्यलय

प़	प़	ध़	सा	सा	–	सा	रे	ग	–	ग	ग	ग	ग	ग	ग
कां	ई	म	र	जी	ऽ	र	घु	ना	ऽ	थ	कुँ	व	र	द	श
रे	ग	रे	सा	सा	सा	रेग	मग	रे	–	ग	सा	सा	रे	ग	ग
र	थ	जी	रा	ब	न	डाऽ	ऽऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	कां	ई	थां	की
रे	ग	सा	–	सा	–	ध़	प़								
म	र	जी	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ								
X				0				X				0			

अन्तरा

प़	प़	ध़	सा	सा	–	सा	रे	ग	–	ग	ग	ग	रे	रे	ग
अ	र	जी	ऽ	तो	ऽ	भ	ग	ता	ऽ	रा	ऽ	ग	र	जी	ऽ
(रे)सा	सा	सा	–	सा	रे	ग	म	रे	ग	(रे)सा	–	सा	–	–	–
मो	ह	मा	ऽ	या	ऽ	क्यो	ऽ	स	र	जी	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	म	–	म	–	म	ग	प	–	प	प	प	पध	म	गम
म	र	जी	ऽ	तो	ऽ	म	म	शी	ऽ	श	द	या	ऽऽ	क	रऽ
रे	ग	सा	सा	सा	सा	रेग	मग	रे	–	ग	सा	सा	रे	ग	म
को	ऽ	प	ना	क	र	जीऽ	ऽऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	कां	ई	थां	की
रे	ग	सा	–	सा	–	ध़	प़								
म	र	जी	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ								
X				0				X				0			

(स्त्रोत : कुमावत, डॉ. गरिमा, "चिरंजी लाल तंवर – स्वर रा मोती", पृष्ठ संख्या 243)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

7. **मांड शैली पर आधारित भजन- (ताल- कहरवा भजनी ठेका)**

सांवरा म्हारी प्रीत निभाज्यो जी।

थे छो म्हारा गुण रा सागर,

म्हारे अवगुण मत जाज्यो जी॥

प्रीत निभाज्यो.......

मैं छूं दासी जनम-जनम री,

म्हारे आंगणीय रमता आज्यो जी॥

प्रीत निभाज्यो.......

मीरा के प्रभु गिरधर नागर,

बेडो पार लगा दयो जी॥

प्रीत निभाज्यो.......

भजन – सांवरा म्हारी प्रीत निभाज्यो जी....

मांड शैली पर आधारित

स्थायी

ताल – कहरवा (भजनी ठेका) लय – मध्यलय

					पुनि सांव	नीसा राम्हा	ग री
– S	– प्री	गम Sत	प नि	ग भा	गग SS	–रे Sज्यों	–सा S
सा जी	– S	– S	– S	– S			
X				0			

अन्तरा

	गम मेंS	पनि Sछुँ	– S	सां दा	– S	सां सी	– S
– S	–नि Sज	सांनि नम	प– जS	मग नS	गम मS	–नि रीS	प– SS
मग S	–नि Sम्ह	निनि रेओ	–सां SS	निसां गुणी	सां– येS	–नि Sम	पम तना
– S	पनि SS	निध जाS	पम ज्योS	म Sजी	पग SS	– S	– S
– S	ग प्री	–म Sत	–प Sनि				
X				0			

(स्त्रोत : यूट्यूब से प्राप्त रचना)

web link : https://youtu.be/DOgs4YrEIXE?si=O6NsOFq5VI7o_9up

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

8. **भजन- राग मांड (ताल- कहरवा भजनी ठेका)**

म्हें तो गुण गोबिन्द रा गास्यां हे माई,
राणाजी मेवाड़ा म्हारो कांई करसी॥

राणा भेज्यो मान जहर पियालो,
मैं कर अमृत पी जास्या भोली माई॥

राणा जी मेवाड़ा.......

राणा जी रूसे आपरो गाव राखले,
मेतो परदेसा उठ जास्या भोली माई॥

राणा जी मेवाड़ा.......

मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
म्हेंतो सांवरियो वर पास्य ये माई॥

राणा जी मेवाड़ा.......

टिप्पणी –

राजस्थान के प्रसिद्ध नृत्य 'घूमर' की धुन पर आधारित।

भजन – राणा जी मेवाडा म्हारो काई करसी

राग – मांड

स्थाई

ताल – कहरवा (भजनी ठेका) लय – मध्यलय

						सा	रे
						म्हें	तो
प	प	–	प	प	ध	म	ग
गु	ण	ऽ	गो	विं	द	रा	ऽ
रे	–	–म	म	प	–	ग	रे
ऽ	गा	स्याम्हा	री	माँ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	नि़	नि़नि़	नि़	सा	सा	रे	रे
ऽ	रा	णाजी	मे	वा	डा	म्हा	रो
प	म	रेसा	नि	सा	–	सा	रे
ऽ	का	इक	र	सी	ऽ	म्हें	तो
X				0			

अन्तरा

	नि़	नि़नि़	नि़	सा	–	रे	रे
	रा	णाजी	भे	ज्यो	ऽ	म्हा	ने
प	म	रेसा	नि़	सा	–	–	–
ऽ	ज	हर	पि	या	ऽ	लो	ऽ
–	निनि	निनि	संनिरेंसं	नि	निनि	धप	–
ऽ	म्हेंक	रअ	मऽऽऽ	ऽ	रित	ऽऽ	पी
रे	रे	म	प	प	–	ग	रे
जा	स्यां	भो	ली	माँ	ऽ	ऽ	ऽ
सा	नि़	नि़नि़	नि़	सा	सा	रे	रे
ऽ	रा	णाजी	ऽमे	वा	ड़ा	म्हा	रो
प	म	रेसा	नि	सा	–		
ऽ	का	इक	र	सी	ऽ		
X				0			

(स्त्रोत : यूट्यूब से प्राप्त रचना) web link : https://youtu.be/NCTI4Ghb93I

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

१. भजन- लोक धुन पर आधारित (ताल- कहरवा मध्यलय)

भजन बिन कठै बतावेला मूंडो।

जन्म दीनो रे जीण ने भारिया,

ऊण री लगायो भूंडो॥

भजन बीन.......

सत सायब आगे कोल कर आयो,

मूंदो है के थारो टुंडो॥

भजन बीन.......

गरब गटूरी मिली रे भारजा,

घर छोड़यो न ढूंढो॥

भजन बीन.......

धर्मराज थारो लेखो पूछे बंदा,

माथे नरक रो कुंडो॥

भजन बीन.......

यो संसार अखंड जल भरियो,

नाव लैगे नहीं डूंडो॥

भजन बीन.......

करमहीन कादा मांय पड़गियो,

ज्यू ज्यू जावे ऊंडो॥

भजन बीन.......

अमृत छोड़ो भाई जहर क्यों पियो,

ओ कई सूझयो भूंडो॥

भजन बीन.......

भगत कबीरा सुनो भाई साधौ,

आगे मारगियो ऊंडो॥

भजन बीन.......

भजन – भजन बिन कठै बतावेल मूंडो.....

लोक धुन पर आधारित

स्थायी

ताल – कहरवा　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　लय – मध्यलय

														सा	ग
														भ	ऽ
ग	–	ग	–	ग	–	ग	–	ग	रे	ग	प	म	–	म	–
ज	ऽ	न	ऽ	बि	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ	क	ऽ	ठै	ऽ	ब	ऽ
ग	–	–	रे	सा	–	रे	–	नी	–	सा	–	–	–	सा	ग
ता	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ला	ऽ	मूं	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ऽ
X				0				X				0			

अंतरा

		प	प	नी	–	नी	–	सा	–	–	–	सा	–	–	–
		ज	न	म	ऽ	दी	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	प	प	नी	–	–	–	सा	–	सा	–	रे	ग	रे	ग
ऽ	ऽ	जी	ण	ने	ऽ	ऽ	ऽ	भा	ऽ	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	ग	प	म	–	म	–	ग	–	–	रे	सा	–	सा	रे
ऽ	ऽ	उ	ण	रो	ऽ	ल	ऽ	गा	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ
नी	–	सा	–	–	–	–	–	–	–	सा	प	प	–	–	–
भूं	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	त	सा	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	प	–	प	–	प	–	–	म	प	नी	–	नी	नी	नी
य	ऽ	ब	ऽ	आ	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	को	ऽ	ऽ	ल	क	र
नी	ध	सां	नी	ध	प	–	–	–	–	प	ध	ध	–	ध	–
आ	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मूं	ऽ	डो	ऽ	है	ऽ
प	–	–	–	म	–	म	ग	रे	ग	ग	–	रे	सा	सा	ग
के	ऽ	ऽ	ऽ	था	ऽ	रो	ऽ	टूं	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ऽ	भ	ऽ
X				0				X				0			

(स्त्रोत : शर्मा, डॉ. वसुमती एवं सांखला, डॉ. कमल किशोर (सम्पा.) (2014), "राजस्थान का सन्त–साहित्य", राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, पृष्ठ संख्या 24)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

10. **भजन- राग पीलू (ताल- कहरवा मध्यलय)**

म्हारा सांवरिया थारी बातां लागे म्हाने मीठी।

आप तो जाये सांवरा द्वारका में बसिया,

म्हाने न भेजी एक चिठ्ठी॥

म्हारा सांवरिया.......

सकरी गली में मिलग्यो सांवरियो,

किण विधि पैरूं मैं तो बीटी॥

म्हारा सांवरिया.......

थे तो म्हारा सांवरा माथे रा शेरा जी,

मैं तो थारे हाथों की अंगूठी॥

म्हारा सांवरिया.......

सासु नणद म्हारी दोराणि जिठ्याणी,

बळझळ हुई रे अंगीठी॥

म्हारा सांवरिया.......

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर,

चढगयो रंग मजीठी॥

म्हारा सांवरिया.......

भजन – म्हारा सांवरिया थारी बातां लागै म्हानै मीठी....

राग–पीलू

स्थायी

ताल – कहरवा | लय – मध्यलय

		सा	सा	ग	गग	प	–
		म्हा	रा	सां	वरि	या	ऽ
ग	ग	गम	निप	ग	ग	रेनि	–सा
ऽ	था	रिबा	ऽतां	ला	गे	ऽम्हा	ऽनैं
ग	ग	सा	–				
मी	ठी	म्हा	रा				
X				0			

अंतरा

	नि	साग	मग	प	प	प	–
	थे	तोम्हा	रेऽ	सि	र	रा	ऽ
ग	–	म–	निप	ग	ग	सा	–
ऽ	से	हरा	ऽसाँ	व	रि	या	ऽ
–	नि	निनि	निध	प	–ध	पप	–
ऽ	में	तोथा	रेऽ	ऽ	ऽक	री	ऽ
ग	मनि	पम	ग	सा	–ग	–म	प
ऽ	अंगु	ठीम्हा	रा	ऽ	ऽसां	वरा	ऽ
ग	ग	गम	निप				
ऽ	था	रिबा	ऽता				
X				0			

(स्रोत : पद्मश्री अली मोहम्मद जी से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

11. **भजन- राग खमाज (ताल- कहरवा मध्यलय)**

भजना स्यू लागै मीरा मीठी।

साँवरो तो म्हारै सिर रो सेवरा,

म्हैं तो वारे कर री अंगूठी रे॥

मेवाड़ी राणा.......

म्हारो तो रामइयो राणा घट-घट बोलै,

आ थारे माथेरी कियाँ फूटी रे॥

मेवाड़ी राणा.......

संकड़ी गली मैं राणा जी मिलियो,

मीरा फिरगी अपूठी रे॥

मेवाड़ी राणा.......

मीरा के प्रभु गिरधर नागर,

मैं लाख चौरासी स्यू छूटी रे॥

मेवाड़ी राणा.......

भजन – मेवाड़ी राणा भजना स्यूं लागै मीरां मीठी.....

राग – खमाज

स्थायी

ताल – कहरवा   मध्यलय

			सा	$^{रे}$म	म	^{म}ध	म
			में	वा	ड़ी	रा	णा
प	प	धप	–म	ग	$^{रे}$सा	–ग	ग
ऽ	ऽभ	जना	ऽस्यु	ला	गे	ऽमी	रां
$^{रे}$सा	सा	–					
मि	ठी	ऽ					
X				0			

अंतरा

	म	मप	प	प	प	–	–
	सां	वरो	तो	म्हा	रे	ऽ	ऽ
–	–सां	सां	–	–	–नि	सांध	–प
ऽ	ऽसि	रसे	ऽ	ऽ	ऽसे	वरो	ऽऽ
–	–सां	सांसां	सां	–	सांनि	सांध	ध
ऽ	ऽमें	तोथा	रै	ऽ	ऽक	रसी	अं
प	$^{नि}$ध	^{प}म	–सा	$^{रे}$म	म	^{म}ध	ध
गू	ठी	ओ	ऽमे	वा	ड़ी	रा	णा
X				0			

(स्रोत : पद्मश्री अली मोहम्मद जी से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

12. भजन- लोक धुन पर आधारित (ताल- कहरवा मध्यलय)

नाडी हूँ न जाणे वैद,
निपट अनाड़ी रे ।

पीळी-पीळी पान जैसी,
पलंगा पोढाई ऐसी,
आप घर जाओ वैद,
म्हारे रोग भारी रे॥
नाडी हूँ न.......

पीड़ है काळजिए मांही,
ये मूरख टिटोरे बाँही,
जबसे गए है श्याम,
विरह बाण मारि रे ॥
नाडी हूँ न.......

मीरां को जीवाणो चाहो,
श्याम थे बेगा आओ,
म्हारे रोग रो कटईया एक,
यो कुंज को बिहारी रे॥
नाडी हूँ न.......

भजन – नाड़ी हूँ ना जाणे वैद.....

राग – देस

स्थाई

ताल – कहरवा लय – मध्यलय

					सा	सा	रेग
					ना	ड़ी	हूँना
रेसा	सा	सा	सा	–	नि़	सा	नि़
ऽजा	णे	वै	द	ऽ	नि	प	ट
साध़	निध़	परे	[म]गरे	सा	सा	सा	रेग
अना	ड़ीऽ	रै	ऽऽ	ऽ	ना	ड़ी	हूँना
X				0			

अन्तरा

				रे	रे	म	म
				पी	ळी	पी	ळी
प	प	प	प	प	म	म	ग
पा	न	जै	सी	प	लं	गा	पो
ग	रे	रे	[सा]नि़–	नि़	नि़	सा	गरे
ढा	ई	ऐ	सीऽ	आ	प	घ	रऽ
सा	सा	सा	सा	नि	सा	नि़	सा
जा	ओ	वै	द	म्हा	रे	रो	ग
[नि]ध़	ध़	रे	रे	सा	सा	रे	ग
भा	री	रे	ऽ	ना	ड़ी	हूँ	ना
X				0			

(स्रोत : बनारसी लाल झोरी से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

13. भजन- राग शिवरंजनी पर आधारित (ताल- कहरवा मध्यलय)

मत बांधो गठरिया अपयश की।

मात-पिता सूँ मुंडे ना बोले,
तिरया से बाता करे मन की॥
मत बांधो.......

यम का दूत पकड़ ने जावे,
खबर लेवे थारी नस-नस की॥
मत बांधो.......

धन और जोबन तेरा फिर ना रहेगा,
बात करे तू पराय बल की॥
मत बांधो.......

बाळपणो हस खेल गवायो ,
बीती ऊमरिया दिन दस की॥
मत बांधो.......

कहत कबीर सुणो भाई संतो ,
जब तेरे बात नही बस की॥
मत बांधो.......

भजन – मत बांधो गठरिया अपजस की.......

राग– शिवरंजनी पर आधारित

स्थायी

ताल – कहरवा लय – मध्यलय

							गुरे मत
सासा बाँधो	सासा रे ग	धनि ठरि	पप याऽ	धसा अप	रेग जस	रे– कीऽ	– – ऽ ऽ
पप अप	पप जस	धध कीऽ	मम रेप	गसा राये	रेम जस	गुगु कीऽ	
X				0			

अन्तरा

सासा माऽ	रेगु तपि	रेरे ताऽ	रेरे सूँऽ	सासा मुंऽ	रेगु डेन	रेरे वोऽ	रे ले
पप तिरि	पप यासे	धध बाऽ	मम तक	गसा रेऽ	रेम मन	गुगु कीऽ	
X				0			

(स्त्रोत : प्रो. विजयेन्द्र गौतम से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

14. भजन- राग देस (ताल- कहरवा मध्यलय)

जल केकी बूंद पवन केरा थांबा रामा नाम लियां निसतारो रे,
झूठा बोल्या थारो कई पतियारो रे, मनलोभी थारो कई पतियारो रे॥

उगा-उगा भाग पच्छम जाय पूगा रामा धुरजी ने लागो धोरो रे,
जल गयो तेल बुझण लागी बतियां रामा मंदिरयाँ में घोर अंधारो रे॥

जल केरी बूंद.......

लेर कटोरियो शहर माहें फरियो रामा नही मिलियो तेल उधारो रे,
उठ गयो बाणियो सूनी पड़ी हटड़ियां रामा॥

जल केरी बूंद.......

हटड़ियां में दीखे हड़तालो रे, जातोड़े लगायो मोटो तालो रे,
लद गयो बणजारो ने पड़ियो रे लाढाणो रामा॥

जल केरी बूंद.......

जातोड़े लगायो ललकारो रे हरिहर जातोड़े लगायो मोटो हाको रे,
कहत कबीरा सुणो भाई साधो रामा, नाम लियां निसतारो रे॥

जल केरी बूंद.......

भजन– जल केकी बूंद.....

लोक धुन पर आधारित

स्थायी

ताल – कहरवा   लय – मध्यलय

रे	–	रे	म	रे	–	सा	–	सा	–	–	–	सा	–	सा	–
ज	ऽ	ल	ऽ	के	ऽ	की	ऽ	बूं	ऽ	ऽ	ऽ	द	ऽ	प	ऽ
सा	रे	रे	प	(प)	–	म	–	रे	–	रे	–	सा	–	सा	–
व	ऽ	न	ऽ	के	ऽ	रा	ऽ	थां	ऽ	बा	ऽ	रा	ऽ	मा	ऽ
–	–	सा	प	प	–	प	–	प	–	–	–	प	–	प	म
ऽ	ऽ	ना	ऽ	म	ऽ	लि	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ	नि	ऽ	स	ऽ
म	नी	ध	नी	प	ध	–	प	प	–	–	रे	रे	म	म	ग
ता	ऽ	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	झू	ऽ	ठा	ऽ
रे	ग	ग	रे	सा	ऩी	सा	–	–	–	रे	रे	–	म	–	प
बो	ऽ	ल्या	ऽ	था	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	क	ई	ऽ	प	ऽ	ति
प	ध	–	प	म	–	–	ग	रे	–	–	–	म	–	म	ग
या	ऽ	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	न	ऽ
रे	ग	ग	रे	सा	ऩी	सा	–	–	–	रे	रे	–	म	–	प
लो	ऽ	भी	ऽ	था	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	क	ई	ऽ	प	ऽ	ति
प	ध	–	प	म	–	–	ग	रे	–	–	–	–	–	–	–
या	ऽ	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
X				0				X				0			

(स्त्रोत : शर्मा, डॉ. वसुमती एवं सांखला, डॉ. कमल किशोर (सम्पा.) (2014), "राजस्थान का सन्त–साहित्य", राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, पृष्ठ संख्या 21)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

15. भजन- राग अलहिया बिलावल (ताल- दीपचंदी मध्यलय)

यांको भेद बतावो ब्रह्मचारी, यां में कौन पुरुष कौन नारी।

ब्राह्मण के घर होई रे ब्राह्मणी, साधु के घर में चेली,
काजी के घर होई रे तुरकड़ी, कलमा पढ़-पढ़ हारी॥

यां में.......

ना मैं तो परणी ना मैं कुंवारी पुत्तर जण-जण हारी,
सुसरो म्हारो अस्सी बरस रो सासु भोली भाली॥

यां में.......

पियु रे म्हारो झूले रे पालणे, झूला झुलावत हारी,
काली मूंडी रो एक न छोड्यो, रहगई अखंड कुवारी॥

यां में.......

कहत कमाल कबीरा री लड़की, आद भवानी री मूं चेली,
अणी भजन री करले तू खोजना, आवागमन मिट जासी॥

यां में.......

भजन – यांको भेद बताओ ब्रह्मचारी....

लोक धुन पर आधारित

स्थायी

ताल – दीपचंदी | लय – मध्यलय

												सा	सा
												यां	को
रे	म	म	पप	–	ध	प	ध	–	प	–	–	म	प
भे	द	ब	ताओ	ऽ	ब्र	म्ह	चा	ऽ	री	ऽ	ऽ	या	में
ध	प	म	गग	–	रे	रेसा	रे	–	सा	–	–	सा	सा
कौ	न	पु	रुष	ऽ	को	नऽ	ना	ऽ	री	ऽ	ऽ	यां	को
0			3				X			2			

अन्तरा

ग	ग	म	रे	–	सा	सा	रेरे	म	म	पध	–	नीध	नी
ब्रा	ह्म	ण	के	ऽ	घ	र	होई	रे	ब्रा	म्हऽ	ऽ	णीऽ	ऽ
पध	ध	ध	पध	–	प	म	मप	प	–	–	–	–	–
साऽ	धु	के	घर	ऽ	में	ऽ	चेऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	ध	सां	–	सां	–	रेंरें	रें	सां	रेंरें	–	सां	–
का	जी	के	घ	ऽ	र	ऽ	होई	रे	तु	रक	ऽ	ड़ी	ऽ
सांसां	सां	–	नीनी	–	ध	–	ध	–	प	–	–	म	प
कल	मा	ऽ	पढ़	ऽ	प	ढ़ऽ	हा	ऽ	री	ऽ	ऽ	या	में
0			3				X			2			

(स्रोत : शर्मा, डॉ. वसुमती एवं सांखला, डॉ. कमल किशोर (सम्पा.) (2014), "राजस्थान का सन्त–साहित्य", राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, पृष्ठ संख्या 25)

शेष अन्तरे भी इसी तरह गाये जायेंगे।

16. भजन- लोक धुन पर आधारित भजन (ताल- कहरवा)

मन मायलो माने ना अलबेलो।

कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी,

संग ना चले एक धेलो॥

मन मायलो.......

एक डाल दो पंछी बैठा,

कुण है गुरु कौन चेलो॥

मन मायलो.......

अब का बिछड़या कब मिलला,

मिलणो हो नहीं होलो॥

मन मायलो.......

कहत कबीरा सुनो भाई साधो,

हंस जावेलो अकेलो॥

मन मायलो.......[8]

---

[8]चेनल- हिन्दुस्तानी राग रंग https://youtu.be/1xSVvXf6_eQ

17. **भजन- लोकधुन पर आधारित (ताल- कहरवा मध्यलय)**

साधो भाई ऐसा राम हमारा।

न्यारा रहकर सब में सामिल,
सबमें रहकर न्यारा॥
साधो भाई.....

हैं गंभीर अघाद अगम,
वह सबका पालन हारा॥
साधो भाई.....

रवि, शशी, तारा गण में,
और हैं उसका उजियारा॥
साधो भाई.....

जन्म मरण बंधन से न्यारा,
और तात मात नहीं धारा॥
साधो भाई.....

अमर, अभेद, अजर, अक्षर है,
तीन गुणों से न्यारा॥
साधो भाई.....

सहनसा जो सब का गुरु हैं,
और वही गुरु हैं हमारा॥
साधो भाई.....

सूक्ष्म है स्वर्ग बिन्दु
उसका सकल पसरा॥
साधो भाई.....[9]

---

[9] पद्मश्री अली मोहम्मद से प्राप्त रचना

18. भजन- सूफी शैली पर आधारित (ताल- कहरवा मध्यलय)

फ़कीरा साहब लगता प्यारा।

घट में ब्रम्हा, घट में विष्णु,

घट में है शिव का द्वारा॥

फकीरा साहब......

घट में गंगा, घट में यमुना,

घट में है हरिद्वारा॥

फकीरा साहब......

घट में चंदा घट में सूर्य,

घट में है नौ लख तारा॥

फकीरा साहब......

ब्रम्हानंद भजन कर बन्दे,

मिल जाए मोक्ष द्वारा॥

फकीरा साहब......[10]

[10]भजन गायिका राम कुमारी (रमा बाई) से प्राप्त रचना https://youtu.be/LWZKJRp5jjg

19. भजन- राग सोरठ (ताल- कहरवा मध्यलय)

सांवरया थे आया रहिजो मीरा बाई रे देश,

गिरधर प्यारा आया रहिजो मीरा बाई रे देश॥

थारी-थारी खातिर प्रभु जी,

बाग़ लगायो, करके मालण रो भेस।।

सांवरा थे......

थारी-थारी खातिर प्रभु जी,

भोजन बणायो, करके नायण रो भेस॥

सांवरा थे......

मीरा के प्रभु गिरधर नागर,

साँवली सूरत लाम्भा केश॥

सांवरा थे......[11]

[11] युवा संवादी भजन गायक रामस्वरूप दास से प्राप्त रचना

https://youtu.be/-AYHaMG5Om0

द- ब्रज क्षेत्र के संवादी भजन

ब्रज क्षेत्र में अधिकतर ब्रज के राम और कृष्ण भक्त संत कवियों की रचनाओं का गायन किया जाता है। विभिन्न पौराणिक, धार्मिक और मार्मिक प्रसंगों को उस क्षेत्र की लोक धुनों पर गाया जाता है।

1.	जंगल में जिसका जगत पिता रखवाला....	पारंपरिक
2.	भगवन सांची कहो ना विचारी है क्या....	पारंपरिक
3.	चेत रे गुमानी जग में जन्म न मिले....	पारंपरिक
4.	भरत भाई कपि से उऋण हम नहीं....	पारंपरिक
5.	नाना री भांति नचायो भक्तों ने मोहे....	पारंपरिक
6.	बुढ़ापा ब्ैरी कहाँ से तू आयो बेईमान....	पारंपरिक
7.	अब उठ बीर हमारे....	पारंपरिक
8.	दशा मुझ दीन की भगवन....	पारंपरिक
9.	दीना रा दयाल प्रभुजी म्हाने थांको आसरो....	पारंपरिक
10.	समय का पहिया चलता है....	पारंपरिक
11.	अम्बे कृष्ण मिला दे....	पारंपरिक
12.	पकड़े गए कृष्ण भगवान....	पारंपरिक
13.	इसको कहते पाँच हताई, मान महासती मान....	पारंपरिक

1. भजन- राग पीलू (ताल- कहरवा, मध्यलय)

जंगल में जिसका जगत पिता रखवाला,
उसे मारने वाला कोई, हमने नहीं निहारा॥

एक बहेलिया अपने घर से ले, तीर कमान चला भाई,
चिड़ियों का वध करने के लिए, एक जंगल में पहुचा भाई,
वहाँ एक वृक्ष पर बैठे हुये दो पक्षिन को देखा भाई,
थी एक बेचारी कबूतरी और एक कबूतर था भाई,
आनन्द में बैठे थे दोनों, थी किसी बात की चिन्ता ना,
इन्हें देख शिकारी बेदर्दी, अपने मन बेझाँ हर्षाना,
झट तीर निकाला तरकस से, दे ध्यान जरा सुनते जाना,
जालिम ने देर करी न जरा, वो तीर सरासर घर ताना,
बाँधन लगा निशाना अधर्मी, महानीच हत्यारा॥
जंगल में जिसका.......

अब और सुने सज्जन आगे, कैसी विचित्र हरि की माया,
वो खड़ा है नीचे तीर तान, ऊपर से एक गजब आया,
जब उसी पेड़ पर नजर पड़ी तो बाज प्रसन्न हुआ भारी,
नीचे एक बाज भयंकर भी देखा, जो आसमान में मंडराया,
चौतरफा नजर घुमाये वह करने को अपना मन चाहा,
दोनों पक्षिन को देख लिया, हुई दिल से दूर फिकर सारी,
अम्बर में चक्कर काट रहा अब पक्षीबाज भयंकारी,
कोई घड़ी में झपटा मारन की, उसकी हो रही है तैयारी,
ऊपर बाज शिकारी नीचे, मौज मना रहे भारी॥
जंगल में जिसका.......

यह देख कबूतर - कबूतरी दोनों का धीरज छूटगया,
कह रही नर से मादा यूँ है नाथ विधाता रूठ गया,
इसी पेड़ के ऊपर अब दोनों का भण्डा फूट गया,
बेदर्द शिकारी है प्यारी, धरती पर ताने तीर खड़ा,
अम्बर में जाय रहा देखो ये शत्रु बाज बेपीर बढ़ा,
दाण में नीचे से तीर चला और ऊपर से ये टूट पड़ा,
अब नहीं बचे हम तुम दोनों, बचना है प्रीतम बहुत बड़ा,
कह कबूतर हाँ हाँ प्यारी, कहना सत्य तुम्हारा,

जंगल में जिसका.......

दोनों ने मन में सोच लिया सिर काल हमारे अब छाया,
लेकिन ईश्वर की माया का नहीं पार किसी ने भी पाया,
विकराल महाकाला जहरी एक सर्प कहीं से घर-धाया,
बलिया मार लपेटा पैरो में, बेपीर शिकारी दस स्वाया,
एक संग तभी वह मभक उठा, इसलिये हुआ क्या अब देखो,
चल गया तीर तिरछा उसका और बाझ में जाय लगा देखो।
वह ईधर मरा वह उधर मरा, दोनों से फंद कटा देखो
बच गये कबूतर कबूतरी परमेश्वर की लीला देखो,
रूप राम शिवदेव की रक्षा करे वही प्रभू प्यारा॥

जंगल में जिसका.......

भजन – जंगल में जिसका जगत पिता रखवाला......

राग – पीलू

ताल – कहरवा | स्थायी | लय–मध्यलय

							सा जं
निनि गल	सा मे	रेग जिस	–सा का	रे ज	रे ग	प त	ग पि
ग ता	रे S	सा र	नी ख	सा वा	सा ला	– S	– S
सां– उसे	सां– मार	सां– नेS	सां S	नि– वाS	नि– लाS	ध को	प ई
प– हम	नि– नेS	–ध Sन	पम हींS	ग नि	रे हा	सा रा	
X				0			

(स्त्रोत : पारम्परिक भजन गायक, शिव सिंह तँवर से प्राप्त रचना)

टिप्पणी – इस भजन में अन्तरा बिना ताल के कथानक के रूप में गाया जाता है।

2. भजन- जौनपुरी (ताल- कहरवा)

जब भगवान राम केवट से गंगा जी को पार करने की कहते हैं, तो केवट घबरा जाता है कि कहीं मेरी नाव पत्थर की नहीं हो जाये क्योंकि भगवान राम की चरण धूल लगने मात्र से श्रापवश पत्थर की हुई गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या फिर से जीवित हो उठी तो कहीं मेरी नाव भी अगर नारी बन गई तो मेरे परिवार की आजीविका का साधन भी चला जायेगा। भजन में भगवान राम और केवट का संवाद है -

भगवन साँची कहो ना विचारी है क्या,
करके पत्थर को ऋषि नारी, आये मेरे पास खरारी,
नौका बनी काठ की प्यारी इसकी बारी है क्या॥

मैंने सुना है, आपके, चरणों में जाने बात क्या,
पत्थर अगर नारी बने, तो काठ की औकात क्या,
मेरा यह रोजगार है, रोजगार बिन प्रभु जात क्या॥
करिये कृपा करुणानिधेय, मुझ दीन के संग घात क्या,
मेरी बनी काठ की तरणी, परसत चरण बने मुनी धरनी,
फिर क्या इससे खोटी करनी, नाथ धारी है क्या॥
भगवन साँची......
झूठी नहीं ये सत्य है, वन में शिला नारी बही,
पाहन कठिन है काठ से, कैसे भरोसा हो दई,
मेरी जावे नाव उड़ाई कैसे पालूँ कुटुम्ब गोसाँई॥
मेरे पास न खोटी पाई, नाथ धारी है क्या,
भगवन साँची......
स्वीकार विनती है अगर, तो स्वीकृति प्रभु दीजिए,
पहले चरण धुलवाइये, इतनी कृपा हरि कीजिए॥
जब तक न पद पकंज पखाऊँ, नाव नाम न लीजिए,

लाऊँ नहीं दरिया में नईया, प्रभू आप केतिक कीजिए,
ऐसा समय फेर नही आनी, सारी बात करूँ मनमानी॥
फिर ना कहना सारंग पानी, नाथधारी है,
भगवन साँची.......

केवट के ये बयान सुन, राजीव नयन मुस्का गये,
लखी प्रेम प्रभू को देखकर, ये सियलखन सकुचा गये॥
उस समय सब देव लेले, यान नभ में छा गये,
संकेत पा केवट के परिजन, गंग तट पर आ गये,
जे पद ब्रह्मादिक नहीं धोए, ते पद केवट मल-मल धोए॥
सारे पाप जन्म के धोये, अब ख्वारी है क्या,
भगवन साँची.......

बरसे सुमन सब देवता, कहने लगे धन यार है,
प्रभू से प्रथम परिवार में, होया तू ही भवपार है॥
शनानन्द ले पद पदम, औदक नाव लाया धार है,
बल्ली उठा प्रभू को बिठा, करता चला जयकार है,
उत्तरे सुर सरि तटि हार जायी, दिल में अतिसकुचे रघु राई॥
इसको क्या देवें उतराई, खुद भिखारी है क्या,
भगवन साँची.......

जान पिय के हिय की बात, ये मून्दरी सिय ने दई,
देने लगे केवट को तो, कह नाथ अनुचित ना लई॥
भव सिन्धू के दाता हो तुम, गंगा का केवट मैं सही,
गंगा से कीने पार ने, विनती भव से करो मेरी यही,
करके प्रभू पद कमल प्रणाम, केवट गया हर्षता धाम॥
जपता पतित शिम्भू सिंह नाम, सुध बिसारी है क्या,
भगवन साँची.......

भजन – भगवान साँची कहोना......

राग – जोनुपरी

स्थायी

ताल – कहरवा | लय–मध्यलय

						सासा	निनि
						भग	वन
सा	रेग	रे	सा	सारे	प	–	प
साँ	चीऽ	ऽ	क	होऽ	ना	ऽ	वि
म	पध	म	प	ग	रे	सांसां	सां–
चा	रीऽ	ऽ	है	क्या	ऽ	कर	केऽ
सां	सांसां	सां	सांसां	नि	निध	पध	पम
प	त्थर	को	रिषि	ना	रीऽ	आऽ	येऽ
मप	पनि	निध	धप	प	प	सां	सां
मेऽ	रेऽ	पाऽ	सख	रा	री	नो	का
सांसां	–सां	सां	सांसां	नि	निध	पध	पम
बनी	ऽका	ठ	कीऽ	प्या	रीऽ	इस	कीऽ
रेम	पध	म–	पप	ग	रे		
बाऽ	रीऽ	ऽऽ	हैऽ	क्या	ऽ		
X				0			

(स्त्रोत : पारम्परिक भजन गायक, शिव सिंह तँवर से प्राप्त रचना)

टिप्पणी – इस भजन में सभी अन्तरे 'कथानक' के रूप में गाये जाते हैं तथा स्थायी जिसको 'टेर' कहते हैं, सामूहिक स्वर में गाया जाता है।

3. **लोक धुन पर आधारित पारंपरिक चैतावनी भजन (ताल-कहरवा)**

चेत रे गुमानी फिर ये जन्म ना मिले रे।

माया संग ना चले, काया संग ना चले॥

दस से सोलह गये खेल में,

बीस गये माया कि जेल में।

चालीस साल तिरिया की सेज पे,

पचपन नाड़ हिले रे॥

माया संग.......

काली गई सफेदी आई,

तन की खाल सिकुड़ सब जाई।

बंदर जैसा मुँह हो जाये,

डगमग नाड हिले रे॥

माया संग.......

तू केहता है मेरी-मेरी,

ये माया तेरी ना मेरी।

धन दौलत थारा यहीं रह जावे,

अग्नी के साथ जले रे॥

माया संग.......

भजन करेगा तो सुख पावेगा,

धन दौलत थारी काम नी आवेगा।

धन दौलत थारी यहीं रेह जावे,

कहत कबीर विचारी॥

माया संग.......

भजन – चेत रे गुमानी जग में जनम ना मिले......

राग – खमाज

स्थायी

ताल – कहरवा | लय – मध्यलय

				सां चे	सां त	सां रे	सां गु
नी मा	नीध नीऽ	धप जग	प में	– –	पध जन	म म	म ना
मध मिले	पम ऽरे	ग मा	रे या	ग सं	ग ग	सा ना	सा च
सा ले	– ऽ	सा रे	– –	ऩि मा	ऩि या	सा सं	ग च
सा ना	सा च	सा ले	– ऽ				
X				0			

अन्तरा

ग द	मग स से	ग सो	ग लह	रे गये	रेग तैरे	सा खेल	सा में
म बी	मम सग	म ये	म मा	प या	पप किऽ	प जेल	प में
सां चा	सां ली	सां स	सां गये	सांसां तिरि	नी या	नीध कीसे	प ज
पध आ	निध ऽऽ	धनि ऽऽ	सांनि ऽऽ	सा ऽऽ	– ऽऽ	– ऽऽ	– ऽऽ
पध पच	धध पन	म ना	म ड	मध हिले	पम ऽऽ	ग रे	रे ऽ
X				0			

(स्त्रोत : प्रो. विजयेन्द्र गौतम से प्राप्त रचना)

शेष अन्तरें भी इसी तरह गाये जायेंगे।

टिप्पणी : राग खमाज पर आधारित इस पारंपरिक धुन में अन्य पद भी गाये जाते हैं।

4. **पारंपरिक भजन (ताल- कहरवा मध्यलय)**

भरत भाई कपि से उऋण हम नाही,
कपि से उऋण हम नाहीं॥

सौ योजन मर्याद सिन्धु की,
कूदि गयो क्षण माँहीं।
लंका जारि सिया सुधि लायो,
पर गर्व नहीं मन माँहीं॥
भरत भाई......
शक्ति बाण लग्यो लक्ष्मण के,
शोर भयो दल माँहीं।
धोला गिर कर धर लायो,
भौर ना होने पाई॥
भरत भाई......
अहि रावण की भुजा उखाड़ी,
बैठि गयो मठ माँहीं।
जो भैया हनुमंत नहीं होतो,
तो करतो कौन सहाई॥
भरत भाई......
आज्ञा भंग कबहू नहीं कीन्हीं,
जहाँ पठायो तहाँ जाई।
तुलसीदास पवनसुत महिमा,
प्रभु निज मुख करत बड़ाई॥
भरत भाई......[12]

[12] पारंपरिक भजन गायक, आचार्य, पं. सीता राम जी से प्राप्त रचना

5. **भजन- पारंपरिक भजन (ताल- कहरवा मध्यलय)**

नाना भांति नचायो भक्तों ने मोहे,
लोक लाज तज इन्हीं काज में वैकुंठन विसरायो॥

गज ने पुकारयो मैंने गरुड़ बिसारयो,
गजराज को पछारयो सुन प्रेम की पुकार,
जब द्रोपदी पुकारी सुध लीजे बनवारी,
मोहे आस है तिहारी जाऊँ किसकी शरण,
सुनी टेर नहीं करी देर वाने तुरत ही चीर बढ़ायो॥
नाना भांति.......

नरसी भगत एक सांवरिया सेठ,
मैंने भात पहरायो लाज राखी जनकी,
प्रल्हाद ने पुकारयो नरसिंह रूप धारयो,
हिरणा कश्यप को मारयो सुध भूली तन की,
दुर्योधन को मेवा त्यागी साग विदुर घर खायो॥
नाना भांति.......

कहीं शस्त्र ना उठाऊँ रणछोड़ भाग जाऊँ,
कही प्रतिज्ञा निभाऊ कही भीख मांग जाऊँ,
रूप बावन को धार जाय पहुच्यो बलि द्वार,
तीन पेंड हूँ में तीनों लोक नाप दियो धाय,
महाभारत में अर्जुन के संग रथ को सारथि कहायो॥
नाना भांति.......

मैं हूँ मीरा को गोपाल गिरिधारी नंद लाल,

बन्यो कंस को यो काल दास तुलसी को राम,

लक्ष्मी को भर्तार चारों वेदन को सार,

बन्यो नंद को कुमार सूरदास ही को श्याम,

या वृषभान किशोरी ने मोही, चरनन को दास बनायो॥

नाना भांति.......

ध्रुव को गलानी तज दीनी राजधानी,

मेरी माया तो पिछानी मोसे मिल्यो है बिहा,

नाम देव ने पुकारयो वाको छप्पर छावायो,

रूप मोहिनी बनायो लिन्यो अमृत कलश,

देवन सुधा पिलाई प्रेम से असुर ने सींग दिखायो॥

नाना भांति.......[13]

[13] पारंपरिक भजन गायक, आचार्य, पं. सीता राम जी से प्राप्त रचना

6. भजन- राग खमाज (ताल- कहरवा)

बुढ़ापा बैरी कहाँ से तू आयो बेईमान,
बड़े-बड़े योद्धा खटिया पकड़ गये, अर्जुन भीम समान रे॥

चन्द्र बदन मृग लोचन प्यारी, रति रम्भा जावे बलिहारी,
वो भी डोकरी बनी बेचारी, बन गई अम्मा जान रे॥

बुढ़ापा बैरी.......

कुच कपोल नासिका प्यारी, इनको क्या देखे तू अनाड़ी,
बदन शहर ऊजड़ भयो भारी, बाकी बचे निशान रे॥

बुढ़ापा बैरी.......

कफ पित, बाय बबर गई गठिया, सूखर भयो हाड़न की टटिया,
टेकत चलै धरन पर लठिया, कमर हुई तीर कमान रे॥

बुढ़ापा बैरी.......

नारी कहयो न माने तेरो, थूक - भूक घर भयर्यो घनेरो,
बेटा कहे कब मरे सवेरो, बहू भी तोड़े तान रे॥

बुढ़ापा बैरी.......

दस-दस कोस भागतो फिरतो, सभा खातो पीतो और कमातो,
शम्भू सिंह कहे तू नहीं आतो, अरे बुढ़ापा तू नही आतो॥

बुढ़ापा बैरी.......[14]

---

[14] पारंपरिक भजन गायक शिव सिंह तंवर से प्राप्त रचना

7. **लोक धुन पर आधारित पारंपरिक भजन (ताल- कहरवा)**

अब उठ वीर हमारे, रघुकुल मणि प्राण प्यारे .

नया पड़ी मजधार में, भइया कन्हैया कहाँ चले
मैया सुनेगी जिस समय, भइया पछाड़े खायेगी
और उर्मिला विधवा भई, कैसे निहारी जाएगी
मुझसा अधर्मी अब यहाँ, होगा न और जहान मैं,
नारी के खातिर दे चला, भइया तुझे बलिदान मैं
अब उठ.......

पृथ्वी मुझे स्थान दे, मैं झट समाजाऊँ यहाँ,
आकाश मुझ पर टूट पड़, मैं मुख दिखाऊँ अब कहाँ,
नारी छूटि यारी छूटी दौलत छूटी और घर छुटा,
जिस रत्न पर मैं मस्त था वह रत्न भी मेरा लुटा,
गण नाद खड़ा ललकारे उठ वीर हमारे॥
अब उठ.......[15]

[15] पारंपरिक भजन गायक, आचार्य, पं. सीता राम जी से प्राप्त रचना

8. **भजन- राग भैरवी (ताल- कहरवा मध्यलय)**

दशा मुझ दीन की भगवन्, सम्हालोगे तो क्या होगा।
अगर चरणों की सेवा में, लगा लोगे तो क्या होगा।।
दशा मुझ.......

मैं पापी पातकी हूँ और नामी पाप हर तुम हो।
जो लज्जा दोनों नामों की, बचा लोगे तो क्या होगा।।
दशा मुझ.......

जिन्होंने तुमको करुणाकर, पतित पावन बनाया है।
उन्हीं पतितों को तुम पावन, बना लोगे तो क्या होगा।।
दशा मुझ.......

यहाँ सब मुझसे कहते हैं, तू मेरा है तू मेरा है।
मैं किसका हूँ ये झगड़ा तुम, चुका लोगे तो क्या होगा।।
दशा मुझ.......

अजामिल, गीद्ध, गणिका, जिस दया गंगा में तरते हैं।
उसी में 'बिन्दु' सा पापी मिला लोगे तो क्या होगा।।
दशा मुझ.......[16]

[16] प्रोफेसर (डॉ.) विजयेन्द्र गौतम जी से प्राप्त रचना

९. भजन- (ताल- कहरवा मध्यलय)

दीना रा दयाल प्रभु जी, म्हाने थांको आसरो।

मीरा बाई ध्यान कियो, भक्ति रस पान कियो,

पा गई परम पद, ध्यायो पीहर सासरो॥

दीना रा दयाल......

करमा बाई जाटणी, पालो पानी काटणी,

प्रेम सूं जिमायो थाने, कूट गाल्यो बाजरो॥

दीना रा दयाल......

नर्सिलो कंगाल भयो, धन ने लुटाय दीयो,

भक्त को बढ़ायो मान ,भात भरियो साँतरो॥

दीना रा दयाल......

सुणो जी बिहारी लाल, मांगू नही धन माल,

भक्ति को वरदान मांगू, हेलो सुण लो दास रो॥

दीना रा दयाल......

भवर है चरण चेरा, ध्यान घनश्याम तेरा,

हृदय में लगाओ डेरा, राखो मत ना आंतरो॥

दीना रा दयाल......[17]

[17] प्रोफेसर (डॉ.) विजयेन्द्र गौतम जी से प्राप्त रचना

10. लोक धुन पर आधारित पारंपरिक चैतावनी भजन (ताल- कहरवा मध्यलय)

समय का पहिया चलता है,
इस पहिये के साथ किसी का, वक्त बदल ता है॥

करे नौकरी मरघट की वो हरीष चन्दर सा दानी,
राज कुंवर की लाश को लेकर आई तारारानी,
उस राजा का पुत्र भी बिलकश में जलता है॥

समय का.......

हो अवध पूरी के रहने वाले तीनो वन में आये,
चौदह वर्ष रहे वन में फिर बीते हर्षाये,
हो मात पिता की आज्ञा से ये राज बदलता है॥

समय का.......

काँधी उधारी था वो अर्जुन भीम गधा सा धारी,
भरी सभा में नग्न हुई थी उन पांचो की नारी,
देख रहे थे पांचो पाडव जोर न चलता है॥

समय का.......[18]

[18] पारंपरिक भजन गायक शिव सिंह तंवर से प्राप्त रचना लेखक मनोहर लाल

11. लोक धुन पर आधारित पारंपरिक भजन (ताल- कहरवा मध्यलय)

अम्बे कृष्ण मिलादे, अम्बे कृष्ण मिलादे।

कौन ने मैया तेरो भवन बनायो,
कौन भरयो जल पानी।
अर्जुन योद्धा तेरो भुवन बनायो,
भीम भरयो जल पानी॥

अम्बे कृष्ण.......

सूरज सामे भवन तिहारो,
लाँगुरिय अगवाणी।
चारों तरफ तेरे सिंह बिराजे,
केहरी की असवारी॥

अम्बे कृष्ण.......

धूप दीप नई वेद आरती,
लड्डवन भोग लगावे।
साथी देगल आन खड़ा है,
बचादे आकर लाज॥

अम्बे कृष्ण.......[19]

[19] पारंपरिक भजन गायक शिव सिंह तंवर से प्राप्त रचना

12. **लोक धुन पर आधारित पारंपरिक भजन (ताल- कहरवा मध्यलय)**

राधा बन गई न्यायधीश और ललिता कप्तान,

पकड़े गए कृष्ण भगवान॥

एक दिना ग्वालिन घर जाकर माखन खाने लगे चुराकर,

जग पड़ी वो चतुर गुजरियां पकड़ लिए दोइ कान॥

पकड़े गए........

माखन खाने लगे मुरारी अब ना चोरी करूं तुम्हारी,

एक बात न सुनी ललिता ने तुरत किया चालान॥

पकड़े गए........

नन्द बाबा की खोरी जाकर मुजरिम पेश किया है लाकर,

कहे विधाता सुन मेरी मैया बहुत किया नुकसान॥

पकड़े गए........

करी वकालत जब मनसुख ने झूठा केस किया है इसने,

कहे विधाता सुन मेरी मैया मैं बालक नादान॥

पकड़े गए........[20]

[20] पारंपरिक भजन गायक, आचार्य, पं. सीता राम जी से प्राप्त रचना

13. **पारंपरिक लोक भजन (ताल- कहरवा मध्यलय)**

इसको कहते हैं पंच हथाई मान महा सतिमान,
मान महासति मान तू क्यों रही कठिन हठ ठान॥

फिर बोली पार्वती स्वामी, यह तो मुझे समझाओ,
मेरे दिल में शंका भारी, इसको नाथ मिटाओ,
यूँ कह पार्वती समझा॥

मान महासति......

अजी यहाँ पर होता न्याय सत्य का, सुनो सती महारानी,
अलग दूध का दूध अलग करदे पानी का पानी,
यहाँ पर पाते दण्ड अन्यायी॥

मान महासति......

फिर बोली पारवती स्वामी, यह तो मुझे बतलाओ,
अजी कैसा होता न्याय सत्ये का, प्रत्यक्ष में दिखलाओ,
तब ही जानू सत्य गोसाई॥

मान महासति......

यह सुन अन्तरध्यान हुये शिव, एक जाट घर आये,
जैसा जाट धनी था घर का, वैसा ही रूप बनाये,
घर की कुन्दी जाय बजाई॥

मान महासति......

दौड़ी जाटणी झट पट खोल्या, आज तो जल्दी आये,
जाट कहे तू सुन ऐ जाटणी, मुझको भूख सताये,
रोटी तुरत जाटणी ल्याई॥

मान महासति......

असली जाट आवाज लगाई, उठ ओ जाटणी ऊठ,

प्यास के मारे गला सूख रहया, ल्या पाणी की घूट,

जाटणी मन में अति गरमाई॥

मान महासति......

अजि गुस्सा में दरवाजो खोल्यो देख जाट को रूप,

एक रूप दो पुरुष देखकर, गई जाटणी सूख,

अब जाटों में हुई लड़ाई॥

मान महासति......

दौड़ी जाटणी गाँव बीच, पंचों में जाय पुकारी,

अजी न्याय करो अन्याय हो रहा, मैं हूँ किसकी नारी,

ओ मेरे दो पुरुष लड़े घर भाई॥

मान महासति......

सुनकर लोग इकट्ठा हो गया, छोड़ आपणां धन्धा,

एक रूप दो पुरुष देखकर, पंचों में पड़ गया फन्दा,

ओ याने ले चलो पंच अथाई॥

मान महासति......

पंच अथाई बैठ के सबड़ा, करवा लग्या विचार,

कुणसा की है घरवाळी या, कुणसा का घरबार,

न्याय की पंचों ने बात उठाई॥

मान महासति......

एक घड़ा मंगवा के पंचों ने, बीच में लिया धराई,

तीन बार जो घुसे कलश में, याकी भवन लुगाई,

दो बार गये कलश में साँई॥

मान महासति......

अजि शंकर बोले मैं तीन बार क्या, तीस बार घुस जाऊँ,

मेरा घर और मेरी जाटणी, पंचों तुम्हें दिखाऊँ,

दो बार गये कलश में साई॥

मान महासति......

अजी तीजी बार जब घुसे कलश में, पंचों ने एक दिया ढवना,

भूल जायेगा किसी का घर और किसी की नारी ठगना,

ओ जाट घर नारी संभलाई॥

मान महासति......

अजी लक्कड़ मंगाओ चिता बनाओ, घड़ा बीच धरवाओ,

प्रेत बड़ा बेढंगा इसमें, जल्दी आग लगाओ,

सुनकर पार्वती घबराई॥

मान महासति......

पार्वती पंचों से बोली, मेरी अरज सुन लीजे,

मेरे पति की रक्षा के हित, घड़ा दान मोय दीजे,

यूँ कह पार्वती संकुचाई॥

मान महासति......

अजी प्रकटे भोलेनाथ कहा पंचों से, धन्य हो भाई,

कलियुग में अन्याय करेंगे, पंच लोग अन्यायी,

अन्तरध्यान हुये झट साँई॥

मान महासति......

पंच बिगड़ पंचायत बिगड़ी, कलियुग तोड़ी माला,

कन्या दलाली रिश्वत खोरी, झूठ नहीं गोपाला,

शिव भोले की कथा सुनाई॥

मान महासति......[21]

---

[21] पारंपरिक भजन गायक शिव सिंह तंवर से प्राप्त रचना

चतुर्थ अध्याय

संवादी भजन गायकों का परिचय और योगदान

चतुर्थ अध्याय

संवादी भजन गायकों का परिचय और योगदान

सम्पूर्ण भारत के हिन्दी भाषी राज्यों में विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक प्रसंगों पर भजन के रात्री जागरण कार्यक्रम होते रहते हैं। समाज के ग़रीब तबके से लेकर उच्च स्तरीय परिवारों में विभिन्न संस्कार, देवी-देवताओं के विशेष दिवस पर इस प्रकार के आयोजन अत्यंत श्रद्धा के साथ होते हैं। ग्रामीण संस्कृति में इसका प्रचलन बहुत अधिक है। राजस्थान के गांवों के विभिन्न प्राचीन मंदिरों, देव स्थलों यहाँ तक कि घरों में भी विभिन्न संस्कारों पर वार्षिक भजन कार्यक्रमों का आयोजन नियमित रूप से होता रहता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी श्रद्धा और भावना के अनुरूप कलाकारों को आमंत्रित कर उन्हे सम्मान और पारिश्रमिक से स्वागत करता है। अनेक भजन गायक अपनी योग्यता और मांग के आधार पर पारिश्रमिक भी प्राप्त करता है। अनेक कलाकार व्यावसायिक रूप से इस विधा से अपने परिवारों का पालन पोषण करते हैं। कुछ गायक शौकिया भी गायन करते हैं।

राजस्थान में संवादी भजन की दो प्रकार की शैली प्राप्त होती हैं जिनके क्षेत्र निम्नानुसार है -

1. शेखावाटी क्षेत्र
2. ब्रज क्षेत्र

1. **शेखावाटी क्षेत्र -** शेखावाटी क्षेत्र में सीकर, चुरू एवं झुंझुनू तथा अन्य जिले जयपुर, बीकानेर, नागौर एवं जोधपुर आदि प्रमुख है। यहाँ कि भजन शैली पर मुख्य रूप से संत कवियों जैसे- कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, मीरा आदि कि रचनाओं का गायन किया जाता है। चुरू बिदासर के बिहारी बाबा इस शैली के सबसे प्राचीन कलाकारों में से एक हैं। उनकी अनेक रचनाऐं ध्वनि मुद्रित रूप में प्राप्त होती हैं। लगभग सभी कलाकार उनका ही अनुसरण करते हैं। इनका सांगीतिक पक्ष अत्यंत सुंदर और प्रस्तुति में विभिन्न प्रकार कि गायकी का सम्मिश्रण इन्हें एक अलग प्रकार की शैली का स्वरूप प्रदान करता है। इन भजनों में राजस्थान की मांड के छोटी-छोटी मुरकियाँ और तान, सूफी का खुलापन और विस्तार, राजस्थान के लोक संगीत की मिठास, शास्त्रीय शैली ख़्याल के अनुरूप राग का व्यवहार और गायकी का मिश्रण इसे राजस्थान की विशिष्ट भजन शैली बनाता है। बीदासर (चुरू) जिले के बिहारी बाबा, सीकर के मोइनूद्दीन खान, जयपुर के चिरंजी लाल तंवर कि गायकी ने राजस्थान ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत के श्रोताओं और दिग्गज कलाकारों को प्रभावित किया है। बिहारी जी की एक भक्ति रचना ''प्रभु तेरो नाम....'' जिसे सुप्रसिद्ध

पार्श्व गायिका लता मंगेशकर ने भी अपनी आवाज़ दी है, इन कलाकारों कि उत्कृष्ता को परिभाषित करती है।

शेखावाटी क्षेत्र के भजनों को भी दो श्रेणी मे विभक्त किया जा सकता है –

1. शास्त्रीय रागों एवं तालों पर आधारित
2. राजस्थान की लोक धुनों पर आधारित भजन

सभी भजन गायक दोनों प्रकार की रचनाओं का गायन करते हैं, जो कि श्रोताओं की रूचि पर निर्भर करता है।

2. **ब्रज क्षैत्र -** ब्रज क्षेत्र में भरतपुर, अलवर, करौली, सवाई माधोपुर और हाड़ौती प्रमुख है। यहाँ के भजन गायक व्यावसायिक नही हैं। ये भक्ति भाव से इन कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति देते हैं। इस शैली में समूह में गायन करते हैं और भजनों की विषय वस्तु और धुन भी पारंपरिक होती है। हारमोनियम, तबला, ढोलक और मंजीरा वाद्यों का प्रयोग ही विशेष रूप से किया जाता है। इनकी विषयवस्तु मुख्यरूप से कृष्ण भक्ति से सम्बन्धित है, जिसमें भक्त और भगवान के मध्य आपसी संवाद का वर्णन मिलता हैं। कृष्ण भक्त कवि बिन्दु, चन्द्र सखी आदि संतों की रचनाओं का गायन जिन्हें शास्त्रीय संगीत की कुछ रागों और ब्रज की लोक धुनों पर गायन किया जाता है। एक ही धुन पर अनेक भजन एवं एक ही भजन को अनेक धुन पर गाये जाते हैं। रात्रि के कुछ राग जैसे- कल्याण, भूपाली, देस, सोरठ, बिहाग, केदार, भैरवी, प्रभाती रागों में उनके समय अनुसार भजनों की प्रस्तुति देते हैं। कार्यक्रम का प्रारम्भ गणेश वंदना और अंत में भैरवी राग का प्रयोग अनिवार्य होता है।

भजनों की ऐसी सैंकड़ों रचनाऐं जन-जन की जुबान पर है, जिनमें श्रोता और कलाकार केवल ईश्वर अथवा स्वयं से साक्षात्कार करता है। ऐसे गायकों का जीवन परिचय और संघर्ष की कहानी इस शोध ग्रंथ में प्रस्तुत करना उनके प्रति सच्ची श्रृद्धांजलि होगी। यहाँ कलाकारों के जीवन परिचय के साथ भजन की रात्री जागरण की परम्परा और समाज में इनके योगदान तथा महत्त्व को भी परिलक्षित करने का प्रयास किया गया है। इस हेतु विभिन्न कलाकारों और उनके शिष्यों से साक्षात्कार किया गया है।

इस अध्याय में संवादी भजनों के गुणी संगीतज्ञों की राय और साक्षात्कार पर आधारित विचार एवं अन्य जानकारी का वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

प्रसिद्ध संवादी भजन गायकों की सूची

क्र.	कलाकार का नाम	गायन शैली
1.	बिहारी कथक	मांड, भजन एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक
2.	स्वर्गीय मोइनुद्दीन खां साहब (सीकर वाले)	मांड, भजन एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक
3.	पं. चिरंजीलाल तंवर	मांड, भजन एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक तथा लहरा-वादक
4.	श्री बनारसी लाल झोरी	मांड एवं भजन गायक
5.	अली एवं गनी मोहम्मद	मांड भजन लोकगीत एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक
6.	डॉ. हनुमान सहाय	मांड, भजन एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक तथा लहरा-वादक
7.	जयराज गन्धर्व	मांड एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक
8.	बाबूलाल भाट	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
9.	सांवरमल कथक	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
10.	बुन्दू खां	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
11.	मास्टर केसरी लाल गंधर्व	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
12.	तेजकरण राव	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
13.	स्वर्गीय मुंशी खां (बावरा)	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
14.	श्याम लाल सराफ	भजन, शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायक
15.	पंडित लखन लाल शर्मा (कोटा)	भजन गायक
16.	बनवारी लाल सेन	भजन एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक

क्र.	कलाकार का नाम	गायन शैली
17.	मम्मल खां	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
18.	लालू राम मकराणा (लाल जी मकराणा)	मांड एवं भजन गायक
19.	राम देवी (रमा कुमारी)	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
20.	लक्ष्मण द्वारका (लक्ष्मण भांड)	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक

1. बिहारी 'कथक'

चित्र 4.1 बिहारी 'कथक' प्रस्तुति देते हुए

बिहारी जी कथक का जन्म चूरू जिले के बीदासर गाँव में सन् 1926 में हुआ था। बाल्यकाल से ही इन्हे सांगीतिक वातावरण परिवार में ही मिला था। आपने बचपन में गायन तथा कत्थक नृत्य की शिक्षा अपने बुजुर्गों से प्राप्त की किन्तु आगे चलकर उनकी रुचि गायन में ही रही। कत्थक परिवार में जन्म लेने से अपने नाम के साथ 'कत्थक' लगाने में गौरव का अनुभव किया। आप बम्बई तथा कलकत्ता में रहे, फिल्मों से वर्षों जुड़ाव रहा, कई प्रकार के गीतों की धुनें तैयार की। शास्त्रीय

गायन तथा नृत्य छूट गया तब सुगम संगीत, लोक गीत तथा राजस्थानी मांड गायन में विशेष लोकप्रियता अर्जित की। देश-विदेश में अपनी कला का प्रदर्शन किया। भारत के विभिन्न नगरों के अतिरिक्त अमेरिका, नेपाल, लन्दन, भूटान आदि में राजस्थानी गायकी के कई सफल कार्यक्रम प्रस्तुत किए। आपके गाए हुए गीत आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर काफी लोकप्रिय रहे। भारत की अनेक संस्थाओं से आप सम्मानित हुए। लम्बे समय तक बीमारी के कारण 28 फरवरी, 1994 को 68 वर्ष की आयु में राजस्थान के इस लोकप्रिय गायक का देहान्त हो गया।

बीसवीं सदी के महान् गायक 'बाबा' बिहारी जी कथक ऐसे गायक थे जिन्होंने अपनी कला-साधना से संगीत-कला व संगीत-जगत् को न केवल आत्मविभोर किया बल्कि अपनी भक्ति-संगीत से तन्मयता संचरित कर संगीत को अमर कर दिया। चाहे भजन हो, ठुमरी हो, लोक गीत हो या ग़ज़ल हो, ख्याल की मध्य लय बंदिशों के गायन में सिद्ध एवं प्रसिद्ध थे। अनेकों लोक और उपशास्त्रीय स्वयं रचित रचनाओं के निर्माता और गायक रहे हैं।

"बाबा" बिहारी जी के पूर्वज सुजानगढ़ के रहने वाले थे, परन्तु कुछ समय पश्चात् वह बीदासर आ गए अतः बिहारी जी के पिता बीदासर में ही रहने लगे।

पितृ सत्तात्मक परिवार होने के कारण पिता की प्रभुता परिवार में सबसे अधिक थी। 'बाबा' बिहारी के पिता का नाम महादेव प्रसाद जी था, जो एक सिद्धहस्थ कलाकार थे। महादेव प्रसाद जी शास्त्रीय गायक थे। प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर प्रभु की भक्ति करना तथा स्वरों का अभ्यास करना उनका नियम था। रियाज के कारण ही उनका शास्त्रीय गायन बहुत ही मजबूत रहा। उनके पिता के भक्ति भाव और संगीत प्रतिभा लक्षण स्वाभाविक रूप से आने लगे।

आपको जन्म से ही अभिजात्य घरानेदार गायन, वादन सुनने का मौका मिला था। 'बाबा' बिहारी भी इसी परिवेश में पले। आपको, आपके ही परिवार से संगीत-शिक्षा मिली।

आपके बाल्यकाल के संबंध में 'बाबा' बिहारी जी के पुत्र श्री रामनारायण जी ने अपने एक साक्षात्कार में बताया है कि "जब मेरे पिताजी की उम्र 5 वर्ष की थी तब वह गेंद खेलते समय भी उसे लय से खेला करते थे। जब उनके ताऊजी श्री बाबूलाल जी स्वयं रियाज करते थे तो उस समय 'बाबा' बिहारी उनके कमरे में पहुंच जाया करते थे और उन्हें ध्यान से सुनते थे। संगीत के प्रति उनकी ये रुचि देखकर मेरे दादा महादेव जी, आवाज़ की साधना के लिए ब्रह्ममुहूर्त अर्थात् सूर्य उदय से पूर्व ही उन्हें संगीत की साधना कराते थे, जिसमें खरज से लेकर अतितार सप्तक के स्वरों की साधना करवाई जाती थी, जिसके परिणाम स्वरूप उनमें तीनों सप्तकों में आसानी से विचरण करने की क्षमता आजीवन विद्यमान रही। संगीत से आपका अत्यन्त लगाव

और प्रेम देखने लायक था। यहाँ तक "बाबा" बिहारी खिलौनों की बजाय तानपुरे, हारमोनियम व तबले के प्रति ही ज्यादा आकर्षित रहे।"[1]

कठोर परिश्रम और अपने माता-पिता की सेवा करते हुए आपको संगीत की समस्त विधाओं का ज्ञान पिता के सानिध्य से प्राप्त हुआ। तेरह वर्ष तक आपने प्रतिदिन 4-5 घंटे रियाज, महान् संगीतकारों की सेवा संगीत-शास्त्र का गहन अध्ययन किया।

अपने छात्र जीवन से ही आपको अपने गुरूदेव के साथ संगीत प्रचार-प्रसार यात्राओं में शामिल होने का सुअवसर मिला और देश के अनेक शहरों में, संगीत-समारोहों में आपने संगीत-कार्यक्रम प्रस्तुत किए। जब आपकी शास्त्रीय-संगीत गायन की तपस्या चल रही थी तब आपको भारतीय-संगीत की राग-रागिनियों के स्वरूप के दर्शन हुए। आपने रागों में कठोरता, उत्साह, गंभीरता के साथ ही कमनीयता, कोमलता, करूणा, चंचलता आदि के दर्शन किये।

गुरू के प्रति गहन श्रद्धा को अभिव्यक्त करने वाला यह वाकया बिहारी जी की विनम्रता को और महानता को दर्शाता है। गुरू के प्रति गहन श्रद्धा को अभिव्यक्त करने वाला यह वाक्यांश – "आज से लगभग 60 वर्ष पहले चूरू जिले के बीदासर गाँव में एक बार संगीत का बहुत बड़ा आयोजन किया गया। 'बाबा' बिहारी ने भी अपने कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। उस संगीत-सभा में अनेक संत व अनेक संगीत-गुणीजन तथा गुरु-महाराज आए हुए थे। 'बाबा' बिहारी का गायन आरम्भ ही होने वाला था कि वहाँ बैठे गुरु-महाराज ने 'बाबा' बिहारी के गुरू का नाम जानने की इच्छा जताई। 'बाबा' बिहारी ने हाथ जोड़कर विनम्रता पूर्वक कहा- "हे गुरू महाराज मेरे गायन में इतनी परिपक्वता नहीं आई है कि मैं अपने गुरू का नाम ले सकूं। यदि मैंने उनका नाम लिया तो मैं उनका अपमान करूंगा। बस आपसे इतना ही कहना चाहता हूँ कि आज के गायन में जो मेरी अच्छाईयाँ है वह सब मेरे गुरू जी की हैं और जो भी गलतियाँ हैं वे सब मेरी हैं। अतः आपसे क्षमा चाहता हूँ।" इतना कहकर 'बाबा' बिहारी का गायन प्रारम्भ हुआ और पूरी सभा तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान हो गयीं।"[2]

आपकी बनाई गई लोक रचनाएँ "गौरड़ी कर सोला सिणगार", "खेजड़ली रे तले", "चूंदड़ी ने फाट्यां कई दिन होग्या", "धन म्हारा देस बिकाणा रे", आदि रचनाऐं

---

[1] चौधरी, प्रतापसिंह (1995); राजस्थान : संगीत और संगीतकार, जयपुर प्रिन्टर्स प्राईवेट लिमिटेड, पृष्ठ सं. 102

[2] अग्रवाल, भूमिका (2013); बहुमुखी गायक "बाबा" स्व. श्री बिहारी जी कथक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, पृ.सं. 22 से 28

अधिकतर संगीत प्रेमी व संगीतकार वर्ग आज तक गा रहे हैं। राजस्थान के अनेक गायक गायिकाओं ने इन गीतों को अपनी आवाज देकर एलबम जारी किये हैं।

बाबा ने अनेक वर्षों तक बंबई (वर्तमान मुम्बई) मे अपनी कला से संगीत के श्रोताओं और संगीतकारों में अपनी पहचान बनाई। एक रिकॉर्डिंग में बाबा ने लता मंगेशकर द्वारा गाया हुआ भजन सुनाते हुये बताया कि "यह उनकी स्वयं की स्वर रचना है जिसे संगीतकार जयदेव ने उनसे 10 हजार रुपए में खरीदकर लता जी से गवा दिया जो आज भी अत्यंत प्रचलित है।" उस भजन के बोल हैं- 'सांचो तेरो नाम....', प्रत्येक श्रोता उनके इस भजन का आज भी दीवाना है। रात्रि जागरण के मंच पर वे दो शैली के भजनों के लिए जाने जाते थे, जिन्हें ही हमने इस शोध ग्रंथ में संवादी भजन कहा है। पहले प्रकार में सूफी और मांड का मिश्रण और दूसरे प्रकार में वे पूर्णतया शास्त्रीय ख़्याल शैली से भजन गायन करते हैं, जिसे ख्याली भजन कहते हैं।

बाबा की भजन गायन की अनूठी शैली है। इस शोध ग्रंथ का प्रमुख विषय संवादी भजन ही है। इस भजन शैली में राजस्थान की मिट्टी की सौंधी खुशबू और मांड शैली का प्रभाव होने के कारण इसे अन्य सभी प्रदेशों की भजन शैली से अलग रखा जा सकता है इसके अतिरिक्त इन भजनों में ठुमरी गायन शैली का प्रभाव भी स्पष्ट रहता है। संवादी भजन शैली का उद्भव राजस्थान के मंदिरों में रात्रि जागरण परम्परा में ही हुआ है जो कि वर्तमान में भी उतनी ही प्रचलित है किन्तु आज इस प्रकार के भजन गायक बहुत कम रह गए है।

सूफी और मांड शैली के भजनों में उनकी अनेक रचनाएँ जैसे– कालिंगड़ा राग की एक रचना "जीव तू जाएगो हम जानी....", और मांड शैली की रचना "जिनकी लगन राम संग नाही....", इसी प्रकार राग मारू बिहाग की रचना "चाहे कृष्ण कहो या राम....", ये सभी संवादी भजन शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

इसी प्रकार भजनी ख़्याल की प्रसिद्ध रचनाओं में राग नंद, आड़ा चौताल "ऐरी माई आज तो आनन्द प्रकट भये...." इसी प्रकार राग दुर्गा, एकताल की रचना "गौरी के नन्द गणेश...." आदि रचनाएँ संवादी भजन शैली के अन्तर्गत आती हैं।

2. स्वर्गीय मोइनुद्दीन खां साहब (सीकर वाले)

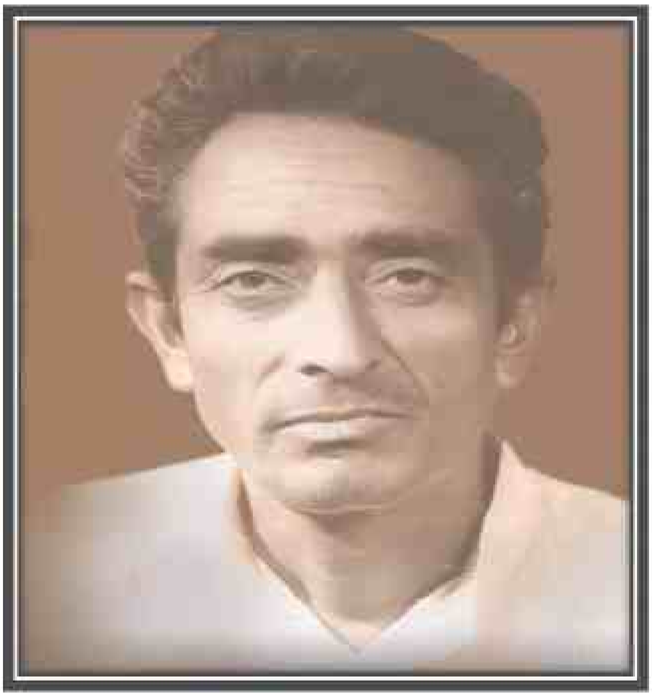

चित्र 4.2 स्वर्गीय मोइनुद्दीन खां साहब (सीकर वाले)

"राजस्थान के सुप्रसिद्ध गायक उस्ताद मोईनुद्दीन खाँ सीकर वाले का जन्म सन् 1927 में गाँव खाटूश्याम जी सीकर में हुआ। आपको संगीत विरासत में ही मिला। आपकी संगीत शिक्षा आपके वालिद उस्ताद मोहम्मद खाँ साहब और उस्ताद नूर खाँ, उस्ताद करीम बक्श से प्रारम्भ हुई। आपका ननिहाल जोधपुर में था। अतः आपने मामा उस्ताद इमामुद्दीन खाँ साहब से भी गायन की बारीकियाँ सीखी। इसे सौभाग्य ही कहेंगे कि जब आप जोधपुर अपने ननिहाल में रहा करते थे तब आपके घर प्रसिद्ध ख़्याल गायक उस्ताद अमीर खाँ साहब का आना-जाना रहता था। अतः भारतीय शास्त्रीय संगीत की शास्त्रोक्त तालीम मोईनुद्दीन खाँ साहब ने उस्ताद अमीर खाँ साहब से ही पाई। अपने उस्ताद के सानिध्य में आप अनेक कार्यक्रमों में जाया करते और आपका अधिकत्तर समय मुंबई व कलकत्ता में बीता।"[3]

"ध्रुवपद, धमार एवं ख़्याल गायन की योग्यता रखते हुये भी उस्ताद मोईनुद्दीन खाँ ने भजन भी बड़ी भावनात्मक शैली में गाया। इसी प्रकार जब आपने ग़ज़ल गाना शुरू किया तो मानिये की खाँ साहब को राजस्थान का ग़ज़ल सम्राट ही कहा जाने लगा। परंतु खान साहब एक भजन गायक के रूप अधिक प्रतिष्ठित हुए हैं। यह सत्य है कि खां साहब अपने फ़न के एक ही कलाकार थे। उनके द्वारा गाई गई ग़ज़लें राजस्थान ही नहीं अपितु भारत में आज तक गूंज रही हैं। "देखते जाइये कैसे हैं

[3] कुमावत, डॉ. गरिमा (2021); पं.चिरंजी लालत तंवर : स्वर रा मोती, लोटस बुक्स, जयपुर, पृ.सं.162

ज़माने वाले, चैन मिल जायेगा ज़माने को" आदि ग़ज़लें आज भी बहुत संगीत प्रेमी व पेशेवर कलाकार बड़े चाव से गाते हैं। खाँ साहब आकाशवाणी केन्द्र से टॉप ग्रेड (उच्चतर श्रेणी) ग़ज़ल गायक थे। आप गायन के जितने सिद्ध कलाकार थे उतने ही निडर व्यक्तित्व के धनी भी थे। जीवन के आखरी दिनों में खाँ साहब सीकर में ही रहने लगे और संगीत कार्यक्रमों में शिरकत करके सीकर ही जाते।"[4]

संवादी भजन शैली के मूर्धन्य और रचनाधर्मी गायक स्वर्गीय मोईनुद्दीन खां ने अपने भजनों से राजस्थान के जन-जन को लाभान्वित किया है। वे भजन के रात्रि जागरण के कार्यक्रमों के बादशाह थे। राजस्थान के प्रत्येक गाँव और शहरों में उनका गायन बहुत ही श्रद्धा से सुना जाता था। उनके बाद अनेक कलाकारों ने उनकी गायकी का अनुसरण करने का प्रयास किया है। उनके गायन में रागदारी के साथ-साथ भावपक्ष की प्रबलता, सूफी, मांड एवं ग़ज़ल गायकी के रंग में रंगे हुए भजन लोगों को बरबस ही आकर्षित करते है। सैंकडों कि संख्या में उनके प्रसिद्ध भजनों में से कुछ अति प्रचलित भजनों को यहाँ उद्धृत करना आवश्यक है क्योंकि हमारा उद्देश्य राजस्थान की विशिष्ट भजन शैली, जो भारत के सभी प्रान्तों के भजनों से निराली और अद्भुत है। इसमें राजस्थान के लोक संगीत की खुशबु के साथ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय रागों का समावेश इसे सभी भजन शैलियों से अलग करते हैं। साहित्यिक दृष्टि से वे कबीर, मीरा, तुलसी, रैदास जैसे भक्त कवियों की रचनाओं का स्वरबद्ध और गायन करते थे। आज भी अनेक भजनों की ऑडियो रिकॉर्डिंग सोशल मीडिया पर प्रचलित है। उनका ओजस्वी स्वर जन-जन को कबीर कि विचारधारा से मिला देती है। भजन कि रचना में छोटी-छोटी तान और खटके और लय का ठहराव शब्दों का भाव पूर्ण उच्चारण श्रोताओं को झुमने पर मजबूर कर देता है अर्थात श्रोता और कलाकार दोनों ही कबीर के दर्शन से संवाद स्थापित करने लगते हैं। अतः यह कहना कोई अतिशयोक्ति पूर्ण नही होगा की मोईनुद्दीन खां संवादी भजन शैली के उत्कृष्ट रचनाकार और गायक रहे हैं।

खाँ साहब की अनेकों भजन रचनाएँ आज भी प्रसिद्ध है, "मन लाग्यो मेरो यार फकीरी में.... मैं अपने राम को रिझाऊँ.... हमको ओढावे चदरिया.... अब मोरी राखो लाज हरी....।" साथ ही राग भीमपलासी, पूरिया धनाश्री, मिश्र भैरव, मिश्र कलावती रागों का भजन शैली में विशिष्ट प्रयोग उनकी विशेषता है।

जयपुर की सभी भजन संध्याओं में आपके द्वारा संगीतबद्ध और गाए हुये भजन प्रायः सुनने को मिल ही जाते हैं। राजस्थान में आयोजित होने वाले सभी बड़े

[4]स्व. मोइनुद्दीन खां साहब के दोहिते इमरान खान से 4.12.2023 सांय 8.30 पर लिये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी।

भक्ति संगीत समारोहों में आपकी प्रस्तुति होती थी। ऐसे महान् कलाकार का देहावसान 1 दिसम्बर 1999 को हो गया।

3. पं. चिरंजीलाल तंवर

चित्र 4.3 पं. चिरंजीलाल तंवर प्रस्तुति देते हुए

"आपका जन्म राजस्थान के नवलगढ़ शहर में 17 मार्च 1947 को हुआ। अपने पिताजी श्री हनुमान सिंह तँवर एवं माता श्रीमती बनारसी देवी से कलाकर्म करने के लिए जन्म से ही प्रोत्साहन मिलता रहा। पिता के बम्बई रहने से ये बम्बई चले गये, जहाँ राजस्थान के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ मदन के प्रकाश के सानिध्य में लगभग 18 वर्ष तक गायन सीखा। बम्बई में अपना गायन कार्यक्रम भी देते रहे। बाद में बम्बई से जयपुर आ गए और जयपुर में संगीताचार्य पं. मोहनलाल जी के शागिर्द हुए और आठ वर्ष तक ख़्याल, ठुमरी, दादरा, बन्दिश आदि का अग्रिम ज्ञान प्राप्त किया। तत्पश्चात् अहमदाबाद में मृणाली साराभाई की कला संस्था 'दर्पण' में सात वर्ष तक कार्य किया और फिर जयपुर आ गए। वर्ष 1978 में जयपुर कत्थक केन्द्र की स्थापना के समय इस केन्द्र में सेवारत हुए और सेवा निवृत्ति तक यहीं कार्यरत रहे। हालांकि आप मुम्बई से जयपुर एवं अपने ननिहाल (खेतड़ी) में अधिकांशतः अपनी नानी के साथ रहते थे। पंडित जी ने शैक्षणिक शिक्षा भी 8वीं तक ही प्राप्त की, परंतु उससे भी कहीं बढ़कर परम्परानुसार "गुरू-शिष्य पद्धति" से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त की।"[5]

आपने देश-प्रदेश के कई नगरों में अपने गायन की प्रस्तुतियों से संगीत श्रोताओं में खास पहचान हासिल की है। आप एक कुशल हारमोनियम वादक रहे हैं। संगीत जगत में एक अच्छे गायक के साथ-साथ 'लय' के भी उत्कृष्ट साधक के रूप

---

[5] चौधरी, प्रतापसिंह (1995), 'राजस्थान का संगीत और संगीतकार', जयपुर प्रिन्टर्स प्राईवेट लिमिटेड, पृ.सं.129,130

में आपकी ख्याती थी। कत्थक नृत्य एवं एकल तबला वादन के साथ "लहरा-वादक" के रूप में विख्यात रहे हैं। ख्याति प्राप्त अनेक शास्त्रीय और उपशास्त्रीय गायकों, संगीतज्ञों के साथ हारमोनियम संगत, नृत्यकारों के साथ नगमा वादन किया है जिनमें उल्लेखनीय नाम निम्नानुसार हैं - पं. भीमसेन जोशी, पं. जसराज, परवीन सुल्ताना, उस्ताद अल्लारखा खाँ, जाकिर हुसैन, किशन महाराज, गुदई महाराज, निर्मला देवी, प्रभा अत्रे, लक्ष्मीशंकर, शराफत हुसैन (आगरा), पं. लक्ष्मण प्रसाद जी जयपुर वाले, पं. मणिराम जी एवं पं. प्रताप नारायण आदि प्रमुख हैं।

राजस्थान की भजन जागरण परम्परा से आपका विशेष संबंध रहा है। सम्पूर्ण राजस्थान के भजन के श्रोता आपकी भजन गायन की अद्भुत शैली के दीवाने रहे हैं। भजन गायन में शास्त्रीय रागों में उपशास्त्रीय शैलियों के भावपूर्ण अंगों के साथ राजस्थान की मांड शैली का सम्मिश्रण आपके भजनों को अन्य सभी गायकों से एक अलग स्थान प्रदान करता है। आपके गायन में ठुमरी और मांड शैली की छोटी-छोटी तानें और मुरकी का अत्यंत सहज एवं चमत्कारिक प्रभाव श्रोताओं को बरबस ही अपनी और आकर्षित करता है।

"पंडित जी ने भी जीवन में इन्हीं बातों को अपने मानस पटल पर इस कदर प्रतिबिम्बित कर लिया कि वर्तमान के अपने सांगीतिक क्षणों को संतो द्वारा रचित पद रूपी मंत्रो को गाकर स्वयं भी आनंदित होते हैं साथ ही सम्पूर्ण जन मानस को भी रसाप्लावित करते हैं। क्योंकि भगवान का प्रत्येक नाम एक मंत्र है। स्वर और लय के आधार पर मंत्र की चेतन-शक्ति जाग्रत रहती है। वल्लभ, चैतन्य, सूर, मीरा, तुलसी, पुरंदरदास, त्यागराज, तुकाराम, नरसी, गौरख, हरिदास, जयदेव, विद्यापति, धर्मदास, नानक, मलूकदास, रैदास, पलटूदास, दादू, सुंदरदास, चरनदास, सहजोबाई, दयाबाई इत्यादि संत-भक्तों ने स्वर और शब्द की चेतन-शक्ति से ही भगवान का अनन्य प्रेम उपलब्ध किया तथा जगत् को सत्य का संदेश दिया। संवादी भजन शैली जिसका प्रमुख मंच रात्री जागरण परम्परा रही है, ऐसे भजनों के सृजेता और प्रस्तोता के रूप में आपकी ख्याति सम्पूर्ण भारतवर्ष में रही है।"[6]

भक्त सन्तों की रचना और उनमें शास्त्रीय रागों का प्रयोग अपनी सुमधुर मांड गायन शैली के भजन जैसे राग शिव रजनी का "प्रभु मोरे अवगुन चित न धरो....", राग मांड में "लगा सको तो हरि सुमिरन में ध्यान....", इसके अलावा ख्याली भजन में ठुमरी शैली का सम्मिश्रण जैसे "वारी जाऊँ जी....", राग खमाज "कान्हा निपट अनाड़ी...." राग काफी जैसी रचनाएँ चिरंजीलाल के पाण्डित्य को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है।

---

[6]कुमावत, डॉ. गरिमा (2021); पं.चिरंजी लालत तंवर : स्वर रा मोती, लोटस बुक्स, जयपुर, पृ.सं.162

4. श्री बनारसी लाल झोरी

चित्र 4.4 बनारसी लाल जी झोरी भजन संध्या में प्रस्तुति देते हुए

आपका जन्म सन् 1951 में अपने ननिहाल राजस्थान में झुंझुनू जिले के चिड़ावा शहर में हुआ व पालन-पोषण नाना श्री दुलजी राणा जो की राजस्थान की ख़्याल शैली के प्रसिद्ध कलाकार थे, उन्हीं के यहाँ हुआ। आपके पिता श्री मदन लाल जी झोरी जो कि सीकर जिले के गुरारा गांव के निवासी हैं एवं प्रसिद्ध नगाड़ा, तबला व ढोलक वादक हैं। वे भी अपने ससुर दुलजी राणा के साथ काम करते थे। श्री बनारसी लाल झोरी 10 वर्ष की आयु से आपने नाना श्री दुलजी राणा के साथ भजन कार्यक्रमों में जाने लगे। आपने 12 वर्ष तक उन्हीं के साथ रहकर संगीत की शिक्षा प्राप्त की तथा 1972 में जोधपुर में राजस्थान संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी की चेयरमेन सुधाराज हंस गीत व नाटक प्रभाग के निर्देशक मि. पिल्लई साहब ने आपकी काबिलियत के आधार पर आपको गीत ब नाटक प्रभाग में गायक के पद पर नियुक्ति दिलवाई। उसके बाद आपने गीत व नाटक प्रभाग के संगीत प्रशिक्षक उस्ताद शकुर खां साहब से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त की तथा उसके बाद गुरु चिरंजीलाल जी तंवर जयपुर वालों से शिक्षा ग्रहण की। 1975 में आपने जयपुर आकाशवाणी से मांड गायन का ऑडिशन दिया, जिसमें आपको 'A' श्रेणी से पास किया गया। आपने भारत के प्रसिद्ध रिकॉर्ड कम्पनी एच.एम.वी., युकी कम्पनी तथा जी.एम.डी. द्वारा अनेकों ऑडियो कैसेट्स निकाले।

"आपने विभिन्न आकाशवाणी केन्द्र- जोधपुर, जयपुर, उदयपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, सूरतगढ़ तथा विविध भारती- मुम्बई, श्रीनगर, भोपाल, पटना आदि केन्द्रों से प्रस्तुति दी। आपने राजस्थान ही नहीं सम्पूर्ण हिन्दुस्तान के बड़े शहरों जैसे- कलकत्ता, मुम्बई, दिल्ली, मद्रास आदि जगहों पर अपनी गायकी का जादू बिखेरा। 11 जुलाई 1992 में भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,

दिल्ली, 23 मार्च 2001 में संस्कार भारती जोधपुर, 25 मई 2002 में मीरा कला मण्डल उदयपुर, 2005 जयपुर समारोह, 2009 में मांड संस्थान जोधपुर तथा 2011 में अल्ला जिलाई बाई मांड गायकी प्रशिक्षण संस्थान बीकानेर द्वारा सम्मानित किया गया। 12 अगस्त 2011 में आपको वीर दुर्गादास राठौड़ सम्मान से नवाजा गया। आपका लक्ष्य मांड शैली को लुप्त होने से बचाने का है इसलिए आप अपने शिष्यों को भी मांड गायन सिखने के लिए प्रेरित करते हैं। मांड गायक श्री बनारसी लाल झोरी जोधपुर (राजस्थान) भारतीय संगीत एवं राजस्थान के मांड गायन का जादू सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में फैलाया है।"[7]

5. (पद्मश्री) अली मोहम्मद और गनी मोहम्मद

चित्र 4.5 अली मोहम्मद जी के साथ शोधार्थी

अली मोहम्मद और गनी मोहम्मद को उनके योगदान के लिए कई सम्मान मिल चुके हैं। उन्हें राजस्थान सरकार द्वारा कलाश्री सम्मान, भारत सरकार द्वारा पद्म श्री सम्मान और राजस्थान संगीत नाटक अकादमी द्वारा लता मंगेशकर सम्मान से सम्मानित किया गया है।

आप का जन्म 15 जुलाई 1960 को तेजरासर, जिला बीकानेर में हुआ। आपके दादा देवकरण जी सारंगी वादक थे और आप के पिता लोक गीत, मांड, गुरु वाणी व मीरा के भजन गाया करते थे। आप के पिता जी अधिकतर गाँवों में रात्रि जागरण में जाया करते थे। आप तीन भाई है - बड़े गनी मोहम्मद और बीच के आप अली मोहम्मद और आपसे छोटे तानसेन है। तानसेन गावों में जागरण करने जाते है, फिर

[7] स्वयं श्री बनारसी लाल झोरी से लिये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

बाद में दोनो भाइयों की जोड़ी बनी, जो अली-गनी के नाम से मशहूर हुई। आप वर्तमान में बम्बई रहते हैं। आपने लता जी और आशा जी को भी एक-एक भजन गवाया था - "दाता सुनले" लेकिन रिलीज नही हुआ। बाद में आशाजी को भी आपने गवाया लेकिन वो भी रिलीज नहीं हुआ। पंकज उदास के लिए आपने हिन्दी भजनों के 10 एलबम किये। आप बम्बई में म्यूजिक कम्पोज और डायरेक्शन करते हैं। आपके खुद के भी भजनों के एल्बम हैं जो बम्बई में रिकॉर्ड हुए थे। जैसे - "मेवाडी राणा भजना से लागे मीरा मीठी"।

आपने 6-7 वर्ष की उम्र से गाना प्रारंभ कर दिया था, लेकिन कार्यक्रम करना 17-18 वर्ष की उम्र में शुरू किया। उस समय आप भजनों के कार्यक्रम करते थे। पहले बीकानेर में ज्यादातर भजनों के ही कार्यक्रम होते थे। 1981 मे आप को रेडिओ से लोक भजनों और लोक गीतो में बी हाई ग्रेड मिली हुई है।

पहले आप गाँव मे भजन गाया करते थे फिर बीकानेर में आकाशवाणी और टेलीविज़न में भजन गाये। आपके प्रथम गुरू आपके पिता थे बाद में आप 23 वर्ष की उम्र में कलकत्ता चले गये, वहां पर बड़े गुलाम अली के बेटे उस्ताद मुनव्वर अली से 10 वर्ष तक संगीत सीखा। वर्तमान में तेजरासर, बीकानेर और बम्बई दोनों जगह मकान है। अधिकतर आप बम्बई रहते हैं। आप वहाँ पर वर्तमान में सीरियल व यू-ट्यूब चैनल के लिए काम करते हैं। आप राजस्थान की भजन शैली से प्रभावित होकर काम करते है, क्योंकि आप की रुचि लोक भजन, लोक गीत, ग़ज़ल आदि सुगम संगीत आप को पसंद है।

राजस्थान की भजन परम्परा के विषय में बताया की "भजनों में मीरा, कबीर आदि जो राजस्थान की मिश्रित शैली है इस भजन शैली को सूफीयाना लोक भजन शैली कहा है।"

आप के द्वारा गाये गये अनेक भजन प्रचलित है। आप भजनों के जागरण कार्यक्रम करने गुवाहाटी, गुजरात और राजस्थान में सभी जगह जाते हैं। आपके भजनों के कई कैसेट भी रिलीज हुए, जिनमें म्हारा सांवरिया व बोल सुवा राम-राम जो उस समय बहुत प्रसिद्ध हुये थे। आप के अनुसार संवादी भजनों का उद्भव - कबीर, तुलसी, मीरा बाई, सहजो बाई आदि के काल से माना जा सकता है। आप का कहना है कि "मीरा के भजन सुबह के समय गाये जाते हैं क्योंकि प्रार्थना सुबह ही होती है।" आप को मांड में अल्लाह जिलाई बाई अवार्ड से नवाजा गया है।

भजनों के विषय में आपने बताया कि पारवा भजन शैली में पूरे भजन में एक कथा होती है। यह शैली चूरू व बीकानेर मे ही प्रचलित है। इसमें एक आदमी के पीछे सहगान (कोरस) में भी गाते है। जैसे– श्रवण की कथा आदि। इस भजन शैली के रचियता पीथा राम जी के शिष्य अणतू राम को माना जाता है। इसके आलावा प्रेम

रस, वीर रस की भजन शैली भी राजस्थान में प्रचलित है। जैसे प्रेम रस में मीरा के भजन -

1. मेरो तो गिरधर गोपाल दूसरो ना कोई (यह भजन बाद मे लता जी ने भी गाया)
2. म्हारा जुना जोशी राम जी मिलन कब होसी
3. पग घुंगरू बांध मीरा नाची रे (इसे बाद में फिल्म में गाया गया यह राजस्थान की लोकधुन है)

वीर रस में वीर तेजाजी की भजन शैली और एक वीर रस मे महाराणा प्रताप का भजन है, "हल्दी घाटी मे समर लड़्यौ" यह वीर रस की शैली है। आप को लोक भजन बहुत प्रिय लगते है। लोक भजनों की भी एक शैली है और उस में आपको सुकून मिलता है। आप का कहना है कि "संगीत में कोई मजहब नहीं होता और कोई धर्म नहीं होता, वह एक है और उसको किसी भी भाषा में पुकारो वह तो आपके मन की भाषा जानता है।"[8]

6. डॉ. हनुमान सहाय

चित्र 4.6 : डॉ. हनुमान सहाय जी का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी

आप का जन्म 25.11.1960 को खाजिलपुरा, त. चाकसू, जि. जयपुर में संगीत परिवार में हुआ। आप भारत के सुप्रसिद्ध ध्रुपद विशेषज्ञ पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग के शिष्य रहे हैं। आप आकाशवाणी द्वारा B+ ग्रेड प्राप्त कलाकार है। चूंकि आप एक गायक के साथ-साथ संगीत के चिंतक भी है। अतः संगीत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके सांगीतिक लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

[8] पद्म श्री अली मोहम्मद से दिनांक 10/3/2022 सांय 4:22 पर लिये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

संगीत की शिक्षा आपने प्रथम गुरु आपके पिता कल्याण सहाय, फिर आप के ताऊ जी राधाशरण जी से ली यह दोनो भजन गाते थे। आप को संगीत का माहौल बचपन से ही अपने परिवार से मिला। आपके पूर्वज भजन गाया करते थे और उन्हीं से आपको भजन गायन की प्रेरणा मिली। आपने ठुमरी, दादरा, मांड जैसी विभिन्न शैलियों की शिक्षा पंडित चिरंजी लाल तंवर, पं.आर.सी.एस. नाडकर्णी (प्रो.वनस्थली विद्या पीठ) से प्राप्त की है।

आप भजन गायन को इसलिए सर्वश्रेठ मानते है, क्योंकि ये मानव को सरल बनाता है। इसलिए आपको भजन गायन अच्छा लगता है। आपकी एक प्रमुख रचना "साधो निंदक मित्र हमारे (चरण दास)" है।

भगवान का गुणगान करने के लिए या भक्ति भजन से भगवान को प्रसन्न करने के लिए रात भर जागने को ही जागरण कहते हैं। जागरण का मतलब ईश्वर का भजन करना होता है पहले कोई मंच नहीं हुआ करते थे। जब से भगवान (ईश्वर) का अस्तित्व है तब से ही जागरण होते आ रहे हैं। जो आज संगीत विद्यमान है वह सब जागरण की देन है।

वर्तमान में जागरण कलाकारों की रोजी-रोटी का महत्वपूर्ण संसाधन है। पहले लोग जागरण में गाना-बजाना करते थे तो समयानुकुल राग-रागिनी गाते थे। पहले राग-रागिनी का प्रचार-प्रसार इन्हीं भजनों के माध्यम से हुआ।

राजस्थान के जितने भी पारम्परिक भजन है, लगभग लोक धुनों में होने के बावजूद भी इन में रागदारी की ज्यादा सम्भावना है। इसलिए लोग इनको ज्यादा ऊँचा मानते हैं। साहित्य और स्वर दोनों मिलकर रागात्मकता और लयात्मकता बढ़ाते हैं और हमारे मन को आनन्दित करते हैं। भजन से श्रेष्ठ कुछ होता ही नही है, क्योंकि भजन हमारे अंदर अनुराग पैदा करता है, जिसकी वजह से आज शास्त्रीय संगीत पला बड़ा है। इन भजन में शास्त्रीय तत्व अधिक है क्योंकि जब से अधिकतर सीखे हुए लोगों ने गाया तो उन्होंने रागबद्ध करके गाया है। पहले लोग जागरण में समयानुकूल राग–रागिनी गाया करते थे। राग–रागिनी का प्रचलन जन-मानस में इन्ही भजनों के माध्यम से हुआ है। धीरे-धीरे लोग अपने आपको प्रतिष्ठित करने के लिए साधना करके घराना बनाने लगे। आज से लगभग 50-60 वर्ष पूर्व किसी प्रकार के रंगमंच नहीं हुआ करते थे। केवल जागरण के माध्यम से ही लोग गायन-वादन करते थे। पहले कव्वाली, ग़ज़ल, ठुमरी आदि का प्रचलन नहीं था, केवल सनातनी जागरण (भजन) का ही प्रचलन था। भजन में अनुराग, प्रेम, सरलता तथा सात्विकता होती है और भजन से अहम् अर्थात अभिमान नष्ट होता है

संवादी भजनों के विषय में आपने बताया कि प्रत्येक संप्रदाय जैसे- राधा-कृष्ण संप्रदाय, निम्बार्क संप्रदाय, रामानंद संप्रदाय ये जितने संप्रदाय है, ये केवल हमें ईश्वर

की ओर ले जाते हैं। इनके जो अनुयायी थे सब मिलकर गाया करते थे। उसी को समाजी या समाज गायन तथा अपभ्रंश होते-होते गाँव के लोग संवादी कहने लगे। इनका शुद्ध नाम तो "समाज गायन" ही है। ईश्वर और भक्त जब सम हो जाते हैं अर्थात् बराबर हो जाते है तब दोनों की मुख्यता बढ़ जाती है, तब इसे संवादी कहा जा सकता है। इस भजन शैली को सनातन भजन शैली भी कहा जा सकता है, क्योंकि जब से ईश्वर है तब से भजनों का उद्भव है। चिरंजी लाल जी, मुंशी खां साहब, बिहारी लाल जी कत्थक यह सब संतों के पद गाया करते थे और रागों पर आधारित गाया करते थे। इन भजनों को संतों से उद्घोषित कहा जा सकता है।[9]

7. जयराज गंधर्व

चित्र 4.7 जयराज गंधर्व

जयराज गंधर्व का जन्म 01.07.1958 को सुल्तानपुर, तहसील दीगोद, जिला कोटा में हुआ। इन्होने संगीत की शिक्षा अपने पिता मास्टर केसरी लाल गंधर्व से प्राप्त की। आप की माता रामकन्या बाई व आप के दादा जी श्री किशन जी जोगिया सारंगी वादक थे। यह कोटा न्यायालय में बाबू के पद पर कार्यरत थे। यह हाड़ौती क्षेत्र के प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक हैं, परन्तु यह रात्रि जागरण में भजन भी गाते हैं। हाड़ौती के संवादी भजन शैली के यह प्रमुख गायक हैं। इनके घर कई वर्षो से शिवरात्रि को रात्रि जागरण का आयोजन होता रहा है।

---

[9] डॉ. हनुमान सहाय से दिनांक 14/3/2022 सांय 6:23 पर लिये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

भजन गायन शैली के विषय मे आपने बताया कि "मीरा, सूरदास, कबीरदास, कुम्भनदास, रेदास आदि अष्ठछाप कवियों के समय से चली आ रही परम्परा है। आज भी इन्हीं के पदों को गाया जाता है तथा आगे भी जब तक पृथ्वी रहेगी इन्ही के पदों को गाया जायगा"।

आपने बताया कि "राजस्थान की इस भजन परम्परा में समय का बहुत ज्यादा ध्यान रखा जाता था, जैसे- प्रातःकाल के समय प्रभाती और रात्रि के समय खमाज देश आदि रागों पर आधारित भजन गाए जाते थे। जब सोने का समय हो जाता है तब 'सोरठ' राग पर आधारित भजन गाये जाते हैं। सोरठ को ही देश कहते है। प्रभाती के समय जो भजन परम्परा से चले आ रहे है, उनके पद तो वही होते है, लेकिन हर कलाकार अपने तरीके से गाते हैं और कुछ भजन ऐसे हैं जिनकी राग भी पुराने समय से चली आ रही है, उसी राग में सब लोग अपने-अपने तरीके से गाते हैं।"[10]

आपने हाड़ौती क्षेत्र में प्रचलित भजन शैली के विषय मे विस्तार से बताया है, क्योंकि आप एक सांगीतिक परिवार मे पैदा हुये हैं, अतः बचपन से ही आप भजन के श्रोता और गायक रहे हैं। उन्होंने बताया कि "राजस्थान में भजनों का सर्वाधिक लोकप्रिय मंच रात्रि जागरण ही है। ग्रामीण अंचल में राग एवं लोकधुनों पर आधारित भजन अधिक प्रचलित है। इधर अगर ब्रज क्षेत्र कि बात करे तो वहाँ के भजनों मे राधा-कृष्ण भक्त और भगवान के संवाद जिनमे महाभारत, रामायण के पात्रों का आपसी संवाद, उनकी विषय वस्तु होता है। जिनमें गायकी पक्ष के स्थान पर भाव पक्ष पर अधिक बल दिया गया है। एक ही धुन मे अनेकों लीलाओं के भजन गाए जाते हैं। इधर के भजनों पर ब्रज के लोक संगीत कि छाप स्पष्ट दिखाई देती है। किन्तु हाड़ौती क्षेत्र में पुनः भजन का आधार विभिन्न शास्त्रीय राग और उस क्षेत्र कि लोक धुन हो जाता है। साहित्य मे भगवद लीलाओं के साथ-साथ भक्त कवियों कि रचनाओं का प्रभाव बढ़ने लगता है। गायन कि दृष्टि से भी भजन में मांड शैली का प्रयोग होने लगता है। जब हम जयपुर की भजन गायन परम्परा की बात करते हैं तो यहाँ भजन मे अन्य विविध रूप में सुनने को मिलते हैं। यहाँ भी रजवाड़ी के साथ-साथ ब्रज, ढूँढाड़ के पारंपरिक संगीत के साथ उप शास्त्रीय शैली ठुमरी का भी प्रयोग होने लगता है। अर्थात जयपुर सभाग में मांड, ठुमरी पर आधारित शैलियों के भजन गाए जाते हैं। चूंकि जयपुर राजस्थान की राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक राजधानी रही है, यहाँ का जयपुर घराना शास्त्रीय ख्याल शैली के लिए विख्यात है। अतः यहाँ के भजन गायन में इन सभी तत्वों का समावेश सुनने को

---

[10] स्वयं जयराज गंधर्व से दिनांक 23/01/2022 सायः 4:55 पर लिये गये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

मिलता है। यह भजन शैली देश की सभी भजन शैलियों से अलग स्थान रखती है। ऐसे गायक कलाकारों मे स्व. चिरंजी लाला तंवर, बिहारी 'कत्थक' जैसे कलाकारों का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

प्रत्येक क्षेत्र की अपनी गायन शैली होती है, जैसे कोटा क्षेत्र की शैली में हाड़ौती भाषा और गायन शैली का प्रभाव होता है। उसी प्रकार जयपुर क्षेत्र में भी अपनी भाषा और गायन का अलग ही प्रभाव नजर आता है। इस भजन शैली को जयराज गन्धर्व ने 'मांड शैली' कहा है।

8. बाबूलाल भाट

चित्र 4.8 बाबूलाल भाट जी का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी

आप का जन्म 1 जनवरी 1948 को पालडी, तहसील सांगानेर, जयपुर में पिता मांगी लाल (प्राचीन भजन गायक) और माता धन्नी सबलावत (मांड गायिका) के घर हुआ और वर्तमान में आप रेनवाल मांजी, तहसील फागी, जिला जयपुर में रहते है। आप ने शिक्षा 5वीं कक्षा तक प्राप्त की है। संगीत माहौल आपको परिवार से मिला। गाना-बजाना आपका खानदानी काम है। आपके नाना जी गंगा राम जी किशनगढ़ दरबार में सारंगी वादक थे। आप एक ही भजन को किसी भी राग में गा सकते है और किसी भी ताल में गा सकते है। राग समय का पालन करते हुए एक पद को किसी भी राग व किसी भी ताल में गा लेते हैं और जहाँ संगीत के समझने वाले लोग नहीं होते वहाँ लोक भजन गाते हैं। आप ने चंडी दान जी झारना वालों से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली। बाद में 25 वर्ष तक पं. चिरंजी लाल तंवर जिनका जीवन परिचय और संवादी भजन के प्रसिद्ध गायक के रूप में योगदान को इसी अध्याय में

वर्णित किया गया है, के सानिध्य में रहे और उन्हीं से संगीत का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करते रहे। आप दादू पंथी है और इस परम्परा के प्रसिद्ध गायक के रूप में जाने जाते हैं। आपका मुख्य व्यवसाय भजन कार्यक्रम करना है। आप भजन, मांड, शास्त्रीय संगीत, सुगम और मारवाड़ी शैलियों के प्रमुख गायक हैं। आपको सुगम संगीत में आकाशवाणी से "बी" हाई ग्रेड मान्यता प्राप्त कलाकार हैं। राजस्थान के अतिरिक्त आप उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश राज्यों के अनेक शहरों में अपनी प्रस्तुति देने के लिए बुलाये जाते हैं। आप बचपन से ही भजन और जागरण करते हुए आये है। आपको 'अल्लाह जिला बाई सम्मान' से सम्मानित किया गया है। संवादी भजनों अथवा जागरण परम्परा के विषय में आपका कहना है "जो भजन मीरा, सूरदास, कबीरदास आदि की जो शैली चल रही है, ये कभी मिटने वाली नहीं है।"[11]

9. सांवरमल 'कथक'

चित्र 4.9 सांवरमल कथक प्रस्तुति देते हुए एवं साथ में शोधार्थी

आप के पूर्वज भैरव प्रसाद जी उस समय रात्रि जागरण में पारम्परिक संवादी भजन गाया करते थे। जैसे– "भजना सु लागे मीरा मीठी मेवाड़ी राणा....।" इन भजनो को आप **ढिंधाबाटी शैली** बोलते है। भैरव प्रसाद जी के पुत्र सेवो जी और सेवो जी के पुत्र चेन जी और चेन जी के पुत्र पूर्णमल जी भी भजन गाते थे। आप पूर्णमल

[11] स्वयं बाबूलाल भाट के साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी 25/5/2022, समय 3:24

जी के पुत्र शिव लाल जी के पुत्र है। आप का जन्म 25.05.1986 को डुंगरगढ़, जिला बीकानेर में हुआ। आपने शिक्षा में 10वीं पास किया है। संगीत में विशारद है। जिस को आप 'विधावाटी शैली' नाम देते है, उस शैली के प्रमुख कलाकार बिहारी लाल 'कथक' हुए और यह विधासर (बिदासर) के थे, इसलिए इस शैली को विधावाटी शैली कहा। शिब लाल जी के आप चार पुत्र है- 1. प्रमेश्वर लाल कथक, 2. जगदिश प्रशाद कथक, 3. सांवरमल कथक, 4. किशन कथक। आप चारों भाई अब इस भजन परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं। आपने संगीत की शिक्षा अपने पिता शिवलाल जी से और आपके बड़े भाई जगदीश प्रसाद से प्राप्त की है। इसके अलावा आपने चिरंजी लाल जी, अली मोहम्मद, बिहारीलाल कत्थक आदि को सुन-सुन कर सीखा है। आपके अनेक भजन प्रसिद्ध है, जिनमे "सुन सखी बाजत बासुरिया" लोक प्रचलित है।

संवादी भजन शैली के विषय में आपका कहना है कि "बीकानेर से चुरू तक के क्षेत्र को विधावाटी कहा जाता है, यहां के कलाकार शास्त्रीय, मांड, सुगम संगीत भी गाते थे। यहाँ के भजनों में शास्त्रीय, सुगम, लोक व सूफी संगीत के मिश्रण से इस शैली की अलग पहचान है। यह शैली लोक संगीत से ही निकली है। इस भजन शैली के प्रमुख कलाकार बिहारी जी कत्थक थे। उनकी भजन शैली में मांड, ख़्याल, सूफ़ी एवं लोक संगीत के सभी रंग मौजूद थे।"[12]

भजन की जागरण परम्परा का संगीत के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जागरण से संगीत जन साधारण तक सहजता से पहुंचता है।

10. बुन्दू ख़ान

चित्र 4.10 : बुन्दू खान जी कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हुए

[12]स्वयं सांवरमल कथक जी से दिनांक 14/3/2022 दोपहर 3:11 बजे लिये गये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

"आप का जन्म 10.10.1965 को खण्डेला, जिला सीकर में हुआ है। आपको जन्म से ही परिवार में लोक संगीत का वातावरण मिला है। आपके दादा जी दूलजी राणा खिलाड़ी, हाथरस खेल, माण्ड, लोक गीत, भजन जागरण किया करते थे और आपकी दादी जुम्मा भी मांड भजन आदि लोक शैलियों की कलाकार थी। आपके प्रथम संगीत गुरु आपके पिता मुनीर खां साहब थे। आपके पिता जागरणों में कार्यक्रम किया करते थे। आप जब 10 वर्ष के तब से आप के पिता के साथ जागरणों में भजन गाना प्रारंभ किया। आप 15 वर्ष के थे तब आपने उस्ताद मोइनुद्दीन खां साहब सीकर वालों से 5 वर्ष तक भजन, गज़ल की तालीम ली। आप उनके गण्डाबंध शागिर्द है, फिर बाद में पं चिरंजीलाल तंवर से भी आपने तालीम ली। आप संगीत में विशारद है। आपने अनेक देशों की यात्रा की है, जिनमें स्विट्ज़रलैंड, आयरलैण्ड, ऑस्ट्रेलिया, फ़िनलैंड, अमेरिका, कनाडा, नॉर्वे, ग्रीस, पेरिस, इटली इत्यादी प्रमुख है। आप राजस्थान के लोक संगीत और भजन गायन की पारंपरिक रचनाओं के लिए प्रसिद्ध है। वर्तमान में राणा शास्त्री नगर, जयपुर में आपका निवास है।"[13]

11. मास्टर केसरी लाल गंधर्व

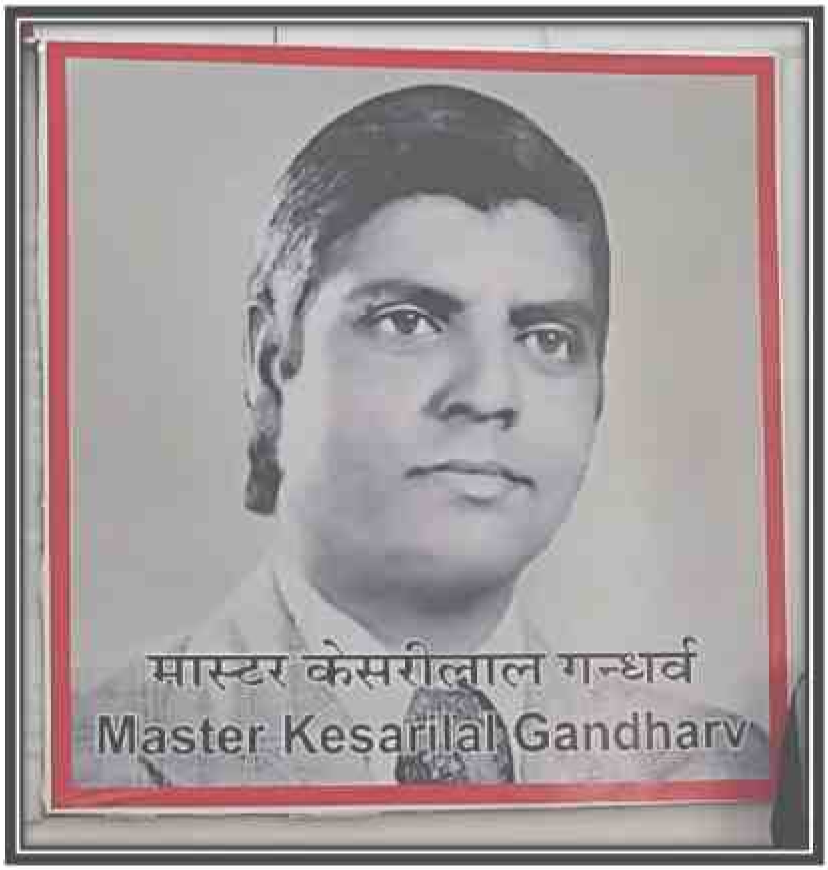

चित्र 4.11 मास्टर केसरीलाल गन्धर्व

[13] शोधार्थी द्वारा स्वयं बुन्दू खान से दिनांक 17/3/2022 दोपहर 1:24 बजे लिये गये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

मास्टर केसरीलाल गंधर्व का जन्म सुल्तानपुर, त. दीगोद, जि. कोटा में सन् 12/12/1935 को हुआ। संगीत की शिक्षा इनको अपने परिवार से मिली। इनके पिता श्री किशन जी 'जोगीया" सारंगी के वादक थे। इसके अलावा नगाड़ा, शहनाई और गायन भी करते थे। केसरी लाल जी ने बाद में मेवाती घराने के उस्ताद पूर्णचन्द्र गवैय्या से तालीम ली। इन्होंने माध्यमिक प्रभाकर संगीत विद्यालय, रामपुरा, कोटा में संगीत शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दी है। आप हाड़ौती क्षेत्र के प्रसिद्ध गायक कलाकार रहे हैं।

"मास्टर केसरी लाल गंधर्व कोटा दरबार में मांड गाया करते थे और लोक भजनों के अतिरिक्त रात्री जागरण में भजन गायक के रूप में प्रसिद्ध रहे है। रात्रि जागरण में पारम्परिक भजन गाते थे। यह 77 वर्ष जिये और 24-12-2012 को इनका स्वर्गवास हो गया। आपके तीन पुत्र हैं - जयराज गंधर्व, मास्टर पुरुषोत्तम और हरीश गंधर्व। मास्टर केसरी लाल के सारे संगीत गुण स्वर्गीय पुरुषोत्तम गंधर्व में थे। आप खेल (नाटक) भी किया करते थे, जैसे- राजा भृर्तहरी, भक्त प्रहलाद, और रामलीला आदि किया करते थे।"[14]

राजस्थान में भजन की जागरण परम्परा ही अनेक कलाकारों का जीवनयापन का साधन रही है और आज भी है। यह परम्परा समान्यतया शहरों के बजाय ग्रामीण क्षेत्र में अत्यंत प्रचलित रही और यह भी एक सुखद अनुभव रहा की राजस्थान के ग्रामीण श्रोता भजन गायन में संत-कवियों की आध्यात्मिक रचनाओं और शास्त्रीय रागों और तालों में निबद्ध रचनाओं को बड़े चाव से सुनते हैं। इन सभी के भजन गायन में शास्त्रीय संगीत की सभी क्रियाओं जैसे- राग, आलाप, तान का प्रयोग और राजस्थान की रजवाड़ी मांड का प्रभाव इन्हें अन्य प्रदेशों की भजन शैलियों से भिन्न करता है। इसी को आधार मान कर हमने इस शोध ग्रंथ में उन्हीं भजन गायकों को स्थान दिया है, जो संतों की वाणियों को शास्त्रीय रागों और तालों मे गायन करते हैं और इन भजनों को संवादी भजन की श्रेणी में निर्धारित किया है। "आपके प्रचलित भजन निम्न है -

1. थाने म्हारो चीर हरयो गिरधारी (राग भैरवी /कृष्ण भजन)
2. आसरो लियो छे म्हाने थारो (राग खमाज /माता जी भजन)
3. हम रघुनाथ के गुण न गव्वैया (रशिक बिहारी जी द्वारा रचित)
4. म्हाने ये वर प्यारा लागे, हँसकर बोल्याछ न पार्वती (गंगा दास जी)

---

[14] चौधरी, प्रतापसिंह (1995); राजस्थान : संगीत और संगीतकार, जयपुर प्रिन्टर्स प्राइवेट लिमिटेड, मिर्जा इस्माइल रोड , जयपुर 302001 पृ.सं.

रिकॉर्डिंग बनाने वाली एचएमवी कम्पनी जब फोक संगीत के लिए राजस्थान आई तो उसमें कोटा का भी नाम था। उस रिकॉर्डिंग में तेजकरण जी और केसरी लाल जी की भी रिकॉर्डिंग बनवाई।"[15]

12. तेजकरण राव

चित्र 4.12 तेजकरण राव जी

मास्टर नवलजी के पुत्र तेजकरण का जन्म वर्ष 1946 में हुआ था। गायन की शिक्षा पिता से मिली। अपने पिता की गायकी का अनुसरण करते हुए अपनी प्रतिभा से गायन में दक्ष हुए। 1982 में गांधर्व महाविद्यालय से संगीत अलंकार की परीक्षा उत्तीर्ण की। वर्ष 1978 से आकाशवाणी केन्द्र से मान्य कलाकार हैं। आप सुगम संगीत, भजन, गज़ल तथा राजस्थानी लोकगीतों के गायन में कुशल हैं। वर्ष 1982 से दूरदर्शन केन्द्र बम्बई, दिल्ली, जयपुर से आपके गायन के कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं। युवावस्था से ही देश के कई प्रमुख नगरों में अपने कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण से अपनी प्रतिभा को ऊजागर किया। वर्ष 1979-80 में संगीतायन संस्था द्वारा आयोजित अखिल भारतीय गायन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार, 1983 में कटनी में आयोजित समारोह में 1500/- रु. का नकद पुरस्कार तथा 1983 में ही बम्बई से 'सुरमणि' की

[15] मास्टर केसरलाल गन्धर्व के पुत्र जयराज गंधर्व से दिनांक 23.01.2022 को सांय 4:55 पर लिये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

उपाधि अर्जित की। वर्ष 1976 में आपके गाये राजस्थानी लोकगीतों की एक कैसेट बनी। 1987 में वीनस कैसेट कं. ने आपके गाये 8 लोकगीतों की कैसेट तैयार की, जिसमें संगीत निर्देशन भी स्वयं का ही था। 1988 में गज़लों की एक कैसेट 'आहट' बनी। कतिपय फिल्मों में भी आपने गाया जिनमें जंगबाज, रिश्ता, भोजपुरी फिल्म गंगा की लहरें आदि हैं। आपने अपनी पुत्री रेखा राव को ग़ज़ल, भजन, लोकगीत गायन में तैयार किया है। राजकीय संगीत विद्यालय, कोटा में संगीत शिक्षक के रूप में कार्यरत रहे हैं। आपके परिवार से भी आपके भाई और उनकी संताने भी संगीत के क्षेत्र मे अच्छा काम कर रहे हैं।[16]

भजन गायन के क्षेत्र मे भी आप सुप्रसिद्ध रहे हैं। जागरण परम्परा में ग्रामीण श्रोताओं में आप प्रचलित रहें है। आप संतों के पदों का सुमधुर और कलात्मक गायन करते थे। आपकी रचनाओं पर लोक धुनों और मांड शैली के प्रभाव से श्रोताओं को बांधे रखने मे सक्षम थे।

13. स्वर्गीय मुंशी खां (बावरा)

चित्र 4.13 स्वर्गीय मुंशी खां के भाई गफ्फार खान का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी

[16] चौधरी, प्रतापसिंह (1995); राजस्थान : संगीत और संगीतकार, जयपुर प्रिन्टर्स प्राइवेट लिमिटेड, मिर्जा इस्माइल रोड , जयपुर 302001 पृ.सं. 96.

आप का जन्म कमेडीया, त. जायल, जि. नागौर में मिरासी समाज में हुआ। आपका जन्म सांगीतिक वातावरण में हुआ है। आप के दादा जी नबी खां मांड, मारवाडी भजन, गीत आदि के गायक थे। आपके दादा जी रात्रि जागरण में भजन गायन किया करते थे। वह जागरण में अचलराम जी की वाणीयाँ गाते थे। इन्होंने चार प्रकार की वाणी बताई है- 1. परा 2. पछन्ति 3. मदा, 4. वेगनी (अध्यात्म में चार प्रकार की वाणी- परा, पश्यंती, मंद्र और वेखरी का वर्णन प्राप्त होता है)। आपका कहना है कि "संवादी भजन में इनका अर्थ समझाना पड़ता है। इन वाणियों में आध्यात्मिक शिक्षा और प्रश्न-उत्तर भी इन वाणीयों में होते हैं।"

"आप के दादा जी गांवों मे रात्रि जागरण कार्यक्रमों में भजन गायन किया करते थे। आप के दादा जी के भाई नानू खां सारंगी बजाते थे। प्रारम्भ में श्री सतीश देहरा प्रसिद्ध गायक को अपना गुरू बनाया और बाद में बनारसी दास, सक्कूर खां (तबला), पुसा राम जी आदि गुरूओं से संगीत शिक्षा प्राप्त की। आपने 5 वर्ष की उम्र से गाना प्रारंभ कर दिया था। आपने विदेशों में भी जैसे- इजराईल, पैरिस आदि देशों में कार्यक्रम किए है। आप लखोटिया महादेव के हर वर्ष भजनों मे प्रतियोगिता जीतते थे। आप के पिता पुसे खां उस समय के भजन सम्राट थे। आपने कोक स्टूडियो में भी भजन, मांड एवं लोक गीत आदि गाये हैं। एक सड़क दुर्घटना में आपका स्वर्गवास हो गया।"[17]

14. श्याम लाल सर्राफ

चित्र 4.14 श्यामलाल सर्राफ का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी

[17] मुंशी खां के भाई गफार खां से दिनांक 9/5/2022 दोपहर 12:38 पर लिये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

"आप का जन्म 01.01.1950 को सरदार शहर, जिला चूरु संभाग, बीकानेर में पिता मालीराम सराफ के घर हुआ। आपकी माता का नाम गोदावरी देवी है। आप ख़्याल, ग़ज़ल, भजन, और मांड आदि शैलियाँ गाते हैं। आप प्रमुख रूप से ख़्याल गायक हैं। आपको 1917 में 'भरत व्यास अवार्ड' मिला। भजनों में आप बीकानेर आकाशवाणी और दूरदर्शन से बी हाई ग्रेड हैं। आप मुख्य रूप से संत-कवियों की रचनाओं का गायन करते हैं। जैसे- नानक, कबीर, मीरा, तुलसी, ब्रम्हानन्द आदि। आप भजन गायन में मोईनुद्दीन खां साहब सीकर वाले को अपना आदर्श मानते हैं तथा विभिन्न पारंपरिक रचनाओं को राग संगीत में प्रस्तुत करते हैं। आपके भजनों में शास्त्रीय शैली ख़्याल का प्रभाव दिखाई देता है। आपने भजनों का भविष्य बहुत अच्छा बताया। राजस्थान के भजनों को बंगाल, आसाम, गुजरात, हरियाणा आदि जगह भी बहुत पसंद किया जाता हैं।"[18]

15. पंडित लखन लाल शर्मा (संगीत शिक्षक सेवानिवृत)

चित्र 4.15 पंडित लखन लाल शर्मा कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुति देते हुए

"पंडित लखन लाल शर्मा का जन्म 3 दिसंबर 1949 में हुआ था। आप भारतीय शास्त्रीय संगीत की सभी विधियों में निपुण हैं। पंडित जी ने संगीत शिक्षा वल्लभ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध गायक पंडित ब्रजमोहन शर्मा के सानिध्य में प्राप्त की है। पंडित जी ने लगभग 45 वर्षों तक राजकीय माध्यमिक प्रभाकर संगीत विद्यालय, रामपुरा में संगीत शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। पंडित जी द्वारा कई

[18] स्वयं श्याम लाल सर्राफ से दिनांक 11/3/2022 दोपहर 2:28 पर लिये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

लेख संगीत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। आप राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर एवं पंजीयक शिक्षा संभागीय परीक्षाएँ राजस्थान बीकानेर एवं अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल के परीक्षक भी रहे हैं। आप आकाशवाणी व दूरदर्शन के कलाकार रहे हैं। पंडित जी ने एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली द्वारा महिला बाल शिक्षा पर आधारित लघु फिल्म में संगीत निर्देशक के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपने संगीत सेमीनार कोटा में संगीत की दशा और दिशा विषय पर राजकीय जानकी देवी बजाज महाविद्यालय में व्याख्यान दिया है। अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनों में भाग लेकर राजस्थानी माँड़ गायन और शास्त्रीय गायन में सर्वोत्तम स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया है एवं संगीत विद्यार्थियों को प्रशिक्षण भी दिया है।"[19]

16. श्री बनवारी लाल सैन

चित्र 4.16 बनवारी लाल जी सैन रियाज़ करते हुए

आप आकाशवाणी, दूरदर्शन के "बी उच्च" श्रेणी के ग़ज़ल गायक हैं, परन्तु भजन गायन में भी आपको महारथ हासिल है। आपका जन्म 01-01-1961 को राजस्थान राज्य के अलवर जिले की तहसील तिजारा के एक छोटे से गाँव "थौंस" में एक गरीब किसान परिवार में हुआ। श्री सैन के पिता भी संगीत के शौकीन और रसिक थे, फलस्वरूप इन्हे संगीत के प्रति लगाव विरासत में मिला। इनका परिवार रोजी-रोटी के लिए गाँव के समीपस्थ कस्बा- किशनगढ़ बास और तिजारा में रहा। इनकी प्रारंभिक स्कूल शिक्षा किशनगढ़ बास में हुई और इन्होंने संगीत की प्रारंभिक

[19] पंडित लखन लाल शर्मा पुत्री डॉ. तरुणा शर्मा.से 24/01/2022 प्रातः 9.45 को लिये गये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

शिक्षा किशनगढ़ बास में गुरु श्री किशन लाल जी भारद्वाज के सानिध्य में प्राप्त की एवं इसके बाद तिजारा में भी संगीत शिक्षा श्री मंगलराम सैन जी से भी प्राप्त की।

"राजस्थान के अलवर क्षेत्र में नौटंकी हुआ करती थी, जिनके पात्रों में गायन के साथ संवाद होता था। नौटंकी एक प्रकार के संगीतमय नाटक होते थे, जैसे – अमरसिंग राठौर, पाक मोहब्बत, इंदल हरणा आदि। इनमें उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश की लोकधुनों पर संवाद गायन किया जाता था। इन नाटकों को देखने-सुनने से आपकी रुचि संगीत की ओर हो गयी और धीरे-धीरे 6-7 वर्ष की आयु से ही जागरण में भजन गाना प्रारंभ किया। उस समय रात्रि जागरण ही (भजन गायन के छोटे-छोटे कार्यक्रम गाँव के मंदिरों अथवा घरों मे आयोजित होते थे) मंच प्रदान करने का एक माध्यम हुआ करता था। इसमें राधा-कृष्ण के पद गाये जाते थे। बम रसिया जिसमें नगाड़े से बड़ा वाद्य होता है और उसको लक्ड़ी के डाँडो से मार के बजाते है। इसको ब्रज, दौसा के आसपास गाया जाता है। अलवर में लोक संगीत में अली बख्शिय ख़्याल (खेल) इसको नौटंकी भी बोलते थे। अलवर के आसपास हरियाणा और उत्तरप्रदेश के लोक संगीत व भाषा का प्रभाव है। उन्होने बताया कि "मध्य काल में राग-रागनियाँ संवादी भजनों के माध्यम से जनसामान्य तक पचलित रही है।" वर्तमान में जागरण में "श्याम संध्या" का ज्यादा प्रचलन है, जिसमें अधिकतर फ़िल्मी धुनों का प्रयोग किया जाता है और संवादी भजन कम होते जा रहे है। आप के अनुसार संवादी भजनों का मतलब सवाल जवाब से हैं और यह निर्गुण वाणी से सम्बन्ध रखता है।"[20]

17. मम्मल खां

चित्र 4.17 मम्मल खां साहब हारमोनियम पर रियाज़ करते हुए

[20]श्री बनवारी लाल सैन से दिनांक 26/5/2022 दोपहर 3:58 पर लिये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

"आप का जन्म 01.01.1962 को ग्राम सालपुर, जिला अलवर में हुआ। वर्तमान में 50 वर्ष से अलवर शहर में रह रहे है। आप स्वयं एक प्रसिद्ध भजन गायक रहे है। आपकी भजन गायकी में यहाँ कि लोकधुनों में रागों का प्रयोग आपकी शैली को एक अलग ही रंग प्रदान करता है। इन सबके अतिरिक्त आप हारमोनियम के सिद्धहस्त कलाकार के रूप मे ख्याति प्राप्त है। आप नटनी और भजन के कार्यक्रमों मे हारमोनियम संगत के लिए प्रसिद्ध है। आप के ताऊ जी मनव्वर खां सारंगी बजाते थे और आप के पिता सुमेर खां जो लोक कलाकार थे और किस्से-कहानियाँ, दोहा-दानी और क्षेत्रिय गायक थे। अलवर में अलीबख्श गायिकी होती थी, जिसका आविष्कार अलीबख्श को मानते हैं, इसको अलीबख्श ख्याल बोलते हैं। इसमें राधा कृष्ण के भजन होते थे, जो सोरठ और देश राग में गाते थे।

अलवर में मेवाती गायन शैली भी है। वर्तमान में शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत मेवाती घराने के प्रवर्तक के रूप में पंडित मनीराम, पं जसराज ने इस घराने को सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्धि दिलाई है। मेवाती भाषा में अरे, आरा, उरी, तोरे, तोलू-मोलू (तुझे-मुझे), झकर (गर्मी) आदि क्षेत्रीय भाषा के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यहाँ की भजन गायन शैली मेवाती भाषा के ऊपर आधारित है जिसमें तुक मिजाजी के आधार पर गीतों भजनों की रचना की जाती है।

एक मीणावाटी भजन शैली भी है, जो दौसा से अलवर तक के क्षेत्र में मीणा समाज में प्रचलित है। सोलह संस्कारों के गीत एवं भजन इस शैली में गाये जाते हैं। इधर जागरण में अधिकतर लोक देवता भृर्तहरि और रामदेवजी, मोहन बाबा के भजन गाये जाते हैं। यहाँ पर लांगुरिया भी गाया जाता है और इन भजनों में यहाँ की भाषा शैली 'ब्रज' का प्रभाव है। भरतपुर, उत्तरप्रदेश सीमा के पास होने के कारण मथुरा के लोक संगीत का प्रभाव है। जैसे- रसिया, लांगुरिया आदि गाये जाते हैं।

आखिरकार सन् 1980 के लगभग इनके अच्छे गुरू की खोज समाप्त हुई जो की इन्हे स्व. श्री के.सी. नागपाल जी के रूप में अलवर कला भारती में मिले। उस समय गुरूजी नागपाल जी की नौकरी कला भारती अलवर में संगीत शिक्षक की थी। अतः अपने संगीत को गुरूजी की ज्ञान दिशा में आगे बढ़ाया और 9 साल तक लगातार उनसे शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ग्रहण की। जयपुर दूरदर्शन व आकाशवाणी केन्द्र से ग़ज़ल गायक के रूप में बी ग्रेड के आर्टिस्ट के रूप में प्रस्तुतियाँ देते रहे।"[21]

[21] स्वयं मम्मल खां से दिनांक 26/5/2022 प्रातः 9:58 पर लिये गये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

18. लालू राम (लाल जी मकराना)

चित्र 4.18 लालू राम जी मकराना वाले कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हुए

आप का जन्म 01.01.1977 को ईदगाह मार्ग, मकराना, त. मकराना, जिला नागौर में हुआ। आप का पूरा नाम लालू राम, जाति क्षत्रिय दमामी है। लोग आपको लाल जी मकराना के नाम से जानते हैं। आप की माता का नाम पताशी देवी है। संगीत आपने अपने पिता मांगी लाल से सीखा और आपके पिता ने दादा जी से सीखा। संगीत आपकी परम्परा से चला आ रहा है। आपके पिताजी व दादा जी मांड गायक थे और आप भजन, ग़ज़ल, मांड व ठुमरी आदि का गायन करते है और जागरण करना आप का व्यवसाय है।

संवादी भजनों के विषय में आपने बताया कि "एक राग कि धुन जैसे सोरठ को गाया जाता था तो फिर पाँच भजन उसी धुन में गाये जाते थे। इसी प्रकार प्रभाती, बिहाग, कलिंगड़ा और केदार रागों में भजन गाये जाते थे, इन्हीं को संवादी भजन कहा गया है।" आपके अनुसार भजन शैली के पनपने में जागरण परम्परा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।[22]

[22] शोधार्थी द्वारा लालू राम जी से दिनांक 7/3/2022 सांय 5:41 बजे लिये गये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

19. राम देवी (रमा कुमारी)

चित्र 4.19 राम देवी का घर पर साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी

राम देवी का जन्म ननिहाल के ग्राम कसुम्बी, तहसील लाडनू, जिला नागौर में 15.09.1986 को हुआ। लोग आपको संगीत जगत में रमाकुमारी के नाम से जानते हैं। आप के पिता हनुमान राम, माता बाजू देवी जो की एक किसान परिवार से है। आप बचपन से ही रेडियो सुनना पसन्द करती थी। आपके जन्म से ही नैत्रहीन होने के कारण नाना जी ने मनोरंजन के लिए आपको रेडियो लाकर दिया और उसी को सुन-सुन के आपने गाना प्रारंभ किया।

इन्हें लता जी को सुनना बहुत पसन्द है। शास्त्रीय संगीत में पं. जसराज, परवीन सुल्तान, राशिद खां और गज़ल में बडे गुलाम अली पसंद है। आप बचपन से 20 वर्ष तक अपने ननिहाल में रही। आप नाना तेजाराम बोहरा के साथ जागरण में भजन सुनने जाया करती थी। गांव में ही बजरंग लाल देहरा से संगीत सिखाने के लिए आपके पापा गए और कहा की "मेरी बेटी की संगीत में बहुत रूचि है आप उसे संगीत सिखाओ"। तो उन्होंने कहा कि "उससे मेरे राखी बंधवा देना"। फिर आपको उस दिन से सिखाना प्रारंभ किया। आप को आसपास के गावों में जागरण के कार्यक्रम के लिए आमंत्रण आने लगे फिर धीरे-धीरे पूरे भारत में और विदेशों में भी कार्यक्रम के लिए बुलावा आने लगा। आपने फ्रांस, पेरिस, पुर्तगाल आदि में भी इस गायन शैली का प्रचार प्रसार किया। आप के द्वारा गाई गई भजन शैली को आप "मारवाडी भजन शैली" नाम देती हैं। आप अधिकतर मीरा के पद पारंपरिक धुनों में गाती हैं। आपने बिहारी लाल कथक, अली मोहमद, रामस्वरूप भोपा, बनारसी लाल, अनुप जलोटा, चिरंजी लाल तंवर आदि को सुन-सुन कर राजस्थान के पारम्परिक भजन सीखे।

वैसे तो सभी समाज के लोग आपके प्रोग्राम कराते हैं, पर अधिकतर राव, मीरासी, भाट आदि गाने बजाने वाले समाज के लोग आप को ज्यादा बुलाते हैं। आप का प्रमुख व्यवसाय रात्रि जागरण ही है। राजस्थान से बाहर आसाम, हरियाणा, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, मध्यप्रदेश आदि प्रदेशों में जागरण कार्यक्रमों में गायन हेतु आमंत्रित किए जाते हैं।[23]

20. लक्ष्मण भांड

चित्र 4.20 लक्ष्मण द्वारका जी का साक्षात्कार लेते हुए शोधार्थी

भजन के क्षेत्र में नवोदित कलाकार भी अपना योगदान दे रहे हैं, उनमें से एक नाम लक्ष्मण भांड भी है। इनका जन्म 05.07.1989 मेड़ता रोड, तहसील- मेड़ता सिटी, जिला- नागौर में हुआ। आप के पिता बुद्धराज कुचामणी ख्याल गाया करते थे। आप राजस्थान के लोक गीत मांड, सूफी-भजन आदि शैलियों का गायन करते हैं। आप के दादा बद्रीलाल और दादी माण्ड व लोक गीत साथ में गाया करते थे। आप एक पारम्परिक कलाकार है। जब आप 10 वर्ष के थे तब ही से भजन गाना प्रारम्भ किया। आप के पिताजी जागरण में ढोलक बजाने जाया करते थे तो आपने उनके साथ जागरण में जाते-जाते भजन गाना प्रारम्भ किया। आपके पिताजी ने ही मांड गाना सिखाया और धीरे-धीरे आप मांड, राजस्थानी लोक गीत, भजन आदि के कार्यक्रम करने लगे। आप का मुख्य व्यवसाय रात्री जागरण करना है। भजनों के कार्यक्रम के लिए राजस्थान और राजस्थान से बाहर भी कई कार्यक्रम किये। आप सूफी भजन भी गाते हैं। आप का कहना है कि जहां डांगडी की रात (मृत्यु के बाद 12वीं की रात) होती है, वहाँ संत कवियों के चेतावनी भजन गाये जाते हैं। आप एक पारम्परिक भजन गायक है।[24]

---

[23] रमाकुमारी जी से दिनांक 8/3/2022 दोपहर 3:23 पर लिये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

[24] लक्ष्मण भांड जी का दिनांक 7/3/2022 दोपहर 12 :03 पर लिये साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

पंचम अध्याय

संवादी भजनों का वर्तमान स्वरूप एवं समाज

5.1 आयोजन एवं प्रस्तुतीकरण

5.1 जनमानस पर संवादी भजनों का प्रभाव

5.3 संवादी भजनों में लोक चेतना

पंचम अध्याय

संवादी भजनों का वर्तमान स्वरूप एवं समाज

5.1 आयोजन एवं प्रस्तुतीकरण-

भारत वर्ष विभिन्न धार्मिक मान्यताओं से परिपूर्ण देश है। सभी धर्मों में ईश्वर आराधना के भिन्न–भिन्न रूप मिलते हैं। राजस्थान की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में धार्मिक परम्पराओं के विभिन्न स्वरूप देखने को मिलते हैं। मुख्य रूप से हिन्दू धर्म एक ऐसा धर्म है जहाँ ईश्वर भक्ति के हज़ारों स्वरूप प्राप्त होते हैं, उसी का एक स्वरूप है, भजन गायन। भक्ति गायन की महिमा से हिन्दू ग्रन्थ भरे पड़े हैं। भक्ति संगीत की अनेक शैलियाँ प्रचलित है। सामान्य समाज में विविध सामाजिक और धार्मिक आयोजनों में भक्ति संगीत के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। राजस्थान में अनेक लोक देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए रात्रि जागरण की परम्परा प्रचलित है। यहाँ के सभी लोक देवी देवताओं की आराधना से लोक संगीत परिपूर्ण है। प्रत्येक देवता जैसे- रामदेव जी, भैंरू जी, भोमिया जी, पाबू जी, गोगा जी, तेजा जी आदि की स्तुति में अनेकों लोक भक्ति रचनाएँ प्रचलित है। इस प्रकार भजन आयोजन इन देवताओं के विशेष दिवस पर ही आयोजित होते हैं। ये आयोजन व्यक्ति विशेष, गाँव, समाज अथवा किसी संस्था द्वारा किये जाते हैं। व्यक्ति अथवा परिवार विशेष द्वारा किसी के जन्म दिन, विवाह दिवस, मृत्यु दिवस या अन्य किसी शुभ अवसर पर भी अपने निवास अथवा किसी धार्मिक स्थान पर भक्ति संगीत के आयोजन होते रहते हैं। ऐसे अवसरों पर रात्रि जागरण में भजन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। आयोजक व्यक्ति अपनी और श्रोताओं की रूचि के अनुसार गायक कलाकारों का चयन कर अपने इष्ट की सामूहिक आराधना करता है। यही संवादी भजनों के लोकप्रिय होने का कारण भी है। राजस्थान के अनेक शहरों एवं कस्बों में भक्ति संगीत के समारोह भी आयोजित किए जाते हैं। इन जागरण एवं समारोह में एक विशेष प्रकार की भजन शैली का प्रचलन है जिसे हमने इस शोध ग्रन्थ में "संवादी भजन शैली" के नाम से संबोधित किया है।

यूं तो सम्पूर्ण राजस्थान और इसके आस-पास के क्षेत्रों में रात्रि जागरण और भजन संध्या के कार्यक्रम आयोजित होते हैं, किन्तु संवादी भजन शैली में शेखावाटी (सीकर, चुरू) क्षेत्र के भजन गायक अधिक प्रचलित है और इन्हीं कलाकारों को

आमंत्रित किया जाता है। शोध में कलाकारों और संगीत विद्वानों से साक्षात्कार में यह पाया गया है कि सभी ने परम्परागत रूप से प्राप्त भजनों को अपनी प्रतिभा से यह स्वरूप प्रदान किया है। आज से 100 वर्ष पूर्व के किन्हीं गायकों की रिकॉर्डिंग उपलब्ध नहीं है किन्तु जिनकी रचनाऐं आज उपलब्ध है वे पारम्परिक रचनाऐं ही है। अतः इस शैली का कोई प्राचीन इतिहास तो नही है किन्तु कलाकारों के साक्षात्कार के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लगभग 150 वर्ष से यह विशिष्ट गायन परम्परा प्रचलित है। इस शैली का प्रचार राजस्थान के अतिरिक्ति सम्पूर्ण भारतवर्ष में है। जयपुर, सीकर, बीकानेर, नागौर, चुरू और झुंझुनू एवं उसके आस-पास के गाँवों में इस भजन शैली के अनेक ख्यातनाम गायक हुए है जिनका सन्दर्भ पूर्व अध्यायों में दिया जा चुका है। ये सभी व्यावसायिक कलाकार है और इनकी जीविका का एकमात्र साधन भजन गायन ही था। हिन्दू संस्कृति के विभिन्न अवसरों जैसे कृष्ण जन्माष्टमी, शिव रात्रि, नवरात्र, गणेश चतुर्थी जैसे धार्मिक अवसरो ऐसे आयोजन प्रायः महंतों, पुजारियों द्वारा किया जाता है जिसमें अनेक गायक वादक अपनी हाजरी (उपस्थिति) लगाते हैं।

राजस्थान के भरतपुर और कोटा संभाग में भजन गायन की एक अलग ही शैली का प्रचलन है जिसमें मुख्य रूप से बिन्दु, चन्द्रसखी जैसे कृष्ण और राम भक्ति के भजन जागरण में प्रस्तुत किये जाते हैं। उत्तरप्रदेश और राजस्थान के ब्रज क्षेत्र रामलीला, रासलीला, और धार्मिक नौटंकी में भी इन भजनों का प्रचार है। इन भजनों के विषय वस्तु में मुख्य रूप भक्त और भगवान के मध्य हुए धार्मिक पौराणिक संवादों का गायन किया जाता है। पूर्व अध्यायों में इस प्रकार के भजनों का वर्णन किया जा चुका है।

वर्तमान में इस प्रकार के आयोजन कम होते जा रहे हैं। इनके स्थान पर डीजे भजन संध्या का प्रचार हो रहा है जिसमें की संगीत के नाम पर तेज और कानफाडू संगीत युवा पीढ़ी को परोसा जा रहा है। एक ही तरह की ताल पर की-बोर्ड और ओक्टोपेड जैसे वाद्यों का प्रयोग, जिसमें शब्द और साहित्य का कहीं कोई महत्व नही है। साहित्य के दृष्टिकोण से पूर्णतया निराधार शब्दों का प्रयोग इस सुन्दर और समाज उपयोगी परम्परा का विनाश किये जा रही है, जिसका कारण यही है कि आज की युवा पीढ़ी में इस शैली के प्रति रूचि का अभाव है। राजस्थान में अनेक भजन समारोहों का आयोजन होता है जो कि अत्यंत प्रसिद्ध है।

राजस्थान के विभिन्न भजन समारोह-

1. **जन्माष्टमी समारोह-** यह संगीत समारोह भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के उपलक्ष में उनकी लीलाओं का गुणगान करने के लिए प्रदेश की विभिन्न समितियों द्वारा कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है।

2. **गेटेश्वर संगीत समारोह (जयपुर)-** इस महोत्सव का आयोजन शिवरात्रि पावन अवसर पर किया जाता है जिसमें कई भजन गायकों को आमंत्रित किया जाता है। गेटेश्वर समिति जयपुर द्वारा लगभग 20 वर्षों से इसका आयोजन किया जाता रहा है।

3. **डांगड़ी की रात भजन संध्या-** यह आयोजन मृतक के परिवार जानो द्वारा मृत्यु के 12वे दिन रखा जाता है, जिसमें चेतावनी भजन गाए जाते हैं।

4. **अमृतगंगा संगीत मंच (नवलगढ़)-** अमृतगंगा संगीत मंच की ओर से दो दिवसीय संगीत का महाकुंभ होता है जिसमें राजस्थान के सभी चर्चित कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है। इस कार्यक्रम में सम्पूर्ण रात्रि भजन गायन चलता है।

5. **यंत्रेश्वर महादेव संगीत समारोह (जयपुर)-** स्वर्गीय श्री गुलाब जी चाय वाले की जीजिविषा का ही परिणाम है कि यंत्रेश्वर महादेव मंदिर में इस कार्यक्रम को सन् 1967 से उनके दम पर संगीत के दो बड़े समारोह अनवरत करा रहे थे और अब उनके पुत्र श्री शिवपाल सिंह के नेतृत्व में यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। गुलाब जी ही इस मंदिर की स्थापना करवाई और हर साल 7 फरवरी को मंदिर का स्थापना दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर भजन संध्या का आयोजन होता है इसके अलावा हर साल जन्माष्टमी के दिन भव्य कार्यक्रम होता है। इन समारोह की लोकप्रियता जयपुर ही नहीं राजस्थान के बाहर से भी कलाकार बिना बुलाये यहाँ आते हैं और गायन, वादन, नृत्य की एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देते हैं।

6. **लाखोटिया महादेव संगीत समारोह (पाली)-** महादेव के प्रिय श्रावण मास के सोमवार को लाखोटिया महादेव के रंगमंच में लगभग 30 वर्षों से राष्ट्रीय स्तरीय भजन संध्या का आयोजन किया जाता है। जहां ऑडिशन में चयनित

कलाकारों को सम्मानित किया जाता है। लाखोटिया महादेव मेला मण्डल सेवा समिति के द्वारा इस समारोह का आयोजन किया जाता है।

7. **मास्टर भंवर लाल गंधर्व स्मृति संगीत समारोह (कोटा)-** यह समारोह लगभग 45 वर्षों से श्रावण माह की रात्रि में गंधर्व परिवार द्वारा आयोजित किया जाता है जिसमें प्रदेश से बाहर के कलाकारों को भी आमंत्रित किया जाता है। स्व. मास्टर भंवर लाल गंधर्व रामपुरा संगीत विद्यालय में नृत्य शिक्षक के पद पर नियुक्त थे।

8. **मीरा संगीत महोत्सव (मेड़ता)-** यह समारोह 520 वर्ष से मनाया जा रहा है। इस समारोह में देश के बड़े-बड़े कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है। इस आयोजन का सम्पूर्ण व्यय सरकार द्वारा वहन किया जाता है, जिसमें (श्री कृष्ण की भक्ति से ओत प्रोत) मीरा बाई के पदों का गायन किया जाता है।

9. **परशुराम महादेव भजन संध्या (पाली)-** यहाँ पर 20 वर्षों से श्रावण मास में राज्य स्तरीय भजन संध्या का आयोजन किया जाता है।

10. **दादू आश्रम फुलेरा (जयपुर)-** 1980 से इस भजन संध्या का आयोजन होता रहा है स्व. बाबा भगवानदास द्वारा इस भजन संध्या का आयोजन किया जाता था जिसमें बिहारी जी 'कत्थक', पं. चिरंजी लाल तंवर, मोइनुदिन खान साहब, जैसे बड़े कलाकारों को आमंत्रित किया जाता था, भगवानदास जी भी संवादी भजनों के उमदा कलाकार रहे है वर्तमान में इस भजन संध्या का आयोजन भगवान दास जी के शिष्यों व प्रशिष्यों द्वारा किया जाता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य राजस्थान की इस भजन शैली को उन युवा गायकों तक पहुँचाना है जो संगीत के क्षेत्र में रूचि रखते है, जिनमें सांगीतिक प्रतिभा है और संगीत के विद्यार्थी है। शोध ग्रन्थ में पुराने भजन गायकों की ऐसी अनेक रचनाओं का स्वरलिपि सहित संकलन कर इसके उत्कृष्ट साहित्य और मधुर रागों में निबद्ध भजनों को प्रचारित करना आवश्यक है।

5.2 जन मानस पर संवादी भजनों का प्रभाव-

पूर्व अध्यायों में विभिन्न संवादी भजनों के साहित्य पर विचार करने से ज्ञात होता है कि संवादी भजनों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं है। उनके साहित्य में समाज को उचित दिशा देने का सामर्थ्य है। संत साहित्य का गायन इस शैली की

प्रमुख विशिष्टता है। जिसमें मानव मूल्यों, लोक चेतना, सामाजिक दायित्वों, धार्मिक आडम्बर, मर्यादा जैसे महत्वपूर्ण ज्ञान को जनमानस तक पहुँचाने में इन भजनों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। सबसे अधिक महत्व की बात यह है कि यह ज्ञान गाँव-गाँव तक सहज ही इन भक्ति गीतों के माध्यम से उपलब्ध हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे अनेक व्यक्ति मिल जाते हैं, जो औपचारिक रूप से शिक्षित नहीं होते हुए भी इन सभी मूल्यों को अपने दैनिक व्यवहार में आचरण करते हैं और अपने परिवार व समाज को भी इन मूल्यों पर चलने हेतु प्रेरित करते हैं। लोगों तक इनका प्रभाव अधिक होता है। ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे सत्संगी व्यक्ति अनेक सामाजिक बुराईयों से स्वयं भी दूर रहते हैं तथा आने वाली पीढ़ी को भी संरक्षण प्रदान करते हैं। बहुत से युवा इस प्रकार के आयोजनों से प्रभावित होकर संगीत को अपना व्यवसाय भी बना लेते हैं। मैंने ऐसे अनेक विद्यार्थी देखे हैं जो केवल इन रात्रि जागरण के भजन कार्यक्रमों से प्रभावित होकर अपने आप संगीत की औपचारिक शिक्षा में प्रवेश कर जाते हैं और उपाधि प्राप्त कर सरकारी एवं अन्य प्रकार की नौकरी प्राप्त करने में सफल होते हैं। इस प्रकार संवादी भजन की यह परम्परा रोजगार और नौकरी में भी सांगीतिक प्रतिभा वाले विद्यार्थियों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है। गायन के साथ संगतकार भी इस विधा से नियमित अर्थोपार्जन कर रहे है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार के आयोजन युवा पीढ़ी को उत्कृष्ट जीवन जीने और रोजगारोन्मुख करने में अत्यंत सहयोगी सिद्ध होते हैं। अनेक धार्मिक ट्रस्ट इस प्रकार के आयोजनों में वृद्धि कर इस परम्परा को जीवित रखने का कार्य कर रहें हैं, किन्तु इसमें कर्ण कटु संगीत का प्रवेश इस परम्परा के स्तर को कम कर रहा है।

5.3 संवादी भजनों में लोक चेतना-

यहाँ लोक चेतना का तात्पर्य अच्छे संस्कार और सद्विचारों से है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये इस शोध ग्रंथ में अनेक भजनों का साहित्य भी उपलब्ध करवाने का विनम्र प्रयास किया है। संवादी भजनों में व्याप्त साहित्य में अनेक लोक चेतना के तत्व पाए जाते है। कुछ उदाहरण से संवादी भजनों में व्याप्त लोक चेतना को स्पष्ट करने का प्रयास किया है-

कबीर कहते है – "गंगा न जाऊं यमुना न जाऊं, ना कोई तीरथ नहाऊं, अड़सठ तीरथ घट ही के भीतर, वा मैं मल-मल नहाऊं.....।" अर्थात मनुष्य अपने मन

के विकारों को दूर करने के लिए मंदिर, मस्जिद, तीर्थ, गंगा स्नान आदि करता है, जिससे उसके मन की गलत भावनाओं पर नियंत्रण नहीं हो सकता। उनका कहना है कि सभी तीर्थ और मंदिर अपने अंदर ही है। अपनी दूषित विचारधारा को दूर करने के लिए आत्म चिंतन और सद् गुरू कि संगत और चिंतन आवश्यक है।

सूरदास के अनुसार, "दारा, सुत, धन, मोह, लियो है, सुध बुध सब बिसरी....।" अर्थात् मनुष्य, पत्नी, संतान और धन के चक्कर में पूरे जीवन भागता रहता है, उसे जीवन कि सार्थकता का बोध ही नही हो पाता है और अंत समय नजदीक आ जाता है।

कबीर कहते है- "कहत कबीर सुनो भाई साधो, संग चली बस सुखी लकडियाँ, जीव तू जाएगो हम जानी...।" अर्थात् प्रत्येक मनुष्य को यह मालूम होता है कि एक दिन यह शरीर सूखी लकड़ियों के साथ जलकर भस्म हो जाएगा अर्थात् शरीर से प्राण निकल जाने के बाद उसे चादर ओढाने का क्या औचित्य है। जीते जी राम नाम रूपी चादर को धारण करना चाहिए। इसी प्रकार इन भजनों में योग कि महिमा और उसके आध्यात्मिक महत्व पर साहित्य है

जैसे-

"ऊधो तुम जाय योग समझाओ,
ब्रह्म सब जगत यामे मन लावो"
"इस काया के दस दरवाजा
ना जानूँ कौन खिड़की खुली थी"

अर्थात् मनुष्यको शरीर के अनेक ज्ञान चक्षुओं को खोलने के लिए योग को समझना चाहिये।

"राम नाम गाढो कर राखो जैसे लोभ राखे"
दाम खर्च ना खूटे चोर ना लूटे भीर परे आवे काम।...."

राम नाम की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है कि राम नाम रूपी धन को इस प्रकार संभाल कर रखना है जैसे कोई लोभी व्यक्ति धन को क्योंकि कोई अन्य व्यक्ति न तो इसे चुरा सकता है और न ही खर्च कर सकता, अतः हे प्राणी यही धन विपत्ति के समय तेरे काम आएगा।

"कहा भयो उत्तम कुल जन्में, शील नहीं घट मांही
अमृत छोड़ विश्य रस चाख्यों, धिख-धिख तिनके तांई"

इन पंक्तियों में कहा है कि प्राणी का उच्च कुल से जन्म लेने का कोई अर्थ नहीं है अगर उसमें विनम्रता का अभाव है। साथ ही राम नाम रूपी अमृत के स्थान पर सांसरिक विषयों में लिप्त रहने वाले प्राणी को धिक्कार है।

"कबीर या गठरी में सात समंदर कोई मीठा कोई खारा।
या गठरी में पाँच रतन है कोई-कोठ परखण हारा"।

कबीर कहते हैं - इस शरीर में सात समुद्र यानि सात इंद्रियाँ है जिनका उपयोग मनुष्य विभिन्न सांसारिक रसों के पान के लिए करता है। सभी रसों का स्वाद एक जैसा नहीं है अतः जीवन में केवल हरी भजन का अमृत पान ही सर्वश्रेष्ट है। इसी प्रकार पाँच तत्वों से बने इस शरीर का उचित प्रयोग ही मनुष्य को मोक्ष तक पहुंचा सकता है।

"जहर का प्याला राणा ने भेज्या, पीवत मीरा हाँसी....।" मीरा बाई ने भक्ति कि शक्ति से जहर का प्रभाव भी अमृत के समान बताया है।

भक्त कवियों ने तो अपनी वाणी से मनुष्य को ईश्वर महिमा, योग, जीवन का उद्देश्य, धार्मिक आडंबर, शरीर कि नश्वरता, संसार की वास्तविकता आदि पर पर्याप्त साहित्य उपलब्ध करवाया है और भक्त गायकों ने उसे जन-जन तक प्रचलित करने का प्रयास किया है और करते रहेंगे।

इसी प्रकार लोक कवि और गायकों ने भी अपनी वाणी और उसके गायन से समाज को शिक्षा देने का कार्य किया है। लोक रचनाओं का सामाजिक चेतना के योगदान में जितना वर्णन किया जाए उतना ही कम है।

"संतो देखो नी नज़र पसार, तन काया में रेल चले।
गाड़ी चलती है इंजन से, उसमें सात जगह पानी के बल से
तीनों की एकोकल से धुआं निकले, बेशुमार अग्नि आठों पहर जले"

इन पंक्तियों में मनुष्य को बताने का प्रयास किया है कि यह शरीर साँसों कि शक्ति से चलायमान है और हमेशा चेतना रूपी अग्नि प्रज्जवलित रहती है अतः उस चेतना का सर्वशक्तिमान से संबंध बनाए रखना आवश्यक है, तब ही जीवन कि सार्थकता है।

"ऊँचा चढ़-चढ़ बाँग पुकारे, क्या तेरा साहब बहरा है।
कीड़ी के पग नेवर बाजे, वो भी साहब सुनता है।
ना जानू तेरा साहिब कैसा...
माला पहरी तिलक लगाया लंबी जटा बढ़ाता है।
अंतर तेरे कुफर-कटारी यो नहिं साहब मिलता है।
ना जानं तेरा साहिब कैसा....

अज्ञानियों और ढोंगी साधू संतों द्वारा माला, तिलक, लंबी दाढ़ी और ज़ोर से चिल्लाकर अल्लाह अथवा भगवान को पुकारने पर कटाक्ष करते हुये कहा है कि ईश्वर का कोई स्वरूप नहीं है, वह तो निराकार है। उसे पहचानने और प्राप्त करने के लिए अंतरात्मा कि आवाज़ ही पर्याप्त है।

इस प्रकार संवादी भजन न केवल सांगीतिक दृष्टिकोण से समाज के लिए उपयोगी है वरन् सामाजिक और लोक चेतना के लिए इसका योगदान उल्लेखनीय है और रहेगा। संवादी भजनों के साहित्य से समाज और मनुष्यों के जीवन में निम्न गुणों का संचार होता है-

1. ईश्वर आराधना से आत्मकल्याण।
2. विभिन्न धार्मिक आडम्बरों से समाज को दूर रखना।
3. अनेक सामाजिक भ्रांतियों और कुरीतियों से स्वयं और समाज को जागरूक करना।
4. ईश्वर के सर्व व्याप्त होने के भाव से मनुष्य चरित्रवान बनता है।
5. दीन और असहाय मनुष्यों की सहायता करने का भाव जाग्रत होता है।
6. मनुष्य जीवन को अच्छे कार्यों में प्रेरित करता है।
7. जीवन में कर्मशील रहना।
8. ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ बनना।
9. समाज एवं राष्ट्र के प्रति दायित्वों का बोध बना रहना।

उपसंहार

उपसंहार-

सर्व प्रथम प्रस्तावना के अंतर्गत लोक संगीत का संक्षिप्त परिचय, राजस्थान के लोक संगीत की विभिन्न धाराएँ, भजनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर विस्तृत तथ्यात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम अध्याय में वर्तमान में राजस्थान की वर्तमान भजन परम्परा का विश्लेषण करते हुये शोध ग्रंथ का मूल विषय संवादी भजन जो यहाँ की विशिष्ट भजन शैली है तथा गाँव-गाँव, घर-घर और जन-जन में प्रचलित है। इस शैली को यहाँ हमने "संवादी भजन" के नाम से सम्बोधित किया है। विभिन्न भजन गायकों, संगीतकारों से साक्षात्कार कर यहाँ कि भजन गायन की विशिष्ट शैली संवादी भजन शैली' शीर्षक को स्थापित किया है। संवादी शब्द के अनेक अर्थ जैसे समाजी, समाधि प्राप्त हुये। यह भी सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है कि राजस्थान के विशिष्ट क्षेत्र में गाये जाने वाले भजन देश के अन्य प्रान्तों तथा सामान्य भजन से पूर्णतया भिन्न है। इन भजनों में राजस्थान कि प्रसिद्ध लोक गायन शैली मांड का प्रभाव इन्हें अन्य भजन शैलियों से अलग करते है। यह भी सिद्ध हुआ है कि इस भजन शैली का उद्भव रात्री जागरण परम्परा के फल स्वरूप ही हुआ है। ऐतिहासिक दृष्टि से संवादी भजनों के उद्भव की बात करें तो भक्त कवि और गायिका मीरा बाई अर्थात् भक्ति काल से ही इस शैली का प्रारम्भ माना जा सकता है किन्तु सांगीतिक तत्वों की दृष्टि से यह पूर्णतया भिन्न और रात्री जागरण परम्परा का ही परिणाम है।

द्वितीय अध्याय में संवादी भजनों कि सांगीतिक विवेचना उदाहरण सहित प्रस्तुत की गई है। जिसमें संवादी भजनों में शास्त्रीय और लोक तत्वों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रारम्भ मे सांगीतिक दृष्टि से भजन गायन की विभिन्न शैलियों का वर्गीकरण तीन भागों मे किया गया। लोक शैली के भजन, सुगम शैली के भजन और अंत में संवादी शैली के भजन प्राप्त हुये है। यह सिद्ध हुआ है कि सांगीतिक दृष्टि से संवादी भजनों में राजस्थान की रजवाड़ी गायन शैली मांड का विशेष प्रयोग होता है। इसी कारण यह लोक और सुगम से अलग प्रतीत होते हैं। इन भजनों की रचनाओं में मांड के अतिरिक्त शास्त्रीय रागों, तालों के प्रयोग के साथ ही ठुमरी और सूफी गायकी का मिश्रण भी पाया जाता है। विभिन्न उदाहरणों से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय में विभिन्न माध्यमों जैसे साक्षात्कार, यु-ट्यूब, आकाशवाणी, विभिन्न आयोजकों से प्राप्त, ध्वनि मुद्रित एवं पूर्व शोध ग्रन्थों में उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर प्रचलित और अप्रचलित संवादी भजनों के साहित्य का संकलन प्रस्तुत किया गया है। प्राप्त रचनाओं को चार भागों मे वर्गीकृत कर अतिप्रचलित एवं सांगीतिक दृष्टि से उत्कृष्ट रचनाओं को स्वरलिपि सहित उद्धृत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में लगभग दो दर्जन कलाकारों का परिचय और उनके योगदान का सचित्र उल्लेख किया गया है। शोध मे सिद्ध हुआ है कि राजस्थान के बाबा बिहारी 'कत्थक', चिरंजी लाल तंवर, मोइनूद्दीन खान जैसे कलाकार ने इस शैली को अपनी प्रतिभा से विशिष्ट और उत्कृष्ट बनाया है। सैंकड़ों भजन गायक उन्ही कि रचनाओं का अनुसरण आज तक कर रहे है इसीलिए संवादी भजन एक गायन शैली के रूप में स्थापित है। शोध में यह भी निष्कर्ष निकलता है कि यह शैली 18वीं सदी से ही प्रचलित हुई है। अनेक उपलब्ध कलाकारों से साक्षात्कार कर इस भजन शैली के भविष्य और विशेषताओं पर विस्तृत चर्चा करने पर सभी ने वर्तमान परिदृश्य मे युवा पीढ़ी द्वारा रात्री जागरण में विभिन्न इलेक्ट्रोनिक वाद्यों और कर्णकटु संगीत के प्रयोग होने से इस परम्परा के लुप्त होने की आशंका जताते हुये इस को पुनः स्थापित करने के लिए संस्थाओं और समाज और सरकार को आगे आने का आव्हान किया। कुछ कलाकारों ने इसे आकाशवाणी से मान्यता एवं राजस्थान के संगीत विषय के विद्यार्थियों के लिए अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम में शामिल करने की अनुशंसा भी की है।

पंचम अध्याय संवादी भजनों का वर्तमान स्वरूप एवं समाज में संवादी भजन शैली और समाज के अंतर्गत इसके आयोजन, प्रस्तुतीकरण, जनमानस पर भजनों का प्रभाव, संवादी भजनों में लोक चेतना को परिलक्षित किया गया है।

सम्पूर्ण शोध में प्राप्त निष्कर्षों को निम्न बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है-

1. संवादी भजन शैली का संबंध मूलरूप से रात्रि जागरण परम्परा से है।
2. ग्रामीण क्षेत्र में इन्हे समाजी, समाधि और पक्के भजनों के नाम से संबोधित किया जाता है। संवादी भजन के अतिरिक्त राजस्थान में और भी भजन शैलियाँ प्रचलित थी जैसे- समाजी भजन, विधावाटी भजन, सनातन भजन,

सूफीयाना भजन, मीणावाटी भजन, पारवा भजन, हरिजस भजन, निर्गुण भजन, चेतावनी भजन आदि।

3. यह शैली राजस्थान की रजवाड़ी गायन परम्परा मांड से प्रभावित है और ख़्याल, ठुमरी, सूफी एवं राजस्थानी लोक संगीत का मिश्रण पाया जाता है।

4. इस शैली के गायक परम्परागत रूप से तैयार होते हैं। इनकी कोई विधिवत शिक्षा-दीक्षा नहीं होती है।

5. भजनों के साहित्य में संत और भक्त कवियों की रचनाओं का प्रयोग ही मान्य है।

6. संवादी भजनों को चार भागों में वर्गीकृत किया है-

(अ) शास्त्रीय रागों और तालों पर आधारित

(ब) ख़्याल शैली पर आधारित

(स) लोक धुनों पर आधारित

(द) ब्रज क्षेत्र में प्रचलित

7. शोध में प्रथम प्रकार के शास्त्रीय रागों और तालों पर आधारित भजनों को ही संवादी शैली के भजन शैली माना गया है।

8. संवादी भजनों का प्रचार राजस्थान के चुरू, सीकर, झुंझनु, बीकानेर, जोधपुर और जयपुर में अधिक पाया गया है और इस के गायक कलाकार भी इन्ही जिलों से संबंधित हुये है।

9. 35 उत्कृष्ट संवादी भजनों को शोध ग्रंथ में स्वरलिपि सहित उद्धृत किया गया है किन्तु इसके अलावा भी रात्रि जागरण परम्परा में रचनाओं को शोध ग्रंथ में संकलित किया है।

10. चुरू के बाबा बिहारी 'कत्थक', सीकर के मोइनूद्दीन खाँ और जयपुर के चिरंजी लाल तंवर इस शैली के प्रमुख गायक सिद्ध हुये है।

11. भजनों की रात्रि जागरण परम्परा के प्रभाव से अनेक ग्रामीण युवाओं ने संगीत विषय में संस्थागत प्रवेश लेकर अनेक राज्य और केंद्र के संस्थानों शिक्षक पद और गायन वादन के क्षेत्र नाम किया है।

सारांश

सारांश

राजस्थान के सभी संभागों में गाँव-गाँव में रात्रि जागरण के कार्यक्रम सामान्यतः किसी धार्मिक अथवा सामाजिक अवसर पर व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्तर पर आयोजित किये जाने की परम्परा है। क्योंकि मैं स्वयं ग्रामीण परिवेश में पला बढ़ा हूँ और ऐसे अनेक आयोजनों में आमंत्रित कलाकारों को बचपन से ही सुनता आया हूँ, जिससे मैं अत्यंत प्रभावित रहा हूँ, शायद इसी वजह से मैंने संगीत को अपने अध्ययन का विषय चुना।

राजस्थान के ग्रामीण अन्चलों में प्रचलित इस भजन गायन पर मांड शैली का पूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। सामान्यतः भारतीय संगीत की विभिन्न रागों में जैसे कल्याण, मांड, हमीर, केदार, सोरठ, देस, खमाज, काफी, कलिंगड़ा, प्रभाती, कान्हड़ा, मालकौंस, तोड़ी, मारवा, पूरिया, चारुकेशी, भीमपलासी, भैरवी, भैरव, रागेश्री, बागेश्री, शिवरंजनी, भूपाली जैसी प्रमुख और प्रचलित रागों का प्रयोग किया जाता है।

इस शैली में काव्य रचना उच्च कोटि की तथा सामाजिक चेतना से पूर्ण होती है। प्रायः मीरा, कबीर, सूर, तुलसी, नानक, रैदास, मलूकदास जैसे संत कवियों कि रचनाओं का प्रयोग ये कलाकार करते पाए जाते हैं। इस शैली में गायकों द्वारा भजन के माध्यम से किसी धार्मिक सामाजिक, पौराणिक एवं महाकाव्यों की धारणाओं का वाचन भी किया जाता है, जिसमें अनेक धार्मिक प्रसंगों का आपसी संवाद पाया जाता है। शायद इसी कारण से इस भजन शैली का सम्बोधन "संवादी" रखना उचित प्रतीत होता है।

मैंने अनेक कलाकारों और संगीत विद्वानों से इस भजन शैली के विषय में जानना चाहा, कुछ ने इसे लोक तो, कुछ ने शास्त्रीय अथवा उपशास्त्रीय शैली बताया। किसी ने मांड तो, किसी ने सूफी शैली बताया। यहाँ तक कि इस भजन शैली के सिद्ध हस्त कलाकार भी इसे भजन ही कहते है। मैंने अपने गुरु प्रोफेसर (डॉ.) विजयेन्द्र गौतम से इस शैली पर शोध कार्य करने कि इच्छा प्रकट कि तो उन्होंने इसे एक नाम "संवादी भजन" कहा जो मुझे भी उपयुक्त लगा। कुछ कलाकार इसे समाजी भजन तथा कुछ समाधि भजन से भी संबोधित करते है। ग्रामीण कलाकार सम्मादी भजन भी कहते हैं, जो कि संवादी शब्द का ही अपभ्रंश है।

इस शैली में संगीत के सभी तत्वों का समावेश होते हुए भी राजस्थान के लोक संगीत की एक विशेष मिठास या स्वर लगाव पाया जाता है, जिसे इस शोध ग्रन्थ में 'संवादी भजन' के नाम से संबोधित किया गया है। राजस्थान के जोधपुर, सीकर, नागौर, चुरू, जयपुर, झुंझुनू, बीकानेर क्षेत्र में इस भजन शैली का प्रचार अधिक रहा है। विभिन्न कलाकारों ने अपनी रचनाओं और विशिष्ट गायन शैली से ग्रामीण और शहरी भक्ति संगीत के रसिकों को आस्वादन करवाया है। इस भजन शैली के विशिष्ट गायकों का योगदान, उनकी अमर रचनाओं का संरक्षण एवं वर्तमान कलाकारों द्वारा इस परंपरा के निर्वहन एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता है। आज भक्ति संगीत के नाम पर अकुशल कलाकारों द्वारा शोर शराबा प्रचार में है और इस शोर में उन संगीत साधकों की अनगिनत मधुर रचनायें विलुप्ति के कगार पर है। उनका संरक्षण एवं संवर्धन आज की महती आवश्यकता हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु मैंने "राजस्थान की संवादी भजन शैली का उद्भव एवं विकास तथा उसमें निहित शास्त्रीय और लोक तत्वों की विवेचना" शीर्षक से यह शोध कार्य करने का निश्चय किया।

इस परंपरा के सैंकड़ो भजन गायक आज इस दुनिया में नहीं रहे लेकिन उनकी रचनायें एवं गायन शैली आज भी श्रोताओं को मंत्र मुग्ध करने की क्षमता रखती है। संवादी भजन परंपरा, इनका स्वरूप, उत्पत्ति, और विकास, इस परम्परा के संवर्धन में विभिन्न कलाकारों के योगदान तथा इन भजनों में निहित सांगीतिक एवं साहित्यिक तत्वों की विवेचना के साथ ही इनके सामाजिक महत्त्व को नयी पीढ़ी तक पहुँचाना इस शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य है।

प्राक्कथन के अंतर्गत लोक संगीत का परिचय देते हुये उसके वर्गीकरण, राजस्थान के लोक संगीत कि विभिन्न धाराएँ जिसके अंतर्गत दो प्रकार का संगीत धार्मिक और सामाजिक का वर्णन करते हुये यहाँ के विभिन्न लोक गायक जातियों, सामाजिक आयोजनों में प्रयुक्त संगीत का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। भजनों कि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन करते हुये भजनों की विभिन्न परम्पराओं जिसमें निर्गुण और सगुण भजन, संत परंपरा, भजनों के विभिन्न संप्रदाय के साथ ही यहाँ की लोक भजन परंपरा को संक्षेप में स्पष्ट किया है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत राजस्थान की प्रचलित संवादी भजन परंपरा के उद्भव और विकास को विभिन्न संदर्भों, इस विधा से संबन्धित कलाकारों, संगीत चिंतकों और विद्वानों से साक्षात्कार के आधार पर स्पष्ट किया गया है।

संवादी भजनों के उद्गम की बात करें तो भक्त कवयित्री और गायिका मीरा बाई अर्थात् भक्ति काल से ही इस शैली का प्रारम्भ माना जा सकता है। किन्तु इसके कोई साक्ष्य प्रस्तुत करना संभव नहीं है। भक्ति काल के संत कवियों की वाणी ही इस भजन शैली का आधार रही है। अतः यही कहना उचित रहेगा की इस भजन शैली का उद्गम संवत 1500 है और जोधपुर ही इस शैली का उद्गम स्थल है।

भक्ति संगीत की मंदिर परम्परा का आरम्भ राजस्थान में सन् 1726 के बाद ही हुआ है। यहाँ के ब्राह्मण परिवारों द्वारा कृष्ण मंदिरों की स्थापना की गई, जिनका संरक्षण राजा-महाराजाओं द्वारा किया गया। यहाँ के बहुत से राजा श्री कृष्ण के अनन्य भक्त रहे हैं। इसी परम्परा में जयपुर, उदयपुर, नाथद्वारा, बीकानेर, अजमेर, कोटा आदि के राजाओं ने मंदिरों में भक्ति संगीत जिसमें गायन, वादन और नृत्य तीनों विधाओं को परिपोषित किया।

राजा-महाराजाओं के युग की समाप्ति के बाद भक्ति संगीत कृष्ण मंदिरों तक सिमट कर रह गया। धीरे-धीरे यही परम्परा हवेली संगीत के रूप में पनपने लगी। हवेली संगीत ध्रुपद गायकी का ही भक्तिमय स्वरूप है।

राजस्थान के भक्ति संगीत ने अनके रंगों से गुजरते हुए एक नये रंग में प्रवेश किया। 19वीं शताब्दी में भक्ति संगीत मंदिरों से निकल कर ग्रामीण परिवेश में पहुँच गया, जहाँ किसी प्राचीन परम्परा से भिन्न एक नवीन परम्परा के भजन गाये जाने लगे। इन भजनों में जहाँ शास्त्रीयता के साथ-साथ लोक और सूफी दोनों शैलियों का समावेश हुआ। शास्त्रीय गायकी में रागों की दीर्घ विवेचना का संक्षिप्तीकरण और लोक गायकी के सूक्ष्म तत्वों तथा सूफी गायकी का वैचित्र्य का अद्भुत संगम इस भजन शैली के श्रृंगार बने।

साहित्यिक दृष्टि से भजनों का स्तर कहीं कम नहीं हुआ। संत कवियों की प्रसिद्ध रचनाओं का प्रस्तुतिकरण में ठहराव के साथ विभिन्न रागों एवं तालों में सैकडों बंदिशे जनमानस के हृदय पटल पर अंकित होती गई और आज भजन गायन की एक नवीन शैली स्थापित और प्रचलित होती चली गयी। प्रारम्भ में राजस्थान के जोधपुर, नागौर, सीकर, जयपुर, चुरू आदि क्षेत्र के भजनों की एक विशिष्ट शैली का विकास होने लगा जो अब राज्य के समस्त शहरों, कस्बों और गाँवों तक प्रचलित है। भरतपुर, अलवर, सवाई माधोपुर, कोटा तक इस भजन शैली का विस्तार है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि छोटे-छोटे गाँवों के मंदिरों में भक्ति संगीत के रात्रि जागरण कार्यक्रमों का आयोजन होने लगा, परिणामस्वरूप भजन की एक नवीन शैली का विकास होने लगा जिसे इस शोध ग्रंथ में 'संवादी भजन शैली' के नाम से सम्बोधित किया गया है।

द्वितीय अध्याय, संवादी भजनों कि सांगीतिक विवेचना के अंतर्गत प्रचलित भजनों के प्रकारों का वर्गीकरण करते हुये इन्हें तीन भागों में विभक्त किया है-

1. लोक शैली के भजन
2. सुगम शैली के भजन
3. संवादी शैली के भजन

लोक शैली के भजन वे है जो सामान्यतया लोक देवताओं कि स्तुति और क्षेत्रीय भाषा में प्राप्त होते है। इन भजनों में प्रायः लोक वाद्य जैसे ढोलक, मंजीरा, झांझ, खंजरी, हारमोनियम, जोगिया सारंगी, एकतारा, चौतारा, नगाड़ा आदि का प्रयोग किया जाता है। लोक भजन की सैंकड़ों रचनाओं में से कुछ अति प्रसिद्ध भजन उदाहरण स्वरूप निम्न है-

1. म्हारो हेलो सुणो जी रामा पीर....
2. खम्मा खम्मा हो मारा रूणिजेरा धणिया....
3. तेजाजी गायन....
4. लाग्यो लाग्यो जेठ आषाड़ कुंवर तेजा रे....
5. गोगा जी री ब्यावलो....
6. पाबूजी की फड़....
7. लाडकड़ी लाडेसर म्हारी जिण बाई सा....
8. बाजे छे नौबत बाजा म्हारा डिग्गीपुरी का राजा....
9. सिंगोलि रा श्याम म्हारा चारभुजा रा नाथ....
10. डिग्गी में दीनानाथ बिराजे जी....
11. जोगणियाँ थारो ऊँचो देश अखंड (जोगनिया माता की लावणी)....

ये सभी लोक भजनों की श्रेणी में आते है और आम जन विशेष अवसरों पर इनकी लयात्मकता में खो जाता है। इनकी भाषा उस लोक देवता के स्थान विशेष के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। राजस्थान के मारवाड़, ढूंढाड़, हाड़ौती सहित सभी क्षेत्रों में इनकी लोकप्रियता आज भी उतनी ही है।

सुगम शैली के भजन- इस शैली के भजन सम्पूर्ण भारत के हिन्दी भाषी क्षेत्रों में प्रचलित है। यह व्यावसायिक श्रेणी के भजन है जो कि विभिन्न ऑडियो कंपनियों द्वारा जारी किए जाते है। भजन गायक, हरीओम शरण, अनूप जलोटा, पार्श्व गायक सुरेश वाडेकर, लता मंगेशकर के साथ ही शास्त्रीय गायक जैसे पंडित जसराज, भीमसेन जोशी, किशोरी अमोनकर आदि का नाम सम्मान से लिया जाता है।

संवादी शैली के भजन- इस शैली का सम्बन्ध मूलरूप से जागरण परंपरा से है। इन भजनों की लोकप्रियता ग्रामीण परिवेश के श्रोताओं में अधिक है। निम्न मानचित्र से संवादी भजन के प्रभाव वाले क्षेत्रों को दर्शाया गया है-

चित्र : राजस्थान में संवादी भजन शैली के प्रभाव वाले क्षेत्र (जिले)

(पीले रंग से प्रदर्शित)

इस प्रकार की भजन रचनाओं में शास्त्रीय रागों, तालों, राजस्थान की मांड, ठुमरी, तथा सूफी गायकी का मिश्रण पाया जाता है। इन भजनों का प्रचार अब तो

सम्पूर्ण राजस्थान में है लेकिन इसका प्रमुख प्रचलन जोधपुर, सीकर, नागौर, चुरू अर्थात शेखावटी क्षेत्र में अधिक है। इन भजनों की रचनाएँ प्रायः शुद्ध रागों में की जाती है और मध्य लय, मध्य विलंबित लय और द्रुत लय का प्रयोग किया जाता है। रचनाओं में उच्च कोटि के संत साहित्य का प्रयोग होता है तथा भाव प्रदर्शन के लिए विभिन्न प्रकार की तान, मुर्की, आलाप, तिहाई आदि शास्त्रीय गायन के तत्वों का प्रयोग बहुतायत से किया जाता है। सामान्यतया त्रिताल, अद्धा त्रिताल, रूपक, दीपचंदी, कहरवा, दादरा, एकताल के अतिरिक्त कुछ कलाकार 9, 11, 13, 15 मात्राओं की तालों का प्रयोग भी करते है।

संवादी भजनों पर प्रमुख रूप से रजवाड़ी गायन शैली मांड का प्रभाव अधिक पाया जाता है। मांड की पहचान केवल केसरिया बालम...., गीत तक ही सीमित नही है। जब लोक धुनों को पेशेवर संगीतकार अपना लेते है तो धीरे-धीरे वे धुनें शास्त्रीय राग का स्वरूप धारण कर लेती है, ऐसा ही मांड राग के सम्बन्ध में भी हुआ। मांड गायकी के विभिन्न गीत राग मांड के अतिरिक्त अन्य रागों- खमाज, देस, सारंग, काफी, पीलू और पहाड़ी आदि में भी निबद्ध होते है। अतः मांड एक राग होने के साथ ही एक परिष्कृत गायन शैली भी है।

राजस्थान में मांड के अनेक प्रकार प्रचलित है जैसे सोरठ अंग, देसी अंग, खमाज और देस अंग की बंदिशे मध्य लय में सम्पूर्ण गायकी के साथ गाई जाती है। रजवाड़ी मांड गायकी में मुखड़ा ही तालबद्ध होता है उसके पश्चात् अंतरे के स्थान पर विभिन्न भावानुरूप दोहों का गायन अनेक प्रकार के बहलावों के साथ किया जाता है। ऐसी ही कुछ अति प्रसिद्ध रचनाएँ उदाहरण स्वरूप निम्न है।

1. मैं अपने राम को रिझाऊ....
2. मन लाग्यो मेरो यार फकीरी में....
3. अब मोरी राखो लाज हरि....
4. हमको ओढावे चदरिया....
5. प्रभु तेरो नाम....
6. जिनकी लगन राम संग नाहि....
7. प्रभु मोरे अवगुण चित ना धरो....

8. सांवरा म्हारि प्रीत निभाज्योजी....

9. सैयां निकस गये मैं ना लड़ी....

वर्तमान में ऐसे भजनों की सैंकड़ों रचनायें उपलब्ध है, जिन पर यहाँ की रजवाड़ी शैली मांड, शास्त्रीय शैली ख़्याल, उपशास्त्रीय शैली ठुमरी, दादरा, सूफ़ी कव्वाली और लोक संगीत का प्रभाव है। इन भजनों के गायक ख़्याल के साथ-साथ ठुमरी, दादरा और लोक भजनों को भी बख़ूबी प्रस्तुत करते हैं। ये भजन शुद्ध रागों और शास्त्रीय तालों पर आधारित होते हैं।

तृतीय अध्याय, प्रचलित एवं अप्रचलित संवादी भजन के अंतर्गत विभिन्न कलाकारों से साक्षात्कार, पूर्व शोध ग्रन्थों में उल्लेखित, इंटरनेट आदि से प्राप्त भजनों की रचनाओं का संकलन कर इस ग्रन्थ में सरंक्षण और संवर्धन की दृष्टि से स्वरलिपि सहित प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है।

प्रचलित संवादी भजनों को चार भागों में वर्गीकृत कर सूचीबद्ध किया गया है तथा कुछ उत्कृष्ट और वर्तमान में प्रचलित रचनाओं को स्वरलिपि एवं साहित्य सहित उद्धृत किया गया है।

अ- शास्त्रीय रागों, तालों पर आधारित संवादी भजन

उपलब्ध रचनाओं में व्याप्त सांगीतिक तत्वों का विस्तार से विवेचन कर राग और ताल पक्ष के साथ-साथ गायन पक्ष में निहित तान, आलाप, कण, गमक, मुरकियाँ आदि के विश्लेषण से सिद्ध हुआ है कि संवादी भजनों में ख़्याल, ठुमरी, सूफ़ी के साथ ही राजस्थान कि मांड शैली का प्रयोग अधिक पाया जाता है। इसी कारण इन भजनों को अन्य सभी भजन शैलियों से अलग "संवादी भजन शैली" के नाम से उद्घोषित किया गया है। यह भी पाया गया है कि अनेक लोक धुनों पर आधारित रचनाएँ भी गायकी के आधार पर संवादी भजनों के अंतर्गत रखने योग्य है। ऐसी 35 रचनाएँ ग्रंथ में संकलित कर स्वरलिपि सहित प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय प्रकार में ख़्याल शैली पर आधारित शास्त्रीय रागों और तालों जिनका गायन शास्त्रीय संगीत की ख़्याल शैली की तरह किया जाता है। 17 रचनाओं को स्वरलिपि सहित उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। तृतीय प्रकार में लोक संगीत पर आधारित रचनाओं को लिया गया है जो गायन की की दृष्टि से उत्कृष्ट है। ऐसी 19 रचनाओं का संकलन स्वरलिपि सहित प्रस्तुत किया गया है। चतुर्थ प्रकार में जिन भजनों को लिया गया है

वे राजस्थान के ब्रज एवं उसके आस पास के क्षेत्रों मे प्रचलित है। ऐसी 13 रचनाओं का स्वरलिप सहित संकलन किया गया है। ये रचनाएँ उत्तप्रदेश की लोक धुनो से प्रभावित है और इनके रचनाकार कृष्ण भक्त संत जैसे बिन्दु, चन्द्र सखी एवं कुछ लोक गायक जैसे शंभू सिंह आदि है।

चतुर्थ अध्याय, संवादी भजनों के गायक, उनका परिचय, योगदान में उपलब्ध कलाकारों के साक्षात्कार एवं गुणी संगीतज्ञों के विचार, इस शैली का भूत, भविष्य और वर्तमान जानने का प्रयास किया है।

शोध ग्रंथ में प्रसिद्ध संवादी भजन गायकों को शामिल किया गया है। जिनकी सूची निम्नानुसार है-

क्र.	**कलाकार का नाम**	**गायन शैली**
1.	बिहारी कत्थक	मांड, भजन एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक
2.	स्वर्गीय मोईनुद्दीन खां साहब (सीकर वाले)	मांड, भजन एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक
3.	पं. चिरंजीलाल तंवर	मांड, भजन एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक तथा लहरा वादक
4.	श्री बनारसी लाल झोरी	मांड एवं भजन गायक
5.	अली एवं गनी मोहम्मद	मांड, भजन, लोकगीत एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक
6.	डॉ हनुमान सहाय	मांड, भजन एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक तथा लहरा वादक
7.	जयराज गन्धर्व	मांड, भजन एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक
8.	बाबूलाल भाट	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
9.	सांवरमल कत्थक	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
10.	बुन्दू खां	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
11.	मास्टर केसरी लाल गंधर्व	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
12.	तेजकरण राव	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
13.	स्वर्गीय मुंशी खां (बावरा)	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक

क्र.	कलाकार का नाम	गायन शैली
14.	श्याम लाल सराफ	भजन, शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायक
15.	पंडित लखन लाल शर्मा (कोटा)	भजन गायक
16.	बनवारी लाल सेन	भजन एवं उपशास्त्रीय संगीत गायक
17.	मम्मल खां	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक
18.	लालू राम (लाल जी मकराणा)	मांड एवं भजन गायक
19.	राम देवी (रमा कुमारी)	मांड, भजन एवं लोकगीत गायिका
20.	लक्ष्मण द्वारका भांड	मांड, भजन एवं लोकगीत गायक

विभिन्न विद्वानों के साक्षात्कार के दौरान स्पष्ट हुआ है कि राजस्थान में दो प्रकार के संवादी भजन प्रचलित है-

1. शेखावाटी और 2. ब्रज क्षेत्र। दोनों शैलियों कि सांगीतिक और साहित्यिक विवेचना सहित प्रस्तुत किया गया है।

पंचम अध्याय में संवादी भजनों के वर्तमान स्वरूप एवं समाज का विश्लेषण किया गया है। जिसके अंतर्गत इन भजनों के आयोजन एवं प्रस्तुतीकरण, राजस्थान में प्रचलित विभिन्न भजन समारोह तथा अंत में जनमानस पर संवादी भजनों के प्रभाव को निम्न बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया गया है। वर्तमान में राजस्थान में अनेक स्थानों पर निम्नलिखित संवादी भजन समारोहों का आयोजन किया जाता है –

1. **जन्माष्टमी समारोह-** यह संगीत समारोह भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के उपलक्ष में उनकी लीलाओं का गुणगान करने के लिए प्रदेश की विभिन्न समितियों द्वारा कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है।

2. **गेटेश्वर संगीत समारोह (जयपुर)-** इस महोत्सव का आयोजन शिवरात्रि पावन अवसर पर किया जाता है जिसमें कई भजन गायकों को आमंत्रित किया जाता है। गेटेश्वर समिति जयपुर द्वारा लगभग 20 वर्षों से इसका आयोजन किया जाता रहा है।

3. **डांगड़ी की रात भजन संध्या-** यह आयोजन मृतक के परिवार जानो द्वारा मृत्यु के 12वे दिन रखा जाता है, जिसमें चेतावनी भजन गाए जाते हैं।

4. **अमृतगंगा संगीत मंच (नवलगढ़)-** अमृतगंगा संगीत मंच की ओर से दो दिवसीय संगीत का महाकुंभ होता है, जिसमें राजस्थान के सभी चर्चित कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है। इस कार्यक्रम में सम्पूर्ण रात्रि भजन गायन चलता है।

5. **यंत्रेश्वर महादेव संगीत समारोह (जयपुर)-** स्वर्गीय श्री गुलाब जी चाय वाले की जीजिविषा का ही परिणाम है कि यंत्रेश्वर महादेव मंदिर में इस कार्यक्रम को सन् 1967 से उनके दम पर संगीत के दो बड़े समारोह अनवरत करा रहे थे और अब उनके पुत्र श्री शिवपाल सिंह के नेतृत्व में यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। गुलाब जी ने ही इस मंदिर की स्थापना करवाई और हर साल 7 फरवरी को मंदिर का स्थापना दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर भजन संध्या का आयोजन होता है। इसके अलावा हर साल जन्माष्टमी के दिन भव्य कार्यक्रम होता है। इन समारोह की लोकप्रियता के कारण जयपुर ही नहीं अपितु राजस्थान के बाहर से भी कलाकार बिना बुलाये यहाँ आते हैं और गायन, वादन, नृत्य की एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देते हैं।

6. **लाखोटिया महादेव संगीत समारोह (पाली)-** महादेव के प्रिय श्रावण मास के सोमवार को लाखोटिया महादेव के रंगमंच में लगभग 30 वर्षों से रा   स्तरीय भजन संध्या का आयोजन किया जाता है। जहां ऑडिशन में चयनित कलाकारों को सम्मानित किया जाता है। लाखोटिया महादेव मेला मण्डल सेवा समिति के द्वारा इस समारोह का आयोजन किया जाता है।

7. **मास्टर भंवर लाल गंधर्व स्मृति संगीत समारोह (कोटा)-** यह समारोह लगभग 45 वर्षों से श्रावण माह की रात्रि में गंधर्व परिवार द्वारा आयोजित किया जाता है जिसमें प्रदेश से बाहर के कलाकारों को भी आमंत्रित किया जाता है। स्व. मास्टर भंवर लाल गंधर्व रामपुरा संगीत विद्यालय में नृत्य शिक्षक के पद पर नियुक्त थे।

8. **मीरा संगीत महोत्सव (मेड़ता)-** यह समारोह 520 वर्ष से मनाया जा रहा है। इस समारोह में देश के बड़े-बड़े कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है। इस

आयोजन का सम्पूर्ण व्यय सरकार द्वारा वहन किया जाता है, जिसमें (श्री कृष्ण की भक्ति से ओत प्रोत) मीरा बाई के पदों का गायन किया जाता है।

9. **परशुराम महादेव भजन संध्या (पाली)-** यहाँ पर 20 वर्षों से श्रावण मास में राज्य स्तरीय भजन संध्या का आयोजन किया जाता है।

10. **दादू आश्रम फुलेरा (जयपुर)-** 1980 से इस भजन संध्या का आयोजन होता रहा है। स्व. बाबा भगवानदास द्वारा इस भजन संध्या का आयोजन किया जाता था जिसमें बिहारी जी 'कथक', पं. चिरंजी लाल तंवर, मोईनुद्दीन खान साहब, जैसे बड़े कलाकारों को आमंत्रित किया जाता था। भगवानदास जी भी संवादी भजनों के उमदा कलाकार रहे है। वर्तमान में इस भजन संध्या का आयोजन भगवानदास जी के शिष्यों व प्रशिष्यों द्ववारा किया जाता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य राजस्थान की इस भजन शैली को उन युवा गायकों तक पहुँचाना है जो संगीत के क्षेत्र में रूचि रखते है, जिनमें सांगीतिक प्रतिभा है और संगीत के विद्यार्थी है। शोध ग्रन्थ में पुराने भजन गायकों की ऐसी अनेक रचनाओं का स्वरलिपि सहित संकलन कर इसके उत्कृष्ट साहित्य और मधुर रागों में निबद्ध भजनों को प्रचारित करना आवश्यक है।

संवादी भजनों के साहित्य से समाज और मनुष्यों के जीवन में निम्न गुणों का संचार होता है-

1. ईश्वर आराधना से आत्मकल्याण।
2. विभिन्न धार्मिक आडम्बरों से समाज को दूर रखना।
3. अनेक सामाजिक भ्रांतियों और कुरीतियों से स्वयं और समाज को जागरूक करना।
4. ईश्वर के सर्व व्याप्त होने के भाव से मनुष्य चरित्रवान बनता है।
5. दीन और असहाय मनुष्यों की सहायता करने का भाव जाग्रत होता है।
6. मनुष्य जीवन को अच्छे कार्यों में प्रेरित करता है।
7. जीवन में कर्मशील रहना।
8. ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ बनना।
9. समाज एवं राष्ट्र के प्रति दायित्वों का बोध बना रहना

रात्री जागरण के संवादी भजन गायकों एवं वादकों के शोधकर्ता द्वारा लिए गए साक्षात्कार के छाया-चित्र

श्री बनवारी लाल सैन, अलवर

पं. चिरंजीलाल तंवर, जयपुर

मम्मल खां, अलवर

वरिष्ठ तबला वादक श्री दशरथ जी, जयपुर

प्रोफेसर (डॉ.) विजयेन्द्र गौतम, जयपुर

श्री पुरुषोतम राणावत, जयपुर

स्वर्गीय मुंशी खां, जिला नगौर, राजस्थान

श्री परमेश्वर कथक डुंगरगढ़, जिला बीकानेर

भजन गायक श्री कैलाश निबावत मेड़ता, नागोर

श्री पं. मुकुंद क्षीरसागर, जोधपुर

प्रोफेसर (डॉ.) सृष्टि माथुर

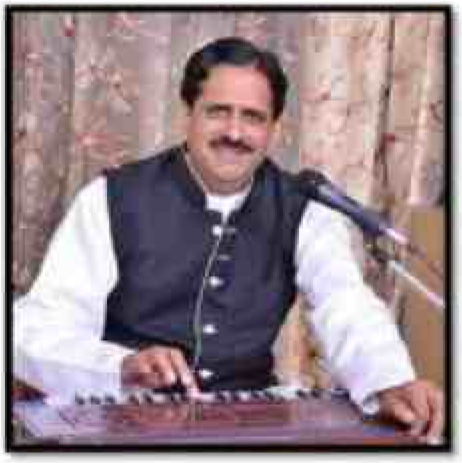

पारंपरिक भजन गायक शिव सिंह तंवर जयपुर

डॉ राजेंद्र माहेश्वरी कोटा

युवा भजन गायक रामस्वरूप दास सीकर

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, रवि (2017); "संगीत में शोध प्रविधि", तौर्यत्रिकम पब्लिकेशन, दिल्ली
2. क्षीरसागर, डॉ. डी. बी. (1992); "जोधपुर रियासत के दरबारी संगीतज्ञों का इतिहास", महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाशन, जयपुर
3. शर्मा, डॉ. वसुमती एवं सांखल, डॉ कमल किशोर (2014); "राजस्थान का संत साहित्य", राजस्थान प्राच्यविधा प्रतिष्ठान, जोधपुर
4. चुण्डावत, पद्मश्री लक्ष्मी कुमारी (1998); "राजवाडी लोकगीत", पंचशील प्रकाशन, जयपुर
5. बसंत (2020); "संगीत विशारद", संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश
6. गोस्वामी, डॉ सुनील (2010); "सूफी संगीत", अंकित पब्लिकेशन, दिल्ली
7. खुराना, शन्नो (1995); "राजस्थान का लोक संगीत", सिद्धार्थ पब्लिकेशन, नई दिल्ली
8. सचदेवा, रेनू (1999); "धार्मिक परम्परायें एवं हिंदुस्तानी संगीत" राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
9. चौधरी, प्रतापसिंह (1995); "राजस्थान : संगीत और संगीतकार", जयपुर प्रिन्टर्स प्राइवेट लिमिटेड
10. गर्ग, डॉ. लक्ष्मी नारायण; "मीरा संगीत", संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश
11. शर्मा, डॉ. सत्यवती (1995); "संगीत का समाज शास्त्र", पंचशील प्रकाशन, जयपुर
12. शर्मा, अमल दाश (1990); "भक्ति संगीत", राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
13. श्रीखण्डे, डॉ. सुलभा (2005); "भक्त मीराबाई पद संगीत सुधा", प्रकाश वर्मा, उदयपुर
14. कुमार, डॉ. अरविन्द (2005); "भारतीय सांगीतिक जगत को तुलसीदास का योगदान", संजय प्रकाशन, दिल्ली
15. निर्विरोध, डॉ. तारादत्त, "राजस्थान का पारसी रंगमंच", एम.आर. इन्टरनेशनल, जयपुर

16. शर्मा, डॉ. नीरा, (2004); "अस्टछाप संगीत-एक विश्लेषण", नवजीवन पब्लिकेशन, निवाई, टोंक

17. शर्मा, डॉ. उमाशंकर (2001); "संगीत का योगदान मानव जीवन के विकास में", ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली

18. कुमावत, डॉ गरिमा (2021); "पं. चिरंजी लाला तंवर स्वर रा मोती", लोटस बुक्स, जयपुर

19. नाग, रवि प्रकाश (1987); "राजस्थानी गीता रो गजरो", साहित्यगार प्रकाशक, जयपुर

20. सिंह, स्व डॉ ठाकुर जयदेव (1994); "भारतीय संगीत का इतिहास", संगीत रिसर्च एकेडेमी, कलकत्ता

21. झा, पं. रामाश्रय (2015); "अभिनव गीतांजली", संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद

22. पाठक, डॉ. अनसूय (2005); "ढूंढाड़ी लोक गीतों का सांगीतिक विवेचन", पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर

23. गोरखपुर, गीताप्रेस (2015); "श्रीरामकृष्णलीला–भजनावली", गोविन्द भवन कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर

24. गुप्ता, रामवती (2016); "रामो के कृष्ण भजन", एम.पी.गुप्ता प्रकाशक, जयपुर

25. विश्वास, डॉ. उपेन्द्र (1989); "मन कस्तुरी हिरना", हेमन्त प्रकाशन, ग्वालियर

26. चौबे, डॉ. सुनील कुमार (1975); "हमारा आधुनिक संगीत", ब्रह्मदत्त दीक्षित

27. गोरखपुर, गीताप्रेस (संवत 2054); "चेतावनी पद-संग्रह", गोविन्दभवन कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर

28. शर्मा, गोपीकृष्ण एवं शर्मा चंद्रावती (1998); "श्रीकृष्णचन्द्र भाजनमाला", आयुष पब्लिकेशन, जयपुर

29. माथुर, डॉ निशि (2011); "अष्टछाप भक्त कवि और पुष्टिमार्गीय सेवा में संगीत", श्रीमती किरण परनामी, राज पब्लिशिंग, जयपुर

30. शर्मा, डॉ. लवली एवं खीची, डॉ. ईश्वर सिह (2004); "राजस्थानी लोकगीतों की शास्त्रीयता", राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

31. सहाय, डॉ. हनुमान (2013); "मरुधरा के भक्त कवि–गायक", राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर

32. शर्मा, डॉ. योजना (2000); "राजस्थानी लोकगीतों की संरचना", विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर

33. भजनामृत (संवत 2032), गीताप्रेस, गोरखपुर

34. भजन-संग्रह, गीताप्रेस, गोरखपुर

35. गोस्वामी, श्री 'बिन्दु जी' (2012); "महाराज मोहन-मोहनी", सीताराम पुस्तकालय, मथुरा

36. बोराणा, रमेश; "राजस्थान के लोक वाद्य", राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर

37. बावरा, डॉ. जोगिन्द्र सिंह (1994); "भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास", ए.बी.एस. पब्लिकेशन, जालंधर

38. शर्मा, डॉ. भारती (2006); "सांगीतिक एवं धार्मिक परम्परा एक अवलोकन", संजय प्रकाशन, दिल्ली

39. क्षीरसागर, डॉ. मंजुश्री (2004); "राजस्थान की संगीत परम्परा", महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर

40. चक्रवर्ती, डॉ. सुमिता (2018); "लोक संगीत में प्रयुक्त वाद्य यंत्र", कनिष्क पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली

41. अग्रवाल, भूमिका (2013); "बहुमुखी बाबा स्व श्री बिहारी लाला कत्थक का व्यक्तिव एवं कृतित्व", राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

42. कुमार, अशोक (2023); "संगीत रत्नावली", अभिषेक पब्लिकेशन, नई दिल्ली

43. भल्ला, एल.आर (1992); "राजस्थान का भूगोल", कुलदीप पब्लिकेशन, अजमेर

44. सिंह, ओंकार नारायण एवं शुक्ल, दिनेश चन्द्र (1992); "राजस्थान की भक्ति परंपरा एवं स्वरूप", राजस्थावनी ग्रन्थागार, पृष्ठ स.25

45. गौतम, डॉ. विजयेन्द्र (2021), "राग लक्षण परम्परा एवं लक्षण गीत", राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर

प्रकाशित शोध पत्र

2024

ISSN 2231-1041

स्तोम
STOM

कलाभिव्यक्ति का माध्यम

यूजीसी-केयर सूचीबद्ध, पियर रिव्यूड वार्षिक शोध पत्रिका
USC-Care enlisted Peer Reviewed Annual Research Journal
वर्ष-24, विशेषांक-2 | Year-24, Special Issue-2

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, जयपुर (विशेषांक) | International Conference, Jaipur (Special Issue)

'शिवम्' सांस्कृतिक मंच, छपरा

13.	Applying Digital Media to Protect Intangible Heritage : A Case Study of Bengali Folk Dances	Puspa Das	68
14.	लोक संगीत : आध्यात्म और आनंद का स्रोत	यश संजय देवले	75
15.	The Hybridization of Culture during The Age of Folk-Tech	Dr. Trilok Singh Kulwant Singh Mehra	80
16.	लोक संगीत, पर्यटन, प्रबंधन तथा व्यावसायिक आयाम	डॉ दुष्यंत त्रिपाठी	86
17.	गुजरात का लोकसंगीत : आध्यात्मिक आनंद का स्रोत	डॉ. विश्वास विजयकुमार संत	90
18.	गुजरात के लोक संगीत में प्रयुक्त होने वाले ताल वाद्यों का प्रयोग	डॉ. केदार मुकादम	94
19.	Kaadugollara Padagalu – A Study	Vasu Dixit Poornima Rajini	100
20.	Fundamentals of Indian Culture through the Prism of C. Rajagopalchari's ideas	Pinku Jha	107
21.	समाज के विशिष्ट अंग अनाथ बच्चे : उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक लोक संगीत	पायल कुमारी डॉ. नेहा जोशी	112
22.	लोक संगीत : कल और आज (एक प्रयोगात्मक अध्ययन)	जयदिप लकुम प्रो. गौरांग भावसार	117
23.	लोक संगीत का नंदनवन 'मेलघाट'	डॉ. सरिता संजीव इंगले	121
24.	हाड़ौती क्षेत्र की लोक गायन–शैली 'तेजाजी' का सांगीतिक एवं साहित्यिक विवेचन	राजेश कुमार डॉ. विजयेन्द्र गौतम	131
25.	Cultural Diversification in the state of Assam: A comparative study of Assamese Culture and its significance in the present time	Manisha Sharma	141
26.	The Divinity of Nepalese Folk Musical Form Dewsi and Bhailo in Sikkim	Ashish Shankar (Sunar)	146
27.	Beyond the Digital Memory : Folk Performances as 'Site of Mediation'	Dr. Anirban Kumar	152
28.	Technology used in Indian Folk Music & Instruments	Dr. Snehal D. Shembekar	157
29.	Folk Music Tradition of Tamil Nadu	Dr. C. Lalithambal	161
30.	लोकनाट्य 'भवाई' में रंगतंत्र	प्रा. राकेश मोदी	165
31.	Unheard Voices from the Margins: Dalits and Punjabi Folklore	Dr. Sunny Kumar	170
32.	नेपाल का नेवारी संगीत, एक आध्यात्मिक आनंद का स्रोत : एक अध्ययन	मोहन शोभा महर्जन डॉ. राजेश केलकर	174
33.	भारत के समकालीन कला परिदृश्य पर आधुनिकता एवं तकनीक का प्रभाव	डॉ. अंजु शर्मा	178

हाड़ौती क्षेत्र की लोक गायन–शैली 'तेजाजी' का सांगीतिक एवं साहित्यिक विवेचन

डॉ. विजयेन्द्र गौतम** राजेश कुमार*

शोध–सारांश

कहा जाता है कि किसी क्षेत्र–विशेष के विषय में जानना है तो वहाँ की संस्कृति और संगीत को समझना पर्याप्त होता है। राजस्थान को जानने और समझने के लिए ग्रामीण अंचल में प्रचलित कला और संगीत को जानना आवश्यक है। इसी प्रकार, राजस्थान का हाड़ौती अंचल जो भौगोलिक दृष्टि से दक्षिण–पूर्व में स्थित है, का पारंपरिक संगीत अत्यंत मधुर, सहज और इतिहास को समेटे हुए है। यहाँ के लोकदेवी–देवताओं की प्रशस्ति में गाये जाने वाले गीत आज भी जन–जन के मानस पटल पर अंकित हैं इसी प्रकार की एक शैली है– तेजाजी।

शोधकर्ता के पिताजी इस शैली के प्रसिद्ध गायक रहे हैं और वह स्वयं भी इस गायन–शैली के प्रति बचपन से ही आकर्षित है। विषय–सामग्री शोधार्थी ने अपने गायक पिता, अनेक गायकों से साक्षात्कार और इन्टरनेट से प्राप्त की है। तेजाजी गायन की लोक शैली की सांगीतिक और साहित्यिक विशेषताओं को संगीत के पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास इस शोध–पत्र द्वारा किया गया है।

राजस्थान में अनेक महान् व्यक्तियों का जन्म हुआ है जिन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त बुराइयों को मिटाने के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर सामाजिक चेतना का संचार किया। ऐसे ही महापुरुषों में एक नाम है तेजाजी। तेजाजी ने अपने वीरतापूर्ण कार्यों से समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया है। ग्रामीण क्षेत्र में लगभग एक हजार वर्षों से भी अधिक समय से उनकी आराधना और भक्ति की जाती है जिसका सशक्त माध्यम लोक संगीत है। आधुनिक पीढ़ी ग्रामीण संस्कृति से दूर होती जा रही है तथा यह विलुप्त होने के कगार पर है। वर्तमान में शहरी और युवा पीढ़ी भी इस गायन–शैली और तेजाजी द्वारा किये कार्यों को समझ सके, इसलिए इस शोध–पत्र में तेजाजी गायन की सांगीतिक विशेषताओं के साथ इसके साहित्य और सामाजिक महत्त्व को रेखांकित किया गया है।

मुख्य शब्द : *तेजाजी, लोक गायन, भूपाया, दोवन्या, अलगोजा, घोड़ी*

शोध प्रविधि : *प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत*

तेजाजी का जन्म एवं परिचय–

तेजाजी का जन्म नागवंशी क्षत्रिय जाट परिवार में विक्रम संवत 1130 माघ सुदी चौदस (गुरुवार 29 जनवरी 1074, अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार) के दिन खरनाल में हुआ था। उनके पिता राजस्थान में नागौर जिले के खरनाल के मुखिया ताहड़ जी थे। उनकी माता का नाम राम कंवरी था जो गणतंत्र त्योद (किशनगढ़, अजमेर) की प्रमुख थीं। तेजाजी की माता और पिता भगवान शिव के उपासक थे। माना जाता है कि माता राम कंवरी को नाग–देवता के आशीर्वाद से पुत्र की प्राप्ति हुई थी। जन्म के समय तेजाजी की आभा इतनी मजबूत थी कि उन्हें तेजा बाबा नाम दिया गया था।

किशनगढ़ के पास सुरसरा में सर्पदंश से उनकी मृत्यु भाद्रपद शुक्ल 10 संवत 1160 (28 अगस्त 1103) को हो गई तथा उनकी पत्नी पेमल भी उनके साथ सती हो गई। किंवदन्ती है कि उस साँप ने उनकी वचनबद्धता से प्रसन्न हो कर उन्हें वरदान दिया। इसी वरदान के कारण तेजाजी भी साँपों के देवता के रूप में पूज्य हुए। गाँव–गाँव में तेजाजी के देवरे या थान में उनकी तलवारधारी अश्वारोही मूर्ति के साथ नाग देवता की मूर्ति भी होती है। इन देवरों में साँप के काटने पर जहर चूस कर निकाला जाता है तथा तेजाजी की तांत बाँधी जाती है। गाँव का चबूतरा 'तेजाजी का थान' कहलाता है।

*शोध छात्र, राजकीय महाविद्यालय, बूंदी
**आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, संगीत गायन, राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर, राजस्थान

तेजाजी के निर्वाण दिवस भाद्रपद शुक्ल दशमी को प्रतिवर्ष तेजादशमी के रूप में मनाया जाता है। तेजाजी के जन्म के बारे में मत है–

जाट वीर धौलिया वंश गांव खरनाल के मांय।
आज दिन सुभस भंसे बस्ती फूलां छाय।।
शुभ दिन चौदस वार गुरु, शुक्ल माघ पहचान।
सहस्र एक सौ तीस में प्रकटे अवतारी ज्ञान।।

तेजाजी गायन–शैली का इतिहास

वीर तेजा या तेजाजी एक राजस्थानी लोक देवता है। उन्हें शिव के प्रमुख ग्यारह अवतारों में से एक माना जाता है तथा राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, उत्तरप्रदेश और हरियाणा आदि राज्यों में देवता के रूप में पूजा जाता है।

राजस्थान में ऐसे अनेक लोक देवता, जैसे– रामदेवजी, गोगा जी, भोमिया जी आदि प्रसिद्ध हैं जिनकी भक्ति में श्रद्धालुओं द्वारा विभिन्न प्रकार के गीत गाए जाते हैं. इसी प्रकार तेजाजी भी लोक संगीत की वह विधा है जिसे धार्मिक लोक संगीत की श्रेणी में रखा जा सकता है। अपनी सम्पूर्ण तपस्या और साधना से लोक कल्याण के अनेक कार्य करते हुए समाज में व्याप्त अनेक बुराईयों और गलत प्रथाओं के प्रति जन–चेतना जागृत करने का काम तेजाजी ने किया। इसीलिए जनता इन्हें भगवान का दर्जा देते हुए आज भी इनकी आराधना करती है। इस आराधना का माध्यम संगीत और साहित्य हजारों वर्षों से प्रचलित है।

यूँ तो तेजाजी गायन की परंपरा सम्पूर्ण उत्तर भारत के लोकअंचल में विद्यमान है लेकिन राजस्थान के हाड़ौती अंचल का तेजा जी गायन हमेशा ही आकर्षित करता है। समाज का हर वर्ग इन्हें अपना देवता मानता है। अनेक गाँव और शहर में तेजाजी के मंदिर स्थापित हैं तथा हर वर्ष उनके जन्म दिवस पर बड़े–बड़े मेलों का आयोजन होता है। इन मेलों में तेजाजी–गायन मुख्य आकर्षण का केंद्र होता है।

सांगीतिक विवेचन

विभिन्न लोक कलाकारों का दल तेजाजी गायन सामूहिक रूप से करता है लगभग पाँच से सात कलाकार अलगोजा, ढोलक, मंजीरा और एक या दो प्रमुख गायकों के साथ, सभी वाद्य वादक भी गायन करते हैं। ये सभी कलाकार पारंपरिक परिधान सफेद धोती, कुर्ता और रंगीन साफा पहने हुए रहते हैं। हाड़ौती के बूंदी क्षेत्र में डुगआरी, तालेड़ा, हिण्डोली, अँतरदा, तलवास, देई, नैनवा, सिलोर, नोताड़ा नोपत, बुखादीत, बूंदी आदि स्थानों पर बड़े–बड़े मेलों का धार्मिक आयोजन होता है जिसमें अन्य ग्रामीण कलाकार आमंत्रित किये जाते हैं। कलाकारों का दल 2 से 3 दिन तेजाजी गायन करते हैं क्योंकि तेजाजी गीत के साहित्य में उनके जीवन की सम्पूर्ण कथा को अभिव्यक्त करना होता है। वर्तमान में तेजाजी का गायन एक दिन का भी होने लगा है जिसमें उनकी कथा के एक या दो भागों का ही गायन करते हैं। हाड़ौती क्षेत्र में तेजाजी गायन की दो धुनें प्रचलित हैं, एक धुन तो मेले के दिन मंदिर में गाई जाती है तथा दूसरी धुन मेले से पूर्व कलाकारों का दल जब मेलों के लिए प्रस्थान करते हैं तो गाँव–गाँव से गुजरते हुए गाते–बजाते चलते हैं. इसमें इनके साथ एक मिट्टी का बना हुआ पात्र (धूपाड़ा) होता है, जिसमें अग्नि जलाकर घी डालते हुए चलते हैं. इसके पीछे यह मान्यता है कि वे गाँवों का शुद्धिकरण करते हैं तथा विभिन्न वाद्य यन्त्र, जैसे– शंख, ढोलक, झालर, मंजीरा के साथ गायन करते हैं। तेजाजी के इस गायन को दुगुनी लय में गाते हुए चलते हैं, इसे लोक भाषा में दोवड़या कहते हैं। कुछ कलाकार कपड़े अथवा लकड़ी की घोड़ी बना कर, जो श्रृंगार की हुई होती है, अपने कंधे पर लेकर चलते हैं। इन कलाकारों का दल नृत्य एवं गायन करते हुए यात्रा पर निकल पड़ते हैं तथा रास्ते में पड़ने वाले किसी तेजाजी मंदिर पर रात्रि विश्राम करते हैं।

तेजाजी गायन को एक प्रकार के संवादी लोक भजन श्रेणी में रखा जा सकता है जिसमें तेजाजी का उनकी भाभी, माँ, घोड़ी, पत्नी और समाज से उनके जीवन में घटित होने वाली विभिन्न घटनाओं का वर्णन है। यह गायन बहुत ऊँचे स्वर में किया जाता है अधिकतर तार सप्तक के स्वरों में जोरदार और खुली आवाज में किया जाता है जो बिना किसी ध्वनि विस्तारक यन्त्र के मीलों दूर सुनी जा सकती है। आजकल विभिन्न मंदिरों में इनके ऑडियो बजाते हैं। तेजाजी गायन में ऊँचे स्वर के साथ ही विशेष प्रकार की गमक और मींड का प्रयोग अत्यंत कर्ण प्रिय होता है।

अलगोजा, ढोलक और मंजीरा के साथ कहरवा ताल में मध्यम गति से यह गीत गाया जाता है। यह गायन प्रमुख रूप से तीन स्वरों पर आधारित रहता है जो शुद्ध षड्ज ऋषभ और गांधार है। पंक्ति के अंत में धैवत की गमक

और मींड तथा ऊपर मध्यम स्वर के कण का प्रयोग हृदयस्पर्शी होता है। बहुत लम्बा गायन होने के कारण अलगोजा पर भी यही धुन लगातार बजती रहती है तथा साथी कलाकार उसी पंक्ति का कभी–कभी दोहराव भी करते हैं। इस गीत को स्वरलिपि द्वारा निम्न प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं :

1	2	3	4
धिधीन ता	–कता–	धिधीन ता	–कता–
–सा	ससा	सरे	गरे
–पे	लीग	जानन	संवरो
5	6	7	8
धिधीन ता	–कता–	धिधीन ता	–कता–
ससा	–स	सरा	साध
न र	–धो	ळीजी	हाळ।

बाकि सभी बंद (अन्तरे) इसी धुन पर गाए–बजाये जाते है और बीच–बीच में हीं रे..., हे रे..., जैसे लोक शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है जो लोक संगीत की प्रमुख विशेषताओं में से एक है।

साहित्यिक विवेचन

राजस्थान का इतिहास बहुत सारी वीर गाथाओं और उदाहरणों से भरा पड़ा है जहाँ लोगों ने अपने जीवन और परिवारों को जोखिम में डालकर निष्ठा, सिद्धांतों, सच्चाई और सामाजिक चेतना के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वीर तेजा राजस्थान के इतिहास में इन प्रसिद्ध महापुरुषों में से एक थे। समाज में व्याप्त कुरीतियों, मिथ्या धारणाओं, कमजोर वर्ग को न्याय दिलाने के लिए शस्त्र उठाने, जीव–जंतुओं और प्रकृति की रक्षा के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व दांव पर लगा दिया। तेजाजी द्वारा किये विभिन्न कार्यों और समाज में उनके योगदान का गायन ही तेजाजी लोक गायन के नाम से प्रसिद्ध है।

राजस्थान के अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग भाषाओं का प्रयोग होता है, जैसे मारवाड़ी, हाड़ौती, मेवाड़ी, बागड़ी, शेखावटी, मेवाती, ढूंढाड़ी, मालवी, निमाड़ी आदि। इस गीत में हाड़ौती अंचल की लोक भाषा का प्रयोग हुआ है। धार्मिक संगीत–परंपरा में सर्वप्रथम गणेश, हनुमान, दुर्गा की स्तुति के बाद ही अन्य लोक देवताओं की आराधना की जाती है। इस गीत में लम्बा कथाक्रम होता है, उदाहरणस्वरूप इसकी प्रमुख पंक्तियों को यहाँ उद्धृत करना उपयुक्त रहेगा–

– *पहली गजानन सवरो नर घोड़ीर वाला पाछ सवरा देवी शारदा*
– *गजानन फुलड़ा की माला छड़ावार लाडू को भोक लगाया र देवी क छड़ाया दूध्या खोपरा*
– *थून थाम लगाई घोड़ी वाला राजा ने थाम लगाई राजा ने चुणाया छतरी चूंतरा*
– *रंगबाड़या म हनुमान पुजायो खटकड़ म पुजायो बाबो धुन्दलो*
– *खत जीण धरयो घोड़ी वाला, कठ धरयो छ रंगयो ताजणो*
– *जीण शराण धरयो छर नाया का भाया, खूटीप टकरयो छ हरयो ताजनो*
– *गाड़ी क छन्दयो ताणो नर हाली का भाया, बल तो जोजेर मरया कैरड़ा*
– *थण ठण त्यार कर दिछ धणी मारा, आप पधारो तेजो जाट को*
– *पग पगड़ो गल्यो छर घोड़ी हाला, घोड़ी बराज लड़को जाट को*
– *घोड़ी क एड मारि छर घोड़ी हाला, चल्यो जायछ बण क सासर*
– *मदल्या मदत कर छर घोड़ी हालो, तीजी मदल्या म बण क सासर*
– *नंगर तगास आयो छर घोड़ी आला, कुण बटयो छ लड़को हिन्दू जाट को*
– *घोड़ी सु तल उतरयो र घोड़ी आला, घोड़ी न गिरी छ नागर बेलड्या*
– *ब्याइ सु दोड गल्यो छर घोड़ी आलो, ब्याण क लग्या पगा लगणा*
– *घणा दनाग आया र ब्याई जी मारा बाड नाळाया तेजल लाडला*
– *राधा दोड मली छर गोड़ीजी वाला काई दुखासु छ दुबली*

– बन्दड मारी काई दुखांसुर तूभी पातली
– मण पिसूर मण पोउ बीराजी मारा बारह तो भारया को खिचुबु छयाछ बलोवणू
– थारो मोटो भाग री बान्दड मारी खुका भाग म छ छाछ बलोवणो
– थन रकपा को जोडो छ र जीजाजी मारामारी बान्दड न उडाव भाला चुन्दडी
– मारी बान्दड न खनादो र भ्याईजी मारा दस दन की पावणी
– बला–बला लेजाज्यो भ्याईजी मारादस दन फावणी
– गडी घोडी न सणगारो र हाळी का भाया बान्दड न बठाणो दस दन की फावणी
– खिज्यो राम रमोळ जी साळा जी मारा सासू ससरा जी सू खिज्यो पगा लागणा
– पग पागळा मल्यो छर घोडी जी हाळा घोडी प बीराज्यो लडको जाटको
– मदल्या मदल कर छर घोडी जी हाळा तीजी मदल्याम पिल्या खाळ म
– मीणा सू मीणा बतलाव छर घोडी जी हाळा तांगा प आ रीच तेजल की बन्दडी
– घडी दो घडी रूक जा र तेजल भाया मीणा आ रयाच पिल्या खाल म
– मीणा फट फट भाग्या छर घोडीजी हाळा, एकलो रयो लडको जाट को
– मदल्या मदल कर छर घोडी जी हाळा तीजी मदल्या म घर क आंगण
– राधा दोड गली छर घोडी जी हाळा उंकी माईन राधा भी गली छर उंका बाप न
– अस को चोमासो मत जार देवर मारा अस को चोमास थारो काल छ
– घोडी तेजल सू बतलाव छर धणी मारा अस क चोमास थारो काल
– थू मरबासू डरप छरी घोडी मारी थी डुगाक देदुगु लादगा खातल्या गोदडा
– डुंगर म हाबो लूम्बो छर घोडी जी हाळा घोडी प बेटयो छ लडको जाट को
– घोडी क ऐड मारी छर घोडी जी हाळा चाल्यो जायछ लडको जाट को
– सेल (भालो) भलक तो जावर घोडी जी हाळा सेल बळक छ काळा बादळ म
– ग्वाल्या भाग्या आवछ घोडी जी हाळा काई दुखांसु भाग्या छर ग्वाल्या भाया
– डुंगर म लाया(आग) लाग री छर घोडी जी हाळा चारो बळ रियो छ गौंव घास को
– लाया सु छोडो टळ जा धणी मारा लाया बळछ बनी को बसक(सर्प) देवतो
– थू मरबासु डरप छरी घोडी री मारी थन भी देदुगुं डुगाक लादगा खतल्या गोदडा
– घोडी क ऐड मारी छर तेजल जा रियो छ बळती लाईम
– घोडी सु तळ उतरियो र तेजल धणी घोडी बांधी छ बळता दूठक
– घोडी सु तेजल बतलारयो घोडी मारी कश्या बझाया बळती लायी न
– आधी लाय भी बझाई र तेजल सूरा आधी लाया पगा सू रूंदळी
– झाड बोल्डया को जलरयो छर धणी मारा इग भी बळरियो छ हार बळरियो छ बनी को बसक देवतो
– बसक (सर्प) दाबो दियो छर तेजल सूरो दाबो भी दियो छ बसक देवतो
– ग्वाल्या न हाको पाड छर ग्वाल्या भाया दुग्ध भी लाज्यो लछमा गायको
– लछमा तो पर (पिछले साल) की बसुकी छर घोडी जी हाळा असुकी–बसुकी लछमा डोरडी
– लीज्यो हरि को नाग ग्वाल्या भाया हरि का नाग सु लछमा भी झरी हो जाव

– दुध खीम लावा र तेजल सूरा छुरा बरड भरी छर ग्वाल्या भाया छुरा का दुंना म लाज्यो लछमा गायको दुध
– लेर दुध चाल्यो छर ग्वाल्या भाया दुध ले आया लछमा गायको
– आधो तो दुध पिलायोर तेजल सुरा आधा म सपडायो नाग देवतो
– अबतो चेत कर नर बसक काला थारा चरणाम खडो छ तेजल जाट को
– धन गसू बरी करीर जाटा का भाया गारा तो जोडा की बळगी नागणी
– धन दोड डसूनुर जाटा का छोरा थारी भी घोडी न डसूगु बाया कान म
– धन गसू बरी करी छर बसक बाबा बारा बरसा म जारयो छु मार सासर
– कोल बचन कर जार जाटा का भाया बचना को बांदयो आजे भुरी बामली
– कुण मारी साक धरगो र बसक बाबा चान्द सूरज थारो साकीर जाटा का भाया याका बीचाम बाता राल द
– ये बाचार ब्रम बाच बसक बाबा बचा चुकातो मायको दुध लाज जाव
– गेला मान भी बता दर बसक बाबाकुण धरा म थारी भुरी बामलीया
– छुरा बरड भरी छर जाटा का भाया छुरा क नीच छ मारी भूरी बामली
– उंचा नीच भी छपरा छर तेजल भाया थाक नीच छ मारी काला खेता म भूरी बामली
– तू असल भवानी घोडी मारी बळताक बांधी छी बळतो भी हरयो होग्यो
– कालो–कालो दिखछर धणी मारा बाचा हारियायो भूरी बामल्या
– लाया मान भी बझाई र घोडी मारीलाया की लपटा म सुरत्या काली पगडी
– आग बसक चाल्यो छर तेजल भाया पाछ सु लगाई घोडी लीलडी
– डीली छोडद लगाम र धणी मारा ठोकर सु फोडदु बसक की खोपडी
– हिन्द धरम घटगोरी घोडी मारी बसक मरया सु पराचत(पाप)लाग जाव
– गदल्या गदल कर छर बसक बाबा तीजी गदल्या गद बसक बामल्या
– बसक बाम्या म उळगयो छर बार खडो छ तेजल जाट को
– गेलो मान बता दर बसक बाबा कस्या गेला म जाया नन्दी बनास प
– गेला तीन फट छर घोडी हाळा बचलो गेलो जाव छ नन्दी बनास प
– घोडी क ऐड मारी छर तेजल भाया चाल्यो भी जारयोछ नन्दी भी बनास प
– नन्दी न डाबा छोडदय र घोडी र मारी घाट की डुबी पारस पीपळी
– अस को चोमासो याही तरजेर धणी मारा छपर प छन्दवा ताण नर धणी मारा अस को चोमासो आपण झारला
– कीरान हाको पाड नर धणी मारा घाटो उतार नर नन्दी भी ये बनास को
– नावा तो टूटी पडी छर तेजल भाया नावा की ले गया खेवण्या छोरा छोरी खेलबा
– थारो घाटो छुडा दुर कीरा का छोरा घाटो छुडादु नन्दी बनास को
– लक आव लक जाव छर घोडी हाळा थारी भी नाई का आव छर नन्दी भी ये बनास प
– हीवडा की नाव बणा लर धणी मारा मारा बारू र पगल्या की बणजावगी खेवण्या
– पग पागण गल्यो छर धणी गारा आण बराज तेजल लाडलो
– घोडी नन्दी म डाक गीर तेजम सूरा घोडी भी तर छ जल की माछलिया
– नंगर तगास आयो छ घोडी हाळा आई भी नन्दीम घोडी हालो बजाव

– रंग लरया को जाप छर घोडी री पगल्या की भीझी लावणी गोचबिया
– सारो मारो नही छर धणी मारा पगल्या क लुम्या मंगर मांछला
– खाडो कागड धणीर मारा पगल्या की झाडो मंगर माछला
– किरान नावा पटकीर घोडी आल नावा पटकी छर देढ सी
– नावान डोडी करलो कीराका भाया घोडी भी आरीछ घोडी भी मारी लीलडी
– एक हलोको मारयो छर तेजल सूरा दुजा हलोका म तेजल भाया तीजा भी हलोका म नन्दी की तीरप
– घोडी सू तक उतरछर तेजल सूरा घोडी भी छोडी छर बालू रेत प
– आला धोया नचोया र घोडी हाला आला भी नचोया सुखा परल्या
– घुठ्या चन्दन घस र घोडी हाला तलक खाडछ सालग रामजी क
– झूक झूक डोका देउचु सालग बाबा छोटीसी उमर म मारी लज्या राखज्यो
– झट पट सेवा समेटीर सालग बाबा तेजल योभी जाट को
– सावल इकी घोडी प बेटयो छ और बेटयो छर लडको जाट को
– धीरा धीरा पाव उठा जेर घोडी मारी परबताडा बाका छ खुडकी थारी नेवरया
– एक गदल उलांगी र घोडी र मारी दूजी गदल्या म बंदरी नाथ क
– घोडी सू तक उतरयो र तेजल सुरो घोडी भी बांधी छ बांधी डाल कंदीर क
– पट मन्दर का खोलो नर पंडावो भाया दरसण करगो लडको जाट को
– खड–खड पेडया छड छर बदरी र बाबा छरसण करगो तेजो जाट को
– लुल–लुल डोका देव छर बदरी र बाबा छोटी सी उमर म अर उमर गर लज्या भी मारी राख ज्य
– खड–खड पेडया उतर छर गौ रखवालो पडया उतर छर बदरी नाथ की
– गेला गान भी बता दोर पंडावो भाया कस्यो गेलो जावगो नवल बाग म
– गेला तीन फट छर घोडी हाला बचलो गेलो जावगो नवल बाग म
– घोडी क पग पगड मल्यो छर घोडी हाला आसण प बिराज्यो लडको जाट को
– घोडी डकातो जारयो छर तेजल भायो नवल बाग म
– कोट बागा को आग्यो छर घोडी मारी ताला जुडया छ बिजल सार का
– कोट बागा को डाकूगूं र धणी मारा और डाकूगूं नवल बाग म
– घोडी क ऐड लगाई र तेजल भाया घोडी भी डाकी छ कोट नवल बाग को
– घोडी उतार होग्यो छर तेजल सूरा घोडी भी छोडी छ नवल बाग म
– माळी की बाण्डीया उडा री छ तेजल सुरा रूकळी कर रिछ नवल बाग की
– घोडी न डोडी लेलर तेजल सूरा रूकाळी करू छू नवल बाग की
– घोडी भी सुनी चरगी माल्याकी छोरी बागा की खावगी नागर बेलडी
– गाल्या की पुकारण मी छर धणी मारा बागा को बेल्यो छ गरयो गोगरो
– सावली सूरत सरदार धणी र मारा घोडी भी दीख छ और दीख छर हाथा म सन्दो दयो शेल
– जीजा जी थारा दीख छरी माल्याकी छोरी घोडी छ चाक लीलडी
– आज काजली तिजा छर मोठल राणी हिन्दा हिन्दगी मोठल लाडली

– पहली सहेल्या हिन्द गिर भोडळ राणी पाछ भी हिन्दगी भोडल भी लाडली
– भोडल राणी हिन्द बिराजर जाटी की छोरी हिन्द भी हिन्द छ बागा का काला आग प
– छोरया कामडया मारछर भोडळ राणी नाग बुलाव परणया श्याम को
– झुट घणी बोल छर भोडळ राणी पळ्या पून्यू को और पून्यु को सूरज उग आयो
– सागी नजरया सू नाळ नर भोडळ राणी पणघट पर बैठो छ लडको जाट
– आछी आण समाली र धणी मारा थाक लेक तो भोडळ जाण मरगी
– घर खेती को चाळो छरी भोडळ राणी खेती का चाळा सू मही न सर
– आग भोडळ होई छर तेजल सूरा पाछ सू लगाई बछेरी लीलडी
– घोडी उतारण होग्यो छर तेजल सूरा घोडी न नीरी छ बनकी बणस्टया
– टूटा पलंग बछाया घोडी र हाळा टूटा पलंगा म बठयो छ तेजल लाडलो
– लेर घी जाव छर भोडळ राणी घी का साराम लाजो अलस्यो तेल
– झट पट भोजन त्यार कर छर सासू न सान्दया छ तुलछया बाकळा
– भोजन करबान पधारोन जवाई राजा सासू जी मलछ तुलछया बाकळा
– थासु सात सलाम अन देव बाबा थारा दिया मनवया का फूतळा
– आछयो सासर लायो छर धणी मारा मन नीरी छ बनकी बणस्टया
– रूश्या खावन न मना जेरी भायली मारी चाल्यो भी जास्यो छ लडको जाट को
– घडीक ऊबो रज्ये र जीजाजी मारा आज की मजबान्या गुर्जर की क बारण
– थसू मारी नही सदगी री गुर्जर की छोरी घोडी मारी खावछ बागा की नागर बेलडिया
– आग गुर्जर की होगी छ र जाटा का लडका पाछ भी लगाई लीलण बाछडी
– घोडी उतारण होग्यो छर तेजल सूरा घोडी न नीरी छ नागर बेलडी
– ढोल्या पलंग बछाया र गुर्जर छोरी उन भी बछाया मसूरया गीदडा
– झट पट भोजन बणाया र जीजाजी मारा खासा बदो नर तैजल जाट को
– जल की झारी भी मली छर गुर्जर की छोरी रंग्या झाण्डी को मल्यो बीझणू
– रज रज भोजन जिमो नर खावन मारा बाहीरो उडावा छा भोडळ लाडली
– एक नवाळो लियो छर तेजल सूरो दुजो भी नवाळो तेजल सूरो तीजा भी नवाळा म कूळळो कर लियो
– ढोल्या पलंग बछाया छ गुर्जर की छोरी वाग बछाया मसूरया गीदडा
– तेजल भोडळ सोगया छर सावतर तैजल याका बिचाम मल्यो छ सन्दोडयो सेलडो
– गाया छोरडा लेग्या छर जीजा जी मारा बछडा राम्ब छ गाया का बाडाम
– भागी ठाकर क चल जारी गुर्जर की छोरी जागीरिया खाव छ थारा गांव की
– क्याई कागा सू आई छर गुर्जर की छोरी क्याई कागा सू आयी छ गार बारण
– गाया चोरखा लेग्या छर ठाकर का छोरा जागरिया खाव छ मारा गांव की
– रोती गुर्जर की आव छर ठाकर का छोरा नेणा म जूगरया छ सावण भादवा
– ठाकर गेलाम गीया छरी जीजाजी मारा छोरा गया छ मामा क राखी बानबा
– भागी दोडी चली जारी छर गुर्जर की छोरी ढोला क दमोळ लायगो तेजल जाट को

– भागी ढोली क जारी छर गुर्जर की छोरी ढोली का क बारण
– सूतो होव तो जाग नर ढोली का छोरा बार उभी छ लडकी हिरा गुर्जर
– गाया चोरडा लेग्या छर ढोली का छोरा ढोला का धमोड जाय गो तेजल जाट को
– ढोल फुटा पडया छरी गुर्जर की छोरी डाकणा लेग्या छोरा छोरी खेलबा
– नया ढोल मण्डा दूर ढोली का छोरा डाका घडा दू कडवा नीम का
– मारी दुख छ बाई अस्त गुर्जर की छोरी मारी ढोलण की पाकी छ छटटी अंगुली
– धन खाज्यो काळो नाग ढोली का छोरा थारी ढोलण प पड जाज्यो आभा बिजळी
– गन भी काई सरापरी गुर्जर की छोरी करगा का मण्डया नही टल
– भागी गुर्जर की आरी छर तेजल सूरा गढ कभी या तो बारण
– ढोल फुटा पडया छ जीजाजी मारा छोरा खोटा डाकान लेग्या खेलबा
– थाली को घेरो देदी जेरी गुर्जर की छोरी थाली का घेरा म तेजल जावगो राड म
– खट जीण धरयो छरी गुर्जर की छोरी खट धरयो छ मारो रंग्यो ताजणों
– ताजेरी तीर कबाण गुर्जर की छोरी हाथा म देदी ज्ये सन्दोडयो सेलडो
– लारा लारा लेचालो र धणी मारा भाला बुझाउगु मीणा की राड म
– लारा नंही लेचालू र भोडळ राणी मीणा बोल तरीय लायो छ तेजल राड ग
– थाली को घेरो देदयो छर गुर्जर की छोरी थाली का घेरा सू तेजल भी गयो राड म
– गदल्या गदल कर छ घोडी हाको तीजी गदल्या ग पुछ गयो बानडी डुगरया
– मीणा सू मीणा बतलारया मीणा ओ भायागाया को भालो आग्यो बाण्डी डूगरया
– मीणा सगट भेला होया घोडी मारी मीणा आया छ पूरा डेढसो
– मीणा जार दकाल्या र मीणा ओ मारी गाया न लीया और लीया यार सूनी भी राम्भ बाछडा
– पाछो बायड चलजार घोडी र हाका थारी घर हाळी फरा दंगा धौळी कावळ्या
– तेजल न गोडी माली छर तेजल सूरा भाला भी बारयो छ मीणा क उपर
– मीणा फट फट भाग्या छ र तेजल सूरामीणा भाग्या बाडी डुगरया
– मीणा सू मीणा बतळाया मीणाओ भाया गाया भी समळाद और रखगा काणो खेरळो
– गाया आग भी कर दीछ तेजल सूरो पाछ सू लगाई और लगाई र घोडी भी याती लीलडी
– गदल्या गदल कर छर घोडी र हाको तीजी गदल्याम गुर्जर की क बारण
– गुर्जर की हाको पाड छर तेजल सूरो गाया भी लायो छ पूरी डेढ सौ
– घडी क उबो रजार जीजा जी मारा आरत्यो उतारगी गढ की गुजरी
– गण गण गाया समाळी गुर्जर की छोरी और समालीर पूरी भी येतो डेढ सौ
– गाया न राण्डा कर लायो र जीजाजी मारा गाया को गल्यायो साण्ड धडुकतो
– आछी जाटणी जायो छर जीजाजी मारा थारो दादरीयों(सीनो) चोडो छ कमरया छ थारी पातळी
– यू काई बोल मार छर गुर्जर की छोरी बेल सालछ मार साग काळज्य
– घोडी क ऐड मारी छर गुर्जर की छोरी थारा काण्या न लाउगु बाण्डी डुंगरया सू
– घोडी डकालो जाय छर तेजल सूरो बाण्डी डुंगरया

– मीणा जार दकाल्या र मीणाओ मारो काण्यो भी देदो र और देदो न साण्ड पहुकतो
– मीणा भी भेळा हो गया छर तेजल सूरा मीणा हो गया छ ढेढ सौ
– फली थाही बोलो नर मीणाओ मीणा भागा पाछ भी बोलगो लडको जाट को
– मीणा न बीचाग लेल्यो छर तेजल सूरा भाला बारया छ तेजल के उपर
– तेजल घायल भी करदयो छर मीणाओ इक रोम रोम म भालो भी लाग रयो
– तेजल घोडी सू बतळारयो र घोडी मारी आपण चालगा काला की भूरी बामल्या
– गदल्या गदल करछर तेजल सूरों तीजी गदल्या ग काला की भूरी बागल्या
– तेजल घोडी सू बतलारयो घोडी मारी थू चलजा आपणा गांव म
– कश्या ऐकली आई छर घोडी मारी कहा तो मल्याई तेजल लाडलो
– साची साची बात खद नरी घोडी मारी कहा मल्याई मारो देवर लाडलो
– गुजरी की गाया न लेबा गयो छोर भोजाई मारी बाकी रम्यो छो काण्यो खेरडो
– मीणा न गायल कर दयोर भोजाई मारी रोम रोम भाला भी उक लाग गया
– भोडळ सु पुकारण जाव छ घोडी मारी चाली जाव छ गुजरी क बारण
– एकली कश्या आई री घोडी मारी मारा खावन न काहा मल आई
– मीणा तेजल क झगडो होयो छर भोडळ राणी उका रोम रोम म भाला लाग गया
– तेजल घायल हो ग्यो छर भोडळ राणी मू मल्या छु काला की भूरी बामल्या
– रोव छ सारो परिवार घोडीर हाळा और रोव छ भोडळ पातडी,
– सब मल लेरा चाल्या छर घोडी मारी और चाल छर बीचा म भोडळ पातडी
– आग घोडी भी होई छर तेजल सूरा लेई चाली छ काळा की भूरी बागल्या
– बार निकळ आजे नर बसक काळा बार खडो छ तेजल लाडलो
– बोल्या बचन सगालो र बसक बाबा तेजल आग्या छ थारी बागल्या ग
– धन कश्या भी डसूगू तेजल सूरा थार रूम रूम म भाला भी थार लागरया
– बसक माई सू बतलारयो माता री इन जस्या को जस्यो करदु थार तेजल लाडला न
– भाला मार भी जग जग लागरयाछ बसक बाबा अछुती कोन मारी ठाम
– देशा देशा म पूजादू मातारी मारी देशा देशा थारा लाल न
– जीब मारी अछुती र बसक बाबा शरीर म लागरया छ भाला
– जीबडल्या नाग डसा छर बसक बाबा घोडी न डस छ बाव कन म
– भोडळ सती होव छर घोडी हाळा गोडा प लेल्यो छ तेजल पतळो
– रोव छ सारो परिवार तेजल सूरा और रोव छ मागा गोसाल

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि लोक संगीत का संस्कृति के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण योगदान है। लोक साहित्य जब संगीत में निबद्ध होकर जनमानस की वाणी बन जाता है तो वह साहित्य दीर्घजीवी होकर भावी समाज और युवा पीढ़ी का प्रेरक और मार्गदर्शक बन जाता है। इस अध्ययन से इस तेजाजी शैली के लोक साहित्य का शाब्दिक एवं सांगीतिक स्वरूप अधिक–से–अधिक लोक साहित्य रसिक, सुधि श्रोताओं और शोधकर्ताओं को सहज ही उपलब्ध हो सकेगा ।

तेजाजी गायक कालूलाल मीणा

तेजाजी गायन के कलाकारों के दल के साथ शोध–छात्र राजेश कुमार

तेजाजी के मंदिर में विभिन्न वाद्य–यंत्रों के साथ प्रस्तुति देते हुए कलाकार

तेजाजी गायन के साथ कच्छी घोड़ी के साथ नृत्य करते हुए कलाकार

सन्दर्भ सूची :

तेजाजी गायन के सन्दर्भ कलाकार जिनका साक्षात्कार इस शोध–पत्र के लिए लिया गया है– कालूलाल मीणा (मोताजा), स्व. गोपाल राव (बाजरा), रामदेवा बेरवा (बाजरा), मदन मीणा (जावटी खुर्द), कल्याणजी बेरवा (बाजरा), कालू बैरवा (छपावदा), हेमराज (छपावदा), सीताराम (छपावदा), ग्यारसी लाल (सावटी), शम्भु मीणा (जरखोदा), केशरीलाल कहार (फतहनगर), जगनाथ जाट (रामनगर), रघुवीर गुर्जर (मोताजा), बालाजी मीणा (मोताजा), रामलाजी मेहता (मोताजा), भोजराज गुर्जर (कल्याणपुरा)।

साहित्यिक संदर्भ : शोधकर्ता के पिता इस शैली के प्रसिद्ध गायक रहे हैं।

लाभ सामग्री के लिए शोधार्थी द्वारा अपने गायक पिता से साक्षात्कार।

ऐतिहासिक संदर्भ : गायकों से साक्षात्कार और इन्टरनेट।

ISSN 2349-4654 Volume - 13 Issue - 1 January 2025

Naad – Nartan Journal of Dance and Music

Refereed & Peer Reviewed Annual Bi-Lingual Journal

UGC-CARE Listed

ISSN
INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INTERNATIONAL CENTRE

Chief Editor: Prof. Ravi Sharma

Former Dean & Head, Deptt. Of Music,
M. D. University, Rohtak - 124001 (Haryana)

Former Director Incharge, School of Performing and Visual Arts,
IGNOU, Maidan Garhi, New Delhi
E-mail: naadnartanjdm@gmail.com | Mob: 09873107335

103

सामाजिक आंदोलनों में संगीत की भूमिका का विश्लेषण

इमनदीप सिंह

शोधार्थी, विजुअल एण्ड परफॉर्मिंग आर्ट्स विभाग,
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

डॉ. राजेश शर्मा

विभागाध्यक्ष, विजुअल एण्ड परफॉर्मिंग आर्ट्स विभाग,
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

108

वृन्दावन की देवालयी दैनंदिनी समाज गायन परम्परा की वर्तमान स्थिति

गंगा प्रिया

शोधार्थी, संगीत एवं ललित कला संकाय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. प्रेरणा अरोड़ा

शोध पर्यवेक्षिका, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

116

राजस्थान की संवादी भजन परंपरा में व्याप्त सांगीतिक एवं सामाजिक चेतना

राजेश कुमार

शोध छात्र, संगीत विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बूँदी

डॉ. विजयेन्द्र गौतम

पर्यवेक्षकः प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर

121

The Study of Changing Nature of Horse Imagery in Indian Visual Art

Amol V. Tote

Research Scholar, Department of Fine Arts,
Rashtrasant Tukadoji Maharaj Nagpur University, Nagpur

Dr. Shashikant S. Rewade Principal

Shri Kala Mahavidyalay, Aaji, Wardha

नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

राजस्थान की संवादी भजन परंपरा में व्याप्त सांगीतिक एवं सामाजिक चेतना

राजेश कुमार
शोध छात्र, संगीत विभाग
राजकीय महाविद्यालय, बूंदी

डॉ. विजयेन्द्र गौतम
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
राजस्थान संगीत संस्थान जयपुर

सार-संक्षेप

भजन गायन अभी तक शोधकर्ताओं और संगीतकारों के लिए उतना चर्चित विषय नहीं है। सभी भजन गायन को एक सामान्य कला मानकर विचार करते हैं, किन्तु मेरे दृष्टिकोण से भारतीय संगीत की सबसे अधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय कला है एवं संगीत के क्षेत्र में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। विदुषी एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी को भजन गायन में ही देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से महिमा मंडित किया गया है। पं. जसराज एवं पं. भीमसेन जोशी उनके भजन गायन के कारण ही जन-जन तक (सामान्य श्रोताओं) पहुँच हो पाई है। वर्तमान में भजन परंपरा के नाम पर डीजे भजन संध्या का प्रचार हो रहा है। भजन के नाम पर तेज और कानफाड़ू संगीत युवा पीढ़ी को परोसा जा रहा है। एक ही तरह की ताल पर की-बोर्ड और ऑक्टोपैड जैसे वाद्यों के प्रयोग से शब्द और साहित्य का महत्त्व न्यून हो रहा है। फिल्मी और लोक धुनों में बेतुके और हल्के साहित्य का प्रयोग भक्त कवियों की रचनाओं को जन सामान्य से दूर कर रहा है। इस प्रकार के भजन साहित्य और संगीत के दृष्टिकोण से अत्यंत निम्न स्तर के होते हैं। आज की युवा पीढ़ी में फिल्मों और डिजिटल सोशल माध्यमों से प्रभावित होकर समूह बनाकर तेज ऑडियो सिस्टम पर नृत्य करते हुए मंदिर जाने की परंपरा विकसित हो रही है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य राजस्थान की संवादी भजन-शैली को संगीत के जिज्ञासुओं और श्रोताओं तक पहुँचाना है। अतः इस शोध-पत्र में संवादी भजनों के विषय में मेरे व्यक्तिगत अध्ययन, विषय-विशेषज्ञों एवं कलाकारों से प्राप्त जानकारी, मीडिया एवं ऑडियो-वीडियो इत्यादि के द्वारा जो भी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है, उसका संक्षिप्त सांगीतिक और सामाजिक चेतना का विश्लेषण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मुख्य शब्द : राजस्थान, संगीत, भजन शैली, संवादी भजन, लोक चेतना, सांगीतिक चेतना, सामाजिक चेतना।

शोध-पत्र

भजन गायन अभी तक शोधकर्ताओं और संगीतकारों के लिए उतना चर्चित विषय नहीं है। सभी भजन गायन को एक सामान्य कला मानकर विचार करते हैं, किन्तु मेरे दृष्टिकोण से भारतीय संगीत की सबसे अधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय कला है एवं संगीत के क्षेत्र में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। विदुषी एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी को भजन गायन में ही देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से महिमा मंडित किया गया है। पं. जसराज एवं पं. भीमसेन जोशी उनके भजन गायन के कारण ही जन-जन तक (सामान्य श्रोताओं) पहुँच हो पाई है। वर्तमान में भजन परंपरा के नाम पर डीजे भजन संध्या का प्रचार हो रहा है। भजन के नाम पर तेज और कानफाड़ू संगीत युवा पीढ़ी को परोसा जा रहा है। एक ही तरह की ताल पर की-बोर्ड और ऑक्टोपैड जैसे वाद्यों के प्रयोग से शब्द और साहित्य का महत्त्व न्यून हो रहा है। फिल्मी और लोक धुनों में बेतुके और हल्के साहित्य का प्रयोग भक्त कवियों की रचनाओं को जन-सामान्य से दूर कर रहा है। इस प्रकार के भजन साहित्य और संगीत के दृष्टिकोण से अत्यंत निम्न स्तर के होते हैं। आज की युवा पीढ़ी में फिल्मों और डिजिटल सोशल माध्यमों से प्रभावित होकर समूह बनाकर तेज ऑडियो सिस्टम पर नृत्य करते हुए मंदिर जाने की परंपरा विकसित हो रही है।

पूजा कोटि गुणम स्तोत्रम स्तोत्र कोटि गुणम जपम,
जपात्कोटि गुणम गानम गानात्परतरम नाहि। (माथुर 9)

भक्ति गायन की महिमा से हिन्दू ग्रन्थ भरे पड़े है। वैदिक काल में वेदों की ऋचाओं का सस्वर गायन किया जाता था। भक्ति संगीत की अनेक शैलियाँ प्रचलित है। आज तक इस देश की भजन परंपरा जीवित और फल-फूल रही है, किन्तु समय, स्थान, संस्कृति की विविधताओं के कारण भजन गायन शैली के अनेक स्वरूप प्रचलित है। राजस्थान के ग्रामीण और शहरी अंचलों में रात्रि जागरण परंपरा के फलस्वरूप एक नवीन भजन गायन प्रचलित है जिसको हमने संवादी भजन कहा है और इस शैली को संवादी भजन शैली कहा है।

राजस्थान में संवादी भजन शैली के प्रभाव वाले क्षेत्र (जिले)

(पीले रंग से प्रदर्शित)

सामान्य समाज में विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक आयोजनों में भक्ति संगीत के कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। ये आयोजन व्यक्ति विशेष और गाँव या समाज द्वारा किये जाते है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति अथवा परिवार विशेष द्वारा किसी के जन्म-दिन, विवाह-दिवस, मृत्यु-दिवस या अन्य किसी शुभ अवसर पर भी अपने निवास अथवा किसी धार्मिक स्थान पर भक्ति संगीत रात्रि जागरण के आयोजन होते रहते है। इसी परंपरा का परिणाम है 'संवादी भजन' जो हमारी सनातन संस्कृति से संबंधित रहा है।

वर्तमान में इस रात्रि जागरण के स्थान पर डीजे भजन संध्या का प्रचार हो रहा है, जहाँ पर एक ही तरह की ताल पर की-बोर्ड और ऑक्टोपेड जैसे वाद्यों का प्रयोग होने लगा है, जिसमें साहित्य का कोई महत्व नहीं है। इस प्रकार के भजन साहित्य और संगीत दोनों ही दृष्टिकोण से अत्यंत निम्न स्तर के होते है। आज की युवा पीढ़ी में फिल्मों और डिजिटल माध्यमों से प्रभावित होकर समूह बनाकर तेज ऑडियो सिस्टम पर नृत्य करते हुए मंदिर जाने की परम्परा विकसित हो रही है। यहाँ तक कि मंदिरों में होने वाले धार्मिक कार्यक्रमों में भी नृत्य के प्रवेश से यह परंपरा और फूहड़ और असांगीतिक बनती जा रही है।

राजस्थान में दो प्रकार के भक्ति संगीत का प्रचलन पाया जाता है–

1. मंच परंपरा   2. जागरण परंपरा

मंच परंपरा में भजन गायन की एक और शैली जो आकाशवाणी से मान्यता प्राप्त है। यह शैली प्रायः आकाशवाणी दूरदर्शन तक सीमित है, किन्तु कुछ प्रतिभाशाली कलाकारों ने इस भजन गायन को बहुत ही उच्च स्वरूप प्रदान किया है। जिनमें हरिओम शरण, अनूप जलोटा, जगजीत सिंह जैसे गायकों का नाम सम्मान के साथ लिया जा सकता है।

राजस्थान में जागरण परंपरा के अंतर्गत दो प्रकार के भजनों का प्रचार है। एक संवादी भजन और दूसरे ब्रज क्षेत्र के भजन।

क्योंकि हमारे शोध-पत्र का विषय संवादी भजन शैली में व्याप्त सांगीतिक और सामाजिक चेतना है अतः यहाँ जागरण परंपरा की संवादी भजन शैली में व्याप्त सांगीतिक और सामाजिक चेतना के विषय में निम्न संदर्भों का उल्लेख करना समीचीन होगा–

पद्मश्री अली मोहम्मद ने राजस्थान की भजन परम्परा के विषय में बताया कि–''यह राजस्थान की विख्यात शैली है इस भजन शैली को सुप्रसिद्ध लोक भजन शैली कहा जाता है। संवादी भजनों की उत्पत्ति के विषय में आपने बताया कि धारवा भजन शैली में पूरे भजन में एक कथा होती है। यह शैली चूरू व बीकानेर में ही प्रचलित है। इसमें एक आदमी के पीछे सहगान (कोरस) में भी गाते हैं। जैसे कृष्ण की कथा आदि। इस भजन शैली के रचयिता चोखा राम जी के शिष्य अमृत राम को माना जाता है।'' (मोहम्मद)

जागरण परंपरा प्रसिद्ध गायक डॉ. हनुमान सहाय ने संवादी भजनों के विषय में बताया कि इन ''भजनों को संवादी भजन नाम देना उचित है और नहीं भी, क्योंकि यह एक अपभ्रंश नाम है। प्रत्येक संप्रदाय जैसे राधा-कृष्ण संप्रदाय, निम्बार्क संप्रदाय, रामानंद संप्रदाय ये जितने संप्रदाय है, ये केवल हमें ईश्वर की ओर ले जाते हैं। इनके जो अनुयायी थे सब मिलकर गाया करते थे। उसी को समाजी या समाज गायन तथा अपभ्रंश होते-होते गाँव के लोग संवादी कहने लगे। इनका शुद्ध नाम तो समाज गायन ही है। ईश्वर और भक्त जब मग्न हो जाते हैं अर्थात् बराबर हो जाते हैं तब दोनों की मुख्यतः बढ़ जाती है, तब इसे संवादी कहा जा सकता है। इस भजन शैली को सनातन भजन शैली कहा जा सकता है क्योंकि जब से ईश्वर है तब से भजनों का उद्‌भव है। चिरंजी लाल जी, मुंशी खां साहब, बिहारी लाल जी कत्थक यह सब संतों के पद गाया करते थे और रागों पर आधारित गाया करते थे। इन भजनों को संतों से उद्बोधित कहा जा सकता है।'' (सहाय)

''सांवर मल कत्थक ने इन भजनों को शिखावाटी शैली'' बताया है और उस शैली के प्रमुख कलाकार बिहारी लाल 'कत्थक' हुए जो बिदासर (बिदासर) के थे, इसलिए इस शैली को शिखावटी शैली कहा।'' (कत्थक)

सांगीतिक दृष्टि से राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में प्रचलित इस भजन गायन पर मांड शैली का पूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। सामान्यतः भारतीय संगीत की विभिन्न रागों में जैसे कल्याण, मांड, हमीर, केदार, सोरठ, देस, खमाज, काफी, कालिंगड़ा, प्रभाती, कान्हड़ा, मालकौंस, तोड़ी, मारवा, पूरिया, जयजैवंती, भीमपलासी, भैरवी, भैरव, रागेश्री, बागेश्री शिवरंजनी, भूपाली जैसी प्रमुख और प्रचलित रागों का प्रयोग किया जाता है।

कुछ अति प्रचलित भजन की रचनाओं में व्याप्त सांगीतिक चेतना को उदाहरण स्वरूप उल्लेखित करना चाहूँगा–

''मैं अपने राम को रिझाऊं...'' मोइनुद्दीन खान मनचला वाले द्वारा रचित यह भजन राग भीमपलासी पर आधारित है। ''मन लागो मेरो यार फकीरी

में...'' भक्त कबीर द्वारा रचित इस भजन को गायक मोइनुद्दीन खाँ साहब (सीकर वाले) ने इसे राग कलावती पर आधारित बताया है किन्तु कलावती में ऋषभ के प्रयोग से एक अन्य राग जनसम्मोहिनी का प्रभाव भी दिखाई देता है। राजस्थान के भजन गायकों और श्रोताओं में यह भजन अत्यंत लोकप्रिय है। इन रचनाओं में शास्त्री या सूफी, और राजस्थान की मांड गायकी का मिश्रण इसे एक अलग ही शैली की ओर ले जाता है जिसे हमने संवादी शैली कहा है।

''अब मोरी राखो लाज हरि...'' स्वर्गीय मोइनुद्दीन खाँ ने राग पूरिया धनाश्री में सूरदास जी के पदों को स्वरबद्ध कर अद्धा तीनताल के माध्यम से संवाद करते हुए मर्म स्पर्शी उद्‌गारों को इस गीत के माध्यम से उद्घाटित किया है। शुद्ध राग गत स्वर प्रयोग के साथ उनका तान कहने का अंदाज विलक्षण है। इस प्रकार की तान सूफी गायकी में सुनने को मिलती है यहाँ संवादी भजनों की विशेष बात है कि इनमें शास्त्रीय तत्वों के साथ सूफी गायन के तत्वों का भी समावेश है। अद्धा त्रिताल का ठहराव के साथ प्रयोग साहित्य की गंभीरता को स्पष्ट करने में सक्षम होता है।

''हमको ओढ़ावे चदरिया चलती बिरिया...'' खान साहब द्वारा निर्गुण संवादी भजन को राग अहीर भैरव में स्वरबद्ध कर कहरवा ताल का सुन्दर प्रयोग किया गया है। भजन की एक-एक पंक्ति, सुनने वालों के मन को झकझोर देती है, इस तरह का प्रस्तुतिकरण इनके द्वारा किया गया है। भक्ति के वैरागी भावों कि सुंदर अदायगी, कहरवा ताल की सूफी चाल में जब अठखेलियाँ करती है तो श्रोताओं को स्वतः ही आत्मचिंतन को मजबूर कर देती है। राजस्थान के संवादी भजन गायकी का मंच रात्रि जागरण कार्यक्रम ही होते थे। हजारों श्रोता इन कार्यक्रमों में उपस्थित रहकर रात-रात भर भजनों की रस गंगा में स्नान करते थे।

इन्हीं में एक फक्कीर गायक सभी संप्रदायों के संतों व भक्तों की रचनाओं के भावों को अपने सुमधुर संगीत से मुखरित करने वाले बाबा बिहारी जी कत्थक द्वारा लिखित भजन प्रभु तेरो नाम को इन्होंने राग धानी तथा कहरवा ताल में स्वरबद्ध किया है। बाद में जयदेव वर्मा (संगीतकार) ने बाबा जी से उपरोक्त गीत को खरीद कर अपने नाम से फिल्म 'हम दोनों' के लिए लता जी से गवाया। यह भजन बहुत ही प्रचलित हुआ। आज भी यह गीत बिहारी जी तथा लता मंगेशकर जी की आवाज में यू-ट्यूब पर उपलब्ध है। लता जी ने इसे पूर्णतया सुगम शैली में गाया है जबकि इसी भजन को बाबा के श्री मुख से सुनते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सामान्य भजन और संवादी भजन, गायन की दृष्टि से कितने भिन्न होते हैं। शब्द के भावों को गायकी से स्पष्ट करना और विभिन्न सांगीतिक तत्व जैसे तान, मुर्की, गमक आदि का प्रयोग शास्त्रीय शैली के प्रभाव को स्पष्ट करता है।

''जिनकी लगन राम संग नाहि...'' 'बाबा' बिहारी जी के द्वारा राग कौशिकी कान्हड़ा पर आधारित धुन में संगीतबद्ध की गई है। पंक्तियों में भक्ति रस व वीर रस दृष्टिगोचर होता है अतः पंडित जी की संगीत रचना, इस चेतावनी भजन के साथ पूरा न्याय करती प्रतीत होती है।

जिस तरह कोकिला तार सप्तक के 'षड्ज' से शुरू होकर मध्य सप्तक के 'धैवत', 'पंचम' से उतरते हुए 'मध्यम', 'गंधार' का सहारा लेकर संवादी स्वर 'षड्ज' पर ठहराव करती है, उपर्युक्त रस अपने आप आनंद बिखेरने लगते है, अतः साहित्य एवं स्वर के सामंजस्य को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि 'बाबा' ने अपनी सभी रचनाओं में साहित्य एवं स्वर का पूरा ध्यान रखा है। अद्धात्रिताल में निबद्ध रचना में आरोहात्मक तान राग के स्वरूप को पूर्णतया स्पष्ट करती है।

''जीव तू जारैगो हम जानी... भक्ति काल के महानतम निर्गुण कवि भक्त कबीर द्वारा रचित गीत 'जीव तू जारैगो हम जानी' उनके उम्दा भजनों में से एक है। इस भजन में उन्होंने इस नश्वर संसार के राजा-रानी, धरती-अंबर, चाँद-सूरज इत्यादि के अस्थाई होने की बात कहते हुए, परमात्मा की भक्ति को ही स्थाई तथा अजरअमर बताया है। इस संवादी भजन को बाबा बिहारी जी ने शानदार तरीके से राग कालिंगड़ा में तीनताल के साथ प्रस्तुत किया है। तार सप्तक के षड्ज पर सम राग के प्रभाव को स्पष्ट करता है।

जयपुर के पंडित चिरंजी लाल तंवर का भजन ''प्रभु मेरे अवगुण चित ना धरो...'' (सूरदास) शिवरंजनी राग में 9 मात्रा की मतंग ताल, रागेश्वरी में ''झनक झनक की पैजनियाँ...'' अद्धा त्रिताल आदि दर्जनों रचनाएँ आज भी प्रसिद्ध है। (पंडित जी विभिन्न गीतों को अलग-अलग अप्रचलित मुश्किल तालों यथा साढ़े 6 मात्रा, 11 मात्रा, 13 मात्रा इत्यादि में सुगमता से गाते रहे हैं) संवादी भजनों की एक और विशेषता यह है कि ये रात्रि जागरण में गाए जाते हैं जिसमें रागों के समय सिद्धान्त का भी यथा संभव पालन करते हैं। प्रायः रात्रि के प्रथम प्रहर से अंतिम प्रहर के रागों में ही रचनाएँ प्राप्त होती है।

उक्त वर्णन से भजन गायन का सांगीतिक महत्त्व स्पष्ट हो जाता है। ये सभी हिंदुस्तानी संगीत की राग परंपरा के प्रवाहक रहे हैं। विभिन्न भक्त कवियों की चेतना युक्त वाणी इस भक्ति स्वर की लहरियों के साथ जन-मानस के मन पर गहरा प्रभाव डालती है।

संवादी भजनों में लोक चेतना-राजस्थान की धरती भक्ति और गायन से परिपूर्ण है। ऐसे हजारों भक्त कवि जिनकी वाणी को स्वर प्रदान करने के लिए हजारों संगीतकार भक्तों ने इस धरती पर जन्म लिया है। यहाँ अनेक सन्त-साधक भी हुए। उनकी अमृतमयी वाणी से अभी तक हमारा देश पूर्णतः परिचित नहीं हुआ।

''जाम्भोजी, जसनाथजी, दादू, सुन्दरदास, चरणदास व मीरा की वाणी ने तो अपनी यश-पताका देश में दूर तक फैलायी, किन्तु विशाल राजस्थान के गाँव-गाँव में, आज भी ज्ञात-अज्ञात सैकड़ों सन्तों के पद गाये जाते हैं, जिनकी मधुरता, कोमलता और प्रखरता सुनने वालों के हृदय को ज्ञान, भक्ति और प्रेम की रसस्निग्धता से आप्लावित कर देती है।'' (शर्मा एवं सांखला 205)

यहाँ लोक चेतना का तात्पर्य अच्छे संस्कार और सद्विचारों से है। भजनों के साहित्य पर विचार करने से ज्ञात होता है कि संवादी भजनों का उद्देश्य

केवल मनोरंजन नहीं है, उनके साहित्य में समाज को उचित दिशा देने का सामर्थ्य भी है। संत साहित्य का गायन इस शैली की प्रमुख विशिष्टता है। मानव मूल्यों और लोक चेतना के महत्वपूर्ण ज्ञान को जनमानस तक पहुँचाने में इन भजनों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है। सबसे अधिक महत्त्व की बात यह है कि यह ज्ञान गाँव-गाँव तक सहज ही इन भक्ति गीतों के माध्यम से उपलब्ध हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे अनेक व्यक्ति मिल जाते है जो औपचारिक रूप से शिक्षित नहीं होते हुए भी इन सभी मूल्यों पर अपनी आस्था रखते हैं। लोक तक इनका प्रभाव अधिक होता है। ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे सत्संगी व्यक्ति अनेक सामाजिक बुराइयों से स्वयं भी दूर रहते है तथा भावी पीढ़ी को संरक्षण एवं नियंत्रण प्रदान करते हैं। बहुत से युवा इस प्रकार के आयोजनों से प्रभावित होकर संगीत को अपना व्यवसाय भी बना लेते हैं। भक्त कवियों मुख्यरूप से अष्टछाप के कवियों की रचनाओं में व्याप्त साहित्य में अनेक लोक चेतना के तत्व पाए जाते है–

1. ईश्वर आराधना से आत्मकल्याण।
2. विभिन्न धार्मिक आडम्बरों से समाज को दूर रखना।
3. अनेक सामाजिक भ्रांतियों, कुरीतियों से स्वयं और समाज को जागरूक करना।
4. ईश्वर के सर्व व्याप्त होने के भाव से मनुष्य सच्चरित्र बनता है।
5. दीन और असहाय मनुष्यों की सहायता करने का भाव जाग्रत करना
6. मनुष्य जीवन को अच्छे कार्यों में प्रेरित करना है।
7. जीवन में कर्मशील रहना।
8. ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठ बनाना।
9. समाज एवं राष्ट्र के प्रति दायित्वों का बोध बने रहना।
10. संवादी भजनों का संगीत और संगीतकारों के निर्माण में योगदान।

अध्ययन की प्रासंगिकता– आज के युवा संगीतकारों को भजन गायन के क्षेत्र में व्यवसाय, सरकारी नौकरी एवं रोजगार, संगीत शिक्षा विषय में भजन गायन के पाठ्यक्रम चलाने, भजन शैली पर शोध कार्य हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करना इस अध्ययन की प्रासंगिकता है। समाज को नैतिकता, संस्कार एवं चरित्रवान बनाने में भजन परंपरा का योगदान महत्त्वपूर्ण है। राजस्थान के कुछ उपलब्ध प्रसिद्ध भजन गायकों की जानकारी–

स्व. पंडित चिरंजी लाल तंवर जयपुर

श्री मुन्दु खान जयपुर (युवा भजन गायक)

श्री बनारसी लाल छोरी खड़ीला सीकर

डॉ. विजयेन्द्र गौतम जयपुर राजस्थान

श्री रामस्वरूप दास, सीकर (राजस्थान) (युवा भजन गायक)

श्री सांवरमल कथक, जयपुर (राजस्थान) (युवा भजन गायक)

स्वर्गीय श्री मुंशी खां (बाजरा), नागौर (राजस्थान)

पद्मश्री गनी मोहम्मद और अली मोहम्मद, बीकानेर (राजस्थान)

स्वर्गीय श्री बिहारी कथक, सीदसर, चूरू (राजस्थान)

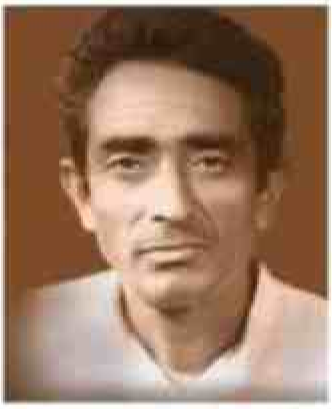

स्वर्गीय श्री मोइनुद्दीन खाँ, सीकर (राजस्थान)

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार के आयोजन युवा पीढ़ी को उत्कृष्ट जीवन जीने और रोजगारोन्मुख करने में अत्यंत सहयोगी सिद्ध होते हैं। अनेक धार्मिक ट्रस्ट इस प्रकार के आयोजनों में वृद्धि कर इस परंपरा को जीवित रखने का कार्य कर रहे हैं, किन्तु इसमें भी कर्ण कटु संगीत का प्रवेश इस परंपरा को विघटित कर रहा है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में भजनों के आयोजनों का स्थान अब डीजे और स्टेज भजन लेता जा रहा है, जो राजस्थान की संवादी भजन परम्परा के कलाकारों, सांगीतिक और सामाजिक चेतना के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध हो रहा है।

संदर्भ

1. माथुर, गिरि. अष्टछाप भक्त कवि और पुष्टिमार्गीय सेवा में संगीत श्रीमती किरण परसामी राज पब्लिशिंग जयपुर (2011), पृष्ठ संख्या 9
2. मोहम्मद, अली, भजन एवं मांड गायक से प्राप्तकर्ता: राजेश कुमार, 10 मार्च 2022
3. सहाय, हनुमान, भजन एवं मांड गायक से प्राप्तकर्ता: राजेश कुमार, 14 मार्च 2022
4. कथक, सांवरमल, युवा भजन एवं मांड गायक से प्राप्तकर्ता: राजेश कुमार, 14 मार्च 2022
5. शर्मा, डॉ. वसुमती एवं, कमल किशोर सांखला, राजस्थान का संत-साहित्य (सम्पा.) राजस्थानी ग्रन्थ विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, (2014), पृष्ठ संख्या 205

Organised by:
University Rajasthan College,
University of Rajasthan, Jaipur

Sponsored by :
Indian Council of Social Science Research,
New Delhi, INDIA

A tribute to
Sir CV Raman
Journey from Sound to Light

FSIT 3-4 August, 2023

131

International Conference

Folk Songs : The Soul of Indian Culture and the Impact of Technology

CERTIFICATE

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Ms. Rajesh Kumar
of Department/Institute PG. Dept. of Music Vocal (Govt. Clg bundi)
has actively participated and contributed an article entitled हाड़ौती क्षेत्र की लोक गायन शैली तेजाजी का संगीत एवं साहित्यिक विवेचन (Paper presented)
at the International Conference on **Folk Songs : The Soul of Indian Culture and the Impact of Technology** (FSIT-2023) organised by University Rajasthan College, University of Rajasthan, Jaipur in association with Indian Council of Social Science Research (ICSSR), New Delhi at Rajasthan International Centre, Jaipur on 3rd and 4th of August 2023. His/Her participation is highly appreciated.

Patron	Convener	Organizing Secretary
Prof. S.L. Sharma	Dr. Anshu Verma	Dr. Amanpal Singh
Principal, University Rajasthan College	Assistant Professor	Assistant Professor

Naad Nartan

&

Ministry of Culture, Govt. of India

Bhatkhande Sanskriti Vishwavidyalaya, Lucknow

Tauryatrikam Publication

Organizing

6th 3 - Day National Conference and Concert

26 - 28 September 2024

UGC – CARE Listed Journal, ISSN: 2349-4654

Music, Society and Everyday Life

This is to certify that

राजेश कुमार

शोधार्थी, संगीत विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बूंदी, राजस्थान

has participated in National Conference and presented a paper titled :

राजस्थान की संवादी भजन परंपरा में व्याप्त सांगीतिक एवं सामाजिक चेतना

Prof. Mandavi Singh Vice Chancellor	Prof. Ravi Sharma Director	Dr. Gyanendra Dutt Bajpai Coordinator	Dr. Rohitha Eswer Convener

संगीत विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

75 Azadi Ka Amrit Mahotsav

(स्वर्ण जयन्ती वर्ष)

Certificate of Participation

त्रिदिवसीय कार्यशाला

रागांग राग भैरव के प्रकार एवम् प्रायोगिक स्वरुप

विषय विशेषज्ञ : डॉ. विजयेन्द्र गौतम

15,16,17 सितम्बर 2022

Name Rajesh Kumar Class Research Scholar

Coordinator	Co-Cordinator / Rector	Proctor
Prof. Anjalika Sharma	Professor Arti Bhatt Tailang	Dr. Neelam Sain
Head, Deptt. of Music	Deptt. of Music, UOR, Jaipur	Dr. Harshit Vayar
Dean, Faculty of Fine Arts, UOR, Jaipur		Deptt. of Music, UOR, Jaipur